श्री आंजनेयस्वामी (हनुमान) की जन्मभूमि
अंजनाद्रि - तिरुमला

पौराणिक - वाङ्मय - शिलालेख - ऐतिहासिक आधारों द्वारा निरूपित

तिरुमला तिरुपति देवस्थान, तिरुपति
2022

SRI ANJANEYASWAMY (HANUMAN) KI JANMABHUMI, ANJANADRI - TIRUMALA

Original Telugu Editor - Late Prof. V. Muralidhara Sharma
Vice-Chancellor, National Sanskrit University,
Tirupati & President, Pandita Parishad

Hindi Editor - Dr. M. Lakshmanacharyulu
Ex-Manager (Hindi), HCL, Hyderabad.
TTD Commentator, TTD Books Experts Committee Member

श्री आंजनेयस्वामी (हनुमान) की जन्मभूमि, अंजनाद्रि - तिरुमला

तेलुगु संपादक : स्वर्गीय आचार्य विरिवेंटि मुरलीधर शर्मा
उपकुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति।
अध्यक्ष, पंडित-परिषद।

हिंदी संपादक : डॉ.एम.लक्ष्मणाचार्युलु
मेनेजर (हिंदी) हेच.सी.एल (पूर्व कर्मचारी), हैदराबाद।
ति.ति.दे. व्याख्याता, पुस्तक-विशेषज्ञ-समिति के सदस्य

प्रतियॉ : 500

मूल्य : अमूल्य

Published by
Sri A.V. Dharma Reddy, I.D.E.S.,
Executive Officer,
Tirumala Tirupati Devasthanams,
Tirupati.

DTP : Chief Editor Office & Publications Division, T.T.D., Tirupati.

Cover Page : Chief Editor Office, T.T.D., Tirupati.

Printed at :
Tirumala Tirupati Devasthanams Press,
Tirupati - 517 507

तिरुमला-तिरुपति-देवस्थान

श्री आंजनेयस्वामी की जन्मभूमि के निर्धारणार्थ

नियोजित पंडित परिषद

1.	अध्यक्ष	**आचार्य विरिवेंटि मुरलीधर शर्मा** कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति	शिक्षा-व्याकरण-मनोविज्ञान-इतिहास शोध पद्धतियों में विशेषज्ञ

सदस्य सर्वश्री

2.	**आचार्य जानमद्दि रामकृष्णा** पूर्व व्याकरणाचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति।	बहु-शास्त्र ग्रंथ प्रणेता, पुराण वाङ्मय शोधकर्ता
3.	**आचार्य राणीसदाशिवमूर्ति** डीन, शैक्षिक व्यवहार, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति।	संस्कृत साहित्य विज्ञानशास्त्र विशेषज्ञ
4.	**आचार्य शंकरनारायणन्** साहित्य शास्त्र व्याख्याता राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति।	''ताम्र शिलालेखनायक'' अवार्ड ग्रहीता चोल हिस्टारिकल शोध केन्द्र - तंजाऊर
5.	**विजयकुमार जादव** पूर्व उप निदेशक	आं.प्र.राज्य पुरावस्तु एवं प्रदर्शन शाखा के पूर्व सचिव
6.	**डॉ.आकेल्ल विभीषण शर्मा** विशेष अधिकारी, उच्च वेदाध्ययन संस्था, निदेशक, अन्नमाचार्य परियोजना, ति.ति.दे. तिरुपति।	संस्कृत साहित्य शास्त्र विद्वान, विख्यात, प्रवचन कर्ता, असंख्य ग्रंथ लेखक

विषयसूची

प्रस्तावना व मठाधिपतियों का दिव्य संदेश

अध्यक्ष महोदय का संदेश - श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी	...	vii
दो शब्द - डॉ.के.एस.जवाहर रेड्डी	...	viii
अंजनानंदनम् वन्दे - श्री ए.वी.धर्मारेड्डी	...	xi
चित्रकूट-उत्तर प्रदेश-श्रीमतां जगद्गुरूणां रामभद्राचार्याणां दिव्यसंदेशः	...	xiii
चित्रकूट-उत्तर प्रदेश-जगद्गुरु श्रीरामभद्राचार्यजी का दिव्य संदेश	...	xv
श्री सिद्धेश्वरी पीठ, तेनकाशी-तमिलनाडु, श्रीश्रीश्री सिद्धेश्वरानंद भारती महास्वामी जी का दिव्य संदेश	...	xvii
श्री शक्तिपीठ, तिरुपति, माताजी श्री रम्यानंद भारती स्वामी जी का दिव्य संदेश	...	xxi
श्री शुकब्रह्माश्रम, श्रीकालहस्ति-चित्तूर-जिला, पूज्य श्री विद्या स्वरूपानंदगिरि स्वामी जी	...	xxv
श्री पेद्द(बडे) जीयर स्वामी मठ - श्रीश्रीश्री शठगोप रामानुज पेद्द(बडे) जीयर, ति.ति.दे.	...	xxvii
श्री चिन्न(छोटे) जीयर स्वामी मठ - श्रीश्रीश्री गोविंदरामानुज चिन्न(छोटे) जीयर, ति.ति.दे.	...	xxx
श्री अहोबिल मठ, अहोबिल, श्रीमत् श्रीवन्शठगोप श्रीरंगनाथ यतींद्र महादेशिक स्वामी जी	...	xxxii
श्री यदुगिरि यतिराज मठ, कर्नाटक, श्री यतिराज जीयर स्वामी जी	...	xxxiii
श्री राघवेंद्र स्वामी मठ, मंत्रालय, श्री श्रीमत् सुबुधेन्द्र तीर्थ स्वामी जी का अनुग्रह संदेश	...	xxxiv
व्यासराज मठ (सोसले), कर्नाटक, श्रीश्री विद्याश्रीषा तीर्थ स्वामी जी	...	xxxvi
उत्तरादि मठ, श्री सत्यात्म तीर्थ श्रीपाद जी का दिव्य संदेश	...	xxxvii
श्री भंडार्केरि मठ, उडुपी, कर्नाटक, श्री विद्येश तीर्थ स्वामी जी	...	xl
श्रीपादराज मठ, कर्नाटक, श्री सुजनिधि तीर्थ श्रीपादरायलवरु	...	xli
विशाखा शारदा पीठ, विशाखापट्टनम्, श्रीश्रीश्री स्वरूपानंदेंद्र सरस्वती स्वामी जी का दिव्य संदेश	...	xlii
विशाखा शारदा पीठ, विशाखापट्टनम्, श्रीश्रीश्री स्वात्मानंदेंद्र सरस्वती स्वामी जी का दिव्य संदेश	...	xliv
अयोध्या, श्री गोविंद देव जी महराज का दिव्य संदेश	...	xlv
विश्व हिन्दू परिषत् के श्री कोटेश्वरशर्मा जी का दिव्य संदेश	...	xlviii
प्राक्कथन	...	liii

अध्याय

1.	पुराणों की प्राचीनता और प्रामाणिकता	- कुमारी जी.शशिकला	....	3
2.	श्री शांकरभाष्य के पुराण एवं इतिहास के वचन	- श्रीमती वी.शिरीषा	....	23
3.	श्री वेंकटाचल माहात्म्य-प्रामाणिकता	- डॉ.के.महालक्ष्मी भवानी	....	47
4.	श्री वेंकटाचल माहात्म्यम - कुछ और विशेषताएँ	- श्रीमती पी.विद्यालतादेवी	....	57
5.	श्री वेंकटाचलेतिहासमाला - श्री वेंकटेश्वरतत्व	- श्रीमती आर.वाणीश्री	....	63
6.	पौराणिक प्रामाण	- श्रीमती आर.वाणीश्री	....	69
7.	हनुमान का जन्मस्थल तिरुमला है। (भौगोलिक प्रमाणों से)	- श्रीमती आर.वाणीश्री	....	103
8.	तिरुमला पहाड अंजनाद्रि - एक पुरातत्व सर्वेक्षण	- डॉ.के.महालक्ष्मी भवानी	....	117
9.	भगवान वेंकटेश्वर भक्ति रचनाओं में अंजनाद्रि	- श्रीमती वी.शिरीषा	....	129
10.	वाङ्मय प्रमाण	- कुमारी जी.शशिकला	....	139
11.	श्रीवैष्णव साहित्य में तिरुमला-अंजनाद्रि	- श्रीमती पी.विद्यालतादेवी	....	153
12.	सप्तगिरियों में अंजनाद्रि का महत्व	- डॉ.के.महालक्ष्मी भवानी	....	165
13.	हनुमान के जन्मस्थल के विषय में लोगों के भिन्न-भिन्न श्रुत-विषय(जन वाक्य)	- श्रीमती आर.वाणीश्री	....	175
14.	''आंजनेय चरित'' के कुछ प्रसिद्ध क्षेत्र	- कुमारी जी.शशिकला	....	181
15.	संदेह-समाधान	- श्रीमती आर.वाणीश्री	....	201
16.	(i) सवाल-ए-जवाब (प्रश्न एवं उत्तर) - अनुबंध-I	- श्रीमती आर.बी.वाणीश्री	....	205
	(ii) अनुबंध-II शिलालेख		....	211
17.	सहायक ग्रंथ सूची		....	233
	कार्यक्रम संबंधी चित्रमाला		....	242

Y.V. SUBBA REDDY, Ex-M.P.
CHAIRMAN,
T.T.DEVASTHANAMS BOARD

Cell : 98490 00916
Office : 0877-2263640
P.A. : 95055 59559 / 94911 94916
Res : 0864511111
e-mail : yvsubbareddymp@gmail.com
Office : Swarna Tirumala Rest House, T.T.D., Tirumala.
Res. : House # 12, Rainbow Villas, Navodaya Colony, Tadepalli, AMARAVATHI - 522 501.

तिरुमला तिरुपति देवस्थान की न्यासमंडली के अध्यक्ष महोदय का संदेश

कलियुग में श्री महाविष्णु का प्रत्यक्ष अवतार है बालाजी श्री वेंकटेश्वर स्वामी। वे बिना भेदभाव के अपने मंदिर में प्रवेश करनवाले भक्तों की रक्षा करनेवाले करुणासागर हैं। महात्माओं के अवतरण के लिए एवं भगवान के अवतारों के लिए यह दिव्यक्षेत्र कारण हुआ।

महर्षि वेदव्यास के द्वारा इस तथ्य का उल्लेख किया गया है कि तिरुमला दिव्य क्षेत्र की आकाशगंगा में स्थित पावन प्रदेश में माता अंजनादेवी की तपस्या के कारण आंजनेयस्वामी का आविर्भाव हुआ था। इस कारण उस प्रदेश को ''**अंजनाद्रि**'' नाम से अभिहित किया गया। ऐसे पुराण संकलनों से युक्त '**श्री वेंकटाचलमाहात्म्य**' ग्रंथ की प्रमाणिकता को भगवद्रामानुजाचार्य ने पुष्ट किया था।

यह ग्रंथ 'श्री आंजनेय स्वामी की जन्म भूमि भगवान बालाजी के भक्तों को पौराणिक, साहित्यिक, शिलालेखीय, ऐतिहासिक आधारों के साथ, ''**अंजनाद्रि ही हनुमान की जन्मभूमि है**'' - ''इस बात को निरूपण करनेवाला एक प्रतिवेदन है।''

तिरुमला तिरुपति देवस्थान महान विद्वानों और पीठाधीशों के मंतव्यों व लेखों को संकलित करके इस ग्रंथ का प्रकाशन कर रहा है।

मेरी यही आशा है कि इसमें उल्लिखित समस्त सभी शोध सामग्री बजरंगबली श्री हनुमान क्षेत्र के प्रति, श्री वेंकटेश्वर स्वामी के प्रति आस्था, श्रद्धा एवं शरणागति भावना बढ़ाएगी।

भगवान बालाजी श्री वेंकटेश्वर जी की सेवा में,

वाई.वी.सुब्बारेड्डी

डॉ.के.एस.जवाहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी

तिरुमला तिरुपति देवस्थान,
के.टी.रोड, तिरुपति-५१७५०७
आंध्र प्रदेश, दूरभाष - ०८७७२२६४९७७

दो शब्द

बुध्दिर्बलं यशोधैर्यं निर्भयत्वम् अरोगता।
अजाड्यं वाक्पटुत्वं च हनुमत् स्मरणात् भवेत्।।

भाव - ''वेदों में कहा गया है कि हनुमान का स्मरण करने मात्र से ज्ञान, बल, यश, साहस, निर्भयता, स्वास्थ्य वाक्पटुता इत्यादि प्राप्त होते हैं।''

तिरुमला एक परम पवित्र पर्वत है जिसका गुणगान करते हुए अन्नमाचार्य ने कहा था - **''वेदमुले शिललै वेलसिनदी कोंडा''** यहाँ का हर पेड, हर पौधा, हर पत्थर, हर कण भगवान का ही रूप है।

''वेंकटाचल माहात्म्य'' से यह ज्ञात होता है कि तिरुमला के सप्त पर्वतों को कृत-त्रेता-द्वापर-कलियुगों में विभिन्न नामों से अभिहित किया गया था। भविष्योत्तर पुराण से पता चलता है कि इनका नाम कृतयुग में वृषाद्रि त्रेतायुग में अंजनाद्रि, द्वापर में शेषाचल, कलियुग में वेंकटाद्रि हैं। त्रेतायुग में इसी पहाड पर **'आंजनेयस्वामी'** का जन्म होने से यह पर्वत **'अंजनाद्रि'** नाम से जाना जाता है।

२०२० में ईश्वर की कृपा से तिरुमला तिरुपति देवस्थान कार्यकारी अधिकारी के रूप में कार्यभार लेने के प्रारंभिक दिनों में मुझे फोन पर एक अज्ञात व्यक्ति का संदेश मिला। उसने कहा था कि ''हनुमान का वास्तविक जन्मस्थान ''अंजनाद्रि'' है, यह विषय जगजाहिर की जिम्मेदारी कार्यकारी अधिकारी होने के नाते आप पर है।'' यह ईश्वर की भी इच्छा हो सकती है। तब तक अयोध्या में राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण कार्य भी प्रारंभ हो गया था। मुझे महसूस हुआ कि श्री हनुमान की जन्मस्थली के बारे में दुनिया को अवगत कराने का कार्य परमात्मा ने मुझे सौंपा है। अगले दिन इसी बात को मैंने तिरुमला तिरुपति देवस्थान के अतिरिक्त कार्यकारी अधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी जी के साथ और तत्कालीन अन्नमाचार्य परियोजना निदेशक से भी जिक्र किया था। अन्नमाचार्य परियोजना निदेशक बोले कि ''मैंने स्वयं इस बात को कुछ पुराणों में पढ़ा है और इसका निरूपण करने केलिए विद्वान-अनुसंधान-मंडली को गठित किया जाए।''

तत्पश्चात् प्रमुख प्रवचनकर्ता श्री आकेल्ल विभीषण शर्मा के सहयोग से तत्कालीन राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति आचार्य श्री विरिवेंटि मुरलीधर शर्मा की अध्यक्षता में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के आचार्य श्री जानमद्दि

रामकृष्णा, श्री राणीसदाशिवमूर्ति, आचार्य शंकरनारायणन, आंध्रप्रदेश राज्य पुरातत्व संग्रहालाय के सेवा-निवृत्त-उपनिदेशक श्री विजयकुमार जादव, ति.ति.दे उच्च वेदाध्ययन संस्था के विशेष अधिकारी आकेल्ल विभीषण शर्मा से युक्त विद्वानों की एक मंडली गठित करके उसे ''हनुमान की जन्म-भूमि'' को निर्धारित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई।

विद्वानों की अनुसंधान-मंडली ने तीन महीनों की अवधि में पौराणिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, शिलालेखीय आधारों की जाँच करके, ''तिरुमला की आकाशगंगा तीर्थ ही हनुमान की जन्म स्थली है'', इस बात की पुष्टि करते हुए प्रमाणों के साथ अपने विचारों का एक प्रतिवेदन समर्पित किया। इस विषय का प्रस्ताव, प्लव नाम वर्ष, उगादि के दिन दुनिया के सामने रखेंगे तो अच्छा रहेगा-यह सोचकर एक इश्तहार (करपत्र) का मुद्रण किया गया था।

हमारा संकल्प कुछ होता है तो ईश्वर का कुछ और इस हनुमान जन्मभूमि का प्रस्ताव उगादि के बदले में हनुमान के स्वामी श्रीरामचंद्र के जन्म दिनोत्सव 'श्रीरामनवमी' के दिन तिरुमला नादनीराजनम् के मंच से घोषित करने की व्यवस्था की गई। अप्रत्याशित रूप से तमिलनाडु के राज्यपाल मान्यश्री भँवरलाल पुरोहित श्री बालाजी भगवान के दर्शन के लिए पधारे हुए थे। जैसे ही उनसे इस विषय के बारे में बताया गया तो वे हमें प्रोत्साहित करते हुए बोले कि वे भी इस कार्यक्रम में भाग लेंगे।

२१.०४.२०२१ का श्रीरामनवमी के दिन, तमिलनाडु राज्यपाल मान्यश्री भँवरलाल पुरोहित, हनुमान के **''जन्मभूमि निर्धारण विद्वान पंडित परिषद''** के सदस्यों के साथ, भगवान श्री बालाजी के समक्ष नादनीराजनम् मंडप मंच से हजारों भक्तों के समक्ष, अनेक पत्रकारों के बीच, प्रसार माध्यमों के समक्ष विविध आधारों के साथ यह प्रस्तावित किया गया कि तिरुमला की आकाशगंगा के निकट ही स्थित प्रांत अंजनाद्रि, हनुमान की जन्मभूमि है और यदि किसी को कोई आपत्ति हो वे निश्चित समय के भीतर व्यक्त कर सकते हैं।

हालांकि कुछ लोगों ने तर्क दिया कि ''तिरुमला की आकाशगंगा ही हनुमान की जन्मभूमि'' वाला प्रस्ताव अभी क्यों प्रस्तावित किया गया। ''भगवत्संकल्प'' ही उसका उत्तर है। मुझे अज्ञातव्यक्ति की चरवाणी के संदेश के रूप में प्रेरणा प्राप्त होना भी भगवान का संकल्प है। शायद यह भी हो सकता है कि हनुमान ने यह निश्चय किया होगा कि उनके आराध्य श्रीराम जन्मभूमि निर्धारित होने के पश्चात ही अपनी जन्मभूमि का निर्धारण हो।

दि. ३०, ३१ जुलाई २०२१ को राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के द्वारा ''हनुमान की जन्मभूमि-निर्धारण विषय'' पर एक अंतर्जाल संगोष्ठी आयोजित की गयी थी। उस संगोष्ठी में दुनिया के कोने-कोने से अनेक विद्वान, पीठाधीशों ने भाग लिया था। चित्रकूट जगद्गुरु श्री रामभद्राचार्य स्वामी इस संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मंगलशासन देते हुए बोले - ''मैं पूर्णविश्वास के साथ स्वीकार करता हूँ कि तिरुमला पहाड ही आंजनेय का जन्मस्थान

है। वायुपुराण आदि में यह बात बहुत ही स्पष्ट रूप से कही गई है।'' कुछ लोगों द्वारा आपत्ति उठाने के बावजूद, उसमें सहेतुकता न होने के कारण उनका तर्क टिका नहीं है।

इस बात का निर्धारण हुआ कि ''तिरुमला अंजनाद्रि पर जहाँ आकाशगंगा तीर्थ है वहीं पर हनुमान का प्रादुर्भाव हुआ है।''

नादनीराजनम् मंच से जिस रूप में घोषित किया गया था कि ''तिरुमला का अंजनाद्रि पर्वत जहाँ अकाशगंगा है, वही हनुमान की जन्मभूमि है'', उसी बात को निर्धारित करते हुए इस पुस्तक को सहेतुक आधारों के साथ ति.ति.दे. प्रकाशित कर रहा है। जिसमें विविध पीठाधीशों ने अपने मंगलाशासन के रूप में इसका समर्थन दिया कि ''हनुमान की जन्मभूमि तिरुमला की अंजनाद्रि ही है जहाँ आकाशगंगा स्थित है।''

हनुमान-जन्मभूमि, जहाँ आकाशगंगा तीर्थ है, उस अंजनाद्रि पर हनुमान-मंदिर को निर्माण में प्रगति कार्य केलिए, वेदज्ञों के निर्णय के अनुसार १६ फरवरी को शिलान्यास समारोह एवं भूमिपूजा संपन्न होंगे।

विद्वानों के इस अनुसंधान परिषद के उन सदस्यों को जिन्होंने हनुमान जन्मस्थान निर्धारण कार्यक्रम में भाग लिया था। ति.ति.दे. अतिरिक्त कार्यकारी अधिकारी श्री ए.वी.धर्मरिड्डी जी को, अपना सहयोग देने केलिए कर्मचारियों को, आधारों को प्रदान करने में प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में जिनका सहयोग मिला है उन सभी लोगों में प्रत्येक का नाम लेते हुए मैं धन्यवाद देता हूँ एवं यहीं प्रार्थना करता हूँ कि सभी पर श्री वेंकटेश्वर की असीमित कृपा हो।

जय बालाजी भगवान की।

भगवान बालाजी श्री वेंकटेश्वरजी की सेवा में,

डॉ.के.एस.जवाहर रेड्डी

कार्यकारी अधिकारी

ए.वी.धर्मरिड्डी, आई.डी.ई.एस.,
अतिरिक्त कार्यकारी अधिकारी

तिरुमला तिरुपति देवस्थान,
गोकुलम् कार्यालय, तिरुमला-५१७५०७
आंध्र प्रदेश, दूरभाष - ०८७७-२२७७७७७

अंजनानंदनम् वन्दे

हालांकि अनेक पुराणों में इस बात का उल्लेख है कि अखिलांडकोटि ब्रह्मांडनायक श्री वेंकटेश्वर स्वामी का आवास स्थान तिरुमलागिरि का अंजनाद्रि ही आंजनेय स्वामी की जन्मभूमि है, अब तक इस बात का प्राचुर्य जनबाहुल्य में नहीं होना और अभी-अभी प्रकाश में आने के पीछे आंजनेय स्वामी का संकल्प ही कारण है।

विद्वान परिषद के समर्पित प्रतिवेदन के द्वारा यह पता चला है कि हनुमान जन्मभूमि के बारे में पौराणिक काल में ही उल्लेख किया गया है, फिर भी शायद यह आंजनेय स्वामी का संकल्प हो सकता है कि उनके स्वामी, रामचंद्रमूर्ति का आलय निर्माण कार्यक्रम होने के बाद ही उनका जन्मस्थान का रहस्य लोगों को विदित हो। रामजन्मभूमि पर भारतीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय निकलना तदनुरूप भारत के मान्य प्रधानमंत्री जी के द्वारा अयोध्या में श्रीरामालय निर्माण के लिए ५ अगस्त २०२० को शिलान्यास किए जाने के बाद आंजनेय जन्मस्थान को निर्धारित करने का संकल्प किया गया है।

इस दौरान, तिरुमला के इतिहास में पहली बार भगवान बालाजी के सम्मुख तिरुमला नादनीराजनम् मंडप से ११.०६.२०२० सुंदरकांड के हर श्लोक का अर्थ तात्पर्य सहित प्रवचन अनवरत पारायण (पठन) का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह विषय सर्वविदित है कि श्रीमद्रामायण के सप्त कांडों में सुंदरकांड का विशिष्ट स्थान है और हनुमान की विशिष्टता का सुंदर वर्णन भी सुंदरकांड में ही मिलता है।

इस पारायण का शुरू करने के कुछ ही दिनों में ति.ति.दे. कार्यकारी अधिकारी डॉ.के.एस.जवाहर रेड्डी जी को आंजनेय (हनुमान जी) जन्मस्थान के बारे में जानने की जिज्ञासा का उत्पन्न होना, निष्णात विद्वान लोगों का परिषद गठन करके, सही आधारों को इकट्ठा करने का भार मुझे सौंपना, उनके आदेशानुसार राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ कुलपति जी से संपर्क करने के बाद इस महान कार्य को आयोजित करने के लिए अनुमति देना, उनकी अध्यक्षता में पंडित परिषद की स्थापना किया जाना और 'यह पंडित परिषद तिरुमला ही आंजनेय स्वामी का जन्मस्थान है' - इस बात को निरूपित करते हुए अपने प्राथमिक प्रतिवेदन को २१.४.२०२१ श्रीरामनवमी के दिन नादनीराजनम् के मंच से, तमिलनाडु राज्यपाल श्री भँवरलाल पुरोहित के समक्ष में घोषित करना, सब त्वरित गति से हो गए। पत्रिकाओं के द्वारा यह बात भी घोषित की गई कि यदि किसी को कुछ आपत्ति हो, तो वे तथ्यों के साथ निरूपण कर सकते हैं। ये सभी एक के बाद एक संभव हो गए।

इन सारे परिणामों को देखने पर मेरा यह दृढविश्वास हो गया कि इस घटनाक्रम का होना आंजनेय का ही संकल्प है। श्री आकेल्ल विभीषण शर्मा, जिन्होंने सुंदरकांड प्रवचन का निर्वाह किया, आचार्य मुरलीधर शर्मा जो आंजनेयोपासक हैं एवं आंजनेय कृपापात्र हैं, इस समिति का सदस्य बनना, उनके द्वारा हनुमान जन्मस्थान का निर्धारण किया जाना-इन सारी बातों से विदित होता है कि आंजनेयस्वामी ने अपने कार्य की परिपूर्ति स्वयं की है।

उसी तरह ति.ति.दे. षोडशदिन सुंदरकांड पठन कार्यक्रम ''**राघवो विजयं दद्यात् मम सीतापतिः प्रभुः, राघवस्य पदद्वन्द्वं दद्यादमितवैभवम्**'' जैसे मंत्ररूप वाक्यों के अनुसार कटपयादि संख्याशास्त्र के अनुसार दो बार आयोजित किया गया। जिस प्रकार सुंदरकांड यह बात विदित करता है कि आंजनेय स्वामी ने बिना विश्राम लिए लंका यान करके, सीता का पता लगाकर श्रीराम को निवेदित किया उसी प्रकार पंडित परिषद के नेतृत्व में ३१.०५.२०२१ तारीख को लगातार १८ घंटों संपूर्ण सुंदरकांड पारायण, ति.ति.दे. ने आयोजित किया। कोरोना के कारण सारी दुनिया के उथल-पुथल होने की स्थिति में होने के बावजूद ये सारे कार्यक्रम निर्विराम किए गए। निस्संदेह कहा जा सकता है कि इसका मूल कारण श्री आंजनेय(हनुमान) की परिपूर्ण अनुकंपा ही है।

भगवद् रामानुज जी ने पौराणिक अंशों को ग्रहण करके एक क्रमपद्धति में यादवराजसभा में व्यक्त किया था, ये पौराणिक अंश सभी श्रीवेंकटाचलमाहात्म्य के रूप में मशहूर हुआ है। इतिहासमाला ग्रंथ में इस बात का पुष्टीकरण हुआ है और यह भी इस पुस्तक में उल्लेख किया गया है। उसी रूप में पुराण की प्रामाणिकता के बारे में भी इस पुस्तक में अनेक जगहों पर विस्तृत रूप में जिक्र किया गया है ताकि भारतीय संस्कृति के लिए आधारभूत पुराणों को विश्वास करते हुए, पुराणवचनों से उद्घोषित रूप में इस बात को स्वीकार कर सकें कि ''**तिरुमला क्षेत्र ही हनुमान की जन्मभूमि है।**''

इसी मंतव्य से संगोष्ठी के प्रतिभागी, पीठाधीश, मठाधीश, पंडित, आलोचक सभी लोगों का एकमत से सहमत होना विशेष बात है।

समिति द्वारा आयोजित हर कार्यक्रम में मैं अपनी सहभागिता के द्वारा, दिशानिर्देश करने के द्वारा, सदस्यों से पूछी गई सभी सुविधा जनक व्यवस्थाएँ करने के द्वारा, कार्यकारी अधिकारी से मुझे सौंपी गई यह बृहत्तर जिम्मेदारी का निर्वाह करने में मैं सफल हुआ। यह बात कहने में मुझे सुखद अनुभव हो रहा है। निष्णात पंडितों के वृंद में सहभागी होना, इस बृहद्यज्ञ में एक समिधा बनना पिछले जन्म का सुकृत मानते हुए श्रीवेंकटाद्रि राम और श्रीमद् आंजनेय स्वामी को साष्टांग प्रणाम समर्पित करता हूँ, जिन्होंने मुझे यह सुअवसर प्रदान किया है। इस बृहद्ग्रंथ को रूपायित करने में योगदान दिए पंडित परिषद अध्यक्ष, सदस्य, सहायक, वेबिनार में भाग लेकर अपने विचारों को व्यक्त करनेवाले पूज्यों को, पंडितों को, प्रमुखों को, सुप्रसिद्ध चित्रकार कूचि जी को, राष्ट्रीयसंस्कृत विश्वविद्यालय कर्मचारियों को, हर एक को मैं धन्यवाद देता हूँ। कार्यकारी अधिकारी जी डॉ.के.एस.जवाहर रेड्डी जी के प्रति मैं अपना विशेष आभार समर्पित करता हूँ जिन्होंने मुझे यह महान अवसर दिया।

आचार्य मुरलीधरशर्माजी जिन्होंने इस कार्यक्रम के लिए दिन-रात श्रम करके अपना समय देकर आद्यंत स्वीय पर्यवेक्षण में अनेक ग्रंथों का अनुशीलन करके इस पुस्तक को इतने सुंदर रूप में संवारे थे जो इस समय नही रहो- यह बात मुझे अत्यंत दुःख पहुंचा रही है। फिर भी वे स्वर्ग से ही, ग्रंथ विमोचन के इस महान कार्यक्रम के लिए आशीर्वाद दें, भगवान से मेरी यही प्रार्थना है।

भगवान बालाजी श्री वेंकटेश्वरजी की सेवा में,

आल्ल वेंकटा धर्मारेड्डी

जगद्गुरुरामभद्राचार्यदिव्याङ्गविश्वविद्यालयः

चित्रकूटः - २१० २०४

उत्तरप्रदेशः

दूरवाणी 91-05198-224413

श्रीश्रीश्री जगद्गुरु रामभद्राचार्यः

व्यवस्थापकः कुलाधिपतिः

पद्मविभूषणभूषितश्च

श्रीमतां जगद्गुरूणां रामभद्राचार्याणां दिव्यसन्देशः

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लङ्काभयङ्करम् ।।
आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ।।

धन्यं तत् स्थानं यत्र स्वयं वेङ्कटेशः श्रीनिवासो विराजते तत्र तस्य पर्वतस्य नाम **अञ्जनाद्रिः** इति सामान्यतः तु जनाः विवदन्ते को नाम अञ्जनाद्रिरिति ? केचन हनूमतो जन्म कर्णाटके स्वीकुर्वन्ति, केचन गन्धमादने स्वीकुर्वन्ति। वस्तुतस्तु तिरुपतिस्थाने एव स पर्वतो वर्तते । स एव **अञ्जनाद्रिः** इत्यत्र केनापि संशीतिः न कार्या। अस्मिन्नेव पर्वते तपस्यामाचचार भगवती हनूमतो माता अञ्जनादेवी। तस्यां तपस्यायां पूर्णायां स्वयमेव भगवान् शिवः निजतेजसा अञ्जनागर्भे आत्मानं सन्निवेशयामास । अत्रापि अञ्जना तु वायुतो हनूमन्तं लेभे । इदं तु सत्यम्। किन्तु किं मिथुनधर्मेण ? नैव । कदापि नैव । सप्तर्षयः अञ्जनायाः कर्णे राममन्त्रमुपदेष्टुम् आगताः । यदा ऋषीणां मुखात् फूत्काररूपेण वायुः अञ्जनायाः कर्णं गच्छन् आसीत् तस्मिन्नेव समये तत्र भगवान् शिवः आत्मानं स्थापितवान्। अर्थात् ऋषीणां मुखारविन्दनिर्गतवायुमाध्यमेन शिव एव तस्याः गर्भं प्राविशत् इति मदीया धीः। अत एव वाल्मीकिः अपि "अञ्जनासुप्रजा येन'' इति वारं वारं हनूमन्तम् आञ्जनेयं कथयति । वाल्मीकिरामायणे कुशलवमङ्गलाचरणे अपि ...

उल्लङ्घ्य सिन्धोस्सलिलं सलीलं यश्शोकवह्निं जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ।।

''अञ्जना सुप्रजा येन मातरिश्वा च सुव्रत'' - इति वाल्मीकिरामायणे
हनुमान् चालीसायां **रामदूत अतुलित बलधामा अञ्जनीपुत्र पवनसुत**
नामा हनुमान ... एवं भगवतः आञ्जनेयस्य स्तुतिः वर्तते ।

एवं हनूमतः जन्मस्थलरूपेण प्रसिद्धानि बहूनि स्थानानि सन्ति, किन्तु यत्र अञ्जना तपस्यां कृतवती सः पर्वतः कः इत्यत्र विवदन्ते विद्वांसः । किन्तु अहं तु पूर्णतया निश्चितवानस्मि अयमेव पर्वतो यत् तिरुमलक्षेत्रे विराजमानः

वर्तते यत्र भगवती अञ्जना तपस्यां कृतवती, स एव पर्वत इति **अञ्जनाद्रिरिति** । वाय्वादिपुराणेषु एतस्य चर्चा वर्तते । स्वयं वाल्मीकिरामायणस्य प्रसिद्धटीकायां मङ्गलाचरणमुखेन भूषणाख्यायां गोविन्दराजो ब्रवीति -

श्रीमत्यञ्जनभूधरस्य शिखरे श्रीमारुतेस्सन्निधौ
अग्रे वेङ्कटनायकस्य सदनद्वारे यतिक्ष्माभृतः।
नानादेशसमागतैर्बुधगणैः रामायणव्याक्रियां
विस्तीर्णां रचयेति सादरमहं स्वप्नेऽस्मि सञ्चोदितः ।।

(अञ्जनाचलस्य शिखरे मारुतेः सन्निधौ भगवतः श्रीवेङ्कटेश्वरस्य आलयस्य समीपे नानादेशेभ्यः समागतैः विद्वत्तल्लजैः सह संचर्च्य रामायणकाव्यस्य विपुलव्याख्यानं रचयेति स्वप्नेऽहं भगवता समादिष्टः ।)

अर्थात् अस्मिन्नेव अञ्जनापर्वते हनूमान् जन्म लेभे । अत्रैव तत्रभवान् गोविन्दराजो भूषणटीकारचनायाः प्रारम्भं कृतवान्। निष्कर्षतः अस्मिन् विषये केनापि नैव संशीतिः कार्या, न विचिकित्सा कार्या । एक एव निश्चयः यत् तिरुमलक्षेत्रे यः पर्वतो वर्तते स एव अञ्जनापर्वतः इति, तस्मिन्नेव पर्वते अञ्जना हनूमन्तं प्रसूतवती इति च निश्चयेन निगद्य अहं विरमामि ।

''जय हनुमान्''

जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्व विद्यालय

चित्रकूट-२१०२०४ उत्तर प्रदेश

फोन.नं.९१-०५१९८-२२४४१३.

श्री श्री श्री जगद्गुरु रामभद्राचार्य,

व्यवस्थापक, कुलाधिपति,

'पद्म विभूषण' पुरस्कार ग्रहीता।

जगद्गुरु श्रीरामभद्राचार्यजी का दिव्य संदेश

श्री वेंकटाद्रि एक ऐसा परम पवित्र स्थान है जहाँ भगवान बालाजी श्री वेंकटेश्वर स्वामी अवतरित हैं। वहाँ स्थित एक पर्वत को ''अंजनाद्रि'' कहा जाता है। साधारणतः लोग इस विषय पर बहुत चर्चा-परिचर्चा कहते रहते हैं कि अंजनाद्रि कहाँ पर है। कोई कहता है कि अंजनाद्रि कर्नाटक में है, तो कोई कहता है कि वह गंधमादन में है। परंतु यथार्थता यह है कि वह स्थान तिरुमला में है। इस विषय में किसी को संदेह नहीं रहना चाहिए। बजरंगबली आंजनेय (हनुमानजी) की माताश्री अंजना जी ने वहीं पर तपस्या की थी। उसकी तपस्या फली भूत होने के समय भूतपावन भोलानाथ परमेश्वर ने अंजना जी के गर्भ में पदार्पण किया था। कुछ लोग भ्रम से यह समझते हैं कि वायुदेव के कारण माता अंजना जी को पुत्र का जन्म हुआ। परन्तु वह शारीरिक सम्पर्क के कारण थोड़े ही हुआ था। यह सप्तर्षियों की कृपा है जो एक बार उसे राम नाम मंत्र का उपदेश देने आये। तब वह मंत्र वायु द्वारा उसके पावन कोख में प्रविष्ट हुआ। वह मंत्र ईश्वर स्वरूप ही था। इस कारण यह मेरी धारणा है कि सप्तर्षियों के मुखों द्वारा स्वयं परमेश्वर अंजनादेवी जी के गर्भ में प्रविष्ठ हुआ। वाल्मीकि रामायण में उसका स्पष्ट उल्लेख है कि हनुमान आंजनेय यानी माता अंजना जी के सुपुत्र हैं।

उल्लङ्घ्य सिन्धोस्सलिलं सलीलं यश्शोक वह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लङ्कां नमामि तं प्राञ्जलिरांञ्जनीयम्।।

वाल्मीकि रामायण में भी कहा गया है कि ''अंजना सुप्रजा येन मातरिश्वा च सुव्रत।'' यहाँ तक कि हनुमान चालीसा में भी रामदूत अतुलित बलधामा अंजनीपुत्र पवनसुतनामा!'' कहकर आंजनेय की स्तुति की गयी है। अतः इस विषय में कोई शंका नहीं कि आंजनेय माता अंजनादेवी के गर्भ से उत्पन्न है। परन्तु इस विषय में अनेक वाद-विवाद हैं कि वह पर्वत कहाँ है जहाँ अंजनादेवी जी ने तप किया था। मैं तो शतप्रतिशत व पूर्णतः इसे मानता हूँ कि तिरुमला पर्वत ही आंजनेय का जन्मस्थल है। वायु पुराण इत्यादि में इसका स्पष्ट उल्लेख है। श्रीमद्वाल्मीकि रामायण व्याख्या ''भूषण व्याख्यान'' में टीकाकार गोविंदराज जी ने लिखा था --

श्रीमत्यञ्जन भूधरस्य शिखरे श्री मारुतेस्सन्निधौ
अग्रे वेङ्कटनायकस्य सदन द्वारे यतिक्ष्मा भृतः

नाना देश समागतैर्बुधगणैः रामायण व्याक्रियाम्
विस्तीर्णां रचयेति सादरमहं स्वप्नेऽस्मि संचोदितः।।

(अंजनाद्रि शिखर में आंजनेय के निकट श्री वेंकटेश्वर मंदिर द्वार में अनेक देशों से पधारे हुए पंडितों से मिलकर रामायण की विस्तृत व्याख्या लिखने केलिए श्री रामभद्र ने स्वप्न में मुझे आदेश दिया था।) इस प्रकार गोविंदराज जी ने यह सूचित किया था कि उन्होंने तिरुमला से ही इस टीका (व्याख्या) की रचना की थी। इन प्रमाणों के कारण मैं शपथपूर्वक यह व्यक्त करता हूँ कि ''तिरुमला पर्वत'' ही अंजनाद्रि है एवं आंजनेय वहीं पर अवतरित हुए हैं।

(भूमि पूजा के अवसर पर दिव्य संदेश)

जय हनुमान।

श्री सिद्धेश्वरी पीठ

कुर्त्ताल - ६२७ ८०२, तेनकाशी तालुका,

तेनकाशी जिला, तमिलनाडु।

मन्त्रस्वरूप, परमहंस परिव्राजकाचार्य

कुर्त्ताल श्री सिद्धेश्वरी पीठाधिपति,

जगद्गुरू - चल (मोबाइल) देवता

श्रीश्रीश्री सिद्धेश्वरानंद भारती महास्वामी जी का दिव्य संदेश

नारायण समारंभां शंकराचार्य मध्यमाम्।

अस्मदाचार्य पर्यन्तां वंदे गुरू परंपराम्।।

मैं सिद्धाश्रम गुरुदेव का सादर प्रणाम करता हूँ। तिरुमला तिरुपति देवस्थानवालों ने आंजनेय (बजरंगबली हनुमान) की जन्मभूमि के बारे में पंडित-चर्चा-परिचर्चा एवं पंडित-गोष्ठियाँ आयोजित की एवं आयोजित कर भी रहे हैं। तिरुमला में अंजनाचल का रहना, वहाँ हनुमान का मंदिर रहना, उनकी अर्चना-आराधना होना इत्यादि के साथ-साथ वर्तमान में कुछ लोगों द्वारा की जानेवाली आलोचनाओं को ध्यान में रखकर तिरुमला तिरुपति देवस्थानवाले इन कार्यों को आयोजित कर रहे हैं। यह एक अभूतपूर्व एवं समयोचित कार्य है।

'योगवासिष्ठ' में कहा गया है कि श्रीराम का हर कल्प में आविर्भाव होता रहता है, हर कल्प में श्रीराम के अवतार होता एवं अब तक बारह बार रामायण लिखी गई है। जो भी हो, हाल ही में घटित श्रीराम गाथा ही हमारे लिए प्रमाण है। उसका आधार महर्षि वाल्मीकि की रचना ही है। वाल्मीकिजी की रचना के साथ पुराण वाङ्मय में अनेक स्थानों पर रामकथा का उल्लेख है। अतः हमें हनुमानजी के जन्म स्थान निर्धारित करने केलिए पुराण ही प्रमाण हैं। महर्षि व्यास जी स्वयं नारायनांशवाला महापुरुष है।

''विविध वेदतत्ववेदी वेदव्यासुडादि पराशरात्मजुंडु''।।

(आंध्र महाभारत-आदिपर्व-१-३२)

महर्षि व्यास जी प्रथम मुनि थे। भगवान कृष्ण ने कहा था कि ''मुनीनामहम् व्यासः'' - ''मुनियों में मैं व्यास हूँ।'' पुराणों का कथन है कि अपांतरतम रूपी ऋषि ही व्यास के रूप में अवतरित हुए। ऐसे महान ज्ञानी थे व्यास जी जिसके द्वारा विरचित पुराण अत्यंत प्रामाणिक हैं। एक गाथा के अनुसार स्वयं हनुमानजी ने ही रामायण लिखी

थी। यह कहा जाता है कि महाराज भोज-कालिदास की कथाओं में एक ऐसा श्लोक प्राप्त हुआ जिसके प्रणेता स्वयं हनुमान जी थे, एक प्रसिद्ध कथा में यह लिखा गया है कि जब कवि कुल गुरु कालिदास जी ने हनुमान जी का आवाहन किया था तो वे स्वयं आकर बोले कि ''यह श्लोक मैंने ही लिखा है।''

शिवशिरसि - शिरांसि - यानि रेजुः शिव! शिव! तानि लुटंति गृध्रपादे।
अयि खलु विषमः पुराकृतानां भवति हि जंतुषु कर्मणा विपाकः।।

''राम द्वारा वध किए जाने के बाद शिव के सिर में प्रतिफलित होने वाले दस शिरोंवाला रावण के वे सिर आज गीधों के पैरों से मारे जा रहे हैं न।''

कहा जा रहा है कि यह श्लोक हनुमान की रामायण से उद्धृत है। परन्तु हनुमान से लिखी गई वह रामायण हमें नहीं मिल रही है।

तत्पश्चात् रामकथा के मूल आधार हैं, पुराण-कथाएँ। सभी पौराणिक-कथाएँ, प्रामाणिक ही हैं। अष्टादश पुराणों में अनेक स्थानों पर राम की कथा एवं श्री वेंकटेश की कथाएँ है। बालाजी वेंकटेश भगवान की गाथा की अनेक विशेषताएँ पुराणों में द्रष्टव्य हैं। तेलुगु भाषी ब्रह्मांड पुराणों को बहुत चाहते हैं। आदिकवि नन्नैया के बारे में बताते समय यह कहा गया है कि वे ''**ब्रह्माण्डादि नानापुराण विज्ञान निरतु**'' (आंध्र महाभरत, आदिपर्व १-९) कहा गया है।

ब्राह्मीदत्त वर प्रसादुडवुरू प्रज्ञा विशेषोदया-
जिह्मस्वांतुड वीश्वरार्चन कला शीलुंडवभ्यर्हित-
ब्रह्मांडादि महापुराण चय तात्पर्यार्थ निर्ध्दारित-
ब्रह्मज्ञान कलानिधानमवु नी भाग्यंबु सामान्यमे!

(शृंगार नैषधम् १-१३)

महाकवि श्रीनाथ के बारे में बताते समय भी यह कहा गया कि वे ब्रह्मांड-पुराण के ज्ञाता थे। इस प्रकार हमें मालूम होता है कि ब्रह्मांड पुराण तेलुगु वालों का प्रीतिपात्र है। इस में वेंकटेश भगवान की कथा है। भविष्योत्तर-पुराण में वेंकटेश-चरित्र में वेंकटाचल का सुंदर वर्णन है।

कृते वृषाद्रिं वक्ष्यन्ति त्रेतायां अञ्जनाचलम्।
द्वापरे शेषशैलेति कलौ श्री वेङ्कटाचलम्।।

(भविष्योत्तर पुराण, वेंकटाचल माहात्म्य-१-३६)

इस तिरुमला को कृतयुग में वृषाद्रि, त्रेतायुग में अंजनाचल, द्वापर युग में शेषशैल एवं कलियुग में वेंकटाचल नाम पडे। ऐसे दिव्य एवं भव्य पर्वत पर पुराण वाङ्मय के अनुसार माता अंजनादेवी जी ने हनुमान को जन्म दिया है।

अञ्जने! त्वं हि शेषाद्रौ तपस्तप्त्वा सुदारूणम्।
पुत्रं सूतवती तस्मात् लोकत्रय हिताय वै।।

(ब्रह्माण्ड पुराण, वेंकटाचल माहात्म्य, तीर्थखण्ड - ५-६४)

''अंजना! तुमने इस पर्वत पर कठिन तपस्या करके लोक हितार्थ पुत्र को जन्म दिया है।

प्रसिद्धं यातु शैलोयम् अञ्जने! नामतस्तव!
अञ्जनाचल इत्येव नात्र कार्या विचारणा

(ब्रह्मांड पुराण, वेंकटाचल माहात्म्य तीर्थखण्ड-५-६५)

''अंजना! तुम्हारे नाम से यह पर्वत प्रकाशित होगा। इस विषय में किसी प्रकार की चर्या करने की आवश्यकता नहीं है।''

इस प्रकार ब्रह्मांडादिपुराणों में इस पर्वत के बारे में विशेषतः कहा गया है।

हाल ही में कुछ लोग यह बहस करते आए हैं कि किष्किंधा में स्थित एक पर्वत का नाम अंजनाद्रि है एवं हनुमान का जन्म वहाँ हुआ है। परन्तु इस कथन का न कोई शास्त्र का प्रमाण है और न कोई पुराण प्रमाण। समस्त पुराणों में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि हनुमानजी का आविर्भाव तिरुमला में ही हुआ है। इसके अतिरिक्त श्रीराम कार्य केलिए वानरराज सुग्रीव ने विश्व के कोने-कोने में स्थित वानरों को बुलाते समय कहा था कि ''अंजनाचल पर स्थित वानरों को भी बुलाकर लाइए।'' किष्किंधा में रहते हुए सुग्रीव जी ने ये बाते कहीं - इसका अर्थ है- अंजनाचल किष्किंधा में नहीं वह कहीं अन्य स्थान पर है। इस प्रकार अंजनाचल तिरुमला में ही स्थित है, ऐसा प्रामाणिक हो गया।

महाभक्त एवं प्रातः स्मरणीय हनुमान जी आजकल हिमालयों में विद्यमान हैं। हिमालय के कैलासपर्वत पर एक गुफा है जिसे 'हनुमदगुफा' कहते हैं। उस युग में यहाँ वेंकटाचल में प्रकट हुए वह महात्मा किष्किंधा जाकर वानरराज सुग्रीव के सचिव बने, तत्पश्चात् श्रीराम के दास बने एवं भयंकर युद्ध में भाग ले चुके थे। ऐसे महात्मा, अवतारी व रुद्रांश संभूत थे आंजनेय जी।

मनोजवं मारूततुल्यवेगं जितेंद्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि।।

इस में यह शंका प्रकट करने की कोई संभावना नहीं कि परमेश्वर, नारायणस्वरूप, नारायणभक्त, रामभक्त एवं रामदास आंजनेयस्वामी तिरुमला के अंजनाचल में अवतरित हुए हैं। वस्तुतः इस विषय में कोई चर्चा-परिचर्चा करने की भी आवश्यकता नहीं। इसके अलावा एक महत्वपूर्ण विषय यह है कि - किसी विषय को यथार्थ असत्य घोषित करने केलिए उस व्यक्ति को पंडित, संस्कृत भाषा विद्वान, पुराणज्ञ एवं शास्त्रविद होना आवश्यक है। यदि ऐसा पुराणज्ञ, महापंडित रूप में प्रसिद्ध हो तो सोने में सुहागा जैसा होता है। वही व्यक्ति यदि कोई पीठाधिपति हो तो उसके कथन की प्रामाणिकता बढ़ेगी। ऐसे विषयों के बारे में बोलने की योग्यता केवल शास्त्र-पुराण ज्ञाता में ही रहती है। संस्कृत से अनभिज्ञ, पुराण परिज्ञान शून्य यदि मनमानी ढंग से कहें तो उन बातों की कोई प्रामाणिकता नहीं रहेगी। वे केवल चीखें चिल्लाहटें होंगी नकि कोई प्रामाणिक कथन। उनका कोई प्रयोजन भी नहीं है। इसलिए इस कथन में कोई शंका नहीं कि आंजनेय का जन्म तिरुमला के अंजनाचल में ही हुआ। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि इस ग्रंथ में विविध शास्त्रों, पुराणों व शिलालेखों से लिए गए प्रामाणिक आधारों का उल्लेख करते हुए एवं इस अंजनाचल को ही आंजनेय की जन्मभूमि प्रमाणित करते हुए, संस्कृत शास्त्र, पुराणेतिहासों के पंडितों द्वारा लिखे गए लेख हैं। इस में बहुमूल्य निबंध हैं जो सारे विश्व में व्याप्त भक्तों का आदर प्राप्त करेंगे भी उसी प्रकार यह ग्रंथ हनुमान की जन्मभूमि संबंधी प्रामाणिक शोधग्रंथ के रूप में रहेगा।

शुभं भूयात्।

नारायण! नारायण!!

श्री शक्तिपीठ

रायलचेरुवु रोड्, तिरुपति - ५१७ ५६१

चित्तूरु जिला, आं.प्र. - दूरभाष - ०९१६०४ ५५२५५

मंत्र महेश्वरी, श्री शक्ति पीठाधीश्वरी

माताजी श्री रम्यानंद भारती स्वामी जी का दिव्य संदेश

नारायणसमारंभां शंकराचार्य मध्यमां।
श्री सिद्धेश्वरपर्यंतां, वन्दे गुरु परंपराम्।।

परम पूज्य, परमहंस परिव्राजकाचार्य कुर्तालं शंकराचार्य, श्री शक्तिपीठ व्यवस्थापक जगद्गुरु श्री सिद्धेश्वरानंद महास्वामी के पद कमल को नमन करते हुए - - - -

आरक्तजिह्वां विकटाग्रदंष्ट्रां,
शून्यांबरां सुन्दरभीषणांगीम्।
करत्रिशूलां गलमुण्डनालाम्,
कालीं करालीं सततं भजामि।।

श्री शक्तिपीठ की मूलदेवी, अनंत शक्ति स्वरूपिणी महाकाल स्वरूपिणी कालीदेवी पदकमलों को प्रणाम समर्पित कर रही हूँ।

आजकल कलियुग वैकुंठ के रूप में पूजित वेंकटाचल के बारे में महर्षि व्यास ने हमको अनेक विशेषताएँ बताई थी। आदि काल और आदियुग से भी यह क्षेत्र कितना पवित्र और शक्तिमान है, यह बात महर्षि व्यास की बातों से विदित हो रहा है।

कृते वृषाद्रिं वक्ष्यंति त्रेतायां अंजनाचलम्।
द्वापरे शेषशैलेति कलौ श्री वेङ्कटाचलम्।।

इससे हमें पता चल रहा है कि कृतयुग से लेकर आजतक इस महाक्षेत्र का किन-किन नामों से अभिहित किया गया। कलियुग वैकुंठ के रूप प्रकाशित इस पर आज श्री वेंकटेश्वर विराजमान होकर दुनिया के चारों ओर से आनेवाले भक्तों को अभय दे रहा है। इसका कारण है कि आंजनेयस्वामी का रुद्रांशसंभूत के रूप में यहाँ आविर्भाव होना। इसी कारण से यह पर्वत अंजनाचल नाम से जाना जाता है। हरि-हर, दोनों की विशेषताएँ हमें यहाँ दिखाई देते

है। इन दोनों की अवतार-विशेषताओं के पेछे एक महान शक्ति दिखाई दे रही है। वह शक्ति क्या है? वह कौन-सी महाशक्ति है? कहाँ से आई है? वात्सल्य से उत्पन्न वह, महाशक्ति एक दिव्य शक्ति है।

वेंकटेश्वर, जिनकी आज हम पूजा कर रहे है, वे उनके कृष्णावतार के समय, के उन्होंने माँ यशोदादेवी की इच्छा पूर्ण करने के लिए एक वर दान दिया था। फलस्वरूप यशोदादेवी, वकुलादेवी के रूप में अवतरित हुई। इस वैकुंठनाथ नारायण, श्री वेंकटेश्वर के रूप में अवतरित होकर यहाँ शाश्वतरूप से विराजमान है।

हनुमान का विषय भी देखें तो इस भूमंडल पर उनके अवतरित होने का कारण भी ''मातृप्रेम'' है। अंजनादेवी की तीव्र-तपस्या के फलस्वरूप वात्सल्य-मूर्ति, और मातृत्व-शक्ति का पूर्णस्वरूप रखनेवाली अंजनादेवी के गर्भ से हनुमान का आविर्भाव हुआ। चाहे 'अंजनाचल' हो, या 'वेंकटाचल', चाहे किसी भी नाम से उपासना की जाय, यह बात तो हमेशा के लिए शाश्वत रहेगी कि इस महाक्षेत्र में मातृशक्ति का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। उस ''मातृशक्ति'' के कारण ही आज वेंकटेश्वर यहाँ है। त्रेतायुग में अवतरित हनुमान, चिरंजीवि बनकर हिमालयों में प्रकाशित होते हुए भक्तों की रक्षा कर रहे हैं।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमोनमः।।

कहाजाने वाले मंत्रतुल्य श्लोक का उद्देश्य बनकर प्रेरणा देनेवाला स्थल है, यह 'वेंकटाचल'। ऐसे वेंकटाचल पर त्रेतायुग में हनुमान का उद्भव हुआ था। वाल्मीकि विरचित रामायण, हनुमान और राम की विशेषताओं के लिए अत्यंत प्रामाणिक माना जाता है। उसमें राम और लक्ष्मण की विशेषताएँ हमको दिखाई देती हैं। यही अंजनाद्रि में हनुमान का उदय हुआ था। हनुमान और राम की विशेषताओं को देखने से पता चलता है कि राम और हनुमान त्रेतायुग तक सीमित नही थे। राम और हनुमान सिर्फ पुराणपुरुषों के रूप में ही नही पुराणों और इतिहास से परे आज भारत के हर हिन्दू के मन में विराजमान हैं। हमारे भारत में रामालय, हनुमान आलय के बिना कोई भी गॉव नहीं होगा। उनके चित्रपट के बिना कोई घर भी नहीं होगा। इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। इसलिए ऐसी देवताओं के बारे में, व्यास भगवान के पुराणों के द्वारा उपलब्ध प्रमाणों को परखने से हनुमान जन्मस्थल का मामला हमको स्पष्ट दिखाई देता है। महर्षि वेदव्यास स्कंद-वराह-ब्रह्मांड-भविष्योत्तर पुराणों में हनुमान का जन्म इतिवृत्त, अंजनाचल माहात्म्य एवं वेंकटाचल की विशेषताओं का उल्लेख किया गया।

राम की कथा हर प्रांत के लोगों व हर भाषा के लोगों से संबंधित है। रामायण से जुडे ग्रंथ हर भाषा में प्रकाशित है। हनुमान की जन्म-कथा से संबंधित विशेषताएँ रामकथाओं में दिखाई देती हैं। हमारे दक्षिण भारत में विविध भाषाओं की विशेषताओं पर ध्यान देने से तमिल की कंबरामायण से यही बात स्पष्ट होती है। पुरंदरदास ने

अपनी कृतियों में यही कहा कि 'हनुमान का जन्मस्थान इसी वेंकटाचल पर है' इस प्रकार भाषा और प्रांत से परे अंजनाद्रि की विशेषताएँ व्यक्त की गई। केवल आदिकाल की महर्षियों तथा उनके बाद के महात्माओं के कथनों से ही नही अनेक शिलालेखों द्वारा और भौगोलिक अनुसंधानों द्वारा भी यह स्पष्ट रूप से निरूपण हुआ कि अंजनाद्रि तिरुमला पर ही थी। न केवल दक्षिण भारत के हंपि क्षेत्र में, बल्कि उत्तर भारत देश के विविध प्रांतों में हनुमान का जन्म हुआ है - ऐसी जनवाणी हमें सुनाई दे रही है। स्थल पुराण और स्थल प्रसिद्धि से संबंधित कथाओं में ऐसा भिन्न मत सहज दृग्गोचर होते हैं। केवल हनुमान जन्मस्थान के विषय में ही नहीं, बल्कि अन्य विषयों के बारे में भी अनेक भिन्न विचारों का व्यक्त होना स्वाभाविक है।

तो इनकी प्रामाणिकता क्या है? कितनी है?, यह सच है कि नही? सिर्फ लोगों की भक्ति और जनवाणी से संबंधित है क्या? इस दृष्टिकोण से अनुसंधान होने की आवश्यकता है। हनुमान दुनिया भर के अनेक करोडों लोगों के दिल में व्याप्य है। ऐसा हनुमान से संबंधित कोई भी विषय हो, बडी सावधानी से किसी की भी मनोभावनाओं को ठेस न पहुँचाते हुए, सत्यासत्यों को अत्यंत जागरूकता से जाँच करके निरूपण करने की आवश्यकता है। यह जिम्मेदारी ति.ति.दे. ने उठाई। श्री प्लव नाम वर्ष उगादि के अवसर पर इन सारी विशेषताओं को प्रामाणिकता के साथ, एक लघु पुस्तक का रूप प्रदान किया। उसके बाद विविध शास्त्रों के पुराणों के इतिहास, पुरातत्वशास्त्र के विद्वानों को आमंत्रित करके एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में समर्पित किये गए। शोधलेखों को संकलित करके एक समग्रग्रंथ रूपायित किया गया। इस विशेष ग्रंथ में हनुमान की जन्मभूमि से संबंधित अनेक बात और प्रमाण हैं। इस महत्वपूर्ण ग्रंथ को जागरूकता के साथ परखने से हनुमान के जन्मस्थान के बारे में किसी के भी कोई भी संदेह होने की संभावना नही होगी।

हनुमान के जन्मस्थान के मामले में कुछ व्यक्ति अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण (या) तिरुमला पुण्यक्षेत्र पर द्वेष के कारण, यहाँ स्थित मातृशक्ति पर विश्वास न होने के कारण विद्वान और अनुसंधान करने वाले पौराणिक-ऐतिहासिक-शिलालिखित आधारों के साथ निरूपण करने के बावजूद कुछ लोग, अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए (या) तिरुमला-पुण्य-क्षेत्र पर द्वेष के कारण असत्य और बेमतलबी बातों को प्रचार कर रहे हैं। यह निस्संदेह धर्म और दैव द्रोह है। स्वयं हनुमान भी इनका समर्थन नही करेगा। धार्मिक और पौराणिक विषयों में कोई शंका उठता है, तो उसकी निवृत्ति के लिए एक शास्त्रीय पद्धति होती है। ऐसा नही है कि मेरे मुँह में जीभ है कि मैं कुछ भी बोल सकता हूँ।

दोषारोपण करें तो भक्तों के द्वारा यह सत्य माना नहीं जाता। आज ति.ति.दे. नामक धार्मिक-संस्था केवल भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया भर में हिन्दू-धर्म की व्याप्ति करने में बहुत प्रयास कर रही है। हिन्दू-धर्म की रीढ़ की हड्डी बनी हुई है। उस महाक्षेत्र से संबंधित व्यक्तियों, विद्वानों, पंडित लोगों ने समग्र विश्लेषण के साथ उस महाक्षेत्र

के बारे में एक शोध ग्रंथ दे रहे हैं तो हमें उसे स्वीकारना ही है। ति.ति.दे. विद्वान परिषद सावधानी से परखकर, अनुसंधान करके वास्तविक बातों को जनता में बॉटने के लिए इस जिम्मेदारी को स्वीकृत किया। इसमें उनका कोई व्यक्तिगत प्रयोजन नहीं है।

''मैं अपनी इच्छानुसार बात करूँगा, आपकी कही गई बात नहीं मानूँगा, जो मैंने सोचा, वही सच है''- इस रूप में सोचनेवाले अगर इसे नहीं मान सकते तो उनको छोड़ दीजिए।

लेकिन असत्य प्रचार करके भक्तों की मनोभावनाओं को ठेस नही पहुँचाना। इस बात को मन में रखते हुए व्यवहार करना जरूरी है। महिमान्वित महर्षियों के शब्द ही जगद्विदित सत्य है इस बात पर विश्वास करते हुए अखिलांड कोटि ब्रह्मांडनायक श्री वेंकटेश्वर स्वामी विराजित अंजनाचल ही हनुमान की जन्मभूमि है - इस बात को हम पूर्ण विश्वास के साथ स्वीकार रहे हैं। निस्संदेह रूप से अंजनाद्रि, तिरुमला पुण्यक्षेत्र में ही है। इस में कोई संदेह नहीं। यहीं आशा है कि हनुमान जन्म स्थान के अनुसंधान-यज्ञ में जिन्होंने भाग लिया, उन सबको हनुमान का और अंजनादेवी का आशीर्वाद मिलेगा।

स्वस्ति।

फोन-९५०५७ १८४५२

श्री शुकब्रह्माश्रम

स्वामी विद्याप्रकाशानंद नगर,
श्री शुकब्रह्माश्रम (पोस्ट), श्रीकालहस्ति-५१७ ६४०.
चित्तूर-जिला

श्रीकालहस्ति
06-02-2022

पूज्य श्री विद्या स्वरूपानंदगिरि स्वामी जी

पीठाधिपति,
श्री शुकब्रह्माश्रम,
श्रीकालहस्ति, चित्तूर-जिला।

दिव्य संदेश

तिरुमला तिरुपति देवस्थान के कार्यकारी अधिकारी श्री के.एस.जवाहर रेड्डी जी को - नारायण स्मरण के साथ -

हे पवित्रात्मा स्वरूप!

आपका दिनांक ०५.०२.२०२२ वाला पत्र प्राप्त हुआ। कलियुग वैकुण्ठ के रूप में प्रसिद्ध तिरुमला के सप्ताचलों की अंजनाद्रि में अंजनापुत्र ने जन्म लिया था। यह बात अनेक पुराणों में उल्लिखित है।

श्रीराम जन्मस्थल के अनुरूप ही रामकार्य सिद्धि के लिए अवतरित हनुमान को जन्म स्थान को विख्यात बनाने का सुसंकल्प लेकर आप धन्य हो गए। सुप्रसिद्ध विद्वानों के प्रयास से अनेक प्राचीन ग्रंथों का शोध कराकर आंजनेय स्वामी का जन्मस्थल का निर्णय करने में आप सफलीकृत बन गए हैं। इस संदर्भ में आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तक का विस्तृत प्रचार होगा। मैं इसके लिए नारायण स्मरण के साथ हमारा शुभाशिष, इस पत्र के जरिये आपको दे रहा हूँ।

अंजनाद्रि पर भक्तों के संदर्शन के लिए निर्माणों की व्यवस्था करना अत्यंत समुचित है। यह भगवान के लिए अत्यंत प्रीतिकर कार्य है।

दुष्टानां शिक्षणार्थाय शिष्टानां रक्षणाय च।
रामकार्यार्थ सिध्यर्थं जातः श्री हनुमान् कपिः।।

आर्षवाङ्मय कहता है कि दुष्टों को दंड देने के लिए, शिष्टों की रक्षा के लिए, श्रीराम का कार्य सफल बनाने के लिए श्री हनुमान अंजनाद्रि पर अवतरित हुए थे।

कलियुगदैव श्रीनिवास की कृपा से यह शुभ और निर्माणात्मक कार्यक्रम अबाध गति से संपन्न हो जाय। इसके द्वारा हनुमान के भक्तों की इच्छाएँ पूर्ण हो जाएँ।

लोकास्समस्तास्सुखिनो भवन्तु।।

ओम्

भगवान की सेवा में

स्वामी विद्यास्वरूपानंदगिरि स्वामीजी

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीश्रीश्री शठगोप रामानुज पेद्द(बडे)
जिय्यंगार (जीयर/महात्मा) स्वामी
श्री पेद्द(बडे) जीयर स्वामी मठ

श्रीमद्वेदमार्ग-प्रतिष्ठापनाचार्योभय-
वेदांत-प्रवर्तक-श्रीमत्परमहंस-
परिव्राजकाचार्य, तिरुमला-तिरुपति,
तिन्नवूरु-देवस्थान, धर्मकर्ता
पेरिय कोविल केल्वि अप्पन
श्रीश्रीश्री शठगोप रामानुज पेद्द(बडे)
जिय्यंगार (जीयर/महात्मा) स्वामी
श्री पेद्द(बडे)जीयर मठ, २२७
जी.एन.माडावीथी - तिरुपति-५१७ ५०१.

नारायण स्मरण पूर्वक लिखित पत्र

दि. १९-०२-२०२२

नमो नारायणाय।

भगवद्रामानुज महाराज ने अपने १२० वर्षों के जीवन काल में ०३ बार तिरुमला पधारकर, अनेक प्रकार के शिष्टाचारों व सेवाओं को प्रवर्तित करके, आज हमें श्रीनिवास रूपी बहुमूल्य स्वर्णभण्डार को प्रदान किया है।

श्री रामानुजाचार्यजी ने तिरुमला-तिरुपति मंदिरों में की जानेवाली सेवाएँ व उत्सव सम्प्रदाय के अनुसार श्री वैखानस आगम की अर्चना-विधि एवं श्रीवैष्णव सम्प्रदायानुसार किए जाने की सुदृढ़ व्यवस्था की थी। तब से लेकर आजतक उनकी आज्ञा के अनुसार ही तिरुमला-तिरुपति मंदिरों में सेवाएँ पूर्ववत् ही आयोजित की जा रही हैं।

प्राचीन काल में तिरुवेंगडम् में विराजमान दिव्य (अर्चा) मूर्ति के विषय में जब मतभेद उत्पन्न हुए थे, तब भगवद्रामानुज महाराज ने, स्थानीय शासक यादवराज के दरबार में अन्य धर्मावलंबियों के साथ यह वाद-विवाद करके कि ''तिरुमला में विराजमान मूर्ति स्वयं श्री महाविष्णु 'श्रीनिवास' ही है'' इसके प्रमाण में अनेक वेद, पुराण, इतिहास व दिव्यप्रबंधों (तमिलग्रंथों) का उल्लेख करनेवाले एवं अपने योग व तपोबल से भगवान श्रीनिवास को शंख-चक्रों से अलंकृत करनेवाले, इस जगत केलिए 'वह दिव्यमूर्ति श्रीनिवास ही है' - कहकर भगवान ''बालाजी श्रीनिवास के ही आचार्य'' बननेवाले अत्यंत उत्कृष्ठ स्थान प्राप्त करनेवाले थे, भगवद्रामानुज महाराज जी।

ये बातें श्री रामानुज के शिष्य ११वीं सदी में जीवित अनंताल्वारजी द्वारा विरचित संस्कृत रचना 'श्री वेंकटाचल इतिहासमाला' नामक ग्रंथ द्वारा हमें अवगत हुई।

इस महान ग्रंथ में यह उल्लेखित था कि आचार्य रामानुज महाराज ने यादवराज की विद्वत-सभा में वेंकटाद्रि (तिरुमला) एवं बालाजी श्री वेंकटेश महाराज भगवान के बारे में स्पष्टतः घोषित व प्रमाणित कथनों को प्रस्तुत किया था कि वे ही श्री महाविष्णु के अवतार 'श्रीनिवास' हैं। ब्रह्म, वामन, गरुड, वायु, पद्म, वराह, ब्रह्माण्ड, मार्कण्डेय, भविष्योत्तर पुराण, ऋग्वेद का आठवाँ (८वाँ) अष्टक, हरिवंशातर्गत शेष धर्म पुराण, पांचरात्र-वैखानसादि भगवत् शास्त्र, आल्वारों द्वारा विरचित विशेषतः प्रातःस्मरणीय श्री नम्माल्वार द्वारा हमें प्रदत्त तिरुवायमोलि नामक दिव्य प्रबंध में वेंकटाचल व वेंकटेश भगवान के बारे में बताए गए विषयों को श्री रामानुजाचार्यजी ने सभासदों के समक्ष प्रस्तुत किया था।

इसी ग्रंथ में रामानुजाचार्य महाराज द्वारा बनाई गई ''जीयरव्यवस्था, उनके तत्वावधान व उनकी उपस्थिति में किए जानेवाले विविध दैवी कार्यों एवं सेवाओं का स्पष्ट उल्लेख हैं।

चूँकि इस ग्रंथ ने हमें श्री रामानुजाचार्यजी द्वारा स्पष्ट किए गए श्री वेंकटेश्वर तत्व को प्रदान किया था, हम इसे परम प्रामाणिक मानते हैं।

''सत्यं सत्यं पुनः सत्यं यतिराजो जगद्गुरुः'' नामक श्लोक के अनुसार हमें श्री रामानुजाचार्य महाराज की वाणी ही सर्वमान्य, शिरोधार्य एवं वेदमंत्र भी है।

''तिरुमलै ओलुगु'' नामक ग्रंथ द्वारा हमें भगवद्रामानुजाचार्य से स्थापित विशिष्टाद्वैत-धर्म, तिरुमला बालाजी वेंकटेश भगवानजी के लिए निर्धारित विशिष्ट सेवाएँ व अन्य मंदिर संबंधी अनेक विषयों की जानकारी प्राप्त होती है।

वेंकटाचल इतिहासमाला, तिरुमलै ओलुगु, वेंकटाचल माहात्म्य इत्यादि से हमें तिरुमला-वैभव अवगत होता है। इनमें से वेंकटाचल माहात्म्य पुराण भागों का संकलन है।

भगवद्रामानुज द्वारा प्रदत्त वेंकटाचलइतिहासमाला के आधार पर सन् १४९१ ई. में वेंकटत्तुरैवर (रामानुजय्यन) ने द्वादश (१२) पुराणों में उल्लिखित श्री वेंकटाचल क्षेत्र माहात्म्य का वर्णन करनेवाले भागों को ''वेंकटाचल माहात्म्य'' के रूप में संकलित किया था।

वेंकटाचल माहात्म्य-क्रीडाचल-आविर्भाव से लेकर बालाजी वेंकटेश के अवतार पर्यन्त अनेक गाथाओं का उल्लेख करता है। उसमें यह स्पष्टतः द्रष्टव्य है कि वेंकटाचल सात पर्वत-शिखरों से युक्त है। इसीमें यह भी विशेषतः लिखा गया है कि श्री रामायण काल में माता अंजनादेवीजी ने जो वानर समूहों से संबंधित थी- पुत्र-प्राप्ति हेतु इस पर्वत पर रहती हुई तपस्या की थी। अतः हम यह कह सकते हैं कि इस कारण इस पर्वत का नाम अंजनाद्रि पडा हैं। इस तपस्या के फलस्वरूप एवं वायुदेव की अनुकम्पा से माता अंजनादेवी की कोख से बजरंगबली ''हनुमान'' अवतरित हुए।

हमें यह स्मरण में रखना चाहिए कि श्री रामानुजाचार्यजी ने यह नियम बनाया था कि जिस प्रकार बजरंगबली हनुमानजी के भगवान श्रीराम की सेवा की थी, ठीक उसी प्रकार जीयरों को चाहिए कि वे भी भगवान श्री वेंकटेश की विविध सेवाएँ करें। इसी कारण पूर्व जीयर महाराज ने अपने मठ में श्री सीता-राम लक्ष्मणों की मूर्तियाँ स्थापित की, हनुमान-ध्वज व हनुमान सील (Seal) बनाकर दिये एवं वेंकटाचल में महाभक्त हनुमान की विशिष्टता को प्रकट किया है।

हमें भगवान बालाजी श्री वेंकटेश के सहस्रनामों में ''**वायुसूनकृत सेवाय नमः**'', ''**अंजना-कृत पूजवते नमः**'', ''**अंजनाद्रि निवासाय नमः**'' तथा अष्टोत्तर शतनामों में भी **सदंजनगिरीशाय** ''**श्री वेंकटेशाय नमः**'' ''**अंजनागोत्रवते श्री वेंकटेशाय नमः**'' नामक दिव्य नाम (मंत्र) विद्यमान हैं।

श्रीमत् वेदमार्ग प्रतिष्ठापनाचार्य, उभय वेदान्त प्रवर्तकाचार्य, भगवद्रामानुज का पुनरवतार स्वनामधन्य श्रीमणवाल महामुनि की आज्ञा के अनुसार महान भक्त कवि प्रतिवादी भयंकर अण्णन स्वामीजी ने वेंकटेश सुप्रभात, प्रपत्ति, मंगलाशासनम्, गोविंदराज सुप्रभात, प्रपत्ति, मंगलाशासनम् इत्यादि स्तोत्ररत्न लिखे थे। उन्होंने भी ''अंजनाशैलनाभ स्तोत्र'' में श्री वेंकटेश्वर भगवान की स्तुति की थी। ऐसे महान अंजनाद्रिनाथ श्री वेंकटेश्वर भगवान के वैभव का हम सभी निरंतर स्मरण करते हुए तर जाएँगे।

मंगलाशासनों के साथ...

हस्ता./-

श्री वेंकटेश्वर

श्री पेद्द(बड़े) जीयर जी

तिरुपति।

श्रीमते रामानुजाय नमः
तिरुमला तिरुपति सिंगराय कोण्ड इत्यादि देवस्थानों के न्यासी
इमलकोविल केल्वि अप्पन
श्रीश्रीश्री गोविंदरामानुज चिन्न(छोटे) जिय्यंगार (जीयर/महात्मा),
चिन्न जीयर स्वामी मठ,
गृ.सं.१६१, गोविन्दराजस्वामी मार्ग, तिरुपति-५१७५०१. फोन.नं-०८७७-२२२२५७५.

ॐ नमो नारायणाय।

श्रीमते रामानुजाय नमः।

भगवद्रामानुजाचार्यजी ने भगवान वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर में की जानेवाली समस्त सेवाओं व उत्सवों को संप्रदाय के अनुरूप श्री वैखानस आगम के अनुसार करने की सुदृढ़ व्यवस्था कर ली है। तब से लेकर आज तक उनकी आज्ञा के अनुसार ही तिरुमला में सेवाएँ व कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

उसी प्रकार प्राचीन काल में तिरुमला क्षेत्र में विराजमान भगवान की मूर्ति के विषय में जब अनेक शंकाएँ उत्पन्न हुईं तब भगवद्रामानुज ने अधिक श्रम करके तिरुमला श्रीनिवास जी का माहात्म्य प्रमाणित करनेवाले पुराणों के अंशों को लेकर एक क्रमिक पद्धति में यादव राज की सभा में घोषित करके, पुराणों में से ही अपेक्षित अनेक अंश व विशेषकथन लेकर सभी के समक्ष प्रस्तुत किया था। श्री वेंकटाचल इतिहास माला में श्री अनंताचार्य ने निम्न लिखित रूप से निर्देशित किया था :

''अथ श्री वेंकटाचल माहात्म्य परिशीलनम्। तत्पर्वतः साधारण कतिपथ-धर्म विशेष व्यवस्थापन-वृत्तांतः उच्यते। श्री वेंकटाचल माहात्म्य विषय पुराण भागान् समंततः परिशीलयन् भगवान रामानुज मुनिः।'' ऐसा कहते हुए इस वृत्तांत का उल्लेख किया गया था।

भगवान श्रीनिवास को प्रमाणित करने के लिए श्री रामानुज द्वारा यादवराज की सभा में प्रस्तावित किए गए विषयों का अनंताल्वार जी ने 'वेंकटाचलइतिहासमाला' में उल्लेखित किया था।

३०० वर्षों के पश्चात् तत्कालीन पंडितों ने उन पुराण भागों का वेंकटाचल माहात्म्य नामक ग्रंथ में संकलित किया था।

वेंकटाचल माहात्म्य में तिरुमला पर्वतों में स्थित विविध बडे-छोटे पर्वतों की विशिष्टताओं का भी वर्णन किया गया। इसमें अंजनाद्रि के बारे में यह लिखा गया था कि माता अंजनादेवी ने तिरुमला पर तपस्या की थी।

पुराण-इतिहासों द्वारा यह विदित होता है कि माता अंजनादेवी की तपस्या की शक्ति से, वायुदेव की कृपा से लोक हितार्थ महावीर हनुमान श्रीराम के सेवक के रूप में अवतरित हुए।

मंगलाशासनों के साथ।

हस्ता./-

श्री चिन्न(छोटे) जिय्यंगार

श्री चिन्न जीयर मठ

तिरुपति।

श्रीमत् श्रीवन्शठगोप श्रीरंगनाथ यतींद्र महादेशिक स्वामी जी
श्री अहोबिल मठ, अहोबिल।

दिव्य संदेश

मंगलानि भवन्तु। आपका पत्र दि. ५.५.२००२ जिसे परमपूज्य ४६वाँ जीयर श्री अहोबिल मठ के नाम पर आपने प्रेषित किया था - प्राप्त हुआ। हिन्दू पौराणिक सम्प्रदाय की महान विभूतियों एवं मूर्तियों में से एक है, जो श्री हनुमान जी, उनकी जन्मभूमि को निर्धारित करने के लिए ति.ति.दे. द्वारा किए जानेवाले प्रयासों को जानकर प.पू.४६वाँ जीयर बहुत प्रसन्न हुए। सप्त पर्वतों में से एक पवित्र पर्वत अंजनाद्रि ति.ति.दे. के निष्कर्षानुसार जन्मभूमि है। इससे तिरुमला पर्वतों की पवित्रता में जो परमात्मा श्रीनिवास की उपस्थिति के कारण हुई - और वृद्धि हुई। इस संबंध में अनेक ऐसे पौराणिक निर्देश हैं जो इस दावे को सुदृढ़ बनाते हैं।

वैचारिक भिन्नताएँ हो सकती हैं परन्तु वे इस विषय पर ति.ति.दे. के प्रयासों को न्यूनतम नहीं कर सकती। ४६वाँ जीयर का अनुरोध है कि ति.ति.दे. हमारे वैभवशाली धार्मिक सम्प्रदाय के समर्थन में इस प्रकार के और प्रमाण प्रकट करते रहें।

हस्ता./-

कृते परम पूज्य श्री
अहोबिल मठ का ४६वाँ जीयर
अहोबिल मठ।

श्री यतिराज जीयर स्वामी जी

श्री यदुगिरि यतिराज मठ

मेल्कोटे, कर्नाटक

दिव्य संदेश

हम यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ कि आप श्री हनुमान (श्री आंजनेय) की जन्मभूमि संबंधी एक पुस्तिका प्रकाशित कर रहे हैं जिसमें सुप्रसिद्ध विद्वानों द्वारा लिखे गए शोधपरक लेख संकलित किए गए हैं। विविध पुराणों व शास्त्रों में से सूचना व प्रमाण लेकर की जानेवाली यह सेवा सचमुच बड़ी उत्कृष्ठ एवं उल्लेखनीय सेवा है।

आपके द्वारा निर्देशित विविध पुराणों के आधार पर इस निष्कर्ष पर हम पहुँचे कि भगवान श्री वेंकटेशजी के सप्त पर्वतों में से एक, जो है अंजनाद्रि पर्वत, श्री हनुमान जी की जन्मभूमि है। ति.ति.दे. वर्तमान में इस समय विद्यमान हनुमान मंदिर का श्रद्धालुओं की सुविधाएँ ध्यान में रखते हुए पुनरुद्धरण करने केलिए आवश्यक कदम उठा रहा है। यह सचमुच एक ऐसा पवित्र कार्य है जिसे आगामी पीढ़ियाँ याद रखेंगी। कन्नड में एक मुहावरा है - ''बिना हनुमान के कोई गाँव नहीं है।'' ति.ति.दे. जो भी योजना हाथ में लेता है, निस्संदेह वह भगवान श्रीनिवास की अनुकम्पा से विशेषतः सफल हो जाती है। अंजनाद्रि एक दिव्य केन्द्र बनेगा।

ऐसी अद्भुत पहल करनेवाले ति.ति.दे. का मैं अभिनंदन करते हुए इसे सफल बनाने के लिए भगवान श्रीनिवास से प्रार्थना करता हूँ।

श्री रामानुज की सेवा में
श्री यतिराजः
(श्री यतिराज जीयर स्वामी)

श्री श्रीमत् सुबुधेन्द्र तीर्थ स्वामी जी का अनुग्रह संदेश

श्री राघवेंद्र स्वामी मठ, मंत्रालय।

श्री प्लवनाम संवत्सर माघ बहुल चतुर्दशी, मंगलवार दि. ०१.०३.२०२२

तिरुमला तिरुपति देवस्थान के समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों को शुभाशिष्।

यह जानकर हमें बड़ी प्रसन्नता हुई कि तिरुमला तिरुपति देवस्थान श्री आंजनेय स्वामीजी का तिरुमला पर्वतों में मंदिर निर्मित कर रहा है।

भविष्योत्तर पुराण के अन्तर्गत श्री वेंकटाचल माहात्म्यम के प्रथम अध्याय में यह उल्लिखित है कि इस पर्वत के चारों युगों में भिन्न-भिन्न नाम हैं। त्रेतायुग में इस पर्वत को अंजनाचल नाम से जाना जाता था, जिसके कारणों का विवरण भी यहाँ दिया गया है। 'केसरी' नामक कपिवर की पत्नी अंजनादेवी, संतान न होने के कारण महर्षि मतंग से प्रार्थना की तो उन्होंने कहा था इस पर्वत पर स्थित आकाशगंगा तीर्थ में पवित्र स्नान करके यदि बारह वर्षों तक तपस्या करें तो पुत्र संतान प्राप्त होगी।

यहाँ 'बारह वर्ष' शब्द केलिए 'द्वादशाब्द' - शब्द का प्रयोग किया गया है।

स्वामितीर्थसरः स्नानं अश्वत्थ प्रदक्षिणम्।
वराहदेव नमनं तत्तीरं प्राशनं तथा।।
चतुर्विधानां एतोषां आब्दसंख्यां प्रकल्पयेत्।।

(इति नारायणस्मरण।)

उपर्युक्त प्रमाण के अनुसार अंजनादेवीजी प्रतिदिन स्वामिपुष्करिणी स्नान, अश्वत्थवृक्ष की परिक्रमा, श्री वराह स्वामीजी का दिव्य दर्शन, तीर्थ प्रशन इत्यादि चार प्रकार के कार्य तीनों काल में बारह वर्षों तक करने पर

पूर्णे संवत्सरे जाते वायुदेवो महाबलः
फलमादाय भक्त्यार्थं प्रत्यहदापयन्मरुत्।।
अर्थ किंचिद्दिने वायुः फले वीर्यं प्रपूरयत्।
वीर्यगर्भफलं तस्याः प्राक्षिपत् करसम्पुटे।।

वायुदेव ने एक फल में अपनी शक्ति भरकर अंजनादेवी जी को प्रदान किया। उस फल को खाकर अंजनादेवी ने वायुदेव के कारण गर्भ धारण करके नौ माह पूरा होने के बाद एवं अतिसुंदर पुरुष शिशु को जन्म दिया था। उस शिशु को 'हनुमान' नाम दिया गया था।

अञ्जनावृत मास्थाय पुत्रं प्राप गिरीश्वरे।
तस्मादंजन शैलेयं लोक विख्यात कीर्तिमान्।।

इस प्रकार श्री वेंकटाचल माहात्म्य के प्रथम अध्याय के सातवें (०७) श्लोक द्वारा यह पता चलता है कि इस पर्वत में तपस्या करके माता अंजनादेवीजी ''हनुमान'' नामक पुत्र प्राप्त करने पर इस पर्वत का नाम ''अंजनाचल'' पडा। अतः कल्पभेद के कारण अंजनादेवीजी यहाँ एक पुत्र संतान से लाभान्वित हो गई।

इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं कि इस प्रकार अत्यंत महिमान्वित तीन करोड तीर्थों का जन्मस्थान, वैकुण्ठपति श्री श्रीनिवास भगवान का दिव्यस्थान तिरुमला, आप जैसे सेवा तत्पर अधिकारियों की निष्ठा एवं श्रम से दिन-ब-दिन प्रगति के मार्ग पर अग्रसर हो रहा है।

वर्तमान में तिरुमला में आकाशगंगा तीर्थ के निकट स्थित श्री बालांजनेय स्वामीजी का भव्य मंदिर भक्तों के लिए अत्यंत प्रीतिपात्र है।

अतः श्रद्दालू बड़ी संख्या में आकर माता अंजनी देवी सहित बालांजनेय स्वामी जी का दर्शन करके उनकी विशेष अनुकंपा प्राप्त कर रहे हैं। इसलिए हम चाहते हैं कि भक्तों की सुविधा हेतु वहाँ के आंगन की वृध्दि करें एवं उन्हें हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध कराएँ। इस पुनीत कार्यक्रम में भाग लेनेवाले अधिकारियों व कार्यकर्ताओं की समस्त मनोकामानाएँ पूरी करने के लिए हम अस्मद्गुर्वन्तर्गत श्री राघवेन्द्र तीर्थ गुर्वन्तर्गत भारतीरमण मुख्य प्राणांतर्गत श्रीमन्मूल रघुपति वेदव्यास जी महाराज से प्रार्थना करते हैं।

इति नारायणस्मरण।

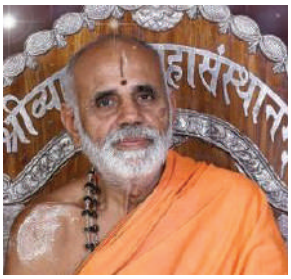

॥ श्रीः ॥

श्रीश्री विद्याश्रीषा तीर्थ स्वामी जी

व्यासराज मठ (सोसले)

Thirumakudlu, T. Narasipura Taluk, Byrapura Post,
Mysuru District, Karnataka

दिव्य संदेश

हमें यह जानकर बडी प्रसन्नता हुई कि ति.ति.दे. भगवान हनुमान जी के जन्मस्थान के बारे में उत्कृष्ट एवं प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा विरचित शोधपरक लेखों से युक्त एक पुस्तिका को प्रकाशित करने वाला है। हमें यह भी पता चला कि ये सभी लेख पुराणों के आधार पर लिखे गए जिन के निष्कर्ष के अनुसार वह स्थान तिरुमला का अंजनाद्रि ही है एवं जहाँ हनुमान की माता अंजनादेवी जी ने उनको जन्म दिया है।

चूँकि केवल पुराणों पर ही विचार करना है एवं उनको ही हनुमान के जन्मस्थान का प्रमाण मानना है। हमारा यह मानना है कि हम सभी को श्रेष्ठ विद्वानों का निष्कर्ष ही स्वीकार्य होना चाहिए। उपर्युक्त विषय को निश्चित रूप से स्थापित करने एवं ईमानदारी से कार्य करने के लिए हम कार्यकारी अधिकारी श्री डॉ.के.एस.जवाहर रेड्डी जी, अपर कार्यकारी अधिकारी, श्री ए.वी.धर्मरिड्डी जी तथा अन्य अधिकारी-बृंद का अभिनंदन करते हैं।

हम आशा करते हैं कि अंजनाद्रि पर हनुमान जी का एक भव्य मंदिर बनाने केलिए ति.ति.दे. समुचित कदम उठाएगा।

नारायण स्मरणों के साथ।

हस्ता./-

श्री श्री विद्याश्रीषा तीर्थ स्वामी जी
पीठाधिपति, श्रीव्यासराजमठ, (सोसले)।

श्री सत्यात्म तीर्थ श्रीपाद जी का दिव्य संदेश

उत्तरादि मठ

Sri Satyapramoda Teertha Road, (5th Cross), Shankarapuram,
Basavanagudi, Bengaluru - 560004

विषय :- आंजनेय अवतार स्थान संबंधित - विचार

विषयोपक्षेपम् :- आंजनेय का अवतार अंजनाद्रि में यानी तिरुमला में ही हुआ। इसके संबंध में अनेक प्रमाण है। वाल्मीकि कृत रामायण और संग्रह रामायण में भी इनका वर्णन उपलब्ध होता है कि मेरु पर्वत में ही हनुमान का जन्म हुआ है। कुछ विद्वनों का मत है कि हनुमान का अवतार हंपी क्षेत्र में हुआ है। इन विषयों के संबंध में विस्तार विवरण देखिए।

ब्रह्मांड एवं भविष्य पुराणों का अवलोकन करने वालों को यह स्पष्ट होता है कि हनुमान का अवतार अंजनाद्रि में यानी तिरुमला में ही हुआ है। उन पुराणो के वचन (यहाँ) निम्न वर्णित है :-

पहले ब्रह्माण्ड पुराण के वेंकटेश माहात्म्यम् के ५वीं अध्याय के श्लोक पर ध्यान देंगें।

उदयाचल संरूढम् ददर्श रवि मंडलम्
नितांत रक्त वर्णेन, फल बुद्धिरभूत्तदा।।४६।।
फल मित्येव मन्वानो रविम् भक्षितमुद्यतः
ग्रहिष्यामिति निश्चित श्री वेंकटगिरेस्तटात्।।
उदतिष्टन्म हावेगादुदयाचल शेखरम्।।४७।।

सूर्य भगवान को सताने के लिए राहु तैयार था। उस राहु का सामना करने के लिए वेंकटशिखर से हनुमान आकाश की तरफ लाँघा। यानी हनुमान का जनन श्री वेंकटशिखर में ही हुआ है। इस वचन से यह बात साबित होता है। इसी पुराण में इसी प्रसंग में और एक विषय भी है, शेषाचल में तपस्या करके इसी पहाड़ पर पुत्र को जन्म देने के कारण इस पर्वत को अंजनाचल नाम से विख्यात होगा करके, साक्षात् ब्रह्मा ने अंजनादेवी को आशीर्वाद पूर्वक वरदान दिया था।

ऐसे वरप्रदान करते हुए कहा था :-

अञ्जने त्वम् हि शेषाद्रो तपस्तप्त्वा सुदारूणम्
पुत्रम् सूतवती यस्मात् लोकत्रय हिताय वै।।६४।।
प्रसिद्धिम् यातु शैलोयमजने नाम तत्सव
अञ्जनाचल इत्येव नात्र कार्य विचारणा।।६५।।

भविष्योत्तर पुराण के 'वेंकटाचल माहात्म्यम' में भी यह बताया गया कि हनुमान का अवतार वेंकटाचल में ही हुआ। वहाँ के प्रमाण-वचन इस प्रकार है।

अञ्जना व्रतमास्थाया पुत्रम् प्रापगिरीश्वरे।
तस्मादञ्जन शैलोयम्, लोके विख्यात कीर्तिमान्।।१.७७।।
पाकांतरं प्राप्तपुत्रा भवद्गिरौ।

माता अंजनादेवी इस वेंकटाचल श्रेत्र में तपस्या करके पुत्र को जन्म देने के कारण पर्वत अंजनाचल नाम से विख्यात हुआ। इस प्रसंग में ''प्राप्तपुत्रभवद्रगिरौ'' नामक पाठ भी यही स्पष्ट करता है कि हनुमान का अवतार स्थान वेंकटाचल ही है। इन समस्त वचनों पर ध्यान देने से यही स्मष्ट होता है कि हनुमान का अवतार वेंकटाचल में, यानी तिरुमला में ही हुआ है।

वाल्मीकि कृत संग्रहरामायण में वर्णित हनुमान-अवतार

वाल्मीकि रामायण उत्तराकाण्ड के ३५वीं सर्ग में वर्णित है कि अंजना केसरी दम्पतियों का आवास स्थान मेरुपर्वत ही है। अवतार प्रसंग भी यहीं उल्लेखित है।

सूर्यं दत्तवर स्वर्णः सुमेरुरनाम् पर्वतः।
यत्र राज्यमा प्रशास्त्यस्य केसरी नाम वै पिता।।१९।।
तस्य भार्या बभूवैषा त्याञ्जनेति परिश्रुता।
जनयामास तस्यां वै वायुरात्मजमुत्तमम्।।२०।।

सूर्य भगवान के वरदान के कारण स्वर्ण वर्ण विभूषित बना था मेरुपर्वत। इस मेरुपर्वत पर केसरी नामक कपि राजा राज्य का पालन कर रहा था। उसकी पत्नी अंजना। वह अंजनादेवी ने हनुमान को जन्म दिया था। उपर्युक्त वचन के द्वारा हनुमान का अवतार मेरुपर्वत पर ही हुआ है।

नारायण पंडिताचार्य जी के कृत संग्रहरामायण किष्किंधा काण्ड के पहले सर्ग में वाल्मीकि रामायण का अनुसरण करते हुए इस बात को स्पष्ट करती है:- इस वचन पर ध्यान दीजिए।

प्लवंगमानाम् गत, आदिराज्यम् प्लवंगमः केसरिनामधेयः
मेराद्रसांजनया सुगात्र्या शच्या शचीकांत इव द्यूलोके
असूत सूनुम् तमसाम् विनाशम् तमांजना, सज्जनकंजबंधुम्
अनर्घ्य माणिक्य मणि प्रकाशम् प्राचीव देवम् जगदीशम्।।७।।

उपर्युक्त वचनों के आधार बनाकर, हनुमान का अवतार मेरुपर्वत में ही हुआ है करके कुछ विद्वानों का मत है।

हम्पी क्षेत्र - विशेषता

हम्पी क्षेत्र - हनुमान के कार्यक्षेत्र के रूप में यह विख्यात है। स्कंद पुराण के अंतर्गत वर्णित हम्पी माहात्म्यम् में हम्पी क्षेत्र की महिमा वर्णित है। उस क्षेत्र का वर्णन करने के संदर्भ में मतंगाश्रम हंपी क्षेत्र में विलसित है करके वर्णित किया गया है। उसी मतंग ऋषियों की सलाह एवं आशीर्वाद से ही अंजनादेवी शेषाचल में तपस्या की। इस वर्णन से यह साबित होता है कि अनेक व्याख्यानों के आधार से यह माना जाता है कि हम्पी हनुमान का कार्यक्षेत्र है तथा शेषाचल अवतार क्षेत्र है।

यंत्रोध्दारक हनुमान का प्रतिष्ठापन

श्री व्यासराज महराज जी ने हम्पी क्षेत्र मे यंत्रोध्दारक हनुमान का प्रतिष्ठापन किया था। खासकर इसी स्थान में प्रतिष्ठापन क्यों किया गया है? इसके संबंध में एक ऐतिहासिक गाथा वर्णित है। व्यासराज जी को सपने में हनुमान जी ने दर्शन देकर इस प्रकार कहा कि - इस प्रदेश में ही मुझे पहली बार श्रीरामचंद्र जी का दर्शन हुआ। इसीलिए यहाँ मेरी प्रतिमा का प्रतिष्ठापन किया जाय। बहुत सारे इतिहासकार इस वृत्तांत का समर्थन करते हैं। इस प्रकार के व्याख्यानों से यह स्पष्ट होता है कि हम्पी हनुमान का कार्य क्षेत्र है।

कुछ लोगों का मत है कि हनुमान का अवतार हम्पी में ही हुआ है। इनके संबंध में प्रमाण मिलने से अंगीकार करने में कोई गलती नही है। हनुमान के अवतार स्थान के संबंध में विभिन्न प्रमाण उपलब्ध होने से, सामान्य भक्तों में यह दुविधा विकसित होता है कि, हनुमान का अवतार स्थान कहाँ है? इस समस्या को सुलझाने के लिए हमें कल्पभेद का आश्रय करना चाहिए। क्यों कि विभिन्न-प्रमाणों को स्वीकार करना भी आवश्यक है।

कल्पभेद

चौदह मन्वंतरों का सुदीर्ध काल-ही-कल्प माना जाता है। अक्सर भगवान और देवताओं के चर्चाएँ हर एक कल्प में साधारण रूप में ही रहता है। (एक ही तरह) मगर कुछ चर्चाएँ बदलते है। उदाहरण के लिए हम एक चर्या के बारे में जानना चाहें तो...

''श्रीहरि, वराहस्वामी के रूप में अवतरित होकर 'हिरण्याक्ष' नामक राक्षस का संहार किया था।'' यह विषय सब जानने वाला साधारण विषय है।

मगर कुछ पुराणों में, वराहस्वामी अपने नुकीले दांतों से और कुछ पुराणों में अपने हाथ से हिरण्याक्ष के कान पर मार कर उसका वध करने का वर्णन है। दोनों पुराणों का वर्णन सत्य बनना असाध्य है इसलिए एक कल्प में स्वामी अपने नुकीले दांतों से हिरण्याक्ष को मारा था और दूसरे कल्प में कश्यप-दितिदेवी के पुत्र हिरण्याक्ष को हाथ से कान पर मार कर वध किया था। हमें दोनों प्रमाणों का आदर करके स्वीकार करना चाहिए।

इसी प्रकार एक कल्प में तिरुमला में और एक कल्प में, मेरुपर्वत पर हनुमान का अवतार मानकर, ब्रह्माण्ड-भविष्योत्तर पुराण और रामायण के प्रमाणों का आदर करना चाहिए। उसी प्रकार हम्पी क्षेत्र में हनुमान के अवतार के संबंध में प्रमाण उपलब्ध होने पर और एक कल्प में हम्पी क्षेत्र में हनुमान का अवतार हुआ करके स्वीकार करना चाहिए। इस प्रकार कल्प भेद को आश्रय करके निर्धारित घटनाएँ अनेक है। इसीलिए उपर्युक्त उदाहरण दिया गया है। इस प्रकार प्रमाणों के अनुसार उचित मात्रा में निर्धारण करना शास्त्र सम्मत है।

वर्तमान काल में हनुमान का अवतार तिरुमला में हुआ है ऐसा साबित करने वाले प्रमाण उपलब्ध होने के कारण, अंजनाचल, आंजनेय का जन्म स्थल तिरुमला ही है। इस विषय के संबंध में कोई संदेह ही नही है।

इति नारायण स्मरणम्

श्री सत्यात्म तीर्थ श्रीपाद जी

श्री उत्तरादि मठ।

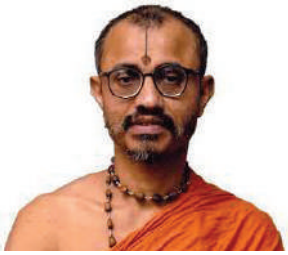

॥ श्री कोदण्डरामो विजयते ॥

श्री विद्येश तीर्थ स्वामी जी का दिव्य संदेश

श्री भंडार्केरि मठ, उडुपी, कर्णाटका, श्री भागवताश्रम प्रतिष्ठान

1023, 1st 'H' Main Road, 8th Cross, 2nd Stage, Girinagar, Bengaluru - 560 085

श्री हनुमान की जन्मभूमि का पता लगाने केलिए ति.ति.दे. द्वारा किए गए कार्यों की जानकारी पाकर हम प्रसन्न हुए। हमें इसके लिए भी प्रसन्नता हुई कि आप इस संबंध में प्राप्त शोधपत्रों का संकलन भी एक पुस्तक के रूप में ला रहे हैं।

हमारे ध्यान में आए हुए पौराणिक संदर्भों का मूल्यांकन करने से पता चला कि तिरुमला में स्थित अंजनाद्रि ही वास्तव में श्री हनुमान का जन्मस्थान है। इस दृष्टि से पुराणों के दो संदर्भ बहुत संगत हैं। प्रथम, अंजना जी ने यहाँ तपस्या करके श्री हनुमान को पुत्र के रूप में प्राप्त करने के कारण यह तिरुमला अंजनाद्रि कहलाया। द्वितीय, श्री हनुमानजी के प्रारंभिक बाल्यकाल कार्यकलाप, जैसे सूर्य की ओर उडने का उनका विख्यात उडान वेंकटाद्रि से ही हुआ था।

हम कर्नाटक राज्य के हम्पी क्षेत्र को भी महत्वपूर्ण मानते हैं, जहाँ श्री हनुमान की भेंट भगवान श्रीराम से हुई एवं जहाँ उनके अधिक महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुए।

अतः जबतक अन्यस्थान संबंधी कोई पक्का प्रमाण नहीं मिलता तबतक हम तिरुमला के अंजनाद्रि को ही - श्री हनुमान जी का जन्मस्थान मानते हैं। अतः यह एवं कर्नाटक में स्थित हम्पी उनके प्रधान कार्यस्थल (कार्यक्षेत्र) हैं एवं ये दोनों क्षेत्र पवित्र एवं अपना-अपना महत्व रखते हैं।

हम चाहते हैं कि ति.ति.दे. भगवान श्रीराम एवं श्री हनुमान के प्रति भक्तिभाव को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रमों को आगे भी आयोजित करते रहेंगे।

श्रीमन्नारायण के वैभव का अनेक बार स्मरण करते हुए।

(श्री विद्येशतीर्थ स्वामीजी)

हस्ता./-

श्रीभंडार्केरि मठ

जगद्गुरु श्रीमध्वाचार्य महावेदान्त पीठ

उडुपि - बेंगलूरु, कर्नाटक।

॥ श्री गोपीनाथो विजयते ॥

श्री सुजनिधि तीर्थ श्रीपादरायलवरु

श्रीपादराज मठ

Mulabagilu - Karnataka

दिव्य संदेश

हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि ति.ति.दे. भगवान हनुमान जी के जन्मभूमि संबंधी कलहों - वादों पर सुप्रसिद्ध विद्वानों द्वारा लिखवाए गए शोधपरक लेखोंवाला एक ग्रंथ विमोचित करेगा। हमें यह भी अवगत हुआ कि विविध पुराणों का अध्ययन करने के उपरांत इस निष्कर्ष पर हम पहुँचे कि तिरुमला पर स्थित अंजनाद्रि ही हनुमान का जन्मस्थान है जहाँ हनुमानजी की माता ने उन्हे जन्म दिया था। चूँकि केवल पुराण ही हनुमान जन्मस्थान का प्रामाणिक प्रमाण दे सकते हैं। हमारे मतानुसार प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा जो निष्कर्ष निकाला गया है वही सभी के लिए स्वीकृत होना चाहिए।

हम श्री ए.वी.धर्मरिड्डी जी सहित अन्य सभी अधिकारियों का इस विवाद का निश्चित रूप से सुलझाने केलिए अभिनंदन करते हैं।

हस्ता./-

श्री १००८ सुजयनिधि तीर्थ

श्रीपादराज मठ,

मुलबागिलु।

विशाखा शारदा पीठाधिपति
श्रीश्रीश्री स्वरूपानंदेंद्र सरस्वती स्वामी जी का दिव्य संदेश
विशाखा शारदा पीठ, विशाखापट्टनम्।

श्रुति स्मृति पुराणानामालयम् करूणालयम्।
नमामि भगवत्पादम् शङ्करं लोकशङ्करम्।।

शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरामयणम्
सूत्रभाष्यकृतं वन्दे भगवंतौ पुनः पुनः।।

वसुदेवसुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम्
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्।।

श्रीकृष्ण परब्रह्मणे नमः।

आज भगवान बालाजी के दिव्यचरणों को साक्षी (गवाह) मानकर यहाँ भूमिपूजा आयोजित की गई। संपूर्ण भारत में जहाँ सनातनधर्म फलता-फूलता आया है एवं हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक अनेकानेक पुण्य क्षेत्र हैं, मंदिर हैं, तीर्थ हैं, नदियाँ हैं - यदि कोई पूछे कि अत्यंत पुण्यभूमि क्या है तो निस्संदेह उत्तर मिलता है कि केवल 'तेलुगु राज्य' में ही हैं। इसी कारण इसे त्रिलिंग देश कहते हैं।

दोनों राज्यों को मिलाकर यानी तेलंगाणा में कालेश्वर, आंध्र में श्रीकालहस्ती एवं श्रीशैलम्... इन तीनों को मिलाकर 'त्रिलिंग देश' कहते हैं। इसलिए दोनों तेलुगु राज्यों में सुविख्यात शैवक्षेत्र हैं, इनके कारण ही त्रिलिंगदेश नाम पडा।

वेदों की जन्मभूमि है आंध्र राज्य। केवल आंध्रराज्य में ही ऐसे वेदज्ञ पंडित हैं जो सुस्वर में बिना ग्रंथ देखे, सम्पूर्ण स्तर पर पाठ करने लिए एकमात्र स्वर युक्त विप्रों के रहने के स्थान हैं - आंध्र एवं तेलंगाणा। ऐसे आंध्रराज्य में विराजमान होकर सम्पूर्ण जगह की रक्षा करने को तत्पर स्वयं परमात्मा के अवतार हैं- तिरुमला तिरुपति बालाजी श्री वेंकटेश्वर स्वामीजी। यदि कोई प्रश्न करें कि आंध्र की सम्पत्ति क्या है तो उत्तर मिलेगा तिरुमला-तिरुपति-वेंकटेश्वर भगवान ही सम्पत्ति है। केवल स्वामीजी मूलविराट मूर्ति में ऐसी दिव्य चुम्बकीय आकर्षण शक्ति है कि एक बार दर्शन करनेवाले पुनः-पुनः उनका दर्शन करना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को यह सोचना चाहिए कि क्या उनके निकट बिना उनकी अनुकम्पा के, बिना उनकी अनुमति के क्या कोई घटना होती है? विज्ञों बुद्धिजीवियों एवं विशेषतः मीडिया प्रतिनिधियों से हम यह अपेक्षा रखते हैं कि आंध्र में स्थित इस अत्यद्भुत पुण्यस्थान यानी तिरुमला तिरुपति देवस्थान की महिमा को विश्वव्याप्त करें।

हमने भगवान बालाजी वेंकटेश जी की आज्ञा से ही यहाँ अंजनाद्रि में भूमिपूजन किया है। इस स्थान को अंजनाद्रि के रूप में प्रमाणित करने के लिए एक तरफ पुराण, शास्त्र, काव्य एवं इतिहास के अतिरिक्त स्वयं भगवान श्री वेंकटेश्वर का दर्शन किए हमारे महान संकीर्तनाचार्य श्री ताल्लपाका अन्नमाचार्य ने भी इस पर्वत को अंजनाद्रि के रूप में घोषित किया था। प्रातःस्मरणीय भक्त पुरंदरदासजी एवं तरिगोण्डा वेंगमांबाजी ने हमें अंजनाद्रि की महिमा से परिचय कराया था। तिरुमला पर्वत पर एकमात्र समाधि यदि किसी की हो तो वह एकमात्र भक्त तरिगोण्डा वेंगमांबा की है। आध्र एवं तेलंगाणा इन दोनों राज्यों से संबंधित इन तीनों ने प्रमाण सहित यह स्पष्ट किया था कि अंजनाद्रि तिरुमला में ही है। ये तीनों भगवान श्री वेंकटेश्वर का दर्शन करके धन्य हो गए एवं उपर्युक्त कथन के प्रमाण के रूप में हैं। इसके बावजूद, इस पर शंका प्रकट करने वाले अन्य राज्यों के बारे में हमें सोचने की आवश्यकता ही नहीं हैं।

तिरुमला तिरुपति देवस्थान हमारे दोनों तेलुगु राज्यों के भूभाग में हैं। उपर्युक्त तीनों महानुभावों ने भगवान वेंकटेश्वरस्वामी के वैभव के साथ-साथ इस सारे भूभाग का भी वर्णन किया था। इसी कारण आज वेंकटेश्वरस्वामी की अनुकम्पा को वर्तमान टी.टी.डी. न्यास-मंडल के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी, कार्यकारी अधिकारी डॉ.के.एस.जवाहर रेड्डी, आई.ए.एस., एवं अतिरिक्त कार्यकारी अधिकारी श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस., इन तीनों ने जब कहा कि ''अंजनाद्रि एवं हनुमान संबंधी इतिहास इस प्रकार हमारे पास उपलब्ध है, कृपया आप इसका परिशीलन करें'' तब अनेकों पण्डितों, वेदज्ञों, शास्त्र पंडितों, बुद्धिजीवियों एवं विज्ञों ने मिलकर इस महान ग्रन्थ का निर्माण किया। यह कोई साधारण विषय नहीं। यह कोई व्यक्तिगत धारणा भी नहीं। प्रत्युत् यह एक सार्वाजनिक एवं सार्वत्रिक विषय है।

सार्वत्रिक विषय होने के कारण ही जगद्गुरु श्रीश्रीश्री रामभद्राचार्य महाराज भी जिसने रामजन्मभूमि के कार्यक्रम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी - यहाँ पधारे एवं इस कार्यक्रम में स्वयं एक समिधा-एक अंग-बनने को तैयार हो गए। वे चित्रकूट से यहाँ पधारे हैं। स्वयं श्री वेंकटेश्वर जी ने उनको स्वयं आमंत्रित किया था, इस हनुमान बजरंगबली की जन्मभूमि कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आमंत्रित किया था, यह विचार न आपका है, न हमारा है और न किसी और का है। यह उस परमात्मा का निर्णय है जो देश एवं काल से परे है। उसी प्रकार वे एवं गोविंद देव गिरि स्वामी यहाँ आकर पूर्ण रूप से समिधा बने। विश्वहिन्दू परिषद एवं कोटेश्वरशर्मा दोनों अभिन्न हैं, परस्पर गहराई से जुडे हैं। उनके त्याग अनेक थे। अबतक वे धर्म, देश इत्यादि के लिए जिए। ऐसे महान कोटेश्वरशर्मा जी ने भी इस कार्यक्रम में भाग लेकर इसे सफल बनाया था। सबसे उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण विषय यह है कि मेरे बगल में बैठे हुए स्वामीजी ने चित्रकूट से पधारकर रामजन्म भूमि एवं हनुमान जन्मभूमि के विषय में वास्तविकता को जानकर प्रकट किया है। यह प्रमाण ही पर्याप्त है। आप सभी को संपूर्ण आशीर्वाद हैं। मैं तिरुपति (वेंकन्ना) बालाजी वेंकटेश्वर भगवान के चरणकमल को प्रमाण मानकर यह इच्छा प्रकट करता हूँ कि यह एक सुंदर, अद्भुत एवं अनुपम शक्तिशाली आध्यात्मिक केन्द्र के रूप में रूपधारण करें। आप सभी को मेरा आशिष।

(भूमि पूजा के अवसर पर दिव्य संदेश)

नारायण नारायण नारायण।।

विशाखा शारदापीठ के भावि (उत्तराधिकारी) अधिकारी
श्रीश्रीश्री स्वात्मानंदेंद्र सरस्वती स्वामी जी का दिव्य संदेश
विशाखा शारदा पीठ, विशाखापट्टनम्।

मनोजवम् मारुत तुल्य वेगम्
जितेन्द्रियम् बुद्धिमतां वरिष्ठम्
वातात्मजं वानरयूध मुख्यम्
श्री रामदूतं शिरसा नमामि।

अस्मत् गुरु चरणारविंदाभ्याम् नमः।

आज यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि स्वयं वैकुण्ठ स्वरूप इस तिरुमला में जहाँ की धरती भगवान श्री वेंकटेश्वर के चरण स्पर्श से पवित्र होना एवं यहीं के अंजनाद्रि पर्वत में हनुमान की जन्मभूमि का रहना तथा इसी तथ्य को निर्धारित करने हेतु भारत में एक उत्कृष्ट वेदभूमि-सा विराजमान इस तिरुमला में पंडित-परिषद् द्वारा अनेकानेक पुराण, शास्त्र व इतिहासों का, परम भक्त कवि अन्नमाचार्य जी के पद हो या अन्य भगवान वेंकटेश्वर की आराधना के कीर्तनों की गहराई से परिशीलन करने के पश्चात् यहाँ आंजनेय स्वामी (हनुमान) के सुंदरीकरण हेतु भूमिपूजा करनी है। वह भी हमारे गुरुदेव श्रद्धेय श्रीश्रीश्री स्वरूपानंदेंद्र सरस्वती स्वामी जी के कर-कमलों से, उसी प्रकार इस मंच पर विराजमान अनेक महानुभावों का इस भूमि पूजा कार्यक्रम में भागलेना भी बहुत बड़ी बात एवं हर्षदायी विषय है। कारण आंजनेय (हनुमान) जी जो स्वयं श्रीरामचन्द्र के शिष्य-श्रेष्ठ थे - उस समय त्रेतायुग में धरती, पर सज्जनों की रक्षा करते दुर्जनों को दंडित करने एवं धर्म-स्थापन करने हेतु अवतरित भगवान श्रीराम महाराज की सेवा करने के लिए ही प्रकट हुए थे। यह हमारे विगत जन्म का सौभाग्य एवं पुण्य ही है कि ऐसे पावन व दिव्य क्षेत्र में त्रेतायुग से लेकर कलियुग प्रत्यक्ष देवता श्री वेंकटेश्वर स्वामी जी तक सेवालाभ प्राप्त करने के लिए यहाँ प्रकट होकर हनुमान जी आज भी बालाजी वेंकटेश भगवान की सेवा कर रहे हैं। ऐसे स्थान में मंदिर के सुंदरीकरण हेतु आयोजित इस भूमिपूजा कार्यक्रम में भाग लेना बडे भाग्य की बात है। यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि श्रीमहाविष्णु स्वरूप वेंकटेश भगवान की सम्पूर्ण अनुकम्पा वर्षा आप सभी पर बरसेगी। मैं चाहता हूँ कि अनेकानेक भक्त इस क्षेत्र का दर्शन करें एवं प्रत्येक भक्त जिसने भगवान वेंकटेश्वर स्वामी के दर्शनोपरांत इस क्षेत्र के आंजनेय स्वामी जी का भी दर्शन करें एवं उनकी कृपा से लाभान्वित हो जाए।

(भूमि पूजा के अवसर पर दिव्य संदेश)

नारायण नारायण नारायण।।

कोशपाल न्यासी

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र न्यास, अयोध्या

श्री गोविंद देव जी महराज का दिव्य संदेश

भगवान वेंकटेश्वर प्रभु की इस पुण्य नगरी में... कुछ लोग स्थानीय भाषा में बोले, कुछ लोग देवभाषा में बोले, कुछ राष्ट्र भाषा में बोले, मैं भी राष्ट्र भाषा हिन्दी बोलना चाहता हूँ। क्योंकि संदेश सर्वत्र पहुंचना चाहिए, सबसे पहले, मैं टी.टी.डी. यानी तिरुमला तिरुपति देवस्थान का यह मेरे ऊपर अनुग्रह मानता हूँ कि उन्होंने मुझे आमन्त्रित किया, भगवान वेंकटेश्वर प्रभु के दर्शन किए, कितने ही वर्ष बीत गए। और इस कोविड ने तो मुझे आने ही नहीं दिया। आपके निमित्त से मुझे भगवान वेंकटेश्वर प्रभु के इतने सुन्दर दर्शन आज प्राप्त हुए कि, मैं आपका ऋणी हूँ। मैं धन्य हो गया। इतने वर्षों के पश्चात् इतने वियोग के पश्चात्, भगवान का आज सान्निध्य पाकर मैं धन्य हो गया। हम लोग जिस पवित्र कार्य के लिए यहाँ उपस्थित हैं, उस पवित्र कार्य की मैं भूरि-भूरि सराहना करता हूँ। इस विषय में मुझे क्या कहना चाहिए यह बात मेरे अंतःकरण में पक्का है और वही संदेश मैं आप तक पहुँचाना चाहता हूँ।

जिस समय मुझे तिरुमला तिरुपति देवस्थान से यह निमन्त्रण मिला कि मैं आकर के हनुमान जी की जन्मभूमि के इस मंदिर निर्माण कार्य में भूमिपूजन में सहभागी हो जाँऊ, तो मेरे साथियों ने मुझ से पूछा कि वहाँ पर कैसे जन्मस्थान हो गया। मैं स्वयं भी किष्किंधा वाले जन्मस्थान का दर्शन करके आया हूँ। मैं स्वयं स्फटिक शिला का दर्शन करके आया हूँ, क्योंकि हम अपनी तीर्थ यात्रा में इस प्रकार का काम करते ही रहे हैं। यह विषय हमारे लिए एकदम नया था और कोई भी एकदम नई बात अपने भीतर घुसनी है, तो उसके लिए थोड़ा-सा अवसर भी आवश्यक होता है। जब सारी बातों का विचार मैंने किया, मन में द्वन्द्व भी चला, ये द्वन्द्व मैंने मन से भी अनुभव किया, बाहर से भी सुना और ऐसा ध्यान में आया कि जिसके दर्शन के लिए हम हनुमान जी की जन्मभूमि के रूप में गए किष्किंधा और जहाँ पर आज हम इस सौंदर्यीकरण के मंदिर के निर्माण केलिए आए है वह स्थान, ऐसे सब स्थानों में, हनुमान जी का जन्म वास्तव में कहाँ हुआ? सच्ची बात मेरे मन की आपको बताता हूँ, ''सत्यं वद''। ये जैसे है वैसे ''सत्यं वद'' वैसे सत्य को बोलना चाहिए, और जब बोलना चाहिए, तो मेरे मन में जो विचार आते हैं कि हम इसका निर्णय कैसे कर सकते हैं? मुझ जैसा अल्प मति तो यह करने में अपने को बड़ा असमर्थ पाता है। मैं आप को दो-तीन बातें बतलाता हूँ, आप लोगों के सामने कितना क्षेत्र है मुझे पता नहीं, मेरे सामने आसेतु हिमाचल भारत माता है, मेरे सामने भारत राज्य है, और हम ये देख रहें है कि हम छोटी-छोटी बातों का निर्णय करने में भी असमर्थ हैं। मैं आरंभ करता हूँ 'महाराष्ट्र से जहाँ से, मैं आया हूँ, वैसे तो अब मैं अयोध्या का निवासी हूँ, इसीलिए भगवान श्रीराम जी ने भेजा है। आपके सेवा के लिए, हनुमान जी सेवा के लिए भेजा है, लेकिन महाराष्ट्र में आप देखेंगे, तो पूरा महाराष्ट्र श्री ज्ञानेश्वर महाराज को गुरु मानता है, सात सौं (७००) वर्ष पहले उनका जन्म आनंदी में हुआ कि आपे गाँव में हुआ इसका निर्णय महाराष्ट्र के विद्वान् आज तक नहीं कर पाए। only 700 seven hundred years before, he was born and today the highest scholars of

Maharashtra, they are unable to decide. Which is the birth place of Gnaneshwar Maharaj one thing ये हुआ सात सौं (७००) वर्ष पूर्व। वर्षों की बात सौ वर्ष पहले के साई बाबा है, साई बाबा का जन्म स्थान कहाँ पर है, इसके बारे में विवाद चल ही रहा है, सौं वर्ष पहले की बात है ज्यादा पुरानी नहीं है। हम ज्योतिर्लिंगों की बात करते हैं, ज्योतिर्लिंगों में नागेश्वर लिंग कहाँ पर है, एक तो द्वारिका के पास है। दूसरा महाराष्ट्र में है नागेश्वर ज्योतिर्लिंग कोन्डया नागनाथ में। वैद्यनाथ धाम कहाँ पर है, महाराष्ट्र में भी है, और आप जानते हैं कि आज कल के छत्तीसगढ़ में भी है, दो-दो हैं, हाँ... झारखंड, छत्तीसगढ़-झारखंड तो इन विवादों को हम सुलझा नहीं पाते हैं। अब हनुमान जी तो स्वयं हजारों-हजारों वर्ष पूर्व, अरे! नहीं नहीं... कितने वर्ष हुए महाराज! बतला सकते हैं? लेकिन ये है त्रेतायुग की बात, हम लोग कलियुग में हैं, हम कैसे निर्णय कर पायेंगे, बहुत कठिन है। मित्रों! मैं एक बात कहना चाहता हूँ... जहाँ भी जाओ, हनुमान जी का जो मंदिर बने उस मंदिर में सहभागी हो जाओ... उस का जय-जयकार करो, आज हमें हनुमान जी की आवश्यकता है, आज हमारे भीतर हनुमत शक्ति के जागरण की आवश्यकता है, राष्ट्र की एकात्मता की आवश्यकता है, इतनी छोटी-मोटी बातों को लेकर हम लोगों में विवाद नहीं होना चाहिए, जिसकी जहाँ श्रद्धा हैं, वो वहाँ पर पूजा करें पर हनुमान जी की पूजा सर्वत्र होनी चाहिए, मैं जिधर देखूँ वहाँ हनुमान जी के मंदिर दिखने चाहिए। भगवान आदिशंकराचार्य महाराज कहते है, मैं जिधर देखूँ उधर मुझे हनुमान जी दिखने चाहिए, क्योंकि यदि भारत माता का जागरण करना है, इस राष्ट्र को खड़ा करना है, और जगत का मांगल्य करना है, तो हमारे भीतर हनुमत शक्ति को जागरण करने की आवश्यकता है। आज हनुमत शक्ति को आमंत्रित करने की आवश्यकता है, स्वामी विवेकानंद महाराज कहा करते थे, मैं चाहता हूँ कि मेरे बंगाल में... क्योंकि उस समय सर्वत्र राधाकृष्ण की पूजाओं का और काली की पूजाओं का ही सर्वत्र वातावरण था, उस समय स्वामीजी ने कहा ''मैं चाहता हूँ कि मेरे बंगाल में हनुमान जी की पूजा आरम्भ की जाय, गाँव-गाँव में छोटे-छोटे देहातों में हनुमान जी मंदिर स्थापित हो जाने चाहिए। गाँव-गाँव में समर्थ रामदास स्वामी जी ने हनुमान मंदिर की स्थापना की। इसीलिए छत्रपति शिवाजी महाराज की सेना खड़ी हुई इसको ध्यान में रखना चाहिए। वीरों! हम लोग जिस परिवर्तन के युग में जी रहे हैं, ऐसे युग में कही पर भी हमारे देश में किसी भी धर्म को लेकर के, मंदिर को लेकर के कलह नहीं हो, यह देखने की आवश्यकता है। जहाँ जाइए हनुमान जी की आराधना कीजिए, अरे! हम तो, आपको बतलाते हैं, हम अगले महीने की बीस(२०) तारीख में, बीस(२०) मार्च के दिन डाँग जिले में एक सौ(१००) हनुमान मंदिरों का निर्माण करा रहे है।

आदिवासियों के लिए वनवासियों के लिए, देहात के लोगों के लिए हनुमान जी की आराधाना आवश्यक है, क्योंकि हनुमान जी की आराधना से वो सब कुछ प्राप्त होता है, जिससे हमारा देश खड़ा होता है। भगवान श्रीराम प्रभुने स्वयं हनुमान जी का वर्णन करते हुए अगस्त्य मुनि से कहा कि मैं तो देखता नहीं हूँ कि हनुमान जी जैसा कोई हैं। ये सारे के सारे गुण हनुमान में हैं, हनुमान जी का स्मरण करते ही हमारे भीतर ''बुद्धिर्बलंयशोधैर्यं'' हमारे भीतर बल जागृत होता है, बुद्धि का जागरण होता है, ''निर्भयत्व मरोगता'', हम निर्भय हो जाते हैं नीरोग हो जाते हैं, ये सारा हनुमान जी के प्रभाव के कारण होता है। ऐसे हनुमान जी की शक्ति का जागरण इस देश में हुआ। इसीलिए ध्यान रखना, अयोध्या में खड़ा वह कलंक दूर हुआ। हनुमान जी की शक्ति वहाँ पर काम कर रही थी, हनुमान जी की शक्ति का जागरण था, नहीं तो एक दिन में वह कलंक देश से मिटना संभव नहीं था। सब के भीतर हनुमान जी जागृत हो गए,

उसी की आवश्यकता है। इसीलिए हम तो यही कहेंगे कि आप हनुमान जी के मंदिर का निर्माण कर रहे हैं, बालहनुमान यहाँ पर खेलें होंगे, बालहनुमान ने यहाँ पर लीलाएँ की होंगी, बालहनुमान ने यहाँ पर कितने-कितने प्रसंग लोगों को सिखाए होंगे उसके कारण हमारा राम कार्य हुआ, भगवान् श्रीराम ने ये कहा है, स्वयं भगवान श्रीराम ने ये कहा हैं कि हनुमान जी ने यदि ये कार्य नहीं किया होता तो पता नही मुझे भगवती जानकी का पता चलता भगवान् श्रीराम कहते हैं कि हनुमान! हम तुम्हारे ऋण में निरंतर रहेंगे, मैं अकेला नहीं मेरा पूरा परिवार तुम्हारे ऋण में रहेगा। ये जब भगवान श्रीराम हनुमान जी से कहते है, कि मैं अपने परिवार सहित तुम्हारे ऋण में ही रहूँगा क्योंकि तुमने इतने उपकार किए कि एक-एक उपकार का बदला चुकाने के लिए मुझे अपने प्राण देने पड़ेंगे बाकी के उपकार तो वैसे ही रह जाएँगे। बन्धुओं! आज हमें उस शक्ति को जागृत करने की आवश्यकता है, जिस शक्ति से दशमुख रावण जो हमारी भारतमाता के ऊपर आक्रमण कर रहे हैं। रावण के दशमुख ये, ऐसा हम सुनते हैं ना, अरे! दशों-दिशाओं से अनेक शत्रु इस भारत के टुकड़े-टुकड़े करने के लिए तैय्यार बैठे है, इस भारत के टुकड़े नहीं होने चाहिए, ये भारत अखंड होना चाहिए, इस आसेतु हिमाचल भारत की राष्ट्रीय चेतना एक होनी चाहिए, और यह करना है। ये करना हो तो हम सभी के भीतर हनुमत शक्ति का जागरण होना चाहिए और हनुमान जी की शरणागति दुगुनी होती है। भगवान की शरणागति एक गुणी, हनुमान जी की शरणागति दुगुनी। तो संत तुकाराम महाराज! मैं आपकी शरण में बार-बार आता हूँ, क्यों आता हूँ। भक्ति का मार्ग आप ही दिखा सकते है, भक्ति का मार्ग हनुमान जी ने हमको दिखाया, और इसीलिए उसी भक्ति का जागरण जब करना होता है, तब नारद जी के भक्ति सूत्र में एक बात आती हैं, बहुत मीठी बात आती है। विवाद नहीं करना, किसी के साथ विवाद नहीं करना, मैं सारे हिन्दुओं से एक ही अपील करूँगा, विवाद करना छोड़ दो, कार्य करना आरम्भ करो, मिलकर के कार्य करो, अहंकार का त्याग करो, अस्मिता का त्याग करो, यदि-यही हम सारे सनातन धर्मी हिंदू एक दिशा में देखेंगे, एक वाणी बोलेंगे, ध्यान रखना, सारे संसार में हम जैसा कोई राष्ट्र नहीं, यह बात तुरन्त शीघ्र ही सिद्ध हो जाएगी, और इसीलिए हमारा-हमारा शत्रु हमारी फ़ूट है, भीतर जो ये विवाद होते हैं, ये विवाद हमारा नाश करते हैं।

विवादों को तिलांजलि देकर के, एकात्मता के साथ हम लोग भगवान की भक्ति के मार्ग पर चलें, यही मार्ग हनुमान जी महाराज ने हम लोगों को दिखाया, यहीं हमारी दिशा है। संत यहाँ पर पधारे हैं, महाभारत में, एक प्रश्न आया है ''का दिक्''? कैसी दिशा? यक्ष से धर्म राज से पूछा, उत्तर-पूरब-दक्षिण-पश्चिम कौन-सी दिशा? धर्म राज ने उत्तर दिया ''संतो दिक्'', एक ही दिशा जो संत दिखा दे। हमारे देश के संतों ने आसेतु हिमाचल हम लोगों को एकता की शिक्षा दी हैं। हमारे संतों ने निर्विवाद रहने की बात कही है, इसीलिए विवादों को तिलांजलि देकर के, हम लोग एकता के मार्ग में आगे बढ़ेंगे, तो उसीसे भगवान श्रीराम प्रसन्न होंगें, हनुमान जी भी प्रसन्न रहेंगे।

(भूमि पूजा के अवसर पर दिव्य संदेश)

वेंकटेश भगवान की जय।।

अन्तराष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री

विश्व हिन्दू परिषत् के श्री कोटेश्वरशर्मा जी का दिव्य संदेश

मनोजवं मारुत तुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूध मुख्यं श्रीरामदूतं शिरसा नमामि...।।

मंचासीन परमपूज्य श्रीश्रीश्री रामभद्राचार्य महाराज जी! परमपूज्य स्वरूपानंदेंद्र सरस्वती महाराज जी! एवं उनके उत्तराधिकारी स्वामी स्वात्मानंदेंद्र सरस्वती स्वामीजी! एवं गुरुतुल्य श्री गोविंददेवजी को दण्डवत् प्रणाम तथा तिरुमला तिरुपति देवस्थान न्यास-मंडल के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी को नमन।

आज हनुमान जन्मभूमि अंजनाद्रि की वृद्धि करने की इच्छा से आयोजित की जानेवाली इस महान भूमिपूजा कार्यक्रम में भाग लेने आए हुए श्रद्धालुओं व माताओं को मैं हृदय से प्रणाम करता हूँ। अभी यहाँ निर्मोचित ग्रंथ का अवलोकन करते समय एवं गोविंददेव गिरि जी के दिव्य प्रवचनोपरांत मुझे श्रीराम जन्म भूमि हेतु किए गए संग्राम की याद आ रही है। कोई पूछता कि क्या राम जी यहीं अवतरित हुए? कोई प्रमुख व्यक्ति तमिलनाडु से कहता कि श्रीराम एक काल्पनिक व्यक्ति है, वह एक किरदार है और कोई और कहता कि राम वहाँ नहीं, फलाने स्थान पर जन्मे थे।

इस प्रकार एक ओर जब श्रीराम की जन्म के बारे में एवं जन्मभूमि के बारे में विभिन्न मत व मन्तव्य प्रकट हो रहे थे, दूसरी ओर ''न...न... यह हमारी है न आपकी।'' ऐसा और एक प्रमुख वाद व्यक्त किया गया।

उपर्युक्त सभी वाद-विवादों के बीच रामजन्म भूमिवाला एक पेचीदा मामला होकर जिला न्यायालय से, उच्च न्यायालय को, उच्च न्यायालय से सर्वोच्च न्यायालय तक जब आया था तब हमने इन सभी को समुचित उत्तर देने के लिए कोना-कोना ढूँढा एवं अंत में थक भी गए।

एक फ्रेंच यात्री कभी भारत आया अंग्रेजों के आगमन से पूर्व। वह एक पुरावस्तु शास्त्रज्ञ और एक इतिहासकार था। उसने कभी फोन करके इसके बारे में कुछ कहा, ऐसा हमें मालूम हुआ। फिर... उस सैलानी (यात्री) की पुस्तक ढूँढ़ने में जुट गए। यहाँ तक कि हमने विश्व के गूगुल में ढूँढ-ढूँढ कर यह पता चलने के उपरान्त कि पुस्तक फलाना ग्रंथालय में उपलब्ध है - उस ग्रंथालय के अधिकारियों से बात करके वहाँ से पुस्तक मंगाई। न्यायालय के समक्ष विषय प्रस्तुत करने के लिए। केवल प्रस्तुत करना ही नहीं बल्कि फोटोकॉपी भी समर्पित करनी है।

एक जर्मन भाषी सैलानी ने रामजन्मभूमि के बारे में कुछ लिखा था। यह जानकारी प्राप्त होते ही हमने उसी को भी मंगाया था। पुरावस्तु शास्त्रज्ञों ने राडार परीक्षा करके यह स्पष्ट किया था कि हमने इस भूखण्ड के नीचे एक विशाल भवन दृष्टिगोचर हो रहा है। परन्तु हम यह बता नहीं सकते कि वह मंदिर है या अन्य प्रकार का निर्माण। जब हमने खोदने को कहा तो भारतीय आर्कियलॉजीकल सर्वे ऑफ इन्डिया ने अन्वेषण करके यह घोषित किया कि

यह एक ८६ खंभावाला विशाल मंदिर है। हमने उन सभी स्थानों का भी अन्वेषण कराया। वेदकाल में रामजन्म भूमि के रूप में जिनको निर्धारित किया गया। ये सभी मुझे क्रमिकरूप से याद आए।

इस ग्रंथ में जब मैंने एक एक लेख के एवं लेखकों के बारे में पढ़ा तो पता चला कि उन लोगों ने ये लेख लिखने के लिए कितना प्रयास किया था। वे सभी महान अध्येता एवं अपने अपने क्षेत्र में निष्णात भी थे। मुझे सभी लेख अच्छे लगे। यहाँ हमें दो बातें स्मरण में रखनी चाहिए।

एक है हमारे 'वाद' का कालजयी होना। चूँकि ति.ति.दे. के परिसर में स्थित तिरुमला के अंजनाद्रि में यह स्थान सभी के लिए बहुपरिचित होने से इसे कालजयी मानने एवं प्रजा द्वारा इसे स्वीकृत करने के विषय में कोई शंका नहीं होनी चाहिये। वह भी...। मैं अभी कह रहा हूँ आदरणीय सुब्बारेड्डी जी! कि जिस प्रकार आपने वेंकटेश्वरस्वामी मंदिर के 'क्यू-लाइन' बनवाई थीं, ठीक उसी प्रकार यहाँ हनुमान मंदिर के लिए भी 'क्यू-कांप्लेक्स' बनानी पडेगी। मुझे तो सम्पूर्ण विश्वास है। दूसरा ऐसा वाद विवाद करनेवालों को कि क्या ये यहीं अवतरित हुए, वस्तुतः यह काल्पनिक है, रामसेतु नाम का कोई पुल ही नहीं वैसे वह बनाया भी नहीं गया, वे जन्मे ही नहीं तो 'सेतु' कैसे बनाये थे, क्या नगरपालिका में उनका कोई जन्मप्रमाण पत्र है?'' उत्तर देना हमें संभव नहीं। अदालत (न्यायालय) में ये सभी प्रश्न पूछे गए जिनके उत्तर सप्रमाण हमने दे दिए। इस प्रकार न्यायालय क्षेत्र में जाने के बाद, इस विषय को पूर्णतः सौ को सौ प्रतिशत रामजन्मभूमि जैसा सात जजों की बेंच होने पर भी, रामजन्म भूमि के लिए पाँच जजों की बेंच बनाई।

पाँचों ने एकमत से यह फैसला देने के बाद कि यह रामजन्म भूमि है, इस प्रकार सर्वोच्च न्यायालय जाने पर भी एवं संवैधानिक बेंच की व्यवस्था करने पर भी जीत सके, कुछ इस प्रकार साहित्य को राणी जी ने एवं उनके वृंद ने जमा किया है।

सभी को मेरा अभिनंदन। दिल्ली में एक संस्था है जो श्रीराम का अयोध्या से लंका जाना एवं लंका से अयोध्या वापस आने के मार्ग की खोज करके, पैदल सर्वत्र घूमकर, तेरह बार घूमकर, उन सभी स्थानों की वृद्धि करने के लक्ष्य से काम कर रही है। जब वे मुझसे दिल्ली में मिले, वे बोले कि ''सर! हमारे शहर में भी एक स्थान है। सीता मैया वन वास करते समय, यानी सीता मैया के अपहरण के पूर्व उन्होंने यहाँ साडी धूप में सुखायी थी। ऐसा मानकर हमारे गाँव के सभी लोग हर वर्ष गुण्टूरु जिले में मेला जैसा लगाते, हम जाते हैं। इस प्रकार अनेक स्थान हैं जो रामायण काल से संबंधित हैं। ईश्वर सर्वान्तर्यामी है। भक्त जहाँ जिस रूप में उनकी आराधना करना चाहेंगे वहाँ वे उस रूप में दर्शन देते हैं। इसलिए द्वादश ज्योतिर्लिंग दो-दो स्थानों में हैं। चूँकि ये दो भिन्न-भिन्न स्थानों में हैं भक्त दोनों को मान्यता देते एवं दोनों स्थानों की यात्रा कर रहे हैं। मैंने भी दोनों का दर्शन किया। जब मैं एक प्रकार के द्वादश ज्योतिर्लिंगों के दर्शन करने के क्रम में यदि मैं तेरहवाँ ज्योतिर्लिंग का दर्शन करुँ कि फर भी उस मैं द्वादश ज्योतिर्लिंगों में ही गिन लूँगा। कुल मिलाकर बारह ही हैं। लिंगों की यथार्थता के करे में निर्णय करनेवाले हम कौन होते हैं? असल में हमें क्यों निर्णय करना है? ईश्वर ही यह निर्णय कर लेंगे। हमें भक्ति नही अपेक्षित हैं। इसी प्रकार प्रसिद्ध पर्वत यानी गंधमादन पर्वत पर भी शंकाएँ है। क्या महेन्द्र पर्वत ओडीसा में हैं या रामेश्वर में या मध्य प्रदेश

में है। ऐसी शंकाएँ अनेक हैं। इनके अलावा श्रीलंका वर्तमान लंका नहीं है, आस्ट्रेलिया का असली नाम अस्त्रालयम् है जो आस्ट्रेलिया बना है।

भारत देश से उत्तर पूर्व दिशा की ओर फिर वहाँ से दक्षिण पूर्व एशिया में जाते समय यानी आस्ट्रेलिया दिशा की ओर जाते समय सुरभया नामक स्थल - रामायण में हनुमान जी का सागर पार करके समय जो भी स्थान आते हैं उन सभी के नामों से भूखण्ड विद्यमान हैं। आप भी वे भूगोल में एटलैस हमें प्राप्त होते हैं। हर एक का अपना-अपना विश्वास रहता है। हम अपने विश्वास का सम्मान करते हुए दूसरों के विश्वास का बिना खण्डन किए उस विश्वास को भी सम्मान करने का वातावरण आज के समाज में अपेक्षित है। इस प्रकार मुझे विश्वास है कि हनुमान की जन्मभूमि भी ऐसी कालजयी स्थिति अवश्य प्राप्त करेगी, प्राप्त करनी है एवं न्यायालय में भी डट कर रहेगी। गोविंद गिरिजी जिस प्रकार बोले थे उसी प्रकार मैं हनुमान की उपासना के बारे में कल मैं वायुयान में आते समय सोच रहा था। मुझे सचमुच याद नहीं कि वे इसके बारे में ऐसा बोले। मैं उस समय हनुमान जी की अंजनाद्रि की वृद्धि के बारे में सोच रहा था कि क्या बोलूँ।

इस समय भारत में जितने जवान हैं उतने विश्व में कहीं भी नहीं हैं। मुझे याद है कि मेरे बचपन में जब परीक्षाएँ आती थी, तब मेरे माता-पिता कहते थे कि - ''अरे! हनुमान मंदिर जाकर परिक्रमाएँ करो, चालीस बार ऐसा करो। परीक्षा में अच्छे नंबर लाओ, प्रथमश्रेनी में आओ। हनुमान चालीसा का पाठ करो।'' इस समय युवा पीढी गलत रास्ते पर जा रही हैं, पथभ्रष्ट हो रही हैं। अनेक बुरी घटनाएँ हो रही हैं। क्राइम रेट बढ़ रही है। अनेक जवान नशीले पदार्थों का सेवन कर रहे हैं। अन्य अनेक प्रकार के मौलिक जीवन मूल्यों से संबंधित संस्कारों का ह्रास हो रहा है। न घर में है, न विद्यालय में। कुसंगति के कारण भ्रष्ट होने की स्थिति में जब मैं चिन्ताग्रस्त होकर सोचता था तब हनुमान जी याद आए जो इनके लिए आदर्श बन सकते हैं। तब मुझे कराटे, जूडो से संबंधित ये सभी विषय भी याद आए। सबसे पहले कराटे करनेवाला हनुमान ही था। जूडो का प्रयोग करनेवाला भी हनुमान ही था। नास चाक का भी उन्होंने ही प्रयोग किया था। इस प्रकार हनुमान युवा जगत के लिये आदर्श बनने योग्य है। मानसिक शक्ति साधना एवं शारीरिक बल दोनों के लिए वे आदर्श हैं। मैं ऐसे हनुमान जी के मंदिर के विकास के बारे में सोचता रहा। इस विषय में भी वह कालजयी होना चाहिए। मैं इस सम्पूर्ण विश्वास के साथ यहाँ विराम लेता हूँ कि न्यायालय में हम सफल हो जाएँगे एवं हमारा मुकदमा जीत जाएगा।

(भूमि पूजा के अवसर पर दिव्य संदेश)

जय श्रीराम।।

महर्षि मतंग द्वारा माता अंजना को बालाजी वेंकटेश स्थित वेंकटाद्रि दिखाया जाना एवं इसी पर्वत को तपस्यार्थ उपयुक्त स्थल कहना

(१) प्राक्कथन

हनुमान सर्वदेवता प्रीतिपात्र है, सकल देवताओं से वरप्राप्त एवं अनंत शक्तिशाली है एवं जिसने अत्यंत अद्‌भुत कृत्य करके दिखाया। राम की परम भक्ति, महा वीरता, ज्ञान, बुद्धिकुशलता, विनय, योग, साहस, वाग्वैभव, समर्पण-भाव इन अद्‌भुत व अनंत गुणों का समाकलित रूप बनकर हम सबके हृदयों को स्पर्श करनेवाला, देवता है हनुमान। आनंद और अभय, ये दोनों हनुमान से हमको प्राप्त वरदान हैं।

अनुकरणीय व्यक्तित्व, आराधना योग्य दैवत्व का मिला-जुला ईश्वर तत्व ही श्री आंजनेय स्वामी है। भयभीत सुग्रीव को अभय देकर श्रीराम से मैत्री करायी, अत्यंत दुःखी सीता मैया को श्रीराम का संदेश सुनाकर उनके प्राणों की रक्षा करके उनको प्रसन्न किया। लक्ष्मण के प्राणों को बचाकर श्रीराम को संतुष्ट किया। अभयांजनेय, आनंदांजनेय, सकलाभीष्ट प्रदाता के रूप में हम सब के लिए धरती पर अवतरित देवता है हनुमान।

हनुमान के अद्‌भुत और संपूर्ण व्यक्तित्व का श्रीमद्‌रामायण में बहुत ही विस्तृत और सुचारू रूप में वर्णन किया गया है। श्रीमद्‌रामायण एक मंत्र गर्भित आदिकाव्य है। पुराणों से यह पता चलता है कि विष्णु तेज श्रीरामचंद्र के रूप में शक्ति तेज सीता मैया के रूप में एवं शिव तेज हनुमान के रूप में अभिव्यक्त हुए हैं।

हनुमान का जन्म वृत्तान्त श्रीमद्‌रामायण में के सुंदरकांड में, अनेक पुराणों में, वेंकटाचल माहात्म्य व अनेक काव्यों में बखूबी वर्णन किया गया।

सुंदर कांड में स्वयं हनुमान ने सीतादेवी को अपनी जन्म कथा सुनाई। हनुमान ने कहा कि शंबसादन नामक दैत्य का संहारक महाकपि ''केसरी'' और उनकी पत्नी अंजना के गर्भ में वायुदेव के कारण मेरा जन्म हुआ।

माल्यवान्नाम वैदेहि! गिरीणामुत्तमो गिरिः।
ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः।।
स च देवर्षिभिर्दिष्टः पिता मम महाकपिः।
तीर्थे नदीपतेः पुण्ये शंबसादनमुद्धरन्।।

माल्यवंत पर्वत, पर्वतों में श्रेष्ठ है 'केसरी' नामक कपिवीर जो देवर्षियों से निर्देशित होकर गोकर्ण गए, वह महान कपिवीर मेरे पिता हैं। उन्होंने नदीपति पुण्य तीर्थ में शंबसादन नामक राक्षस का वध किया था। हे मिथिलात्मजा! मेरा जन्म वायु के प्रभाव से 'केसरि' और उनकी पत्नी से हुआ था। मेरे कृत्यों के कारण ''मैं हनुमान'' के रूप में लोक प्रसिद्ध हूँ।

यस्याहं हरिणः क्षेत्रे जातो वातेन मैथिलि।
हनूमानिति विख्यातो लोके स्वेनैव कर्मणा।।

(श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, सुंदरकांड, ३५वाँ सर्ग - श्लोक. ३५-८०-८२)

२) किष्किंधा कांड में जांबवंत समुद्र लांघने के लिए हनुमान को प्रेरित करते हुए, उनके जन्म इतिवृत्त को इस रूप में करते हुए है, जांबवंत कहता है - हे हनुमान! आपकी माता अंजनादेवी कारण जन्मा है।

अप्सराऽप्सरसां श्रेष्ठा विख्याता पुंजिकस्थला।
अंजनेति परिख्याता पत्नी केसरिणो हरेः।।

अप्सरासाओं में श्रेष्ठ और लोकप्रसिद्ध पुंजिकस्थला, वह अंजना नाम से जन्म लेकर कपिवीर केसरी की पत्नी बनी थी।

विख्याता त्रिषु लोकेषु रूपेणाप्रतिमा भुवि।
अभिशापादभूत्तात! वानरी कामरूपिणी।।

त्रिलोकों में अतुलनीय सुंदरी होते हुए भी शाप के कारण एक कामरूपिणी स्त्री के रूप में पैदा हुई थी।

दुहिता वानरेंद्रस्य कुंजरस्य महात्मनः।
मानुषं विग्रहं कृत्वा रुपयौवनशालिनी।।
विचित्रमाल्याभरणा कदाचित् क्षौमधारिणी।
अचरत् पर्वतस्याग्रे प्रावृडंबुदसन्निभे।।

महात्मा एवं कपिनरेश कुंजर की पुत्री के रूप में उत्पन्न वे सुंदररूप और यौवन के साथ पीतंबर धारण करके, रंगबिरंगी पुष्प मालाएँ और आभरणों के साथ (सावन) के बादल के समान वर्ण से युक्त पर्वत पर विचरण कर रही थी।

तस्या वस्त्रं विशालाक्ष्याः पीतं रक्तदशं शुभम्।
स्थितायाः पर्वतस्याग्रे मारतोऽथाहरच्छनैः।।

विशाल नेत्रोंवाली ऐसा विहरण करते समय उसके पहने हुए लाल पल्लू वाले पीले वस्त्र को वायुदेव ने धीरे धीरे हटाया।

स ददर्श ततस्तस्या वृत्तावूरू सुसंहतौ।
स्तनौ च पीनौ सहितौ सुजातं चारु चाननम्।।

पवन ने उसके वर्तुलाकार जाँघों, आकर्षक वक्षस्थल एवं सुंदर मुख को देखा।

तां विशालायतश्रोणीं तनुमध्यां यशस्विनीम्।
दृष्ट्वैव शुभसर्वांगीं पवनः काममोहितः।।

विशाल कटिभाग और पतली कमर के साथ, लोक प्रसिद्ध उस सर्वशुभांगी को देखकर पवन काममोहित हो गया।

स तां भुजाभ्यां दीर्घाभ्यां पर्यष्वजत मारूतः।
मन्मथाविष्टसर्वांगो गतात्मा तामनिंदिताम्।।

मन्मथ विकार से पीडित वायुदेव ने अपनी अति लंबी बाहुओं से उस विशुद्ध नारी को आलिंगन किया।

सा तु तत्रैव संभ्रांता सुव्रता वाक्यमब्रवीत्।
एकपत्नीव्रतमिदं को नाशयितुमिच्छति।।

व्रतदीक्षा परायणी, इस घटना से चकित होकर उसने यह कौन है? जो एक ही व्यक्ति की पत्नी बनकर जीने की मेरी प्रतिज्ञा को नष्ट करनेवाला?

अंजनाया वचः श्रुत्वा मारुतः प्रत्यभाषत।
न त्वां हिंसामि सुश्रोणि! मा भूत्ते मनसो भयम्।।

अंजना की उन बातों को सुनकर मारूत ने कहा है - ''सुंदरी! चिंता मत करों। मैं शारीरिक रूप से तुम्हारे पास आकर क्लेश नहीं पहुँचाऊँगा।

मानसाऽस्मि गतो यत्त्वां परिष्यज्य यशस्विनि!
वीर्यवान् बुद्धिसंपन्नस्तव पुत्रो भविष्यति।।

तुझको केवल मानसिक रूप से मैंने पसंद किया। इस कारण तुमको महावीर, बुद्धिमान एक पुत्र पैदा होगा।

महासत्त्वो महातेजा महाबलपराक्रमः।
लंघने प्लवने चैव भविष्यति मया समः।।

महान अंतस्सत्व रखनेवाला, तेजस्वी, महाबली और पराक्रमी, चाहे कितना भी दूर हो, लाँघने में मेरे समान बनेगा।

एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे!
गुहायां त्वां महाबाहो! प्रजज्ञे प्लवगर्षभ!

(श्रीमद्वाल्मीकि रामायण, उत्तरकांड, ३५-१४)

हे महाकपि! आपकी माँ ने इन बातों से संतुष्ट होकर उस गुफा में तुमको जन्म दिया था। जांबवंत ने इस प्रकार हनुमान की जन्म-कथा सुनाई।

हनुमान की जन्म-कथा में वायुदेव प्रसंग का रहस्य

हनुमान की जन्म कथा में केवल रामायण में ही नहीं बल्कि अनेक इतर पुराणों में भी वायुदेव का जिक्र है। अंजना-केसरी दंपतियों के प्रसंग में वायु का प्रस्ताव आधुनिक लोगों को अजीब सा लगेगा। लेकिन जो धार्मिक शास्त्र और वैदिक परंपराओं के ज्ञाता हो, उनके लिए यह आश्चर्य की बात नहीं होगी।

वैदिक क्रम में संपन्न होनेवाले विवाह में जो मंत्र हैं, यदि हम गहराई से उनका परिशीलन करें, तो पता चलता है कि जब वधू कन्या के रूप में रहती है तब उसकी रक्षा सोम, गंधर्व और अग्नि के द्वारा की जाती है। उसका रक्षक होने के कारण उनको उस कन्या के पति कहना उचित ही रहेगा, क्योंकि पति का अर्थ है रक्षा करनेवाला। उसी रूप में विवाह संपन्न होने के दौरान कन्या का उसके पति को सौंपते समय उच्चरित मंत्रों में गृहस्वामिनी बनने के बाद उसकी रक्षा का दायित्व अग्नि, भृगु, आर्यमुनि, सवित्र, अन्य आदित्य, वायु, प्रजापति विष्णु, इंद्र आदि को सौंप दिया जाता है। उस रूप में सौंप दी गयी उस कन्या का गृहस्वामिनित्व (गृहिणीत्व) समायानुसार उनकी रक्षा इन पतियों के द्वारा होती है।

इस रूप में 'पाणिग्रहण' का समय पढ़े जाने वाले मंत्रों में यह भी एक है -

य एति प्रदिशस्सर्वा दिशोम पवमानः।
हिरण्यहस्तऐरम्मस्सत्वा मन्मनसं कृणोतु।।

''वर के द्वारा पढ़े जाने वाले इस मंत्र का अर्थ है - अपनी उपासना करनेवालों को देने के लिए हाथ में स्वर्ण धारण करके सभी दिशा और विदिशाओं में विचरण करनेवाले अग्नि का मित्र वायु तुमको मुझमें अनुरक्त बनाएगा।''

इस मंत्र के अनुसार, वायु यह बात जानते हैं कि अंजना-केसरी को समस्तलोकपूज्य, सर्व देवता वंदनीय अनंत शक्ति संपन्न, महा पराक्रमी पुत्र जन्मेगा। और वे यह भी चाहते हैं वह शिशु उनके जैसे शक्तिशाली भी होना चाहिए। इसी भावना से पवन हनुमान का जन्मपर्यंत उसका रक्षा-कवच-वलय बनकर खड़ा हुआ। इस चर्या का वर्णन ही आलिंगन के रूप में किया गया। देवताओं का समागम मानवों जैसा नहीं है। वे शरीर पर मोह नहीं दिखाते हैं। वे ऐसी, प्रभावी लोग हैं कि अपनी दृष्टि से ही संतान को प्रदान कर सकते हैं। पवन भी ऐसा ही है। उसको भौतिक कामवासना नहीं होती हैं। देवताओं केलिए गर्भधारण की प्रक्रिया नहीं है। उनके लिए याद करने मात्र से संतान उत्पन्न होना सामन्य विषय है। उसी रूप में देवताओं की अनुकंपा प्राप्त होने पर ''सद्यः जननं'' वाली बात भी सामान्य विषय ही है। यदि क्षेत्र (जन्म देने वाली स्त्री) मानवकांता या जानवर हो तो वह गर्भ धारण ही कर सकती हैं।

एक शिखराग्र पर खड़े होने से बहनेवाली हवा से हर कोई का वस्त्र उड़ जाना सहज है। उस समय हवा उनको घेरना, हवा की ध्वनि कानों में प्रवेश करना सहज है। उस घेरने को आलिंगन के रूप में वर्णन करना रूपकालंकार है। इस पर जो शंकाएँ है, उनका निवारण वायुदेव ने तो किया ही है। वेदमंत्रों ने तो अंतर्गत रहस्य को अवगत करा ही दिया।

३) श्रीमद्वाल्मीकि रामायण के उत्तर कांड में स्वामी श्रीरामचंद्र, अगस्त्य महर्षि से हनुमवृत्तांत का वर्णन करने के लिए कहा है तो महर्षि उस इतिवृत्त का वर्णन इस प्रकार करते हैं -

राघवस्य वचः श्रुत्वा हेतुयुक्तमृहिस्ततः।
हनूमतः समक्षं तमिदं वचनमब्रवीत्।।

राघव की युक्ति-युक्त बात सुनने के बाद अगस्त्य ऋषि हनुमान के समक्ष कहते हैं -

सूर्यदत्तवरस्वर्णः सुमेरुर्नाम पर्वतः।
यत्र राज्यं प्रशास्त्यस्य केसरी नाम वै पिता।।
तस्य भार्या बभूवेष्टा अंजनेति परिश्रुता।
जनयामास तस्यां वै वायुरात्मजमुत्तमम्।।

'सुमेरु' नामक एक पर्वत है जिसने सूर्य से वरदान प्राप्त किया था। वहाँ हनुमान के पिता 'केसरी' नाम का एक वानरवीर राज्य कर रहा था। 'अंजना, नाम से उनकी एक प्रख्यात, अत्यंत प्रिय पत्नी थी। उसकी कोख से वायुदेव एक उत्तम और अपने लिए अनुरूप पुत्र को प्राप्त किया। वह पुत्र ही हनुमान था।

''मेरुपुत्रं महारण्यं वेंकटाचल संज्ञकम्'' - श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में वर्णित सुमेरु पर्वत वेंकटाचल ही है। वेंकटाचल माहात्म्य से पता चलता है कि मेरुपर्वत का पुत्र था जो 'वेंकट' और 'सुमेरु' नामों से जाना जाता था। वह शेषनाग के अंश से उत्पन्न हुआ। वेंकटाचल माहात्म्य के अनुसार यह पर्वत ऋषियों को देवताओं, मुक्तों को सुनहरे रंग में दिखाई पडता है।

श्रीमद्वाल्मीकि रामायण के तीन संदर्भों में हनुमान के माता-पिता के बारे में वर्णन है। लेकिन हनुमान के जन्मस्थान का उल्लेख नहीं है। उत्तरकांड को श्रीमद्वाल्मीकि रामायण के अंतर्भाग के रूप में माननेवालों को ऊपर का तथ्य परम प्रामाणिक बन सकता है। मतलब सुमेरू पर्वत हनुमान के पिता वानरवीर 'केसरी' के अति विशाल वानर राज्य का ही हिस्सा रहा था। इस प्रमाण से इस बात का हमें पता चलता है। ब्रह्मांड पुराण वेंकटाचल माहत्म्य में उल्लिखितानुसार 'केसरी' की पत्नी अंजनादेवी ने इस प्रांत में तपस्या करके ''अनुपमबलधाम'' हनुमान को जन्म दिया। स्कंद पुराण में तो यह बात कही गई कि, अंजनादेवी तिरुमला पर्वत के आकाशगंगा के निकट अंजनाद्रि पर तपस्या करके महाबली हनुमान को जन्म दिया। इन सारी बातों को खंडित व निराकरण (तिरस्कृत) दृष्टि से नहीं, बल्कि समन्वय दृष्टि से देखना है। कारण यह है कि सैकड़ों शताब्दियों हजारों वर्षों के प्रमाणों के गवाहों को नकारना हो तो, हमारे सौ वर्षों के जीवन में हमारे पंद्रह बीस वर्षों का अनुभव पर्याप्त नही हो सकता।

अब व्यास विरचित महाभारत में भीम से वार्तालाप करने के संदर्भ में हनुमान ने स्वयं कहा है कि आप ने वायुदेव की अनुकंपा से केसरी की पत्नी की कोख में पुत्र के रूप में जन्म लिया है।

अहं केसरिणः क्षेत्रे वायुना जगदायुषा।
जातः कमलपत्राक्ष हनुमान्नाम वानरः।।

इस रूप में श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में या व्यास महाभारत में तो हनुमान के माता-पिता के बारे में वर्णन भी वायुदेव के प्रस्ताव सहित स्पष्ट रूप से गोचर हो रहा है, लेकिन जन्म स्थान के बारे में कहीं भी उल्लेख नहीं है।

लेकिन आंजनेय जन्मस्थल के बारे में भविष्योत्तर, वराह, ब्रह्मांड़, वामन, स्कंदादि अनेक पुराणों में सुस्पष्ट वर्णन है।

ति.ति.दे. एवं जीयर शैक्षिक न्यास के द्वारा प्रकाशित 'वेंकटाचल माहात्म्य' में हनुमान के जन्म के बारे में वर्णन करने वाले श्लोक स्पष्ट रूप से दिखाई पडते हैं। लेकिन वे श्लोक उन पुराणों के वर्तमान के मुद्रणों में मौजूद नहीं हैं।

प्राचीन काल में ताडपत्रों के रूप में हजारों साल तक सुरक्षित पौराणिक साहित्य में ऊपर उद्धृत वेंकटाचल माहात्मय के श्लोक जरूर रहे होंगे। इसीलिए उस समय प्राप्त पौराणिक साहित्य को प्रामाणिक मानते हुए स्पष्टरूप से निर्धारित किया गया कि सप्ताचलों पर अवतरित अर्चामूर्ती विष्णुस्वरूप ही है, कोई अन्य नहीं। अब हनुमान के जन्म स्थान को निर्धारित करने में उन शलोकों को ही हनुमद्जन्मस्थान के प्रमाणों के रूप में स्वीकार करना है, ऐसा नहीं कि उन पुराण ग्रंथों में यह प्रमाण उपलब्ध नही होने के कारण कि ये सभी कल्पित और हनुमान जन्मभूमि निर्धारित करने के लिए इनके नए सिरे से सृजन हुआ है।

पुराणों की प्रामाणिकता - कोटा वेंकटाचलम जी जैसे अनेक प्रसिद्ध भारतीय और विदेशी इतिहासकार भारत के इतिहास की रचना में पुराणों को प्रमाण के रूप में लिया है। उनमें से कुछ ग्रंथों को यहाँ उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है -

१) बिम्ला चरण सिद्धांत (Bimla Churn Law)

२) आचार्य बलदेव उपाध्याय 'पुराण विमर्श'

३) वासुदेव शरण अग्रकाल - मार्कंडेय पुराण एक सांस्कृतिक अध्ययन

४) कोट वेंकटाचलम् 'अग्नि वंशपु राजुलु'

५) एम.एन.दत - The Agni Puranam

६) सावित्री सक्सेना - Geographical Survey of the Puranas

७) सि.आर.कृष्णमाचार्युलु - The Cradle of India History

८) पि.वि.काणो. - History of Dharmasastra

९) कल्याण पत्रिका का पुराण कथांक

१०) बि.बि.लाल - Rama

११) एन.एल.दे. N.L. Dey

१२) बि.सि.ला - B.C. Law

१३) डि.सि.सरकार - D.C. Sirkar, studies in the Geography of Ancient and Medieval India,

१४) पुष्करभटनागर - Dating the era of Lord Rama

१५) सरोज बाला, अशोक भटनागर, कुलभूषण मिश्र - वैदिक युग एवं रामायण काल की ऐतिहासिकता

१६) बि.बि.लाल - Excavations at Sringaverapura

१७) डॉ.एच.सि.रायचौधरी - Studies of Indian Antiquitles

विदेशी इतिहासकार

१) कन्निंघम Cunningham, A Bhilsa Topes, Geography of Ancient India

२) फेर्गुसन History of Kashmir

३) रेप्सन E.J. Ancient India

४) सुनीत V. Early History of India

आभार

इस विशिष्ट एवं विस्तृत तेलुगु भाषा पुस्तक के रूपांकन में सहयोग देने के लिए मैं, विद्वान परिषद सदस्यों को और जम्मुलमडक लक्ष्मीश्रीनिवास (सहायक, वि.सि.पेषी, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविध्यालय) को, डॉ.एम.दत्तात्रेय शर्मा (व्याख्याता, शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय), डॉ.गंगिशेट्टी लक्ष्मी नारायण (तेलुगु व्याख्याता, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय), डॉ.टि.श्री तेजा (आगम व्याख्याता, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय), प्रसिद्ध चित्रकार श्री कूचि जी, सभी को अपना विशेष आभार प्रकट करता हूँ। श्री हनुमान जन्मभूमि के अन्वेष्ण महायज्ञ में भागीदार हर व्यक्ति को सर्व देवात्मस्वरूप श्री हनुमान की अनुकम्पा अवश्य मिलेगी, इसी आशा के साथ...

आचार्य विरिवेंटि मुरलीधर शर्मा

उपकुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

तिरुपति

20-12-2021

कपिल तीर्थ (जलप्रपात) में अंजना-केसरी दंपति (पति-पत्नी) का पुण्यस्नान

1. पुराणों की प्राचीनता और प्रामाणिकता

तेलुगु मूल - आचार्य विरिवेंटि मुरलीधर शर्मा अनुवाद - कुमारी जी.शशिकला

भगवान के निःश्वास रूपी वेद भारतीय जीवन विधान, धर्मोद्धारण, तत्वदर्शन के मूलाधार हैं। वे परम गूढ़ होने से साधारण व्यक्ति की पहुँच के बाहर हैं। ऐसे महत्वपूर्ण वेद, पुराणों में परिपोषित किए जा रहे हैं।

ऐसे वेदों के सार के रूप में अवतरित ग्रंथ-त्रय ही हैं 'रामायण-भारत-भागवत'। ये भारतीय सनातन संस्कृति के निलय हैं। ''**इतिहासपुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्**'', ऐसा इसलिए कहा है कि भारतीयों के जीवन शैली, संस्कृति स्वरूप-स्वभाव को समग्र रूप से, कलात्मकता से चित्रित किए हमारे पुराण भारतीय संस्कृति केलिए विश्वकोश हैं।

इस तरह के महत्वपूर्ण पुराणों को अन्य शास्त्रों की सहायता से अवगत ज्ञान प्राप्त व्यक्ति ही पुराणों की व्याख्या करने में योग्य है। पर ''**ज्ञानलवदुर्विदग्ध**'' पुराणपठन करने केलिए भी योग्य नहीं है। वेदों का अर्थ मालूम करना चाहे, तो जैसे षट्शास्त्रों का ज्ञान होना चाहिए वैसे ही, पुराणों को समझने केलिए ज्योतिष आदि शास्त्रों की जानकारी आवश्यक है।

पुराणों का प्रभाव भारतीय जन जीवन शैली में हर कदम में अविभक्त रूप से मानो गूँथ गया है। भारतीय सनातन धर्म केलिए वेद बुनियाद है, जबकि हमारे 'स्मृति-पुराण-इतिहास' (नींव)मूलाधार स्तंभ हैं। यदि मूलाधारस्तंभों के रूप में स्मृति-पुराण-इतिहास नहीं हो, तो सनातन धर्म-भवन इस तरह सुस्थिर रूप में खडा नहीं होता।

''**श्रुति-स्मृति पुराणानामालयं करुणालयं**'' इस श्लोक से हम भगवत्पाद शंकर की प्रार्थना करते रहते हैं।

वेदों के उपबृंहकम के रूप में पुराण हैं :-

इतिहास पुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्।
बिभेत्यल्पश्रुतात् वेदो मामयं प्रहरिष्यति।। [1]

इतिहास-पुराणों के माध्यम से वेदार्थ स्पष्टतः विस्तार से ज्ञात होता है। **यदि पुराणादि ज्ञान न रखनेवाला वेद की व्याख्या करें तो वेद माता डरती है कि वह समुचित प्रकार से अवगत न कर सकेगा।** पुराण का अर्थ-''प्राचीन''-ही नही ''पुरातन होने पर भी हमेशा नया ही रहता है (पुरापि नवं पुराणं)-ऐसा भाव भी सुनने को मिलेगा।

शतपथब्राह्मणं, गोपथब्राह्मणं, बृहदारण्यकोपनिषत जैसे वेद भाग पुराणों के माहात्म्यम की प्रशंसा करते हैं।

---

1) पद्म पुराण - सृष्टिखंड - २-५१.

स यथर्द्रैन्धाग्नेग्नेभ्याहितात पृथग्धूमा
विनिश्चिरन्त्येवं वा अरेस्य महतो भूतस्य निः श्वसित -
मेतद्, यद्, ऋग्वेदो, यजुर्वेदः, सामवेदोथर्वांगिरस
इतिहासः, पुराणं, विद्या, उपनिषदः श्लोकाः,
सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्यान्यस्यै वैतानि निःश्वसितानि।।[1]

गीले इंधन से उत्पन्न आग के साथ धुआँ भी जैसा निकलेगा उसी प्रकार, महाभूतात्माक परब्रह्म के निःश्वास से ही सभी का उद्भव हुआ है, ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वांगिरस, इतिहास, पुराण, विद्या, उपनिषत्, श्लोक, सूत्र, अनुव्याख्यान्, व्याख्या - इस तरह सभी उस परमात्मा के निःश्वास ही हैं।

पुराण वेद शास्त्रों से भी प्राचीन हैं :-

वायुपुराण कहता है कि वेदशास्त्रों से भी पुराण प्राचीन है :

प्रथमं सर्वशास्त्राणां पुराणं ब्रह्मणा स्मृतम्।
अनन्तरं च वक्त्रेभ्यो वेदास्तस्य विनिस्सृताः।।[2]

(ब्रह्मा ने सभी शास्त्रों के पूर्व पुराणों का स्मरण किया था। बाद में उनके मुख से वेदों का आविर्भाव हुआ) **वायुपुराण इस बात को जोर देकर बताता है कि वेदों में अगोचर अनेक विशेषताएँ भी पुराणों में मौजूद है।)**

यन्न दृष्टं हि वेदेषु तत्सर्वं लक्ष्यते स्मृतौ,
उभयोर्यन्न दृष्टं हि तत्पुराणैः प्रणीयते।
यो विद्याच्चतुरो वेदान् सांगोपनिषदो द्विजः,
न चेत्पुराणं सं विद्यान्नैव स स्याद्विचक्षणः।[3]

पुराण की परिभाषा :-

वायु पुराण में :

यस्मात् पुराह्यनधीतं पुराणं तेन तत् स्मृतम्।
निरुक्तमस्य यो वेद सर्वपापैः प्रमुच्यते।[4]

प्राचीन काल में सजीवरूप में रहा, इसलिए इसे पुराण कहते हैं। इसका तत्व जिसे ज्ञात है वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है।

---

1) बृहदारण्यकोपनिषत् - २-४-१०

2) वायु पुराण - १-६०-६२

3) वायु पुराण, १-१९९-१, पद्म पुराण, श्रृंखला का अंक-२, ५०-२, शिवपुराण श्रृंखला का अंक-१,३५

4) वायु पुराण - १-१-५५

महाभारत में :-

''पुराण संहिताः पुण्याः कथा धर्मार्थसंश्रिताः''[1]

(पुराणों में वर्णित कथाएँ धर्मार्थ प्रद हैं।)

रामायण - महाभारतों के इतिहास और विष्णु, वायु आदि अष्टादश पुराण पंचम वेद कहलाते हैं।

''इतिहासपुराणं च पञ्चमो वेद उच्यते''[2]

''इतिहास पुराणं पञ्चमं वेदानां वेदः''[3]

और एक परिभाषा - ''पुरा अपि नवं पुराणम्'' पुरातन होने पर भी नया है पुराण।

महत्व - ''वेद सभी पुराणों में ही सदा प्रतिष्ठित है:'' ऐसा नारद पुराणा कहता है। **''वेदाः प्रतिष्ठितास्सर्वे पुराणेष्वेव सर्वदा''**[4]

आम लोगों को वेदों से भी आसान विद्या है पुराण विद्या। स्कंद पुराण में पुराण को वेदों की आत्मा के रूप में वर्णित किया गया है।

आत्मा पुराणं वेदानां पृथगङ्गानि तानि षट्,
यच्च दृष्टं हि वेदेषु तद्दृष्टं स्मृतिभिः किल।[5]

वेदवन्निखिलं मन्ये पुराणार्थं द्विजोत्तमाः,
वेदाः प्रतिष्ठितास्सर्वे पुराणे नात्र संशयः।।[6]

(हे ब्राह्मण श्रेष्ठ! सारा वेदार्थ पुराणों में हैं। वेद सभी पुराणों में उपलब्ध हुए हैं।)

नारदीय पुराण के अनुसार पुराण सर्ववेदार्थ सार है।

''सर्व वेदार्थ साराणि पुराणानीति भूपते''[7]

वेद और पुराण :-

वेद-पुराणों का पारस्परिक संबंध और उनकी प्रामाणिकता से संबंधित विवरण पुराण ग्रंथों में और दर्शन ग्रंथों में स्पष्टता से प्राप्त होता है। पुराणों में वेदार्थ का उपबृंहण कई जगहों में प्रतिपादित है।

---

1) महाभारत, आदिपर्व - १-१६
2) श्रीमद्भागवत - १-४-२०
3) न्याय दर्शन, वात्सायन भाष्यं - ४-१-६२
4) नारद पुराण - उ.२४.१८
5) स्कंद पुराण, अवंती खंड - १-२३
6) स्कंद पुराण, प्रभास खंड - २-९०
7) नारदीय पुराण - १-९-९७

इस विषय का समर्थन करते हुए श्री जीव गोस्वामी जी ने नई परिभाषा दी कि - **''पूरणात् पुराण - वेदार्थ को पूरा करनेवाला पुराण है''** इसलिए वेद-पुराणों का एक रस और अनन्यता इसके द्वारा स्पष्ट होती है।

वेदार्थोपबृंहणं या पूर्ति (पुराणं) ऐसा उदृत, उत्पत्ति से प्राप्त युक्ति के द्वारा पुराणों को वेदत्व की सिद्धि प्राप्त हो रही है।

''इतिहास पुराणाभ्यां वेदं समुपबृंहयेत्'' इति।

''पूराणात् पुराणमिति चान्यत्र, न चावेदेन वेदस्य बृंहणं संभवति, न हि अपूर्णस्य कनकवलयस्य त्रपुणा पूरणं युज्यते।''[1]

पुराण वेदों के समान :-

पुराण वेदों के समान है ऐसा कहने के लिए प्रमाण भी हैं। स्कंदपुराण में प्रभासखंड में इस तरह है।

यदा तपश्च चारोग्रममराणां पितामहः।
आविर्भूतास्ततो वेदाः सषड्गपदक्रमाः।
ततः पुराणमखिलं सर्वशास्त्रमयं ध्रुवम्।
नित्यं शब्दमयं पुण्यं शतकोटिप्रविस्तरम्।
निर्गतं ब्रह्मणो वक्त्रात्.....[2]

(सृष्ट्यादि में विधाता ने तीव्र रूप से तपस्या की थी। तपस्या के फलस्वरूप षडंग, पद-क्रम सहित वेदों का आविर्भाव हुआ। उसके बाद सर्वशास्त्रमय और नित्य शब्दमय, पुण्यदायक एक करोड श्लोक युक्त पुराणों का आविर्भाव हुआ। ये पुराण भी वेदों के समान ब्रह्मा के मुख से उद्भव हुए।) भागवत् पुराण कहता है कि ''ऋग्यजुस्सामाथर्वण को ब्रह्मा ने अपने चतुर्मुखों से क्रमशः सृजन किया। पंचम वेद स्वरूप इतिहास पुराणों को भी अपने चतुर्मुखों से सृजन किया है।''

इतिहास पुराणानि पञ्चमं वेदमीश्वरः।
सर्वेभ्य एव वक्त्रेभ्यः संसृजे सर्वदर्शनः।।[3]

वेदों में अलभ्य विषय पुराणों में लभ्य हैं :-

वेदों में स्पष्टतः जो प्राप्त नहीं होते, उन्हें पुराणों में से ग्रहण करना है। वेदों में अवर्णित एकादशीव्रत पुराणोक्त है, अतएव ग्राह्य है। इसी तरह, वेदों में ग्रह संचार, काल शुद्धि, तिथियों की क्षय-वृद्धि, पर्व आदि का निर्धारित नहीं

---

1) भागवत संदर्भः - पृ.१७

2) स्कंदपुराण, प्रभासखंड - २-३,४,५

3) भागवत - ३-१२-३९

किया गया है, पर इतिहास-पुराणों में इन्हें पहले ही निर्धारित किया था, वेदों में अलभ्य विषय स्मृतियों में लभ्य हैं। वेद, स्मृति दोनों में लभ्य न होने वाले विषयों का वर्णन पुराणों में लभ्य होता है। ''मैं मानता हूँ कि वेदार्थ से भी पुराणार्थ ज्यादा विस्तृत है। इसलिए पुराणों में वेद अच्छी तरह प्रतिष्ठित हैं'' - ऐसा परमशिव ने पार्वती से कहा।

वेदार्थादधिकं मन्ये पुराणार्थं वरानने।
वेदाः प्रतिष्ठिताः सर्वे पुराणेष्वेव सर्वदा।।

न वेदे ग्रह संचारो न शुद्धिः कालबोधिनी।
तिथि वृद्धिक्षयो वापि पर्वग्रह विनिर्णयः।।

इतिहास पुराणैस्तु निश्चयोयं कृतः पुरा।
यन्नदृष्टं हि वेदेषु तत्सर्वं लक्ष्यते स्मृतौ।
उभयोर्थन्नदृष्टं हि तत्पुराणैः प्रगीयते।[1]

और एक स्थान पर :-

श्रुतिस्मृती तु नेत्रे द्वे पुराणं हृदयं स्मृतं,
श्रुतिस्मृतिभ्यां हीनोन्धः काणः स्यादेकया विना।
पुराणहीनाद् हृच्छून्यात्काणांथावपि तौ वरौ[2]

श्रुति-स्मृति दो नेत्र होते तो पुराण एक हृदय है। एक आँख न होने वाला काना हो तो दो आँखें न होने वाला अंधा है। पर जिसको पुराणों का ज्ञान नहीं है वह हृदय हीन है। हृदयहीन की तुलना में ये दोनों ही उत्तम हैं।

महाभारत पुराण जिस प्रकार वेदोपहबृंहक होता है यह एक छोटे से वाक्य में ही स्पष्टतः पता बताता है। **पुराण रूपी पूर्णचंद्र श्रुति की चाँदनी को प्रकाशित करवाता हैं।**

''पुराण पूर्ण चंद्रेण श्रुतिज्योत्स्नाः प्रकाशिताः''[3]

पुराणों की प्रामाणिकता :-

वेद स्वतः प्रमाण है। पुराणों की प्रामाणिकता के बारे में दार्शनिकों ने विशेष रूप से विवेचित किया था। वात्सायन से रचित न्याय भाष्य में वात्स्यायन का अभिप्राय इस तरह है :

---

1) नारद पुराण - उत्तरार्थः, अध्याय- २४-८-१८

2) स्कंद पुराण - काशीखंड - ४-१-२-९७

3) महाभारत - १-१-८६

''य एव मंत्रब्राह्मणस्य द्रष्टारः प्रवक्तारश्च ते खल्वितिहास पुराणस्य धर्मशास्त्रस्य चेति''।।[1]

(मंत्र ब्राह्मणद्रष्टा और प्रवक्ता ऋषिमुनि, इतिहास पुराणों के भी द्रष्टा एवं और व्याख्याता भी हैं।)

भगवत्पाद शंकर का अभिप्राय :-

''**समूलमितिहासपुराणम**''[2] - इतिहास पुराण समूल हैं न निर्मूल। अर्थात् प्रमाण सहित हैं। आचार्य शंकर ने पुराणों के श्लोकों को ''**स्मृतिश्च भवति**'' कहते - हुए उनको उल्लिखित किया है। अर्थात्, आचार्य पुराणों की प्रामाणिकता को स्मृतिकोटि में मिलाकर प्रमाणीकरण कर रहे हैं।

पुराणों से प्राप्त नाम है - भारतदेश

इस विषय में सभी पुराणों में एकमत दिखाई दे रहा है। स्पष्टतः भरत के नाम से ही ''भारत'' का नाम प्रसिद्ध हुआ है परंतु यह भरत कौन है? प्राचीनानिरुक्ति के अनुसार स्वायंभुव मनु का पुत्र प्रियव्रत था। उनका पुत्र नाभि-नाभि का पुत्र ऋषभ एवं उनके सौ पुत्रों से ज्येष्ठ पुत्र भरत सिंहासनारूढ़ हुआ था। पुराणों में यह घोषित है कि पूर्वकाल से ही अजनाभ नाम से अभिहित भारतवर्ष, भरत के काल से होकर भारतवर्ष के नाम से प्रसिद्ध हुआ। परन्तु यह तो अप्रामाणिक है कि दुष्यंत के पुत्र भरत के नाम से भारत देश प्रसिद्ध हुआ।

(क) ऋषभात् भरतो जज्ञे यो वीरः पुत्रशताग्रजः,
सोऽभिषिच्याथ भरतं पुत्रं प्राव्राज्यमास्थितः।
हिमाह्वं दक्षिणं वर्षं भरताय न्यवेदयत्,
तस्मात्तद् भारतं वर्षं तस्य नाम्ना विदुर्बुधाः।[3]

(ऋषभ के सौ पुत्रों में अग्रज के रूप में भरत का जन्म हुआ। ऋषभ भरत का राज तिलक करके स्वयं परिव्राजक हुआ था। उसने हिम से आच्छन्न दक्षिण भाग को शासन करने केलिए भरत को दिया था। विद्वानों को पता चला कि इस तरह भरत के नाम से भारतवर्ष हुआ है।)

(ख) भरतस्तु महाभागवतो यदा
भगवतावनितल परिपालनाय संचितितस्तदनुशासनपरः,
पञ्चजनीं विश्वरुपदुहितरमुपयेमे.....
अजनाभं नामैतद्वर्षं भारतमिति यत आरभ्य व्यपदिशन्ति।[4]

---

1) पात्रचयान्तानुपपत्तेश्च फलाभावः न्याय सूत्र (४-१-६२) पर वात्सायन भाष्यम्।

2) ऋषीणामपि मंत्रब्राह्मणदर्शिनां सामर्थ्यं नास्मदीयेन सामरर्थ्येनोपमातुं युक्तम्। तस्मात् समूलमितिहास पुराणम्इति'' - शारीरिक भाष्यम् १-३-३२

3) मार्कंडेय पुराणम् - ५३-३९,४०, वायुपुराणं - ३३-५१,५२

4) भागवतम ५-७-१-३

महाभागवत भरत ने भगवान के द्वारा भूमंडल पर शासन करने केलिए नियुक्त होकर भगवान की आज्ञा से बद्ध होकर विश्वरूप की पुत्री पंचजननी से विवाह किया। तब से लेकर अजनाभ नाम वाला यह भरतवर्ष भारत के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पुराणों में वैज्ञानिक विषय

वास्तुशास्त्र

मत्स्य पुराण में (आ.२५२-२५३) विष्णु धर्मोत्तर पुराण में (द्वितीय भाग- अ. २९, तृतीय भाग आ.९४-९५ और अग्निपुराण (अ.९३, १०४-१०६) में वास्तुशास्त्र की विशेषताओं का वर्णन हुआ है।

शिल्पशास्त्र - पुराणों में अष्टम वसु के पुत्र विश्वकर्म समस्त शिल्पशास्त्रों और कलाओं के लिए आचार्य बनाया गया।

विश्वकर्मा प्रभासस्य पुत्रः शिल्पी प्रजापतिः
प्रासादभवनोद्यानप्रतिमाभूषणादिषु,
तडागारामकूपेषु स्मृतः सोऽमरवर्धकः।[1]

मत्स्य, विष्णु धर्मोत्तर पुराणों में शिल्पशास्त्र का विस्तार से वर्णन किया गया है।

चित्र शास्त्र - पुराणों में चित्रशास्त्र से संबंधित विषय विस्तार से वर्णित किए गए हैं। विष्णु धर्मोत्तर पुराण के तृतीय खंड में प्रथम द्वितीय अध्यायों में इसी तरह ३५ अध्याय से ४६ अध्याय तक देवता, ऋषि, गंधर्व, पशु-पक्ष्यादि-उद्यानादि प्राकृति के दृश्य - उनके आकार - प्राकार, उनकी रचना विधि, विविध रंगों के (वर्ण) प्रयोगविधि आदि का वर्णन किया गया है।

स्थापत्यशास्त्र (प्रतिमाशास्त्र)

उपास्य देवता या आराध्य देवताओं के मूर्तियों के लक्षण, आकार, आयाम और तैयार करने की विधियाँ आदि इस शास्त्र में वर्णित हुए हैं। विष्णु धर्मोत्तर पुराण में (३-अ, ४४-८५, अ.९६) अग्नि पुराण में (अ.४४-५५) मत्स्य पुराण में (अ.२८५-२६३) स्थापत्य शास्त्र से संबंधित अनेक मुख्य विषयों को वर्णित किया गया है।

पुराणों में भारतवर्ष (भरतभूमि) की भौगोलिक विशेषताएँ

भारतवर्ष नौ भागों में पुराणों में वर्णित है। ये विभाग आज भी द्वीपों के रूप में जाने जाते हैं।

---

1) मत्स्य पुराण-५-२७-२८, विष्णु-१-१५-११८-२५, ब्रह्म पुराण - १-१५३-१५९, वायु पुराण-२-५-२८-३०.

भारतस्यास्य वर्षस्य नव भेदान् निबोधमे,
समुद्रान्तरिता ज्ञेयास्ते त्वगम्याः परस्परम्।
इन्द्रद्वीपः कशेरूमान् ताम्रपर्णी गभस्तिमान्
नाग द्वीपस्तथा सौम्यो गान्धर्वो वारुणास्तथा।
अयं तु नवमस्तेषां द्वीपः सागर संवृतः
योजनानां सहस्रं वै द्वीपोयं दक्षिणोत्तरात्।।[1]

इन द्वीपों के संभावित आधुनिक नाम इस प्रकार हैं :

१) इंद्र द्वीप - अंडमान् द्वीप
२) ताम्रपर्णी द्वीप - श्रीलंका
३) नाग द्वीप - निकोबार (निकाऱ्वा)
४) वारुणद्वीप - बोनियो

अयंतु-भारत वर्ष, नवमस्तेषां - इन द्वीपों में नवम द्वीप है भारत देश।

भारत देश कुमार द्वीप के नाम से राजशेखर के काव्यमीमांस में (१७ अध्याय), वामन पुराण में (१३-५९) स्कंदपुराण में और कुमारी खंड में भी बताया गया है।

पुराणों में भारत देश के पर्वत

पर्वत : पुराणों में सात पर्वतों का कई स्थानों में वर्णन है। वे (१)महेंद्र पर्वत, (२) मलय पर्वत (३) सह्य पर्वत, (४) शुक्तिमान पर्वत, (५)ऋक्ष पर्वत, (६)विंध्य पर्वत, (७)पारियात्र पर्वत। ये सभी पर्वत अभी भी अलग-अलग नामों से जाने जाते हैं।*

सप्त चास्मिन्महावर्षे विश्रुताः कुलपर्वताः,
महेंद्रो मलयः सह्यः शुक्तिमान् ऋक्षवानपि,
विंध्यश्च पारियात्रश्च इत्येते कुल पर्वताः।[2A]
महेंद्रो मलयः सह्य! शुक्तिमान् ऋक्षपर्वतः,
विंध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैवात्र कुलाचलाः।[2B]
महेंद्रो मलयः सह्यः शुक्तिमान् ऋक्षमान गिरिः,
विंध्यश्च पारियात्रश्च गिरयः शांतिदास्तुरते।[2C]

---

1) मार्कंडेय पुराण - ५४-५-७, मत्स्य पुराण : ११४-७-९, वायुपुराण-१-४५-७८-८०, अग्निपुराण - २१९-५४-५६

* (i) मार्कंडेय पुराण - एक सांस्कृतिक अध्ययन - वासुदेवशरण अग्रवाल, पृष्ठ १४३-१४६.
(ii) पुराण विमर्श - आचार्य बलदेव उपाध्याय, पृष्ठ ३४१-३४२.

2A) मत्स्य पुराण - ११४-१७,१८ 2B). मार्कंडेय पुराण- ५४-१०,११ 2C) अग्नि पुराण - २१९-५७,५८

महेंद्र पर्वत - यह उडिशा राज्य से निकलने वाली पूर्वीघाटी पर्वत श्रृंखलाओं का प्राचीन नाम है। आज भी गंजां में यह पर्वत ''महेंद्रमलै'' नाम से प्रचलित है। यह पहाड इसलिए मशहूर है कि इस पर बैठकर परशुराम ने साधना की थी।

मलय पर्वत - दक्षिण भारत में पर्वतों का प्राचीन नाम है 'मलयम्'! अन्नामलै, एलामलै आदि। यहाँ पूरब-पश्चिम घाटी एक-दूसरे से मिलकर एक तिरछी रेखा का आकार लेती हैं।

सह्याद्रि पर्वत - उत्तर से दक्षिण तक व्याप्त एवं पश्चिम घाटी तक फैली हुई प्रसिद्ध पर्वत श्रृंखला है। आज भी यह महाराष्ट्र-कर्नाटक राज्यों में इसी नाम से पुकारा जाता है।

शुक्तिमान पर्वत - यह सह्याद्रि के उत्तर भाग के थोडे आगे से पूरब दिशा की ओर फैला हुआ पर्वत है। इस पर्वत प्रांत में भान देश के छोटे-छोटे पर्वत, अजंता प्रदेश, हैदराबाद के गोल्कोंडा के टीले जुडे हैं। आज के भान देश का प्राचीन नाम था ऋषिकम्, शुक्तिमान पर्वत से शुरू होकर प्रवाहित नदियों में ''ऋषिका नदी' प्रमुख है।

ऋक्ष पर्वत - यह पर्वत सह्याद्रि के उत्तर भाग में तपति के दक्षिण कोने में स्थित सातपुडा से सटकर महादेव पर्वत श्रेणि तक पूरी पर्वतश्रेणी प्रसिद्ध है। मध्यप्रांत में इस श्रेणी से प्रवाहित नदियों में तपति, वेन गंगा इस संकेत को प्रमाणित करती है। उडिशा के ब्राह्मणी, वैतरणी नदियों का उद्गम स्थान इसी पर्वत से ही था। (यह पर्वत छोटा नागपूर के पर्वत श्रेणियों तक फैला था।)

उडिशा की ब्राह्मणी, वैतरणी नदियों का उद्गम पहले ऋक्षपर्वत से ही रहता था। छोटे नागपूर से राँचि तक फैली हुई पर्वत श्रेणी ऋक्षपर्वत की ही है।

विंध्य पर्वत - ऋक्ष पर्वत के पूर्वाभाग से उत्तर दिशा की ओर मुडा है विंध्याचल। यह नर्मदा नदी के उत्तरभाग में स्थित पर्वत श्रृंखला है। इस विंध्याचल से ही शोण, नर्मदा, महानदी मध्य भारत के तमसा, घसान (दशार्ण) इत्यादि नदियों का जन्म हुआ है।

पारियात्रा पर्वत - यह आरावली पर्वत है। भोपाल से पश्चिम विंध्याचल के पश्चिम भाग से शुरू होकर राजस्थान के आरावली पर्वत तक फैला हुआ पर्वत श्रृंखला को ''पारियात्रा'' कहते थे। प्रसिद्ध इतिहासकार पार्टीजर का मत है कि इस पर्वत से बहनेवाली नदियों द्वारा यह पारियात्रा के रूप में स्पष्ट होता है। इस पर्वत से पर्णास (पनास नदी), चर्मण्वती (चंबल), मही, पार्वती, वेत्रवती नदियाँ आज भी अपने प्राचीन नामों से ही प्रसिद्ध है।

''**उत्तरो ध्यात् पारियात्रः**'' शाकटायन व्याकरण सूत्र (२-२-७५) के उदाहरण के अनुसार विंध्य पर्वत के उत्तर में है पारियात्रा।

और कुछ पर्वत :-

कोलाहल पर्वत - महाभारत के आदिपर्व के अनुसार यह पर्वत शुक्तिमती नदी के निकट हैं। प्रसिद्ध इतिहासकार नंदलाल डे ने कहा कि यह पर्वत बुंदेलखंड में भांडेर के पास रहनेवाला पर्वत है, उसी से 'शुक्तिमति' या 'केन'नदी का उद्गम हुआ है।

मंदर पर्वत - यह भागलपुर का मंदारगिरि है न कि हिमालय का मंदर गिरि।

दर्दुरं - इसका वर्तमान नाम है नीलगिरि। आज भी यह विख्यात उदकमंडल में है। आमने-सामने स्थित मलय-दर्दुर पर्वतों को कालिदास ने दक्षिण दिशा के स्तनद्वय के रूप में वर्णित किया था।

रैवतं (रैतकं) - पार्जिटर के अनुसार आजकल गुजरात के द्वारका के समीप स्थित (हालार के पास) वरदा पर्वत ही रैवतं पर्वत है।

केवल उपरोक्त पर्वत ही नहीं, बल्कि अनेक प्रसिद्ध पर्वतों का पुराणों में वर्णन किया गया है। **''शतशोन्ये च पर्वताः''**[1] उन सभी का यहाँ वर्णन करना मुश्किल है।

पुराणों में तीर्थ :-

तीर्थ की परिभाषा - ''तरति पापादिकं यस्मात्''- जिसकी सेवा करने से मनुष्य पापों से मुक्त होता है, वही ''तीर्थ'' है।

धर्म सिद्धि के लिए पूर्वजों से सेवित पुण्य प्रदायक प्रदेश को सत्पुरूष ''तीर्थ'' मानते हैं।

यद्धि पूर्वतमैः सद्भिः सेवितं धर्मसिद्धये।
तद्धि पुण्यतमं लोके सन्तस्तीर्थं प्रचक्षते।।

तीर्थों की संख्या - ''वायुदेव का कथन है कि साढ़े तीन करोड़ तीर्थ देव-भू-अंतरिक्षों में हैं।

तिस्रः कोट्याऽर्ध कोटी च तीर्थानां वायुरब्रवीत्,
दिवि भुव्यंतरिक्षे च तानि ते सन्ति जाह्नवि!।।[2]

भारतीय सनातन संस्कृति हजारों वर्षों से परिवर्द्धित रहने का श्रेय नदियों, पुण्यक्षेत्र व मंदिरों को जाता है। इनका माहात्म्य, इनके दर्शन से, उन तीर्थ स्थानों में धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजन से मिलने वाले प्रभाव, पुण्य, ऐसे कार्यक्रमों की आयोजन-प्रणाली आदि विषयों को विस्तार से प्रमाण सहित पुराणों में वर्णित किया गया है। इसलिए तीर्थ, उनके भौगोलिक - ऐतिहासिक प्रमाण, माहात्म्य के बारे में समग्र रूप से जानना चाहे, तो ''पुराण'' ही आधार हैं।

---

1) मार्कंडेय पुराण - ५७-१५

2) भविष्य पुराण - उत्तरपर्व - १२३-६

यहाँ कुछ प्रसिद्ध पुराणों में वर्णित एवं अब भी यथावत् सेवित कुछ ही प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों के बारे में ही विवरण हो रहा है। पुराणों में हजारों वर्षों पूर्व वर्णित इन तीर्थ स्थानों, नदीनदों के भौगोलिक प्रमाणों के विवरण द्वारा पुराणों की प्रामाणिकता को साबित करना इस विवरण का प्रमुख उद्धेश्य है।

गंगा नदी - यह न केवल अत्यंत श्रेष्ठ व पावन नदी ही नही अपितु कनखला, हरिद्वार, हृषीकेश, प्रयाग, काशी जैसे सुविख्यत पुण्य क्षेत्रों का इसके तटपर रहना भी इसकी ख्याति का मुख्य कारण है।

जन्म :-

महाभारत (अनुशासन पर्व २६,२६-१०३) नारद पुराण, (उत्तरार्थ-अ.३८-४५, ५१,१-४८, पद्मपुराण (अ.-६०, १-१२७) अग्निपुराण (अ.१००), मत्स्य पुराण (१८०-१८५), पद्म पुराण (आदिकांड अ.३३-३७) इत्यादि में गंगा नदी की प्रशस्ति का विपुल वर्णन हुआ।

टैलर नामक विदेशी विद्वान ने अपने 'प्रिमिटिव कल्चर' नामक ग्रंथ में इस तरह लिखा थाः-

''हम से अचेतन (जड़) माने जाने वाले - नदियाँ, पर्वत, वृक्ष, अस्त्र, आयुध भारत देश में चेतनायुक्त मानते हुए उनकी पूजा करना, उनकी प्रार्थना करना, उनसे वार्तालाप करना, उनके साथ दुर्व्यवहार करें तो दंड - प्रायश्चित अमल करना आश्चर्य की बात है।''

महाभारत में वनपर्व में गंगा माहात्म्यम कुछ इस प्रकार है :

कुरुक्षेत्र समा गङ्गा यत्र - तत्रावगाहिता,
विशेषो वै कनखले प्रयागे परमं महत्।
यद्य कार्यशतं कृत्वा कृतं गंगाभिषेचनम्
सर्व तत्त्वस्य गंङ्गाम्भो दहत्यग्निरिवेन्धनम्।[1]

पुराण तीर्थों की महिमा को एवं उनके इतिहास को भी अवगत कराते हैं। उन तीर्थों की महिमा के साथ उनकी भौगोलिक स्थितियों का भी पुराण अच्छी तरह ज्ञात कराते हैं। वैसे तीर्थों में प्रमुख तीर्थों के रूप में सात मोक्ष पुरियों के बारे में इस तरह बताया गया है।

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवंतिका,
पुरी द्वारवती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।[2]

ऐसा गरुडपुराण मोक्षपुरियों का विवरण दे रहा है। ऐसे तीर्थ आज भी विद्यमान होकर पुराणों की प्रामाणिकता को साबित कर रहे हैं। इनमें से कुछ तीर्थों के बारे में विवरण अब भी भौगोलिक विवरण का सटीक प्रमाण-से हैं।

---

1) महाभारत वनपर्व - ८५-८८,८९

2) गरुड पुराण - २-३८-५, नारद पुराण - १-२७-३५

काशी :- गंगा तट में विश्वनाथस्वामी की उपस्थिति से प्रशस्त काशी नगरी ''वारणासि'' के नाम से भी प्रसिद्ध है। पुराणों में बताया गया है कि यहाँ का पवित्र मंदिर काशी विश्वेश्वरालय ही है।

त्रिभिर्मुहूर्तैः संप्राप्ता काशीं, विश्वेशमंदिरम्।[1]

यह क्षेत्र अविमुक्तक्षेत्र के नाम पर विख्यात है।

मुने! प्रलयकालेपि न तत्क्षेत्रम् कदाचन।
विमुक्तं हि शिवाभ्यां यदविमुक्तं ततो विदुः।।[2]

पुराणों में उद्धृत किया है कि गंगानदी काशी में उत्तर वाहिनी के रूप में प्रवाहित है।

तस्माच्चतगुणा गंगा काश्यामुत्तरवाहिनी[3]

शिवपुराण के द्वारा मालूम होता है कि काशीक्षेत्र पाँच कोसों की विस्तृतिवाला है। इसलिए काशी को ''पंचक्रोशी'' नाम से भी जाना जाता है।

पञ्च क्रोशीति विख्याता काशी सर्वाति वल्लभा।
व्याप्तं च सकलं ह्येतत्तज्ञलं विश्वतो गतम्।।[4]

स्कंद पुराण में काशीखंड नामक अध्याय काशी क्षेत्र के महत्व के बारे में पूर्णतः बताता है। पुराणों में विवरण दिया गया है कि काशी क्षेत्र के लिए आनंदवन, रुद्रावास, महाश्मशान, गोरीकानन जैसे नाम भी है। काशी क्षेत्र के माहात्म्य के बारे में कई पुराण विवरण दे रहे हैं।

अयोध्या - अयोध्या नगर का विस्तीर्ण स्कंद पुराण में विस्तार से बताया गया है।

सहस्त्रधारामारभ्य योजनं पूर्वतो दिशि,
प्रतीचीदिशि तथैव योजनं समन्तोवधिः।
दक्षिणोत्तरभागे तु सरयूतमसावधिः,
एतत् क्षेत्रस्य संस्थानं हरेरन्तर्गृहं स्थितम्।
मत्स्याकृतिरियं विप्र! पुरी विष्णोरुदीरिता,
पश्चिमे तस्य मूर्धा तु गोप्रतारासिता द्विज।
पूर्वतः पृष्ठ भागे हि दक्षिणोत्तरमध्यमः,
तस्यां पुर्यां महाभाग नाम्ना विष्णुर्हरिः स्वयम्।।[5]

---

1) नारद पुराण - २-२९-१
2) स्कांद पुराण - ४-२६-२७
3) पद्म पुराण - ५-१२७-४८
4) शिव पुराण, कोटिरुद्र संहित - ४२-४, स्कांद पुराण-४-२६-८०
5) स्कंद पुराण, वैष्णवखंड - ८-१-६४-६७

इस नगर का सरयू तट पर रहने का विवरण स्कंद पुराण के साथ-साथ श्रीमद्रामायण में भी दिया गया है। अयोध्या नगर का संपूर्ण विवरण वाल्मीकि रामायण में ऐसे ही विष्णुधर्मोत्तर पुराण[1] में भी द्रष्टव्य है। अयोध्या माहात्म्य स्कंद पुराण के दशम अध्याय में बताया गया है।

द्वारका - द्वारका नगर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा सागर तट पर स्थापित किया गया है। स्कांद पुराण में उल्लिखित द्वारका-माहात्म्य प्रकरण द्वारा यह पता चलता है कि यह नगर गोमती नदी के तट पट है।

द्वारवत्यां च ते दृष्ट्वा गोमतीं सागरङ्गमाम्।[2]

द्वारका नगर का विवरण वराह पुराण में भी है।

द्वारकेति च विख्याता पुरी तत्र स्थिताभवत्।
या च देवपुरी रम्या विश्वकर्मविनिर्मिता।
पञ्चयोजन विस्तारा दशमोजनमायता।
वसाम्यत्र वरारोहे! शतपञ्चसमास्तथा।[3]

ऐसा वर्णित किया गया है कि द्वारका पाँच योजन विस्तीर्ण, दस योजन आयतवाला है। कुछ पुराणों में ऐसा भी कहा गया है कि द्वारका नगर का विस्तीर्ण शतयोजन है। स्कांद पुराण से पता चलता है कि इस नगर की चार दिशाओं में चार द्वार होने की वजह से इस नगर का नाम द्वारका पडा है।

चतुर्णामपि वर्गाणां यत्र द्वाराणि सर्वतः।
अतो द्वारवतीत्युक्ता विद्वद्भिः तत्ववेदिभिः।[4]

पुराणों में राजाओं का इतिहास

अग्निवंश नरेश

भारत देश में पुराणेतिहास संपूर्ण भारत इतिहास के रूप में हैं। उसमें सृष्ट्यादि से आए छः मनुओं के समय में घटे महत्वपूर्ण विषयों में से थोडे संक्षेप में दिए गए हैं। अब के सातवाँ मनु के समय में घटे अट्ठाईस महायुगों में रहे प्रसिद्ध राजवंश और महत्वपूर्ण विषयों का वर्णन करते हुए उस समय की प्रजा के रीति-रिवाज़, रहन-सहन, राजाओं का शासन, प्रजा के नीति-नियम एवं सभ्यता पुराणों में संक्षेप में वर्णित हैं। केवल राजाओं के इतिहास को ही समाप्त न करके उनके समय की प्रजा का इतिहास भी पुराणों में बताया गया है।

---

1) वाल्मीकि रामायण-१-५,६, विष्णुधर्मोत्तर पुराण-१-१३

2) स्कंद पुराण, प्रभास खंड, द्वारका महात्म्य-१४-४५

3) वराह पुराण-१४९, ७-८

4) स्कंद पुराण, काशीखंडं - ७-१०४

कलियुग के राजवंश -

मगध साम्राज्य में शासन किए राजवंशों का इतिहास भारत युद्ध के बाद से कलि पूर्व ३६ से (ई.पू.३१३८ वर्ष'') पुराणों में वर्णित है। महाभारत संग्राम के बाद जिन राजवशों ने शासन किया था उनका विवरण :-

राजवंश - एवं उनकी काल - सीमा

कलि पूर्व ३६ वर्ष (ई.पू.३१३८ वर्ष) से
कलि पूर्व ९७० वर्ष (ई.पू-२१८२ वर्ष'') तक

१) बार्हद्रथ वंश

द्वाविंशति नृपा ह्येते भवितारो बृहद्रथाः,
पूर्ण वर्ष सहस्रं वै तेषां राज्यं भविष्यति।[1]

पुराणों में लिखा है कि बृहद्रथ के वंश, उनके २२ राजा हजारों वर्ष पालन करेंगे। अलग से हर राजा के काल को मिलाकर देखने से कुल १००६ वर्ष हुए हैं।

२) प्रद्योत वंश ५ गुरु - १३८ वर्ष

(कलि शक ९७६-११०८, क्री. पू. २१३२-१९९४)

''पंच प्रद्योतना इमे''
अष्टत्रिंशोत्तरशतं भोक्ष्यंति पृथिवीं नृपाः।[2]

ये पाँच प्रद्योत् २३८ वर्ष राज्य का पालन करेंगे।४

३) शिशुनाग वंश - १० राजा - ३६२ वर्ष

(कलि शक १००८-१४६८, ई.पू १९९४-१६३४)

इत्येते भवितारो वैशुनागा नृपा दश,
शतानि त्रीणि वर्षाणि द्विषष्ट्यभ्यधिकानि तु।[3]

शिशुनाग, २० लोग ३६२ वर्ष शासन करेंगे।

इसकी गिनती में दो कम आने की वजह से ३६० वर्ष हुए हैं।

४) नंदवंश - नौ राजा सौ वर्ष

(कलिशक १४६८-१५६८, ई.पू.१६८४-२५१४)

महापद्मः तत्पुत्राश्च,
एकं वर्षशतं अवनिपतयो भविष्यन्ति।

महापद्मनंद उनके पुत्र १०० वर्षों तक शासक बनेंगे।

---

1) वायु पुराण - २७१-२९,३०

2) विष्णु पुराण-१२-२

3) वायु पुराणा - ९९-३२१

५) मौर्यवंश - १२ राजा ३१६ वर्ष

(कलिशक १५६८-१८८४, ई.पू. १५८४-१२७८)

द्वादशैते मौर्याः चंद्रगुप्तादयो महीम्।
शतानि त्रीणि भोक्ष्यन्ति दशाषट्चसमाः कलौ।।*

चंद्रगुप्तों के २२ मौर्य राजा ३१६ वर्ष राज्य का शासन करेंगे।

इत्येते दशद्वावेव च भोक्ष्यन्ति वसुंधराम्।
शतानि त्रीणि वर्षाणि तेभ्यः शुङ्गान् गमिष्यति।।

डॉ।। यं.कृष्णमाचार्य के पास उपलब्ध मत्स्यपुराण की पाण्डुलिपि पत्र से उनके लिखने के अनुसार - ''१२ मौर्य शासक ३०० साल शासन करने के बाद उनसे राज्य शुंग राजाओं के हाथ में जाएगा''।

६) शुंगवंश - १० राजा, ३०० वर्ष

(कलि शक १८८४-२१८४, ई.पू.१२१८-९१८)

दशैते शुङ्गराजानो भोक्ष्यन्ती मां वसुंधरां।
शतं पूर्णं शते द्वे च तेभ्यः कण्वान् गमिष्यति।।

ये दस शुंग राजा ३०० वर्ष शासन करने के बाद कण्व राजा शासन करेंगे।

७) काण्ववंश - ४ नरेश ८५ वर्ष

(कलि शक २१८४-२२६९, क्री.पू.९१८-८३३)

चत्वार येते भूपालाः कण्व गोत्र समुद्भवाः।
धर्मेण भोक्ष्यन्ति महीं पञ्चाशीतिन्तु वत्सरान्।।

ये कण्व गोत्र वाले चार राजा ८५ वर्ष धर्मयुक्त शासन करेंगे।

८) आंध्रशातवाहन राजा ३२ राजा - ५०६ वर्ष

(कलि शक २२६९-२७७५, ई.पू. ८३३-३२७)

एते द्वात्रिशदांध्रास्तु भोक्ष्यन्ति वसुधामिमाम्।
शतानि पञ्चपूर्णानि तेषां राज्यं भविष्यति।।

ये ३२ आँध्र राजा ५०० वर्ष शासन करेंगे। हर एक राजा का समय मिलाकर देखेंगे तो ५०६ वर्ष आएँगे।**

---

* (i) कलियुगराज वृत्तांत भाग-३, दूसरा अध्याय।

(ii) डॉ.एम्.कृष्णमाचार्य के शास्त्रीय शास्त्र का इतिहास और नडिंपल्लि जगन्नथ राव के ''महाभारत के युद्धकाल'' देखना है।

** कलियुग राजवृत्तांत - श्री कोटा वेंकटाचलं गारि ''कलि शक विज्ञान'' द्वितीय, तृतीय भागों को देखिए।

९) गुप्तराजा - ८ राजा २४५ वर्ष

(कलिशक २७७५-३०२०, ई. पू. ३२७-८३)

भोक्ष्यन्ति द्वेशते पञ्चचत्वारिंशच्च वै समाः।
मागधानां महाराज्यं च्छिन्नं भिन्नं च सर्वशः।
साकमेतैर्महागुप्तवश्यैर्यास्यति संस्थितिः।।

(५+७=१२ शखाओं में अलग हुए आंध्र लोग) मगध साम्राज्य विच्छिन्न होकर महागुप्त राजाओं को पाता है। वे २४५ वर्ष राज्य का पालन करेंगे।

वंश का नाम	राजाओं की गणना	पालन किए वर्ष भारत युद्ध के बाद	कलिशक	वर्ष
१) बार्हद्रथ वंश	२२	१००३	कलिपू।।३६-	कलि ९७०
२) प्रद्योत वंश	५	१३८	कलि ९७०	कलि ११०८
३) शिशुनागवंश	१०	३६०	कलि ११०८	कलि १४६८
४) नंदवंश (पिता, पुत्र ८ लोग)	९	१००	कलि १५६८	कलि १५६८
५) मौर्य वंश	१२	३१६	कलि १८८४	कलि २८८४
६) शुंगवंश	१०	३००	कलि २१८४	कलि २१८४
७) काण्व वंश	४	८५	कलि २२८४	कलि ५५६९
८) आँध्रवंश	३२	५०६	कलि २२६९	कलि २७७५
८) महागुप्त वंश	८	२४५	कलि २७७५	कलि ३०१०
	१०५	**३००६**	**क.पू.३६**	**कलि ३०२० तक**

आंध्रराजाओं का महा साम्राज्य विच्छिन्न व विभाजित होने के बाद महागुप्त राजाओं में पहला राजा चंद्रगुप्त मगध छोडकर पाटलीपुत्र में राजतिलक करने पर भी सम्राट न बनकर अल्पराज्याधिपति ही रह गया। उनका पुत्र समुद्रगुप्त दिग्विजयी होकर अयोध्या का सम्राट बन गया। पर उनके जीवन काल में ही सामंत राजाओं ने उनके साम्राज्य को छोडकर स्वतंत्र हो गए थे। बाद में दूसरा चंद्रगुप्त, कुमार गुप्त, स्कंद गुप्त आदि नाम मात्र सम्राट के रूप में रहे थे। उनके राज्य पालन का पूरा समय शक, हूणों के साथ लडने में ही खत्म हो गया। आखिर में कलि ३०२० वर्ष में गुप्त राज्य ही अवतरित हुआ। ऐसी हालात में अवंति राज्य के प्रमुख शहर उज्जयनी में रहकर राज्य का शासन

करते हुए गुप्त राजाओं का शत्रु शकराज को कलि ३०२० वर्ष में ''विक्रमार्क'' नामक अग्निवंश राजा ने हराकर शक को देश से निकालकर उज्जयनी में कलि ३०२० वर्ष में राज्याभिषिक्त हो गया था। इसलिए कलि ३०२० से अग्निवंश के चारों में एक ''प्रमर'' वंश का उज्जयनी में अधिकार को पाकर ''शकहंत'' हुए विक्रमार्क के बाद से काल को पहचानना है। विक्रमार्क के काल को इस तरह बताया गया है।

पूर्णे त्रिशंच्चते वर्षे कलौ प्राप्ते भयङ्करे।
शकानां च विनाशार्थमार्य धर्म विवृद्धये,
जातः शिवाज्ञया सोपि कैलासाद्गुह्य कालयात्।
विक्रमादित्यनामानां पिता कृत्वा मुमोद ह,
स बालोपि महाप्राज्ञः पितृमातृ प्रियङ्करः।[1]

कलि में तीन हजार वर्ष पूरा होने के बाद (ई.पू.२०२ वर्ष) शकों को नाश करके आर्य धर्म को वृद्धि करने के लिए शिव की आज्ञा से गुह्यकाल यम् से ही एक पुरुष ने प्रमर वंश में गंधर्वसेन महाराज का पुत्र के रूप में जन्म लिया। उस बालक को ''विक्रमादित्य'' नामकरण करके पिता जी प्रसन्न हो गए। वह महाप्राज्ञ, पितृमातृ प्रियंकर होकर रहने लगे।

''विक्रमादित्य'' उनके पिता के द्वार रखा गया नाम है पर वह उनकी उपाधि नहीं है। यह विक्रमार्क कलि ३०२० (ई.पू) वर्ष में उज्जयनी का राजा बन गया।

इसलिए उन के पश्चात् आनेवाले समय को पहचानना है।

१०) प्रमरवंश -

(कलिशक ३०२०-४२९५, ई.पू.८२ - ई.११९३)

कलि ३०२० से इस वंश में विक्रमार्क महाराज तक २४ राजाओं ने १२७५ वर्ष तक शासन किया था।

११) मुसलमान, मराठी, अंग्रेज इत्यादि का समय ७५३ वर्ष

(कलि शक ४०९५-५०४८, ई.११९४-१९१७)

१९४७ वर्ष अगस्त १५ तारीख, कलिशक ५०४ वर्ष।।

शालिवाहन शक १८६९ वर्ष।।

सर्वजित नाम वर्ष।। अधिक श्रावण ब.२० शुक्रवार-भारतदेश को स्वतंत्रता प्राप्त।

---

1) भविष्य महा पुराण - ३-१-७-१४,१५,१६

हम देखते हैं कि कलि प्रवेशकाल से ''कलिशक'' प्रारंभ होकर, उनकी गणना करते हुए आज तक हर वर्ष पंचांगों में एक-एक वर्ष मिलते हुए गणना को दिखाते हैं। कलिशक प्रारंभ होकर अबतक ५०५० वर्ष हो गए हैं। ई.सन्. के अनुसार ई. के पूर्व ३१०२ वर्ष प्रारंभ करके आज तक क्रम को गणना की जा रही हैं।

ई. के पूर्व बीते वर्ष	- ३१०१
ई.सन्. में आजतक गुजर गये वर्ष	- २०२२
कुल	**- ५१२२ वर्ष**

हुए है। कलि का प्रवेश काल ईसा पूर्व ३१०८ वर्ष।। दिन २० फरवरी रात ३-३७-३०.

इस प्रकार प्राचीन होने पर भी पुराण ग्रंथों के आधार पर ही भारत का स्वरूप, वैज्ञानिक विषय, पर्वत, पुण्य नदियाँ, पवित्र तीर्थ स्थान, मोक्ष प्रदान करने वाले क्षेत्र, राजाओं के इतिहास, राजवंश आदि के बारे में पता चलता है। पुराणों में प्रमाणिकता नहीं हो तो सभी के बारे में पता नहीं चल सकता। इनके बारे में नहीं जानेंगे तो हम इतिहास ज्ञान रहित हो जाएँगे। इसलिए पुराणों की निंदा नहीं करनी है।

❀❀❀

स्वामि-पुष्करिणी में अंजना-केसरियों का पुण्यस्नान - समीप के वल्मीक से प्रकट हुए स्वामी के दर्शन

2. श्री शांकरभाष्य के पुराण एवं इतिहास के वचन

तेलुगु मूल - आचार्य जानमद्दि रामकृष्णा अनुवाद - श्रीमती वी.शिरीषा

व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मनिधये वासिष्ठाय नमो नमः।।
श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम्।
नमामि भगवपादशंकरं लोकशंकरम्।।

सनातनधर्म वाङ्मय में पुराण ग्रंथों का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारे पुराण भारतीय संस्कृति व संप्रदाय के दर्पण जैसे हैं क्योंकि पुराणों में वेदों का सार भरा हुआ है। १८ महापुराण व १८ उपपुराण हमारी महानिधियाँ हैं। यह हमारा सौभाग्य है कि ये महानिधियाँ हमारी हैं।

दूसरी ओर कुछ लोग, इन महान, पुराण ग्रंथों का अनादर कर रहे हैं। शायद, अभिज्ञता की कमी ही इसका कारण हो सकता है। केवल इतना ही नहीं, बल्कि कुछ लोग तो, ''**पुराणमित्येव न साधु सर्वम्**'' - इस उक्ति को अपने मतलब के लिए प्रयुक्त कर रहे हैं जो इस वाक्य के तथ्य से अलग है। यह बात उनकी सोच-समझ की शक्ति का संकेत है। कोई भी एक शब्द या वाक्य का विवरण देते समय उसका अर्थ पूरी तरह से जानकर देना उचित है। जिन बड़े लोगों में शालीनता नहीं है, उन्हें बडप्पन के नाम पर जिंदगी जीना नहीं चाहिए। ऐसे करके हम दुनिया को धोखा नहीं दे सकते है मगर स्वयं को जरूर दे सकते हैं। ऐसे लोगों ने जिस वाक्य को अपने लिए व अपनी बात के लिए प्रमाण के रूप में उद्धृत किया था, उस पर एक बार दृष्टि डालें। यह उक्ति महाकवि कालिदास से रचित ''मालविकाग्निमित्रम्'' नामक एक नाटक के श्लोक का चरण है। पूरा श्लोक इस तरह है -

पुराणमित्येव न साधु सर्वं, न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
संतः परीक्ष्यान्यतरद्भजंते, मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः।।[1]

विवरण - यह श्लोक, ऊपर बताये गए नाटक में से पूर्वांग में एक सूत्रधारी द्वारा बताया गया है। बडों की चाह थी कि वसंतोत्सव के अवसर पर कालिदास से रचित 'मालविकाग्निमित्रम्' नामक नाटक का प्रदर्शन हो जाए। इसलिए सूत्रधारी कहता है कि नाटक को शुरू किया जाए। नाटक में सहायक अभिनेता इस तरह कहता है - भास, सौमित्र, कविपुत्र जैसे लब्धप्रतिष्ठित लोगों से रचित नाटकों को छोड़कर आधुनिक कालिदास के नाटक का प्रदर्शन करना कहाँ तक औचित्य है? तब उस सहायक अभिनेता को डाँटते हुए सूत्रधारी से बताया गया श्लोक है यह - **इस श्लोक का भाव - सभी पुरानी वस्तुओं को सही समझना नहीं चाहिए। इसी तरह किसी भी नई वस्तु को अस्वीकार करना भी सही नहीं है। ज्ञानी इन दोनों को परखकर अच्छाई का ही ग्रहण करते हैं। वे इन दोनों में कोई भी भेदभाव नहीं देखेंगे और इन दोनों के भेदों पर ध्यान देते नहीं है।**

---

1) माळविकाग्निमित्रम् - पूर्वरंगं - २

यही इस श्लोक का भाव है - इसलिए इस श्लोक में पुराण का मतलब पुराना माने प्राचीन है। ''**पुराणे पतन-प्रत्न-पुरातन-चिरंतनाः**'' - अमरकोश।[1] प्राचीन शब्द के पाँच पर्याय हैं - १)पुराण, २)पतन, ३)प्रत्नं, ४)पुरातन, ५)चिरंतन। इसके अलावा इस श्लोक में पुराण का मतलब भगवान वेदव्यास से विरचित महापुराण या उपपुराणों को ग्रहण करने की बात महा अज्ञान का संकेत है।

अब प्रकृत निबंध शीर्षक के बारे में देखें तो व्यास रचित पुराण वचनों को कई महालोगों ने अपने सिद्धांतों के लिए प्रमाण माने थे। पुराणों के प्रति अपने मन में रहनेवाली भक्ति-श्रद्धा का प्रदर्शन किया गया है। इनमें से परमपूज्य श्री शंकरभगवत्पाद भी इसी वर्ग के अंतर्गत आएँगे। श्रुतिप्रस्थान, स्मृतिप्रस्थान, न्यायप्रस्थान नामक इन तीनों को ''प्रस्थानत्रय'' कहते हैं। उपनिषदों को श्रुतिप्रस्थान, भगवद्गीता को स्मृतिप्रस्थान और वेदांतसूत्रों को न्याय प्रस्थान कहा जाता है। इन तीनों प्रस्थानों की भाष्य-रचना श्री शंकरभगवत्पाद ने की। यह श्री शंकरभाष्यों के नाम से बहुत प्रसिद्ध है। इन तीनों भाष्यों में आचार्य जी ने अपने सिद्धांतों केलिए कई पुराणों को प्रमाणों के रूप में बताया था। इस अंश के संबंध में थोडा विवरण देना ही इस निबंध का उद्देश्य है।

१. उपनिषद्भाष्य के पुराण वचन :-

➢ **कठोपनिषद् -** द्वितीयाध्याय में से प्रथमवल्ली भाष्य के (पृ - २६७) लिंगपुराणवचन -

यच्चाप्नोति यदादत्ते यच्चात्ति विषयानिह।
यच्चास्य संततो भावस्तस्मादात्मेति कीर्त्यते।।[2]

यह श्लोक आत्मशब्द निष्पत्ति को वर्णित करता है। सभी जगहों में व्याप्त होनेवाली, ग्रहण करनेवाली, लौकिक विषयों का अनुभव करने वाली तथा सभी समयों में रहनेवाली ही आत्मा है। अतएव इसे ''आत्मा'' कहते हैं। इस उपनिषद् में तृतीयवल्ली भाष्य के (पृ.३३६) विष्णु पुराण वचन -

आभूतसंप्लवं स्थानममृतत्वं विभाव्यते।[3]

यह वचन 'अमृतत्व' शब्द का अर्थ बताने वाला है।

➢ **मांडुक्योपनिषद् -** वैतथ्यप्रकरण के एक भाष्य में (पृ.६४४) व्यास स्मृति वचन के रूप में यह श्लोक दिखाया गया है -

तमः श्वभ्रनिभं दृष्टं वर्षबुद्बुदसन्निभम्।
नाशप्रायं सुखाद्धीनं नाशोत्तरमभावगम्।।[4]

---

1) अमरकोशः - विशेष्यनिघ्नवर्गः - ७७

2) लिंगपुराणम् - १-७०-९६

3) विष्णुपुराण - २-८-९५

4) वैतथ्यप्रकरणम् भाष्य - पृष्ट-६४४

द्वैत सिद्धांत के असत्य को बताने वाला यह श्लोक है। यह जगत् एक छेद की तरह, एक पानी की बूँद की तरह नाश होने वाला है। सुखमय नहीं है और विनाशानंतर शून्य को पानेवाला है।

➢ **ऐतरेयोपनिषद् -** द्वितीयाध्याय से प्रथम खंड भाष्य में (पृ.८७५) हरिवंश का वचन इस प्रकार है -

पतिर्जायां प्रविशति[1]

पिता की आत्मा ही पुत्र का रूप लेती है - इस विषय को बतानेवाले संदर्भ का ही यह वचन है।

➢ **तैत्तरीयोपनिषत् -** शिक्षावल्ली प्रथमानुवाक् भाष्य के (पृ.९१६) गरुड पुराण वचन -

ज्ञानमुत्पद्यते पुंसां क्षयात्पापस्य कर्मणः।
यथाऽऽदर्शतले प्रख्ये पश्यन्त्यात्मानमात्मनि।।[2]

भाव - पापों का क्षीण होने के बाद ही ज्ञान प्राप्ति होती है। जब दर्पण साफ होता है तभी हमारा मुख स्पष्टता से दिखाई देता है। उसी तरह शुद्ध अंतःकरण में ही आत्म-साक्षात्कार हो सकता है।

➢ **श्वेताश्वतरोपनिषद् -** प्रथमाध्याय भाष्य के (पृ.१२१७-१११८) कुछ पुराण वचन :-

अनूचानस्ततो यज्वा कर्मन्यासी ततः परम्।
ततो ज्ञानित्वमभ्येति योगी मुक्तिं क्रमाल्लभेत्।।[3]

अनेकजन्मसंसारचिते पापसमुच्चये।
नाक्षीणे जायते पुंसां गोविंदाभिमुखे गतिः।।[4]

जन्मांतरसहस्त्रेषु तपोज्ञानसमाधिभिः।
नराणां क्षीणपापानां कृष्णे भक्तिः प्रजायते।।[5]

पापकर्माश्रयो ह्यत्र महामुक्तिविरोधकृत्।
तस्यैव शमने यत्नः कार्यः संसारभीरूणा।।[6]

सुवर्णादिमहादानपुण्यतीर्थावगाहनैः।
शारीरैश्च महाक्लेशैः शास्त्रोक्तैस्तच्छमो भवेत्।।[7]

देवताश्रुतिसच्छास्त्रश्रवणैः पुण्यदर्शनैः।
गुरुशुश्रूषणैश्चेव पापबंधः प्रशाम्यति।।[8]

---

1) हरिवंश - ३-७३-३१
2) गरुड पुराण - १-२३७-०६
3) विष्णुधर्म पुराण - ९८-२०
4) भविष्य पुराण - ०१-६३-०९
5) विष्णुधर्म पुराण - ६८-११२
6) विष्णुधर्म पुराण - ९७-०४
7) विष्णुधर्म पुराण - ९७-०५
8) विष्णुधर्म पुराण - ९७-०६

इन श्लोकों का भाव यह है कि चित्तशुद्धि के बगैर मोक्षप्राप्ति नही हो सकती है। योगी पहले वेदाध्ययन, बाद में यागानुष्ठान, इन दोनों के होने के बाद कर्मों को छोड़ देता है। उसके बाद ज्ञान प्राप्ति होती है। मोक्ष प्राप्ति का यही क्रम है। कई जन्मों में किए हुए संसार बंधनों से प्राप्त पापों का गट्ठर जब तक खत्म नही होता है तब तक बुद्धि भगवान पर केंद्रित नहीं होती है। कुछ हजारों जन्मों के पहले से किए हुए तप, ज्ञान व समाधि द्वारा जब पाप नाश होता है तभी श्रीकृष्ण भक्ति की प्राप्ति होती है। पाप कर्मों के कारण मिले हुए संस्कार ही मुक्ति का अवरोध है। इसलिए ऐसे कुसंस्कारों से बचके रहना है। सुवर्णादिदान, पवित्र तीर्थों में स्नान इत्यादि पुण्य कर्मों से मुश्किलें मिट जाती हैं। देवताराधना, वेद-शास्त्र श्रवणम्, गुरुसेवा इत्यादि कार्यों से भी पाप नष्ट होते हैं।

इस प्रथमाध्याय भाष्य में (पृ-११२३-११२४) **लिंगपुराण** से संबंधित कालकूटोपाख्यान के श्लोक इस प्रकार हैं -

ज्ञानेनैतेन विप्रस्य त्यक्तसंगस्य देहिनः।
कर्तव्यं नास्ति विप्रेंद्राः! अस्ति चेत्तत्त्वविन्न च।।

इह लोके परे चैव कर्तव्यं नास्ति तस्य वै।
जीवन्मुक्तो यतस्तु स्याद् ब्रहमवित्परमार्थतः।।

ज्ञानाभ्यासरतो नित्यं विरक्तो ह्यर्थवित्स्वयम्।
कर्तव्यभावमुत्सृज्य ज्ञानमेवाधिगच्छति।।

वर्णाश्रमाभिमानी यस्त्यक्त्वा ज्ञानं द्विजोत्तमाः।
अन्यत्र रमते मूढः सोऽज्ञानी नात्र संशयः।।

क्रोधो भयं ततो लोभो मोहो भेदो मदस्तमः।
धर्माधर्मौ च तेषां हि तद्वशाच्च तनुग्रहः।।

शरीरे सति वै क्लेशः सोऽविद्यां संत्यजेत्ततः।
अविद्यां विद्यया हित्वा स्थितस्तस्यैवेह योगिनः।।

क्रोधाद्या नाशमायान्ति धर्माधर्मौ च नश्यतः।
तत्क्षयाच्च शरीरेण न पुनः संप्रयुज्यते,
स एव मुक्तः संसारादुःखत्रयविवर्जितः।।[1]

ये ईश्वर के वचन हैं - हे ब्राह्मणोत्तम! ज्ञान के कारण जीव संगरहित होता है। ऐसे संगरहित के लिए कोई कर्तव्य नहीं रहता है। अगर कर्तव्य हो तो उसे तत्वों का ज्ञान नहीं होता है। संगरहित के लिए इह-पर लोकों में कर्तव्य

1) लिंग पुराण - १-८६-१०५-११३

नहीं रहते हैं। वास्तव में जो ब्रह्मतत्व जानता है वह जीवन्मुक्त है। परमात्मा का तत्व अवगत करना दुष्कर है जिसने भी जान लिया हो, वह विरक्ति सहित कर्तव्यचिंतन छोड़कर ज्ञान की ओर ही दृष्टि केंद्रित करता है। वर्णाश्रमों के प्रति जिसे रुचि है वह अन्य विषयों पर दृष्टि रखा तो वह मूर्ख ही हो सकता है। यह निश्चय है। कामक्रोधादि अरिषड्वर्गों के अधीन में जो रहता है वह बार-बार जन्म लेता है। शरीर है तो विपत्तियाँ भी रहेंगी। इसलिए विद्या से अविद्या को भगाना है। वही व्यक्ति योगी हो सकता है। योगी क्रोधादि विषयों से दूर-उद्धृत रहता है। जब उनका नाश होता है तब शरीर बंधन न रहकर ताप-त्रय छोडकर सभी विषयों से मुक्ति पा सकता है। इन श्लोकों के बाद ही **शिवधर्मोत्तर** पुराण में से इन दो श्लोकों को शंकर जी ने उदाहरित किया हैं (पृ.११२४) -

ज्ञानामृतेन तृप्तस्य कृतकृत्यस्य योगिनः,
नैवास्ति किंचित्कर्तव्यमस्ति चेन्न स तत्त्ववित्।
लोकद्वयेऽपि कर्तव्यं किंचिदस्य न विद्यते,
इहैव स विमुक्तः स्यात् संपूर्णः समदर्शनः।।[1]

ये दोनों श्लोक भी उपर्युक्त श्लोकों की तरह ज्ञान महत्व बोधक हैं। योगी ज्ञानामृत से तृप्त होकर कृतकृत्य हो सकता है। उसे कोई कर्तव्य नहीं होता है। इसका भाव यह है कि इहलोक में या परलोक में कर्तव्य रहित होकर, परिपूर्ण होकर विमुक्ति पा सकता है। इसी अंश को जोर देकर बताते है लिंग पुराण वचन (पृ-११२६)-

ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।
ज्ञानिनः सर्वकर्माणि जीर्यन्ते नात्र संशयः,
क्रीडन्नपि न लिप्येत पापैर्नानाविधैरपि।[2]

ज्ञान रूपी अग्नि समस्त कर्मों को भस्म कर देती है। कोई भी पाप ज्ञानी को छू नहीं सकता। इसी अभिप्राय के सूचक होनेवाले **शिवधर्मोत्तर** पुराण में बहुत सारे वचन देखने को मिलेंगे (पृ-११२६-११२७) (प्रस्तुत उपलब्ध पुराणप्रतियों में ये श्लोक दिखाई नहीं पडते।)

तस्माद् ज्ञानासिना तूर्णमशेषं कर्मबंधनम्।
कामाकामकृतं छित्त्वा शुद्धश्चात्मनि तिष्ठति।।

यथा वह्निर्महान् दीप्तः शुष्कमार्द्रं च निर्दहेत्।
तथा शुभाशुभं कर्म ज्ञानाग्निर्दहते क्षणात्।।

पद्मपत्रं यथा तोयैः स्वस्थैरपि न लिप्यते।
शब्दादिविषयांभोभिस्तद्वद् ज्ञानी न लिप्यते।।

---

1) शिवधर्मोत्तरपुराण - ७-२२-११-५१,५२

2) लिंगपुराण - १-८६-११८, ११९

यद्वन्मंत्रबलोपेतः क्रीडन् सर्पैर्न दंश्यते,
क्रीडन्नपि न लिप्येत तद्ववदिंद्रियपन्नगैः।
मंत्रौषधिबलैर्यद्यज्जीर्यते भक्षितं विषम्,
तद्वत्सर्वाणि पापानि जीर्यंते ज्ञानिनः क्षणात्।

योगी चाहकर या न चाहकर किए हुए कर्मों के बंधनों को ज्ञान नामक खड्ग से टुकडे करके परिशुद्ध होकर आत्मचिंतन करता है। आग केवल सूखी लकडियों को ही नहीं बल्कि कच्ची लकडियों को भी जला सकती है। ज्ञान जैसी अग्नि सुकर्म और कुकर्मों को क्षण काल में ही भस्म कर सकती है। जैसे कमल के पत्तों पर बूँदों का प्रभाव नहीं पडता, वैसे ही ज्ञानी को कोई लौकिक विषय प्रभावित नहीं कर सकता है। जो सर्पमंत्र को जानता है वह सदा सर्पों के साथ रहने के बावजूद वे उसे डसते नहीं है। उसी तरह सर्प जैसे इंद्रिय, ज्ञानी को कुछ नहीं कर सकते। जिसके शरीर में विष है, उस विष को मंत्रबल से या औषधियों से अप्रभावी कर सकते है। उसी तरह ज्ञानी के सभी पाप क्षण में धुल जाते हैं।

इस श्वेताश्वतरोपनिषत के प्रथमाध्याय भाष्य के (पृ.११३३-११३५) कुछ पुराण श्लोक निम्न लिखित हैं :-

धर्माधर्मौ जन्ममृत्यू सुखदुःखेषु कल्पना।
वर्णाश्रमास्तथा वासः स्वर्गो नरक एव च।।

नामक श्लोक से आरंभ करके -

कौमारतारुण्यजरावियोगसंयेगभोगानशनव्रतानि।
इतीदमीदग्विदयं निधाय तूष्णीमासीनः सुमतिं विविद्धि।।

श्री शंकरभगवत्पाद ने यह स्थिरीकरण किया है कि ''**ब्रह्म सत्य है एवं जगन्मिथ्या।**'' धर्म-अधर्म, जन्म-मृत्यु, सुख-दुख, वर्णाश्रम, स्वर्ग-नरक - ये सभी अंश योगी पर लागू नहीं होते हैं। बाल्य, यौवन, बुढापा, संयोग, वियोग, भोग, उपवास, व्रत - ये सब प्रकृतिविकार जैसे मानकर योगी मौन रहता है। (प्रस्तुत उपलब्ध होनेवाली पुराण प्रतियों में ये श्लोक नहीं हैं)

ऐसे ही इस सिद्धांत को समर्थन करने वाले विष्णु पुराण में से -

अनादिसंबंधवत्या क्षेत्रज्ञोऽयमविद्यया।
युक्तः पश्यति भेदेन ब्रह्म तत्तवात्मनि स्थितम्।।[1]

इस श्लोक से आरंभ करके (पृ-११३६-११३७)

---

1) विष्णुधर्म पुराण - ९६-१३

आत्मा क्षेत्रज्ञसंज्ञो हि संयुक्तः प्राकृतैर्गुणैः।
तैरेव विगतः शुद्धः परमात्मा निगद्यते।।[1]

इत्यादि १४ श्लोकों को प्रस्तुत किया गया है। गृहस्थ बहुत समय से अपने भीतर रहनेवाली अविद्या के कारण जीव-ब्रह्म को भेद दृष्टि से देखता है। ''क्षेत्रज्ञ'' नामक जीव लौकिक वासनाओं में रहता है। इन श्लोकों का भाव यह है कि वह ऐसी वासनाओं से दूर रहेगा तो परमात्मा बन सकता है। उसके बाद यही जगन्मिथ्यातत्व के प्रामाणिक रूप में विष्णु-पुराण में से -

परमात्मा त्वमेवैको नान्योऽस्ति जगतः पते।
तवैष महिमा येन व्याप्तमेतच्चराचरम्।।[2]

उपर्युक्त श्लोक से शुरू होकर (पृ-११३८-११४२) -

इतीरितस्तेन स राजवर्यस्तत्याज परमार्थदृष्टिः।
स चापि जातिस्मरणाप्तबोधस्तत्रैव जन्मन्यंपवर्गमाप।।[3]

तक तीस श्लोक बताए गए हैं। इसका भाव है - ''हे जगद्रक्षक! तुम एक ही परमात्मा हो। तुम से बढ़कर महान और कोई नहीं है।'' यह चराचर जगत् तुम्हारी महिमा से भरपूर है। ''अवधूत की इन बातों से सौवीर राज्य के राजा ने परमार्थ दृष्टि पाकर जीवेश्वरों के भेदबुद्धि को छोड दिया था। उसके साथ पंडित ने भी तत्वज्ञान से मोक्ष-प्राप्ति की है। ऐसे ही **लिंग पुराण** में से पाँच श्लोकों के साथ पराशरप्रोक्त में से आठ श्लोक को भी श्री शंकरभगवत्पाद ने प्रस्तुत किया हैं। (पृ-११४२-११४४)

सर्वत्र एकता को देखना है। भेदबुद्धि सही नहीं है। इस बात को साबित करने के लिए कटिबद्ध श्री शंकराचार्य ने इसके प्रमाण के रूप में **विष्णु पुराण** के वचनों को स्वीकृत किया है। (पृ.११५३) ये वचन इस प्रकार है -

यदेतद्दृश्यते मूर्तमेतद् ज्ञानात्मनस्तव।
भ्रांतिज्ञानेन पश्यंति जगद्रूपमयोगिनः।।[4]

ये तु ज्ञानविदः शुद्धचेतसस्तेऽखिलं जगत्।
ज्ञानात्मकं प्रपश्यंति त्वद्रूपं पारमेश्वरम्।।[5]

निदाघोऽप्युपदेशेन, तेनाद्वैतपराऽभवेत्।[6]
सर्वभूतान्यशेषेण ददर्श स तदात्मनः।।
तथा ब्रह्म ततो मुक्तिमवाप परमां द्विजः।।[7]

---

1) विष्णुधर्म पुराण - १००-६१
2) विष्णु पुराण - १-४-३८
3) विष्णु पुराण - २-१६-२४
4) विष्णु पुराण - १-४-३९
5) विष्णु पुराण - १-४-४१
6) विष्णु पुराण - २-१६-१९
7) विष्णु पुराण - २-१६-२०

यह संपूर्ण जगत् ज्ञान स्वरूपी तुम्हारा ही रूप है। अज्ञानी भ्रम के कारण इसे जगत् मानते हैं। सिर्फ ज्ञानी ही इस जगत को तुम्हारा रूप मानते हैं। इस प्रकार के उपदेशों के कारण निदाघ ने सर्व प्राणियों को परमात्मा जैसे माना है। इस कारण से उसे ब्रह्मसाक्षात्कार हुआ है। वेद-शास्त्र जोर देकर कहते हैं कि समस्त जगत को आत्मस्वरूप जानना है। आत्मा से अलग कुछ और नहीं है। - इस प्रकार की अद्वैतभावना जिस में हो उसे ''ब्रह्मभूत कहते हैं।''

भगवान एक ही है। वही ब्रह्म-विष्णु-परमेश्वरों के नामों से बुलाया जाता है। - यह बात विष्णु पुराण वचन के यह श्वेताश्वतरोपनिषद् भाष्य में निम्न लिखित प्रकार से है (पृ-११६६) :-

सर्गस्थित्यंतकरिणीं ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकाम्।
स संज्ञां याति भगवानेक एव जनार्दनः।।[1]

तृप्ति (संतोष) नौ प्रकार की रहती है। लौकिक विषय मानव को इच्छाओं की ओर खींचते हैं भोगों की आदत हुई तो तृप्ति कभी भी नहीं मिलेगी। इसलिए इच्छाओं को दमित करना पडेगा। - इसी बात को श्रीमद्भागवत भी कहता है। ऐसा कहना ही श्री शंकरभगवत्पाद का आशय है। (पृ.११७६) भागवत वचन -

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते।।[2]

जीवात्मा-परमात्मा के अभेद की बात बतानेवाले **विष्णुधर्म पुराण** की उक्तियाँ उन्होंने दिखाई है। (पृ-११८४)-

पश्यत्यात्मानमन्यं तु यावद्वै परमात्मनः।,
तावत्संभ्राम्यते जंतुर्मोहितो निजकर्मणा।।[3]

संक्षीणशेषकर्मा तु परं ब्रह्म प्रपश्यति।
अभेदेनात्मनः शुद्धं शुद्धत्वादक्षयो भवेत्।।[4]

परमात्मा और मैं, एक नहीं हैं, अलग-अलग हैं - ऐसा भाव जब तक जीव में रहेगा, तब तक वह कर्मों के वश में रहता है। ये कर्मबंधन जब क्षीण हो जाते हैं तब वह परब्रह्म स्वरूप बन सकता है। ''हे राजा! जीवात्मा-परमात्मा का भेद-भाव ही अज्ञान का कारण है। जब यह अज्ञान मिट जाएगा तब ही जीव परमात्मा हो सकता है- यही इन पुराण वचनों का सार है।

इस अंश के संबंध में विष्णुधर्म पुराणोक्त इस प्रकार है (पृ-११८४, ११९२) :-

विभेदजनकेऽज्ञाने नाशमात्यंतिकं गते।
आत्मनो ब्रह्मणो भेदमसंतं कः करिष्यति।।[5]

---

1) विष्णुपुराण - १-२-६६
2) श्रीमद्भागवतम् - ९-१९-१४
3) विष्णुधर्मपुराण - ९६-१४
4) विष्णुधर्मपुराण - ९६-१५
5) विष्णुपुराण - ६-७-९६

ज्ञानात्मकस्यामलसत्ववराशेरपेतदोषस्य सदा स्फुटस्य।
किं वा जगत्यस्ति समस्तपुंसामजातमस्यास्ति हृदि स्थितस्य।।[1]

भाव - जीवात्मा-परमात्मा की भेदबुद्धि का कारण 'अज्ञान' है। जब यह अज्ञान मिट जाएगा तब यह भेदबुद्धि नहीं रहेगी।

ध्यानफल व ज्ञानफल का विवरण देते हुए श्री शंकरभगवत्पाद ने **शिवधर्मोत्तर** पुराण वचनों को प्रमाण के रूप में दिखाया है। (पृ-१२०४)

ध्यानादैश्वर्यमतुलम् ऐश्वर्यात्सुखमुत्तमम्।
ज्ञानेन तत्परित्यज्य विदेहो मुक्तिमाप्नुयात्।।

ध्यान से अत्यधिक ऐश्वर्य, इसके द्वारा अच्छा लौकिक सुख मिलता है। परन्तु, ज्ञान से देहाभिमान मिटकर मोक्ष प्राप्ति होती है। (प्रस्तुत उपलब्ध पुराणों में यह श्लोक नहीं है।)

योगी जब अपने स्वरूप को पूर्ण रूप से जानेगा तब से वह जीवन्मुक्त होगा। यह बतानेवाले **ब्रह्म पुराण** वचनों को आधार के रूप में दिखाया गया है। (पृ-१२०६) :-

यस्मिन् काले स्वमात्मानं योगी जानाति केवलम्।
तस्मात्कालात् समारभ्य जीवन्मुक्तो भवेदसौ।।
मोक्षस्य नैव किंचित् स्यादन्यत्र गमनं क्वचित्।
स्थानं परार्थ्यमपरं यत्र गच्छंति योगिनः।।
अज्ञानबंधभेदस्तु मोक्षो ब्रह्मलयस्त्विति।

भाव - योगी जब आत्मा को पवित्र मानेगा तब से वह जीवन्मुक्त हो सकता है। श्रेष्ठ स्थान में रहने वाले योगी को मोक्ष से भिन्न व उत्तम स्थान और कुछ नहीं होता है। जो बंधन अज्ञान के कारण बने हैं, उन्हें मिटाकर ब्रह्म में लीन होना ही मोक्ष है। प्रस्तुत उपलब्ध पुराणों में ये श्लोक नहीं हैं।

जीवन्मुक्त के स्वरूप को लिंग पुराण ने इस प्रकार निर्देशित किया है। (पृ-१२०६)

इह लोके परे चैव कर्तव्यं नास्ति तस्य वै।[2]
जीवन्मुक्तो यतस्तस्माद् ब्रह्मवित्परमार्थतः।[3]

इस जगत में या परलोक में जिसे कर्तव्य ही नहीं होता है वही जीवन्मुक्त है। वे ही ब्रह्मज्ञानी है। **शिवधर्मोत्तर पुराण** भी यही बता रहा है। (पृ-१२०६)

---

1) विष्णु पुराण - ५-७-३२
2) लिंग पुराण - १-८६-१०६
3) लिंग पुराण - १-८६-१०७

वांछात्ययेऽपि कर्तव्यं किंचिदस्य न विद्यते।
इहैव स विमुक्तः स्यात् संपूर्णः समदर्शनः।।

यदि कोई इच्छा हो, तो वह परिपूर्ण होने के बाद योगी को कोई कर्तव्य नहीं रहता है। इसलिए वह परिपूर्ण होकर मोक्ष के लिए योग्य बनेगा। (प्रस्तुत उपलब्ध पुराणों में यह श्लोक नहीं है।)

योगियों की अंतःस्थिति को वर्णित **शिवधर्मोत्तर पुराण** वचनों को श्री शंकराचार्य ने स्मरण किया हैः (पृ-१२०९)

शिवमात्मनि पश्यंति प्रतिमासु न योगिन।
आत्मस्थं यः परित्यज्य बहिःस्थ भजते शिवम्।।

हस्तस्थं पिंडमुत्सृज्य लिह्यात्कूर्परमात्मनः।
सर्वत्रावस्थितं शांतं न पश्यंतीह शंकरम्।।

ज्ञानचक्षुर्विहीनत्वादंधः सूर्यं यथोदितम्।
यः पश्येत्सर्वगं शांतं तस्याध्यात्मस्थितः शिवः।।

आत्मस्थं ये न पश्यंति तीर्थे मार्गन्ति ते शिवम्।
आत्मस्थं तीर्थमुत्सृज्य बहिस्तीर्थादि यो व्रजेत्।।

करस्थं स महारत्नं त्यक्त्वा काचं विमार्गति।।

योगी परमात्मा का मूर्तियों में नहीं बल्कि आत्मा में दर्शन करते हैं। अपने भीतर ही रहनेवाले परमात्मा को छोड़कर कही दूर रहनेवाली वस्तु को जो परमात्मा मानता है वह मूर्ख ही है। लेपन को पास रहने वाली हथेली से लेते हैं कि कोहनी से अंधा व्यक्ति उगते हुए सूरज को जैसे देख नहीं सकता है, वैसे ही मूर्ख सर्वव्यापी भगवान का दर्शन नहीं कर सकता है। अपने भीतर में रहनेवाले परमात्मा का दर्शन करने का भाग्य जिसको नहीं है, वे ही तीर्थस्थानों में उस परमात्मा को ढूँढते हैं। हाथ में रहने वाले बहुमूल्य रत्न को छोडकर दूर रहने वाले काँच के टुकडों को ढूँढते हैं। यह अज्ञानियों का स्वभाव होता है। (प्रस्तुत उपलब्ध पुराण प्रतियों में ये श्लोक नहीं है।)

समाधि से क्या तात्पर्य है? **विष्णु पुराण** में इसका विवरण इस प्रकार दिया हुआ है। (पृ-१२१०)

तस्यैव कल्पनाहीनस्वरूपग्रहणं हि यत्।
मनसा ध्याननिष्पाद्यं समाधिः सोऽभिधीयते।।[1]

भाव - ध्यान करनेवाला, ध्यान, एवं ध्येय - यदि इन तीनों को अलग न देखकर उनमें ध्यान किये जाने (ध्येय) का एक ही भाव महसूस हुआ तो उसे ही 'समाधि' कहते हैं।

---

1) विष्णु पुराण - ६-७-९२

भगवान माने भगम् वाला भगम् माने १)समग्र ऐश्वर्य, २)धर्म, ३)यश, ४)संपत्ति, ५)ज्ञान, ६)वैराग्य - नामक छः अंशों का समूह है। इस विषय को विष्णु पुराण इस प्रकार बोधित करता है (पृ-१२५१) -

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।
ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा।[1]

''**कपिलोग्रजः**'' पुराण वचन के अनुसार श्री शंकराचार्य ने कुछ श्लोकों के द्वारा यह स्पष्ट किया है कि ज्ञानयोग में श्री कपिल महर्षि अग्रगण्य है। ये श्लोक किस पुराण में से हैं - इसका शोध अभी करना अपेक्षित है।

इस प्रकार श्वेताश्वतरोपनिषत् में कई सारे पुराणोक्तों को श्री शंकराचार्यजी ने हमें दिया है।

➢ **बृहदारण्यकोपनिषत् -** प्रथमाध्याय के चौथे ब्राह्मण में से छठवें मंत्र भाष्य में - ''**पुराणेच - ब्रह्मवृक्षः सनातनः**'' नामक पंक्ति है। (पृष्ठ-१८९) संसारवृक्षवर्णनक्रम में यह वाक्य द्रष्टव्य है। यहाँ पुराण प्रामाणिकता की स्पष्टता दिखाई देती है।

कर्मस्वरूप अज्ञानमय, विद्यास्वरूप ज्ञानमय है - व्यासमहर्षि से दिए गए इस वचन को कुछ लोगों ने शायद सुना नहीं होगा। ऐसा समझकर कर्म-ज्ञान के भेद के बारे में कुछ श्लोकों में प्रश्नोत्तर रूप में भाष्य में विवरण दिया हुआ है। (पृ-५३९-५४०)- ये श्लोक **महाभारत** में है।

यदिदं वेदवचनं कुरू कर्म त्यजेति च।
कां गति विद्यया यांति कां च गच्छन्ति कर्मणा।।[2]

एतद्वै श्रोतुमिच्छामि तद्भवान् प्रब्रवीतु मे।
एतावन्योन्यवैरूप्ये वर्तेते प्रतिकूलतः।।[3]

कर्मणा बध्यते जंतुर्विद्यया च विमुच्यते।
तस्मात्कर्म न कुर्वंति यतयः पारदर्शिनः।।[4]

भाव - ''कर्म करो'' तथा ''कर्म छोड़ दो'' - यह वेद का कथन है। ''विद्या से क्या प्राप्त होता है? कर्म से क्या प्राप्त होता है? यह विषय जानना चाहता हूँ। दया करके बताइए। कर्म और ज्ञान - ये दोनों परस्पर विरुद्ध है न! अतः यह संदेह हुआ है'' - यह एक प्रश्न है। इस प्रश्न का उत्तर - ''कर्मों के कारण जीव इस संसार के बंधित हो जाता है। ज्ञान के कारण मुक्त होता है। इसलिए दूरदृष्टि रखनेवाले महात्मा कर्मों का आचरण नहीं करते हैं।

---

1) विष्णु पुराण - ६-५-७४
2) The Mahabharata वन - २-७०
3) The Mahabharata शांति - २३३-२
4) The Mahabharata शांति- २३३-७

चौथा अध्याय, चौथे ब्राह्मण में से नौवें मंत्र भाष्य में (पृ-१०७३) **शांति पर्व** श्लोक-

अपुण्यपुण्योपरमे यं पुनर्भवनिर्भयाः।
शांताः सन्यासिनो यान्ति तस्मै मोक्षात्मने नमः।।[1]

पाप-पुण्यों के मिटने के बाद पुनर्जन्म से बिना डरे प्रशांत चित्त संन्यासी जिसे प्राप्त करते है वही ''**मोक्ष**'' है। चौथा अध्याय, पाँचवे ब्राह्मण में (पृ-११५३) शांति पर्व वचन :-

त्याग एव हि सर्वेषामुक्तानमपि कर्मणाम्।
वैराग्यं पुनरेतस्य मोक्षस्य परमोऽवधिः।।[2]

शास्त्र में बताये गए सभी कर्मों को त्यागना है। वैराग्य ही मोक्ष का सोपान है।

छांदोग्योपनिषत् - पाँचवें अध्याय के दशम खंड, भाष्य की (पृ-४६७) एक पंक्ति का भाव इस प्रकार है :- ''पुराण व स्मृतियों की प्रमाणिकता के अनुसार ऊर्ध्वरेतस्क नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के लिए सूर्य संबंधित उत्तर मार्ग प्रसिद्ध है।'' (**पुराणस्मृति प्रामाण्यादूर्ध्वरेतसाम् ब्रह्मचारिणा-मुत्तरेणार्यम्णः पंथाः प्रसिद्धः**)

यही कुछ पंक्तियों के बाद भाष्य पंक्ति का भाव इस प्रकार है - ''**पुराणकर्ता** ऐसे कहते है'' (तथा च **पौराणिकाः ------** इत्याहुः) -

सातवें अध्याय के छब्बीसवें खंड में (पृ.७६१)- श्री शंकराचार्य ने भगवान की परिभाषा देते हुए विष्णु पुराण श्लोक को उल्लेख किया है -

उत्पत्तिं प्रलयं चैव भूतानामागतिं गतिम्।
वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति।[3]

भूतों की उत्पति एवं लय, आगमन, गमन व विद्या, अविद्याओं का ज्ञाता ''भगवान'' है।

इस प्रकार कुछ उपनिषदों के भाष्य के परिशीलन करने पर यह स्पष्ट होता है कि अपने सिद्धांतों के प्रमाण के लिए कई पुराणोक्तों का श्री शंकराचार्य ने प्रतिपादित किया है।

II) श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य के पुराण वचन -

श्रीमद्भगवद्गीता - के तीसरे अध्याय में सत्ताईसवें श्लोक भाष्य में **विष्णु पुराण** में से दो श्लोक संकलित हुए हैं। (पृ-१०२)

---

1) The Mahabharata शांति - ४७-३६

2) The Mahabharata शांति - ३०८-२९

3) विष्णुपुराण - ६-५-७८.

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः।
वैराग्यस्याथ मोक्षस्य षण्णां भग इतीरणा।।[1]

यह 'भग' शब्दार्थ का विवरण देनेवाला श्लोक है। भग माने १)समग्र ऐश्वर्य, २)धर्म, ३)यश, ४)संपत्ति, ५)ज्ञान, ६)वैराग्य - नामक छः अंशों का समूह है।

उत्पत्ति प्रलयं चेव भूतानामागतिं गतिम्।
वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यों भगवानिति।।[2]

भूतों के उत्पत्ति, लय, आगमन, गमन व विद्या, अविद्या को जाननेवाला भगवान है। ये दो श्लोक श्वेताश्वतरोपनिषद् भाष्य में भी दिखायी पडते हैं। परन्तु प्रथम श्लोक में थोडा अंतर है। पंद्रहवें अध्याय के प्रथम श्लोक भाष्य में **पुराणे च** - ऐसे चार पुराण श्लोकों को उल्लेखित किया है। (पृ-३६५-३६६) - तीन श्लोक **ब्रह्मांड पुराण** में उद्धृत है। चौथा श्लोक, कुछ परिवर्तित रूप में महाभारत में उद्धृत है।

अव्यक्तमूलप्रभवस्तस्यैवानुग्रहोत्थितः।
बुद्धिस्कंधमयश्चैव इंद्रियांतरकोटरः।।[3]

महाभूतविशाखश्च विषयैः पत्रवांस्तथा।
धर्माधर्मसुपुष्पश्च सुखदुःखफलोदयः।।[4]

अजीव्यः सर्वभूतानां ब्रह्मवृक्षः सनातनः।
एतद्ब्रह्मवनं चैव ब्रह्माचरति नित्यशः।।[5]

एतच्छित्वा च भित्त्वा च ज्ञानेन परमासिना।
ततश्चात्मरतिं प्राप्य तस्मान्नावर्तते पुनः।।[6]

संसारवृक्ष का वर्णन इन श्लोकों में हैं जिसका भाव है - यह अव्यक्तमूल से उत्पन्न है, उस मूल का अनुग्रह से बढा, बुद्धि नामक टहनियों से युक्त है। वह इंद्रिय नामक कोटरों को पाया हुआ है, महाभूत नामक उपशाखाएँ। धर्म-अधर्म नामक पुष्प उस पर हैं। उसके सुख-दुःख नामक फल हैं। सर्व भूतों को जिंदगी देनेवाला सनातन वृक्ष है यह। इसी को **''ब्रह्मवृक्ष''** कहते है। इस वृक्ष को ज्ञान नामक खड्ग से छेदन करनेवाला ज्ञानी आत्मानंद प्राप्त करते हुए वहीं पर स्थिर रहता है।

---

1) विष्णुपुराण - ६-५-७४
2) विष्णुपुराण - ६-५-७८
3) ब्रह्मांडपुराण - १-५-१००
4) ब्रह्मांडपुराण - १-५-१०१
5) ब्रह्मांडपुराण - १-५-१०२
6) The Mahabharata अश्वमेद - ४७-१४

इस प्रकार श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य में तीसरे और पंद्रहवें अध्यायों में पुराणोक्त द्रष्यव्य हैं।

III) ब्रह्मसूत्र भाष्य में पुराण वचन -

ब्रह्मसूत्र भाष्यम् - द्वितीयाध्याय प्रथमाधिकरण के इस पुराण वचन को श्री शंकराचार्य ने उल्लेखित किया है। (पृ-४३४) यह श्लोक **वायु पुराण** से है -

अतश्च संक्षेपमिमं शृणुध्वं नारायणः सर्वमिदं पुराणः।
स सर्गकाले च करोति सर्वं संहारकाले च तदत्ति भूयः।।[1]

श्रीमन्नारायण जो सनातन हैं, सर्वव्यापी है। वे ही सृष्टिस्थिति तथा लयकर्ता भी हैं।

इसी अधिकरण में - ''**पौराणिक** इस प्रकार बताते हैं''- (तथाः चाहुः **पौराणिकाः**) ऐसे कहते हुए निम्न लिखित श्लोक दिए हुए है (पृ-४४४), यह श्लोक ब्रह्मांड पुराण से हैं -

अचिंत्याः खलु ये भावाः न तांस्तर्केण योजयेत्।
प्रकृतिभ्यः परं यच्च तदंचिंत्यस्य लक्षणम्।।[2]

ब्रह्म पदार्थ शब्द मूलक है। कुतर्क से परे है। उपदेशों द्वारा ही यह ज्ञातव्य है, ऐसा भाव है।

इस श्लोक को इसी अधिकरण में अन्यत्र भी उद्धृत किया गया है। (पृ.४७६) अतः यह पता नहीं चलता कि इन वचनों को कौन-से पुराण से संकलित किया गया है।

इस प्रकार श्री शंकरभगवत्पाद जी के प्रस्थानत्रय भाष्य में प्रकट होते हुए ''अस्मन्नयनगोचर रूप'' पुराणोक्तों को प्रदर्शित किया गया है।

एक छोटी सी चर्चा - श्री शंकराचार्य ने अपने भाष्य ग्रंथों में संदर्भ के अनुसार श्रुति वचनों एवं स्मृति वचनों एवं पुराण वचनों को उद्धृत किया है। श्रुति-स्मृति-पुराण ग्रंथों के अलावा कई जगहों में महाभारत में से श्लोकों को भी प्रमाण के रूप में उल्लेखित किया है। 'महाभारत' इन तीनों में से किसी भी वर्ग से संबंधित नहीं है। वह इतिहास के रूप में ही व्यवहार में है। श्री शंकरभगवत्पाद को 'श्रुति-स्मृति-पुराणानामालयम्'' ही कह रहे हैं, नकि ''इतिहासालयम्''। महाभारतेतिहास में से कई वचनों को प्रमाण के रूप में उद्धृत आचार्य जी को ''इतिहासालयम्'' - ऐसा न कहना न्यूनता नहीं है क्या? ऐसा प्रश्न उठेगा।

---

1) वायु पुराण (पूर्वार्ध) - १-१८५

2) ब्रह्मांड पुराण - १५-७

उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर दो प्रकार हैं। १) श्री शंकराचार्य महाभारत को अनेक स्थानों में स्मृति के रूप में भी वर्णित करते हैं। २) एक शब्द का प्रयोग करते समय उसका अर्थ हमें भासित होता है। सबको इसका अनुभव है। लेकिन उस शब्द के कारण और एक शब्द का अर्थ भी अभिलषित हो, तो ''उपलक्षण'' का आश्रय लेते हैं। यह शास्त्र सम्मत है। ''एकपदेन तदर्थान्यपदार्थकथनमुपलक्षणम्।'' छोटा दृष्टांत - ''पिछवाडे में चावल को सुखाया है। देखो कि कबूतर उसे न खाए'' ऐसे कहनेवालों का उद्देश्य यह भी है कि कबूतरों के साथ-साथ अन्य पक्षी व पशु भी हैं। इसी तरह यहाँ भी ''पुराण'' शब्द से इतिहास को भी ग्रहण करने के विषय में कोई संदेह की आवश्यकता नहीं है। पुराणों की जो महत्ता है वो व्यासादि की विरचित कृतियाँ- महाभारत इत्यादि ग्रंथों के लिए भी है। अतः **''इतिहास पुराणाभ्याम् वेदम् समुपबृंहयेत्''** ऐसे वचन है।

इस कारण से महाभारत के आधार पर श्री शंकराचार्य जी से उल्लिखित कुछ श्लोकों को यहाँ दिया गया है :-

I) उपनिषद् भाष्य में महाभारत वचन -

➤ **ईशावास्योपनिषत् -** तृतीयमंत्र भाष्य की (पृ-३०) शांतिपर्वोक्ति -

द्वाविमावथ पंथानौ यत्र वेदाः प्रतिष्ठिताः।
प्रवृत्तिलक्षणो धर्मो निवृत्तौ च सुभाषितः।।[1]

मनुष्य की अभ्युन्नति के लिए वेदों ने दो मार्गों को प्रस्तुत किया है। १)प्रवृत्ति धर्म, २)निवृत्ति धर्म। मनुष्य को कैसे रहना है, क्या करना है - इत्यादि अंशों को ''प्रवृत्ति धर्म'' उपदेश करता है। कैसे न रहना है, क्या नहीं करना है- इत्यादि अंशों को ''निवृत्ति धर्म'' बताता है। यह वचन महाभारत के शांतिपर्व में से है।

➤ **केनोपनिषत् -**

प्रक्षाळनाद्धि पंकस्य दूरादस्पर्शनं वरम्।[2]

यह वनपर्व वचन है (पृ-६४) -

कर्माचरण करके, ''हाय! ऐसा आचरण न करके ज्ञानमार्ग को ही आश्रय करते तो शायद अच्छा होता होगा'' - बिना ऐसा पछताए सीधा ज्ञानमार्ग का ही आश्रय करना उत्तम है। भूल करें क्यों, फिर पछताना क्यों?

कर्मणा बध्यते जंतुर्विद्यया च विमुच्यते।
तस्मात्कर्म न कुर्वन्ति यतयः पारदर्शिनः।।[3]

---

1) The Mahabharata शांति - २३३-६

2) The Mahabharata वन - २-४७

3) The Mahabharata शांति - २३३-७

शांतिपर्व में से यह वचन केनोपनिषत् में उद्धृत है। (पृ-६७) कर्मों से जीव संसार बद्ध होता है। ज्ञान से मुक्त होता है। इसलिए दूरदृष्टि रखनेवाले महात्मा कर्मों का आचरण नहीं करते हैं।

ज्ञानमुत्पद्यते पुंसां क्षयात्पापस्य कर्मणः।[1]

शांतिपर्वोक्ति (पृ.१९१) किए हुए सभी पाप कर्म जब क्षीण हो जाते हैं तब जीव को ज्ञान प्राप्ति होती है।

➢ **प्रश्नोपनिषद् -**

त्यजेदेकं कुलस्यार्थे।[2]

उद्योगपर्व में उल्लिखित न्याय है। (पृ-४१५)

'वंशप्रतिष्ठा के लिए अनिवार्य हो तो एक पुत्र को छोडना है। गाँव की भलाई के लिए आवश्यकता पड़ने कुल को छोडना है। देश के लिए अनिवार्य हो तो गाँव को छोडना है। आत्मोज्जीवन हेतु आवश्यक हो तो भूमंडल (धरती) को भी छोड़ना है।

मुंडकोपनिषत् -

मनसश्चेंद्रियाणां च ह्यैकाग्र्यं परमं तपः।[3]

शांतिपर्व श्लोक। (पृ-५३३) मन तथा इंद्रियों को वश में रखना ही उत्तम तपस्या है।

शकुनीनामिवाकाशे जले वारिचरस्य च।
पदं यथा न दृश्येत तथा ज्ञानवतां गतिः।।[4]

आकाश में उड़ने वाले पक्षियों का एवं पानी में रहनेवाले जलचरों के कुदम हमें दिखाई नहीं पड़ते। इसी प्रकार ज्ञानियों के गमन-प्रकार को देख न पाने का अर्थ इस वचन में है। इस वचन को श्री शंकराचार्य ने शांति पर्व से ग्रहण किया है। (पृ-५५०)

मांडुक्योपनिषद -

मुंडकोपनिषद में संग्रहण किए श्लोक का अर्थ ही लग-भग मांडुक्योपनिषद के निम्न लिखित श्लोक में भी उल्लिखित है। कुछ परिवर्त्तन के साथ विरचित यह श्लोक भी शांतिपर्व में से ही है। (पृ-८००)

सर्वभूतात्मभूतस्य सर्वभूतहितस्य च,
देवा अपि मार्गे मुहयंत्यपदस्य पदैषिणः।[5]

---

1) The Mahabharata शांति - १९७-८
2) The Mahabharata उद्योग - ३७-१६
3) The Mahabharata शांति - २४२-४
4) The Mahabharata शांति - १७४-१९
5) The Mahabharata शांति - २५४-३२

समस्त भूतों की आत्माएँ हमारी जैसी हैं तथा सर्व प्राणियों की भलाई चाहनेवाले महात्माओं के मार्ग का देवता भी अन्वेषण रहते हैं। आकाश में उड़नेवाले पक्षियों के मार्ग की तरह इस मार्ग का आसानी से पता नहीं चलता है।

➢ **तैत्तरीयोपनिषद् -** शिक्षावल्ली के चतुर्थानुवाक भाष्य में (पृ-९१६) शांतिपर्व में से निम्न लिखित श्लोक का संकलित किया गया था। यह केनोपनिषद् में भी उद्धृत है -

ज्ञानामुत्पद्यते पुंसां क्षयात्पापस्य कर्मणः।
यथाऽऽदर्शतले प्रख्ये पश्यंत्यात्मनमात्मनि।।[1]

पापों के क्षीण होने के बाद ही मानव को ज्ञान की प्राप्ति होती है। दर्पण का साफ होने से ही हमारा मुँह ठीक से उसमें दिखाई देता है। उसी तरह केवल शुद्ध अंतःकरण में ही आत्मसाक्षात्कार होता है।

भृगुवल्ली में के प्रथमानुवाकम् में (पृ-१०७६) शांतिपर्व में से निम्न लिखित वचन केनोपनिषद् में भी उल्लेखित है।

मनसश्चेंद्रियाणां च ह्यैकाग्र्यं परमं तपः।
तज्ज्यायः सर्वधर्मेभ्यः स धर्मः पर उच्यते।।[2]

मन तथा इंद्रियों को वश में रखना ही उत्तम तपस्या है। सर्व धर्मों में यह ''इंद्रिय दमन'' ही श्रेष्ठ धर्म है।

II) श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य में महाभारत के वचन -

श्रीमद्भगवद्गीता के दूसरे अध्याय में शांतिपर्व वचन इस प्रकार हैं :- (पृ.४५)

द्वाविमावथ पंथानौ यत्र वेदाः प्रतिष्ठिताः।
प्रवृत्तिलक्षणो धर्मो निवृत्तौ च सुभाषितः।।[3]

भाव - मानव की अभ्युन्नति के लिए वेदों ने दो मार्गों को दिखाया था। १)प्रवृत्त धर्म, २)निवृत्ति धर्म। मानव को कैसे रहना है। क्या करना है?- इत्यादि अंशों को प्रवृत्ति धर्म उपदेश देता है। कैसे न रहना है, क्या नही करना है- इत्यादि अंशों को निवृत्ति धर्म उपदेश करता है। तेरहवें अध्याय में भी यह श्लोक है। (पृ-३००)

इसी अध्याय में स्त्री पर्व वचन (पृ.५२) -

अदर्शनादापतितः पुनश्चादर्शनं गतः।
नासौ तव न तस्य त्वं वृथा का परिदेवना।[4]

---

1) The Mahabharata शांति - १९७-८
2) The Mahabharata उद्योग - २४२-४
3) The Mahabharata शांति - २३३-६
4) The Mahabharata स्त्री - २-८

पुत्र-मित्रादि हमारे जन्म से पहले ही रहते हैं। लेकिन वे हमें दिखते नहीं है। बाद में भी वे दिखते नहीं हैं। वे तुम्हारे साथी नहीं हैं। तुम उनका भी नहीं हो। इसलिए दुखी होना सही नहीं है।

तृतीय अध्याय के शांतिपर्ववचन में (पृ-७९) -

कर्मणा बध्यते जंतुर्विद्ययया च विमुच्यते।
तस्मात्कर्म न कुर्वन्ति यतयः पारदर्शिनः।।[1]

कर्मों के कारण जीव संसार में बद्ध होता है एवं वह ज्ञान से मुक्त होता है। इसीलिए दूरदृष्टि रखनेवाले महात्मा कर्म नहीं करते।

इस अध्याय में ही (पृ-८५) शांतिपर्वोक्ति -

ज्ञानमुत्पद्यते पुंसां क्षयात्पापस्य कर्मणः।[2]

भाव यह है कि पापों का क्षय होने पर ही मनुष्यों को ज्ञान प्राप्त होता है।

छठे अध्याय में (पृ.१७३) शान्ति पर्वोक्ति -

नैतादृशं ब्राहमणस्यास्ति वित्तम्
यथैकता समता सत्यता च।
शीलं स्थितिर्दंडनिधानमार्जवम्
ततस्ततश्चोपरमः क्रियाभ्यः।।[3]

समता, सत्य, शील, स्थिति, अहिंसा, कुटिलस्वभावी न होना एवं कर्मों को छोड़ना - ये अंश ही ब्राह्मण के लिए संपत्तियाँ हैं। इनसे बढ़कर और कोई संपत्ति नहीं है।

छठवें अध्याय में (पृ-१७४) और एक शांति पर्व वचन -

काम ! जानामि ते मूलं संकल्पात्किल जायसे।
न त्वां संकल्पयिष्यामि तेन मे न भविष्यसि।।[4]

हे इच्छाओं! आपका मूल मुझे पता है। मैं उस तरह का संकल्प नहीं करता। अतः आप मेरे पास आ नहीं सकती।

बारहवें अध्याय में (पृ-२९६) शांति पर्व वचन :-

येन केनचिदाच्छन्नो येन केनाचिदाशितः।
यत्र क्वचन शायी स्यात्तं देवा ब्राहमणं विदुः।।[5]

---

1) The Mahabharata शांति - २३७-७
2) The Mahabharata उद्योग - १९७-८
3) The Mahabharata शांति - १६९-३५
4) The Mahabharata शांति - १७१-२५
5) The Mahabharata शांति - २३७-१२

ब्राह्मण माने कौन है? इस प्रश्न का उत्तर ही यह श्लोक है - कोई कपड़े देता है, कोई अन्न कहीं देता है, वह कहीं सोता है, अपने लिए वह कुछ भी नहीं रखता है - देवताओं का कहना है कि ये सारे लक्षण जिसमें होते हैं, वे ही ब्राह्मण कहलाते हैं।

तेरहवें अध्याय भाष्य की (पृ-३०१) शांतिपर्वोक्ति -

सर्पान् कुशाग्रणि तथोदपानं ज्ञात्वा मनुष्याः परिवर्जयंति।
अज्ञानतस्तत्र पतंति केचिद् ज्ञाने फलं पश्य तथा विशिष्टम्।।[1]

साँप, काँटें, तालाब - इन्हें देखकर मानव संभल जाता है। हट भी जाता है। जो नहीं संभलता है उसे दुःख होता है। उसी प्रकार जिसे ज्ञान है उसे मुक्ति फल की प्राप्ति होती है।

III) ब्रह्मसूत्र भाष्य के महाभारत के वचन

१.''अंतस्तद्धर्मोपदेशात्'' (१-१-२०) सूत्र भाष्य में (पृ-१९६) शांति पर्व का श्लोक -

माया ह्येषा मया सृष्टा यन्मां पश्यसि नारद!
सर्वभूतगुणैर्युक्तं मैवं मां ज्ञातुमर्हसि।।[2]

''हे नारद! मैंने माया की सृष्टि की। मुझे देख सकते हो। सर्व भूतों के गुण मुझ में है, सर्वभूतगुणयुक्त मुझे तुम जान नहीं सकते हो।'' यह श्लोक ''दर्शयति... चाथो अपि स्मर्यते'' (३-२-१७) सूत्र भाष्य (पृ.७१०) में भी है।

२. ''शब्दादेव प्रमितः'' (१-३-२४) सूत्र भाष्य में (पृ.३१५) वन पर्व श्लोक -

अथ सत्यवतः कायात् पाशबद्धं वशं गतम्।
अंगुष्ठमात्रं पुरूषं निश्चकर्ष यमो बलात्।।[3]

भाव - सत्यवंत की देह से यमराज ने पाश हटाकर अंगुष्ठ-सम जीव को खींचा है।

३. ''विरोधः कर्मणीति चेत'' (१-३-२७) इत्यादि सूत्र भाष्य में (पृ.३२०) शांति पर्व वचन -

आत्मनो वै शरीराणि बहूनि भरतर्षभ।[4]
योगी कुर्याद्बलं प्राप्य तैश्च सर्वैर्महीं चरेत्।
प्राप्नुयाद्विषयान् कैश्चित् कैश्चिदुग्रं तपश्चरेत्।।[5]

हे भरतश्रेष्ठ! आत्मा के अनेक शरीर होते हैं। योगी उन शरीरों से अपनी शक्ति के बल पर उग्र तपस्या कर सकता है।

---

1) The Mahabharata शांति - १९४-१४
2) The Mahabharata शांति - ३२६-४३
3) The Mahabharata वन - २८१-१६
4) The Mahabharata शांति - २८९-२६
5) The Mahabharata शांति - २८९-२७

(४) ''शब्द इति चेन्न'' (१-३-२८) इत्यादि सूत्र भाष्य में (पृ-३२२) शांति पर्व वचन -

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयं भुवा।[1]

भाव : वाणी (वाक्) का न आदि है और न अंत। ब्रह्म से सृजित की गयी वाणी पहले वेद रूप में प्रकटित हुई थी। इस वेद के आधार पर ही समस्त निकल पड़े।

(५) ''स्मृत्यनवकाशदोषप्रसंग इति चेत'' (२-१-१) इत्यादि सूत्र भाष्य में (पृ-४३५) शांति पर्वोक्ति -

बहूनां पुरुषाणां हि यथैका योनिरूच्यते।
तथा तं पुरूषं विश्वमाख्यास्यामि गुणाधिकम्।।[2]

भाव : मानव की सृष्टि का मूल एक ही है। ऐसे गुणाधिक पुरुष का मैं विवरण देता हूँ।

(६) ''विपर्ययेण तु क्रमेऽत उपपध्यते च'' (२-३-१४) सूत्र भाष्य में (पृ-५९७) शांति पर्व वचन-

जगत्प्रतिष्ठा देवर्षे! पृथिव्यप्सु प्रलीयते।
ज्योतिष्यापः प्रलीयस्ते ज्योतिर्वायौ प्रलीयते।।[3]

हे देवर्षी! पृथ्वी में जल लीन होता है। तेजस में जल, वायु में तेजस् लीन होते हैं। यह विपरीत क्रम है।

(७) ''तद्गुणसारत्वातु तद्व्यपदेशः प्रज्ञवत्'' (२-३-२९) इत्यादि सूत्र भाष्य में (पृ-६०९) शांति पर्वोक्ति-

उपलभ्याप्सु चेद्गंधं केचिद् ब्रूयुरनैपुणाः।
पृथिव्यामेव तं विद्यात् अपो वायुं च संश्रितम्।।[4]

जब पृथ्वी में ही जल, वायु प्राप्त होते हैं, तब जल में चंदन प्राप्त करना कोई बड़ी बात नहीं हो सकती है।

(८) ''कृतात्ययेऽ नुशयवान'' (३-१-८) इत्यादि सूत्र भाष्य के (पृ.६७०) शांति पर्व वचन -

कदाचित्सुकृतं कर्म कूटस्थमिह तिष्ठति।
मज्जमानस्य संसारे यावद्दुःखाद्विमुच्यते।।[5]

कभी किया गया पुण्य इस ''भव-सागर'' से हमें मुक्त करेगा।

---

1) The Mahabharata शांति - २२४-५५
2) The Mahabharata शांति - ३३८-२५
3) The Mahabharata शांति - ३२६-२८
4) The Mahabharata शांति - २२४-४०
5) The Mahabharata शांति - २७९-१७

९) **''अपि च संराधने प्रत्यक्षानुमनाभ्याम्।''** (३-२-२४) सूत्र भाष्य के (पृ.७२२) शांति पर्व वचन

यं विनिद्रा जितश्वासाः संतुष्टाः संयतेंद्रियाः,
ज्योतिः पश्यंति युंजानास्तस्मै योगात्मने नमः,
योगिनस्तं प्रपश्यंति भगवंतं सनातनम्।।[1]

निद्रा, वायु, इंद्रियों को जो जीतते हैं और जो संतुष्ट हैं वे अपनी अंतरात्मा का दर्शन कर सकते हैं, ऐसी योगात्मा को नमस्कार। ऐसे सनातन योगी भगवान का दर्शन कर सकते हैं।

(१०) **''सर्वापेक्षा च यज्ञादिश्रुतेरश्ववत्।''** (३-४-२६) सूत्र भाष्य की (पृ.५९७) शांति पर्वोक्ति -

कषायपक्तिः कर्माणि ज्ञानं तु परमा गतिः।
कषाये कर्मभिः पक्वे ततो ज्ञानं प्रवर्तते।।[2]

जब सभी कर्म परिपक्व होते हैं, तब ज्ञान प्राप्त होता है। इसी प्रकार अब तक प्रस्थानत्रयभाष्य में प्रकटित महाभारत के वचनों को उल्लेखित किया गया है।

श्री शंकराचार्य जी के प्रस्थानत्रय भाष्य में मुझे दृष्टिगोचर हुए व्यास महर्षि के पुराण वचन या महाभारत के वचनों को ही दिखाया गया है। और भी अनेक सारे वचन हैं। लेकिन इस प्रकार व्यास वचनों को उल्लेखित करते जाएँगे तो यह निबंध विस्तृत जाने के भय से इसे समाप्त करना चाहता हूँ।

अनुरोध - ''पुराण'' नामक शब्द को इच्छानुसार, बिना शास्त्र सम्मत अर्थ बताना समर्थनीय नहीं। इसी प्रकार ''व्यास महर्षि के प्रति एवं श्री शंकरभगवत्पाद के प्रति हमें पूज्यभाव है, लेकिन व्यास विरचित पुराणों से हम सहमत नहीं है।'' ऐसी कुभावना अक्षम्य है, अपराध भी है। अधूरे ज्ञान के आधार पर खुद को सर्वज्ञ समझनेवालों को ब्रह्म भी मना नही सकते। इसी बात को बतानेवाला भर्तृहरि का श्लोक निम्न लिखित है :-

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मापि नरं न रंजयति।।[3]

यह श्लोक प्रायः स्मरण में आता रहा है। अतः पुराणेतिहासोक्तियाँ सर्वदा हमें आदरणीय हैं। इस विषय अन्य प्रकार का विचार समुचित नहीं है।

।। **नमो महद्भ्यः** ।।

❀❀❀

1) The Mahabharata शांति - ४७-३५

2) The Mahabharata शांति - २६२-३६

3) सुभाषितत्रिशती (नीतिशतकम्) - ३

वेंकटाद्रि पर अंजना-केसरी द्वारा भगवान वराहस्वामी का दर्शन

3. श्री वेंकटाचल माहात्म्य-प्रामाणिकता

तेलुगु मूल - डॉ.समुद्राल वेंकट रंग रामानुजाचार्युलु अनुवाद - डॉ.के.महालक्ष्मी भवानी

तिरुमला क्षेत्र और श्रीनिवास से संबंधित समग्र इतिहास तथा सांप्रदायिक वैभव प्रकट करनेवाले ग्रंथ तीन हैं। १. वेंकटाचल माहात्म्यम २. वेंकटाचलेतिहासमाला ३. तिरुमल समयाचार। इनमें से पहला ग्रंथ स्वतंत्र ग्रंथ नहीं है। यह सिर्फ पुराणों के भागों का संकलन मात्र ही है। इस संकलन में मिलनेवाले पुराणों के सभी भागों को तो नहीं, लेकिन कुछ भागों को भगवद्रामानुजाचार्य ने ही उद्धृत किया है। हजारों साल पहले तिरुमला क्षेत्र में स्थित मूर्ति के बारे में शक होने पर, पहाड पर स्थित मूर्ति श्रीनिवास ही है - ऐसा निर्धारित करने के लिए रामानुजाचार्य जी ने पुराणों की प्रामाणिकता का ही आश्रय लिया था। वेद-वचन, स्मृति-वचन और पुराण-वचन तीनों को प्रमाण के रूप में उद्धृत करने पर भी ''पुराण-वचनों'' की संख्या ही ज्यादा है।

यहाँ पूर्व पक्ष का समर्थ करने वाले और शैव आदि ने भी अपने पक्ष का समर्थन करने के लिए पुराणों का ही आश्रय लिया था। इस संदर्भ में रामानुजाचार्य जी के तर्क को, प्रतिवादियों के तर्क को और उनसे उद्धृत पुराण-वचनों को भी 'वेंकटाचल इतिहास माला' नामक ग्रंथ में श्री रामानुजाचार्य के शिष्य-अनंताचार्य जी ने विशेष रूप से ग्रन्थस्थ किया। करीब पाँच स्तबकों में वर्णित इस वाद-प्रतिवाद प्रक्रिया, और **वेंकटाचल के विषय में श्री रामानुज के निर्णय का सविस्तार वर्णित किया गया है**। यहाँ रामानुजाचार्य के द्वारा उद्धृत पुराण-वचनों को अनंताचार्यजी ने ग्रंथस्थ किया। रामानुज से उदाहरण के रूप में दिए गए पुराण ये हैं -१. वामन-पुराण २. श्री वराह-पुराण ३. पद्म-पुराण ४. गरुड-पुराण ५. ब्रह्माण्ड-पुराण ६. भविष्योत्तर-पुराण ७. ब्रह्म पुराण ८. स्कांद पुराण ९. मार्कंडेय-पुराण १०. हरिवंश के शेष धर्म।

लगभग ये सब इतिहासमाला में विस्तार से प्रस्तावित किए गए हैं। पुराणों के आधार पर ही कई बातों को रामानुज ने यादव राजा के दरबार में केवल प्रमाणित न करते हुए ''पर्वत पर स्थित मूर्ति श्रीनिवास ही है-'' निर्धारित करने के लिए आवश्यक कई अंशों को पुराणों से ही लिया था। यहाँ एक प्रश्न उत्पन्न हो सकता है। यदि पुराण - प्रामाणिकता नहीं है तो क्या यह नहीं मालूम होता है कि तिरुमला पहाड पर स्थित मूर्ति श्रीनिवास ही है? 'अराईकाणे'? इत्यादि वेद मंत्र ही इस बात को निर्धारित करता है। सच है। इसमें कोई शक नहीं है कि ऋग्वेद के दशम मंडल के 'अराईकाणे'? नामक मंत्र श्रीनिवास से संबंधित है। लेकिन यह मंत्र श्रीनिवास से संबंधित है - ऐसा निर्धारित करने में क्या सबूत है? यह प्रश्न भी है। इसका हल करने के लिए भी फिर पुराणों का ही आश्रय लेना पडता है। इस तथ्य को निर्द्वंद्व हो कह सकते हैं कि यह (निम्नलिखित) मंत्र को विविध आचार्यों के द्वारा श्रीनिवास स्वामी के रूप में समन्वित करने के पूर्व ही, पुराणों ने यह कार्य करके निर्देशित किया है।

अरायिकाणे? विकटे गिरिं गच्छेति तं विदुः।
एवं वेदमयः साक्षात् गिरींद्रः पन्नगाचलः।।[1]

यह 'भविष्योत्तरवचनम्' मंत्र-तात्पर्य को स्पष्ट कर रहा है। यदि वामनादि पुराणों की प्रामाणिकता को वेंकटाचल के विषय में स्वीकार नहीं करते हैं, तो हमें यह नहीं मालूम होता है कि यहाँ कौन सा आगम सांप्रदाय प्रामाणिक है? लेकिन पुराण ने अत्यंत स्पष्टता से यह निर्धारित किया है कि यहाँ की वैखानसागम-प्रक्रिया बहुत ही प्राचीन है।

भविष्योत्तर में -

कन्यामासंगते भानौ द्वितीयायां जगत्पतेः।
ध्वजारोहणमाधाय सांकुरार्पणमेव च।
वैखानसमुनिः श्रेष्ठैः पूजामंत्रैः प्रकल्पिता।।[2]

इत्यादि श्लोक यह बता रहे हैं कि यहाँ का वैखानसागम अत्यंत प्राचीन है।

यदि इन पुराणों को प्रमाण के रूप में नहीं मानते तो, ''तिरुमला क्षेत्र में स्थित मूर्ति श्रीनिवास ही है'', इसे निर्धारित करना, और पद्मावती देवी से श्रीनिवास की शादी की रीति को, समझने के लिए और एक प्रमाण है ही नहीं। तब तो तिरुमला का इतिहास ही आधार-रहित, और अप्रामाणिक हो जाता है।

भगवद्रामानुजाचार्य ने बहुत ही श्रम करके, तिरुमला के महत्व को निरूपण करनेवाले पुराण-भागों का संग्रह करके, एक क्रमानुसार यादव-राजा की सभा में उद्धृत किया था। इस बात को इतिहासमाला ग्रंथ में श्री अंनताचार्य ने निम्नलिखितानुसार निर्देश किया :

''**अध श्रीवेंकटाचलमाहात्म्यपरिशीलन - तत्पर्वत साधारणकतिपय - धर्मविशेषयवस्थापनवृत्तांतः उच्यते। श्रीवेंकटाचलमाहात्म्यविषयपुराणभागान् समंततः परिशीलयन् भगवान् रामानुजमुनिः**''[3] कहते हुए इस वृत्तांत का उद्धृत किया।

श्री वेंकटाचल माहात्म्यम नामक शब्द बार-बार प्रयोग किए जाने के कारण ही सब पुराण-भाग ''**श्रीवेंकटाचल माहात्म्यम्**'' के नाम से विख्यात हुए हैं। रामानुजजी के पहले, वे पुराण अंतर्गत रहे और इन विषयों पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया था। रामानुजजी के बाद भी इन पुराण भागों के संकलन होने पर भी, करीब पाँच-छः सौ सालों के बाद ही इन पर विशेष दृष्टि रखकर, उन्हें विशेष रूप से संकलित करने का विशिष्ट प्रयास किया गया था। इन पुराण-भागों को उद्धृत करने की विधा का परिशीलन करने से यह स्पष्ट होता है कि ये सब श्री रामानुज के सैकडों वर्ष पहले भी और उसके बाद भी प्रकाशित हुए थे।

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (भविष्योत्तर पुराण तीर्थखंडांतर्गत- - ४-२१,२२) द्वितीयभाग, पृ.-२९४, ति.ति.दे. प्रकाशन

2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (भविष्योत्तर पुराण तीर्थखंडांतर्गत- - १४-२२-२३) द्वितीयभाग, पृ.-४३७, ति.ति.दे. प्रकाशन

3) श्रीवेंकटाचलेतिहासमाला - सप्तमस्तवकारंभं पृ.१८४

इनकी प्रामाणिकता क्या है? ऐसा कोई संदेह करने पर स्पष्ट रूप से कहना चाहिए कि इन्हें उद्भट एवं प्रामाणिक-आचार्यों द्वारा उद्धृत किया गया था:-

हमारे पूर्वाचार्यों ने उनके द्वारा लिखे गए ग्रंथों में विभिन्न ग्रंथों से कई प्रमाणों को उल्लेख करते हुए सिद्ध किया था। परंतु काल गमन में उनके अदृश्य होने पर भी उन्हें अप्रमाणिक नहीं कहा जा सकता है।

उदाहरण के लिए श्री शंकर भगवत्पाद ने अपने सूत्र-भाष्य में तथा अन्य जगहों पर भी, अपने पूर्वाचार्यों के तर्कों को उद्धृत किया था। उनमें ''भर्तृप्रपंचाचार्य'' एक है। आचार्य शंकर जी ने कहा था कि इन्होंने प्राचीन- -ब्रह्म परिणामवाद का आविष्कार किया था। इनके तर्क को सुरेश्वराचार्य ने अपने वार्तिकाओं में सविस्तार दिखाया। ''भर्तृप्रपंचाचार्य द्वारा लिखित ग्रंथों का अवलोकन किए बिना उनके तर्क को शंकराचार्य या सुरेश्वराचार्य ने स्वयं उद्धृत किया था'' - ऐसा यदि किसी ने कहा तो उससे बढ़कर साहस या अविश्वसनीय दुर्वचन और कोई नहीं होगा। वैसे ही भगवद्रामानुज ने अपने भाष्य में टंक-द्रमिड-भारुचि, कपर्दि आदि आचार्यों के नामों का तथा टंक-द्रमिडों के वचनों का उद्धृत किया था। टंक-द्रमिडों को शंकर भगवत्पाद ने भी उद्धृत किया। लेकिन आजकल उनका कोई भी ग्रंथ उपलब्ध नहीं हैं। इसी प्रकार 'संकर्षकांड', 'दैवतकांड' नामों से हमारे आचार्य शंकर व रामानुज से उद्धृत सूत्र तथा वचन आजकल की प्रतियों में कुछ तो दिखते हैं, कुछ नहीं दिखते। लेकिन कोई भी यह साहस नहीं कर सकता कि उनकी बातें और उदाहरण अप्रमाण हैं। उनके उद्धृतों की जड़ों की शंका करना आचार्यों की प्रामाणिकता को शंकित करने के सिवाय और कुछ नहीं है।

ऐसे ही भगवद्रामानुज यादव राजा की सभा में उद्धृत सारे पुराण वचन ग्रंथ प्रतियों में थे। बाद में भी वे मिले थें। उन पुराणों के वेंकटाचल से संबंधित गाथाएँ परवर्ती काल में भी उल्लिखित की गया था। मुख्यतः पद्मावती-परिणय वृत्तांत पहले-पहल पुराणों में ही उद्धृत किया गया था। परवर्ती काल में लगभग केवल हजारों साल पहले ही नहीं, अपितु बाद के ५, ६ सैकड़ों सालें में तत्पश्चात अन्नमय्या, तरिगोंडा वेंगमांबा वेंकटाध्वरी आदि कइयों के द्वारा भी वे उल्लेखित किए गए थे। इन पुराण गाथाओं को सारा विद्वानों ने मान लिया है। इसलिए श्री वेंकटाचल माहात्म्यम के अनुसार पंडितों द्वारा उद्धृत इतिहासों को सिर्फ आधुनिक विवेचना की दृष्टि से विचार कर उनके कुछ अंश आजकल के उपलब्ध पौराणिक-ग्रंथों में यदि उपलब्ध न हो तो उन्हें अप्रमाण निर्धारित करना **''मूलच्छेदी तव पांडित्य प्रकर्षः''** न्याय को दर्शाता है।

''श्री वेंकटाचल माहात्म्यम'' नाम से संकलित पुराण भागों पर अनुसंधान किया गया है। डॉ.के.वी.राघवाचार्य जी ने इसके संबंध में विस्तार परिशोधन करके साफ-साफ बताया था कि उपर्युक्त सभी पुराणों में माहात्म्यम स्पष्ट रूप से विद्यमान है। तो इन पुराणों के क्रम में श्रीमद्भागवत को भी सम्मिलित करना था। मगर संकलनकर्ता इसे न जोड़ने का कारण, शायद उस समय तक इसका पहचाना नही जाना ही है।

भागवत में बलरामजी की तीर्थयात्रा वा वर्णन करते संदर्भ में यह बताया गया है कि बलरामजी ने वेंकटगिरि का दर्शन किया था।

स्कंदं दृष्ट्वा ययौ रामः श्रीशैलं गिरिशालयम्,
द्रविडेषु महापुण्यम् दृष्ट्वाद्रिं वेंकटं प्रभुः।।[1]

इतना ही नहीं, त्रिमूर्तियों की सहनशीलता और सात्विकता की परीक्षा करके जगत को प्रकट करने के लिए महर्षि भृगु ने अन्य महर्षियों के प्रोत्साहन से किए गए प्रयास को श्री भागवत के दशमोत्तर के ८९वीं अध्याय ने सविस्तार वर्णित किया है। फिर यह भाग पुराण संकलन में जोड़ा नहीं किया गया है। केवल इतना ही नहीं बल्कि २००९ में कुछ शोधकर्ताओं को पता चला कि वराह पुराण के कुछ भाग इस संकलन में जोड नहीं गए हैं। आजकल की प्रतियों में मिलनेवाले पाँच अध्याय इस संकलन में जोडे नहीं गए। परवर्ती काल में यह भाषित किया गया कि उन्हें परिवर्द्धित संस्करण में शामिल करना है। समय की गति के अनुसार जो पहले थे बाद में वे गायब हो सकते हैं। आचार्य रामानुज के पूर्व शायद ऐसे लोग थे जिन्होंने इन पुराण-भागों का अनुशीलन किया था। मगर ऐसे लोग कोई भी हमें मालूम नहीं है। ''तिरुमला क्षेत्र में स्थित स्वामी श्रीनिवास है या नहीं, स्कंद है या अन्य कोई देवता''- उन दिनों में जिन्होंने ऐसा वाद-विवाद किया था, इन सभी बातों के प्रमाण के रूप में पुराण ही खड़े हैं।

तिरुमला-क्षेत्र के स्वामी को स्कंद निर्धारित करने के लिए उन्होंने कुछ पुराण-वचनों को उद्धृत किया था। श्री रामानुजजी ने उन्हीं के तात्पर्य को समझाकर उनके तर्क का खंड़न किया। इससे प्रमाणित होता है कि पूर्व पक्षी और सिद्धांत दोनों ने समान रूप से पुराणों को ही प्रमाण के रूप में मान लिया है। भगवान श्री रामानुज उपर्युक्त एकादश पुराण, स्मृतियाँ व आगम-वचनों को बताकर वेंकटाचल वैभव व्याप्त किया था। इस संदर्भ में उन्होंने वामन पुराण को करीब ३० स्थानों पर उद्धृत किया। उसके बाद का स्थान वराह पुराण का है। वैसे ही भविष्योत्तर मार्कंडेय पुराण आदि हैं।

इस तरह संकलित पुराणों को पहले-पहल ''श्री वेंकटाचल माहात्म्यम'' नाम को किसने संकलित किया? इसके उत्तर में कहा जाता है कि शोधकर्ता ''पसिंडि वेंकटत्तुरैवर'' नामक रामनुजय्यन जीयर ने किया था। कहा जाता है कि वे ताल्लपाका अन्नमाचार्य के समकालीन थे।

यह प्रचलन में है कि अन्नमय्या ने संस्कृत भाषा में 'वेंकटाद्रि माहात्म्यम' को लिखा था। परन्तु अन्नमय्या ने अपनी कृतियों में भागवत, ब्रह्मांड, वामन पुराणों की कहानियों को उद्धृत किया था।

तरिगोंडा वेंगमांबा ने प्रबंध काव्य के रूप में वेंकटाचल माहात्म्यम का वर्णन किया।

यह प्रक्रिया वेंकटाचल माहात्म्यम के रूप में प्रसिद्ध पुराणों की प्रामाणिकता को ही उद्घोषित करती है।

इस संदर्भ में हम पहले पहल भगवद्रामानुज जी के द्वारा उद्धृत कुछ पुराण विशेषों को यहाँ प्रस्तावित करते हैं।

विभिन्न पुराणों की प्रामाणिकता में हम निम्नलिखित विशेषताओं को प्रस्तुत करते हैं।

---

1) भगवत, दशमस्कंध, उत्तरभाग - ७९-१३

१. वराहमूर्ति के रूप में विष्णु का आविर्भाव

स्वामिपुष्करिणी के दक्षिण की ओर श्रीनिवास मूर्ति के रूप में स्थित महाविष्णु के और एक रूप का सारे पुराण वर्णन कर रहे हैं, तो प्रतिपक्ष वादियों के कथन के अनुसार ''वह विष्णु नहीं है'' - यह वाद का वराह पुराण के वचनों के अनुसार ही खंडन किया गया है। पुराण वचन ये हैं -

एतेषु प्रवरा देवि! स्वामि पुष्करिणी शुभा।
अस्यास्तु पश्चिमे तीरे निवसामि त्वया सह।
आस्तेऽस्या दक्षिणे तीरे श्रीनिवासो जगत्पतिः।
गंगाद्यैः सकलैस्तीर्थैः समा सा सागराम्बरे।।[1]

२. स्वामिपुष्करिणी के तट पर स्वामी है।

वंदमानां समुद्वीक्ष्य प्रीत्युत्फुल्लविलोचनः।
उद्धृत्य धरणीं देवीं आलिंग्याऽथ स्वबाहुभिः।
आघ्राय धरणी वक्त्रं वामांके सन्निवेश्य च।
आरुह्य गरुडेशानं जगाम वृषभाचलम्।
मुनींद्रैः नारदाद्यैश्च स्तूयमानो महीपतिः।
स्वामिपुष्करिणी तीरे पश्चिमे लोकपूजिते।।[2]

यह स्पष्ट होता है कि उपर्युक्त वराह पुराण के इन श्लोकों के अनुसार स्वामिपुष्करिणी के दक्षिणी ओर और, पश्चिमी ओर दोनों स्थानों में स्वामी, वराहमूर्ति और पद्मावती पति के रूप में स्थित है। श्रीनिवास कल्पांत तक स्वामिपुष्करिणी के तट पर रहेंगे।

३. श्रीनिवास की वक्षःस्थल वासिनी माँ लक्ष्मी

स्वामी के वक्षःस्थल पर लक्ष्मी स्थित है- गरुड पुराण के अनुसार अरुंधती ने ऐसा दर्शाया था।

अरुंधती महाभागा लक्ष्म्याऽऽलिंगितवक्षसम्,
दृष्ट्वा हरिं वेंकटेशं प्रणनाम मुदान्विता।[3]

४. स्वामी-शंख-चक्र-धारी है

ब्रह्मांड पुराण के अनुसार स्वामी तोंडमान चक्रवर्ती के चतुर्भुज और शंख-चक्र धारी के रूप में प्रकट हुआ।

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराहपुराण द्वितीयभागांतर्गत - १-४७-४८) प्रथमभाग, पृ.-१३७, ति.ति.दे. प्रकाशन

2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराहपुराण द्वितीयभागांतर्गत - १-८८-९०) प्रथमभाग, पृ.-१४१, ति.ति.दे. प्रकाशन

3) श्रीवेंकटाचलमाहात्म्य (गरुडपुराणांतर्गत ६३-४१) प्रथमभाग, पृ.२९४, ति.ति.दे. प्रकाशन

तन्मध्येऽसौ नीलजीमूतकल्पं पद्मावासं संश्रितत्राणहेतुम।
श्रीवत्सांकं पुंडरीकायताक्षं शंखं चक्रं धारयन्तं कराभ्याम्।।[1]

इसी घटना को मार्कंडेय पुराण ने भी वर्णित किया है।

तन्मध्यस्थं दिव्यमूर्तिं वरेण्यं शंखं चक्रं धारयंतं कराभ्याम्।।[2]

मार्कंडेय पुराण के अनुसार भगवान ने कुमारस्वामी को भी इसी रूप में दर्शन दिया था। वामन पुराण ने साफ-साफ स्पष्ट किया कि स्कंद श्रीनिवास के भक्त हैं। वामन पुराण वचन के अनुसार कुमारधारिका ही स्कंद का तपःस्थल है।

कुमारधारिका नाम तत्र निर्झरिणी शुभा।
मयूर वाहको देवि! तस्यास्तीरे वसत्यहो।।[3]

स्वामी ने बताया कि वेंकटाद्रि में वह कल्पांत तक रहेगा। इतना ही नहीं वराह पुराण के अनुसार परम शिव को पहाड के नीचे आग्नेय दिशा में, प्रस्तुत कपिल तीर्थ में स्थान दिया गया है।

आकल्पं च वसामीह वेंकटाह्वय भूधरे।
त्वमप्यत्र मृडानीश! महादेव! वस प्रभो!
उपत्यकायामस्याद्रेः शोचिष्केशदिशीश्वरः।।[4]

५. आज की अर्चामूर्ति को शंख राज ने निर्मित किया था।

तेनोक्तमार्गेण विधाय पुण्यं विमानवर्यं प्रतिमां च पुण्याम्।
प्रख्याप्य शंखो नरलोकसंघे जगाम विष्णेः पदमव्ययं शुभम्।[5]

तोंडमान के प्रति वात्सल्य से स्वामी ने अपने शंख-चक्रों को उसे समर्पित किया था। ब्रह्म पुराण के वचन इसे स्पष्ट करते हैं।

धर्शयन् भक्तवात्सल्यं यो ददौ हस्तगे शुभे।
शंख-चक्रे नृपेंद्राय चक्रवर्तीति यं विदुः।।[6]

महाराज ने अर्चामूर्ति से शंख-चक्रों का धारण नहीं करने की प्रार्थना की।

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांड पुराण तीर्थखंडांर्गत - ९-११) प्रथम भाग, पृ.-३५०, ति.ति.दे. प्रकाशन
2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (मार्कंडेय पुराण तीर्थखंडांर्गत - २-१५) प्रथम भाग, पृ.-३८३, ति.ति.दे. प्रकाशन
3) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वामन पुराण क्षेत्रखंडांर्गत - २४-९७) प्रथम भाग, पृ.-४४१, ति.ति.दे. प्रकाशन
4) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथमभागांतर्गत - ४९-३९,४०) प्रथम भाग, पृ.-७०, ति.ति.दे. प्रकाशन
5) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्म पुराण क्षेत्रखंडांतर्गत - ३-५१) द्वितीय भाग, पृ.-१६, ति.ति.दे. प्रकाशन
6) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्म पुराण क्षेत्रखंडांतर्गत - ७-७) द्वितीय भाग, पृ.-२४, ति.ति.दे. प्रकाशन

ममाऽऽयुधप्रदानस्य ख्यात्यै देवोत्तम प्रभो।
अर्चाबिंबे शिलाबिंबे चक्रशंखौ न धारय।
इति संप्रार्थितो देवो न दधार पुनश्च तौ।
अदृश्यौ त्तिष्ठतश्चोभौ पार्श्वतः शार्ङ्गधन्विनः।[1]

६. जटा धारणम् सही है-नागभूषणम भी सही है।

पुराणों ने बखान किया कि पद्मावती से विवाह करने के पूर्व स्वामी जब शिकार करने गए, तब उन्होंने जटाजूट धारण किया था।

ध्यायेद्वराश्वगं तं वै तनुत्रावृतविग्रहम्।
सितोष्णीषललाटं च नातिदीर्घजटाधरम।।[2]

निश्शेषभुवनानां च ध्यातव्यं च धरास्थितम्।
अनंतशयनाभूषं कल्पांतहुतभुक्प्रभम्।।[3]

कुंकुमाक्तसुगंधेन लिप्तोरोबाहुरंजितः।
कबरीकृतकेशेषुरक्तवस्त्रंसुवेष्ट्य च।

लंबितैः पुष्पजालैश्च स्कंदगैः परिभूषितः।
सुवर्णरत्नसंबध्य पादुकागुहितांघ्रिकः।।[4]

मूर्धजैः कुंचितैश्चापि नीलैः मृदुतरैस्तथा।
लंबमानैर्बिनिष्क्रांतैः किरीटात् शुभदर्शनात्।।[5]

सारा विश्व ऐसे स्वामी का ध्यान करना है, जो अश्वारोही है, कवच के साथ सफेद साफा पहना है जिसका जटाजूट ज्यादा लंबा नहीं है, अनंत शयन भूषित, प्रलय कालाग्नि के समान तेजस्वी है और जिसकी भुजाएँ कुंकुम गंधों से युक्त है।

लाल रंग के वस्त्र को बालों को लपेटनेवाले, भुजाएँ पुष्प मालिकाओं से अलंकृत है और स्वर्ण रत्नमय पादुकाओं से अलंकृत पैरवाले।

''कुंचित स्वरूप वाले और नीलवर्ण से मुकुट से बाहर दिख रहे केश वाले और भूलोक में रहनेवाले।'' इस प्रकार जटाजूट धारण का वर्णन है।

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांडपुराणांतर्गत - ७-६६,६७) द्वितीय भाग, पृ.-२९, ति.ति.दे. प्रकाशन

2) श्रीसात्वतसंहित - १२-१६०

3) श्रीसात्वतसंहित - १२-१६४

4) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (भविष्योत्तर पुराणांतर्गत - ६-१०-११) द्वितीय भाग, पृ.-३०१, ति.ति.दे. प्रकाशन

5) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वामन पुराण, क्षेत्रखंडांतर्गत - ३४-३१) प्रथम भाग, पृ.-५०१, ति.ति.दे. प्रकाशन

७. आकाशराज ने नागाभरण दिए।

भविष्योत्तर पुराण के अनुसार आकाशराज ने विवाह के समय नागाभरणों को समर्पित किया था।

नागभूषणयुग्मं च बाहुपूरादिकांस्तथा।
इंद्रनीलमणिश्याम रमणीया हि भूषणैः।।[1]

८. ऊर्ध्वपुंड्र निर्णय - श्रीनिवास के ऊर्ध्वपुंड्र स्वरूप को पद्म पुराण ने निरूपित किया :-

उद्यद्युमणिबिंबश्रीः शिखामणिमहामहः।
अष्टमींदुकलाकार ललाटस्थोर्ध्वपुंड्रकः।।[2]

इस तरह हमें स्पष्टतः विदित होता है कि श्रीनिवास से संबंधित कई विशेषों को पुराणों ने स्पष्ट किया। ''इन पुराणों का संकलन ही आज ''वेंकटाचल माहात्म्यम'' के रूप में विख्यात हुआ है'' - ऐसा मानना विवेकशील व्यक्तियों केलिए समीचीन है।

❀❀❀

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (भविष्योत्तरपुराणांतर्गत - ११-३३६) द्वितीय भाग, पृ.-४०४, ति.ति.दे. प्रकाशन

2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (पद्म पुराण क्षेत्रखंडांतर्गत - ११-३३६) प्रथम भाग, पृ.-२३१, ति.ति.दे. प्रकाशन

भगवान श्रीनिवास की सेवा में अंजना-केसरी

4. श्री वेंकटाचल माहात्म्यम - कुछ और विशेषताएँ

तेलुगु मूल - आचार्य विरिवेंटि मुरलीधर शर्मा अनुवाद - श्रीमती पी.विद्यालतादेवी

(यह निबंध ति.ति.दे. द्वारा सन् २००७ में प्रकाशित ''श्री वेंकटेश्वर वैभवम - राष्ट्रीय संगोष्ठी'' (शोध पत्र संकलन) ग्रन्थ में, श्री कोराडा रामकृष्णा जी की ''शासनाललो वेंकटेश्वरुडु''; डॉ.के.वी. राघवाचार्य जी ''श्री वेंकटाचल माहात्म्यम ग्रंथ - परिशीलना'' के निबंधों से और ति.ति.दे. द्वारा २०१९ ई. में प्रकाशित डॉ.के.वी. राघवाचार्य जी के ''प्राचीनांध्रा साहित्यम लो वेंकटेश्वरुडु'' ग्रंथ के विषयों का संक्षिप्त रूप है।)

भगवद् रामानुजाचार्य के समय तिरुमला के श्री वेंकटाद्रिनाथ पर एक विवाद उत्पन्न हुआ कि श्री वेंकटाद्रिनाथ स्कंद है या शिव या शक्ति? यादवराज की सभा में भगवद् रामानुज ने विविध पुराणों में उल्लेखित प्रमाणों के आधार पर यह सिद्ध किया था कि ''**भगवान बालाजी विष्णु का स्वरूप ही है।**'' इस विषय को भगवद् रामानुज के शिष्य श्री अनंताचार्य ने श्री वेंकटाचलइतिहासमाला में ग्रंथस्थ किया। उस समय के पुराणों में ''**श्री वेंकटाचल माहात्म्यम**'' लोकप्रिय था। परवरर्ती काल में वेंकटाचल माहात्म्य विस्मृत हो गया।

सन् १४९१ में पसिंडि वेंकटत्तुरैवर (जीयर रामानुजय्यन) नामक श्री वेंकटाद्रिनाथ के अर्चक (पुजारी) ने बारह पुराणों में दी गई श्री वेंकटाचल क्षेत्र, तीर्थ, दैवत माहात्म्यादि के वर्णन करनेवाले भागों को संकलित करके **'तिरुवेंकट माहात्म्यम'** नामक ग्रंथ का संकलन किया था। स्वयं व्यक्त श्री वेंकटनाथ के अर्चावतार का पौराणिक मूल और उसकी प्रशस्ति का निरूपण करना ही पसिंडि वेंकटत्तुरैवर जी का उद्देश्य रहा। उन्होंने ही भगवान वेंकटाद्रिनाथ के समक्ष में देवताओं की प्रीति के लिए ''तिरुवेंकट माहात्म्यम'' पारायण करने का शिलालेख सन् २७-०६-१४९१ में डलवाया था।

पसिंडि तिरुवेंकटत्तुरैवर के तमिल शिलालेख में अंतिम वाक्य इस प्रकार है - ''तिरुवेंगडमुडैयान इंद तिरुवोलरुक्कं कंडरुल किरपोदु इवर विण्णप्पंशेयद तिरुवेंकट माहात्म्यत्तुकु अरुलप्पाडिट्टु केट्टरुलक्कड वराहवुं'' इस तमिल वाक्य का अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार है - **"God Tiruvenkata mudayan will, while presiding at the said Tiruvalokkam, be graciously pleased to hear, after honourable announcement made there for the "TIRUVENKATA MAHATMYAM" compiled and humbly presented by him". (The Donor).**[1] ''तिरुवोलक्कं'' का अर्थ है ''आस्थान (दरबार)'' उन दिनों श्री वेंकटाद्रिनाथ की सभा में तिरुवेंकट माहात्म्यम ग्रंथ पारायण करते थे। पसिंडि वेंकटत्तुरैवर ने इस पारायण सेवा करवाने के लिए भगवान के भंडार को २००० नर्पणों (नर्पण - तत्कालीन सिक्कों को 'नर्पण' कहा करते थे।) (कार्षापणम्) का मूलधन समर्पित किया था। ''इस पर आनेवाले आय से श्री वेंकटाचल माहात्म्यम पारायण सेवा और प्रसाद वितरण करवाया जाए।''

---

1) T.T.D. Inscriptions, Vol.II, No.95 1998, p : 198.

ति.ति.दे. में शिलालेखों के शोधकर्ता - श्री साधु सुब्रह्मण्य शास्त्री जी (१८८९-१९८१), तमिल शिलालेख में ''इवरविण्णप्पं शैद'' (इनके द्वारा की गई विनती) के विशेषण को आधार बनाकर यह सिद्ध किया कि श्री वेंकटाचल माहात्म्यम का संकलन श्री पसिंडी वेंकटतुरैवर ने किया था।

१६वीं शताब्दी में भगवान श्री वेंकटाद्रिनाथ के कई भक्तों ने श्री वेंकटाचल माहात्म्यम पारायण सेवा की व्यवस्था की। इस विषय को क्रमशः सन् (१९-१-१९४५, ५-७-१९४५, १७-७-१५४६, ३-६-१५४७) के शिलालेख[1] में व्यक्त किया गया।

तिरुपति के पेनगोंड़ा शेट्टी के पुत्र कालत्ति शेट्टी ने ''तै'' मास (तमिल पंचांग) के महीनों में तिरुमला के वेंकटाद्रिनाथ के मंदिर में नित्योत्सवों का आयोजन किया। सन् ३१-१२-१५४३ के शिलालेख[2] से ज्ञात होता है कि उत्सवों के अंतर्गत श्रीनिवास पुराण पारायण सेवा का आयोजन किया गया था। इस के द्वारा ज्ञात होता है कि श्री वेंकटाचल माहात्म्यम ग्रंथ ''तिरुवेंकट माहात्म्यम'' ''श्रीनिवास पुराण'' के नाम से भी प्रसिद्ध है। सुप्रभात के कुछ श्लोक इस बात की प्रामाणिकता देते है कि इस वेंकटाचल माहात्म्यम से संबंधित पौराणिक कथाएँ, ''वेंकटेशसुप्रभातम्'' के लेखक प्रतिवादि भयंकर अण्णन् (सन् १३६१-१४५३) के समय से ही देश में प्रचलन में है।

ब्रहमादयस्सुरवरास्समहर्षयस्ते
सन्तस्सनन्दन मुखास्त्वथ योगिवर्याः।
धामान्तिके तव हि मङ्गळवस्तुहस्ताः
श्रीवेङ्कटाचलपते! तव सुप्रभातम्॥

यह श्लोक वेंकटाचल माहात्म्यम पुस्तक के वराह पुराण के पहले भाग के अध्ययन ४७ में भगवान के मंदिर में बह्मादि देवताओं के प्रवेश नामक कथांश को सूचित करता है।

श्रीवैकुण्ठविरक्ताय स्वामिपुष्करिणीतटे।
रमया रममाणाय वेङ्कटेशाय मङ्गळम्॥[3]

श्री वेंकटाचल माहात्म्यम नामक ग्रंथ में यह वर्णन अनेक पर्याय दिया गया है कि भगवान बालाजी वैकुंठ से विरक्त होकर स्वामि पुष्करिणी के तट पर लक्ष्मी सहित टहल रहे है।

मायावी परमानन्दः त्यक्त्वा वैकुण्ठमुत्तम्।
स्वामिपुष्करिणीतीरे रमया सह मोदते।[4]

वैकुण्ठत्परमो ह्येष वेंकटाख्य नगोत्तमः।
अत्रैव निवसाम्येव श्रीभूमिसहितोह्यहम्॥[5]

---

1) ति.ति.देवस्थान शासनसंपुटि - ५-२९, ५-५१, ५-५३, ५-७१, ५-९२

2) ति.ति.दे. शासनसंपुटि ५-१०, पृ-३०

3) श्रीवेंकटेश्वर मंगळाशासनं - १२

4) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (हरिवंशांतर्गत शेषधर्मः - ४८-१५) प्रथमभाग, पृ.-२९८, ति.ति.दे. प्रकाशन

5) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराहपुराण प्रथमभागांतर्गत - ३५-१२) प्रथमभाग, पृ.-९, ति.ति.दे. प्रकाशन

इस श्लोक का अर्थ है - ''श्री वेंकटाचल वैकुंठ से भी श्रेष्ठ है, मैं श्री-भूदेवियों सहित यहीं विद्यमान हूँ।''

सुप्रभात में ६, ९, १४, १५ श्लोकों में श्री वेंकटाचल माहात्म्यम से संबंधित कथाएँ वर्णित है। श्री वेंकटेश्वर स्तोत्र के अंतिम श्लोक -

विना वेंकटेशं न नाथो न नाथः सदा वेंकटेशं स्मरामि स्मरामि।
हरे! वेंकटेश! प्रसीद प्रसीद, प्रियं वेंकटेश! प्रयच्छ प्रयच्छ।।

अहं दूरतस्ते पदांभोजयुग्मप्रणामेच्छया-गत्य सेवां करोमि,
सकृत्सेवया नित्य सेवाफलं त्वं, प्रयच्छ, प्रयच्छ प्रभो! वेंकटेश!.।।

अज्ञानिना मया दोषान् अशेषान् विहितान् हरे!,
क्षमस्व त्वं क्षमस्व त्वं शेषशैलशिखामणे![1]

श्री वेंकटाचल माहात्म्यम ग्रंथ के मार्कंडेय पुराण भाग में मार्कंडेय महर्षि श्रीनिवास की स्तुति करने के संदर्भ में हमें द्रष्टव्य हैं।[2] इस से स्पष्ठ है कि वेंकटाचल क्षेत्र की महिमाओं को प्रकट करने वाली कथाएँ। १४वीं शताब्दी और सुप्रभात की रचना के पूर्व ही प्रचलन में थीं।

श्रीनिवासमंगापुरम् में श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर का पुनर्निर्माण ताल्लपाका चिनतिरुमलाचार्य (अन्नमाचार्य का पोता, पेदतिरुमलाचार्य का पुत्र) द्वारा किया गया था। उसने सन् २२-३-१५४० में एक तेलुगु शिलालेख भी डलवाया जिसमें स्कन्दपुराणोक्त श्री वेंकटेश्वर माहात्म्यम का उल्लेख भी है।[3]

उस ''**शिलालेख**'' का पाठ इस प्रकार है - (तेलुगु-शिलालेख का हिंदी अनुवाद इस प्रकार है)

१) स्वस्तिश्री जयाभ्युदय शालिवासन शक वर्ष १४९३- आज के शार्वरि चैत्र शुद्ध

२) १५ चित्रा नक्षत्र में श्रीमद्वेदमार्ग प्रतिष्ठपनाचार्य श्री रामानुज सिद्धांत के स्थापनाचार्य

३) वेदांताचार्य कवितार्किक केसरी शरणागत वज्र पंजर श्री ताल्लापाका पेद तिरुमला अय्यंगार के

४) पुत्र श्री चिन्न तिरुमला अय्यंगारु स्कंद पुराण में उल्लिखित श्री वेंकटेश माहात्म्य

५) में विकल्य नदी के तट पर श्री रंग माहात्म्य के दशम अध्याय में देवळ तीर्थ में

६) अपने (सेवा रूप में) सर्वस्व अग्रहार (ब्राह्मण बस्ती) अलमेलु मंगापुर में जीर्णोद्धार के रूप में

७) श्रीवेंकटेश्वर को, नाच्चियार (भगवती) को अनंत गरुड, विष्वक्सेन इत्यादि

८) भगवान को, अकृसार संतों को रामानुज को, पूर्वाचार्यों को अन्नमाचार्य को जो अपने आचार्य हैं

९) इनको स्थापित करके उन आबुवार सतों के निकट दिन ढलने के कारण प्रतिदिन पाठ किए जानेवाले (दिव्य प्रबंध)

१०) इत्यादि का पाठ करके आचार्य, जीयर..... श्रीवैष्णवों को

---

1) श्रीवेंकटेश स्तोत्रं - ९,१०,११

2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (मार्कंडेयपुराणांतर्गत- २-२०,२१,२२) प्रथम भाग, पृ.-३७८, ति.ति.दे. प्रकाशन

3) ति.ति.देवस्थान शासन संपुट - ४-१४४, १९९८

११) संध्या समय होते ही भोग..... फल चंदन इत्यादि समर्पितकर

१२) यह अपने पुत्र-पौत्र परंपरा द्वारा जबतक चाँद-तारे रहेंगे तब तक श्री..... श्री यतिराज जिय्यंगार द्वारा लिखवाया गया शिला लेख है। (ii) २६५, २६६.

वराह पुरण के वेंकटाचलमाहात्म्य को तेलुगु में निम्नलिखत अनुवाद आये :-

१) श्रेष्ठलूरि वेंकटाचार्युडु - श्रीनिवास विलास सेवधि (द्विपदा)

२) तरिगोण्डा वेंगमांबा - वेंकटाचल माहात्म्य

३) मुलुपाक बुच्चैया शास्त्री - वेंकटाचल माहात्म्य

४) दामेरा चिन वेकटरायुडु - वेंकटाचल माहात्म्य

५) शिष्टु कृष्णमूर्तिशास्त्री - वेंकटाचल माहात्म्य

६) कल्लूरि वेंकट सुब्रह्मण्य दीक्षितुलु (वचनम्)

७) परवस्तु वेंकट रामानुजस्वामी (वचनम्)

८) तू. वें. चूडामणी (वचनम्)

पसिंडि वेंकटत्तुरैवर के वेंकटाचल माहात्म्यम के भागों के संकलित अध्याय वर्तमान में उपलब्ध मूल पुराण ग्रंथों में नहीं है। हालांकि प्रस्तुत उपलब्ध स्कंद पुराण के द्वितीय वैष्णव खंड में वेंकटाचल माहात्म्यम ४० अध्यायों में २४७६ श्लोकों में वर्णित है। पसिंडि वेंकटत्तुरैवर से संकलित पुराण भागों के अलावा प्रस्तुत काल के ग्रंथ महाभागवत दशम स्कंद के ८९ अध्याय में कलियुग में श्रीनिवास के अवतार के लिए कारण भूत बने भृगु महर्षि द्वारा त्रिमूर्तियों का परीक्षा-वृत्तांत भी है। ७९ अध्याय के १३ श्लोक में महाभारत के बलाराम तीर्थयात्रा के दौरान वेंकटाद्रि और वेंकटाद्रिनाथ के दर्शन करने का विषय भी ग्रंथस्थ किया गया है। भृगु महर्षि की कथा पद्मपुराण के ६०वीं अध्याय में उल्लिखित है।

सन् १४९१ से तिरुमला के बालाजी मंदिर में एक पारायण पाठ ग्रंथ के रूप में गौरवान्वित ''**श्री वेंकटाचल माहात्म्यम**'' ताडपत्र ग्रंथ के रूप में सन् १८८४ तक पूरे देश में प्रचलित था। १६वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इस संस्कृत ग्रंथ का तेलुगु अनुवाद ग्रंथ प्रकाशित किया गया।

संस्कृत वेंकटाचल माहात्म्यम (संकलन) ग्रंथ तेलुगु लिपि में पहली बार ति.ति.दे के पदाधिकारी श्री महंत भगवान दास द्वारा (सन् १८८०-१८९० में) ''श्रीतारण'' नामक वर्ष श्रावण माह के द्वितीय को (सन् २४-७-१८८४) को प्रकाशित किया गया था। इस ग्रंथ की प्रति इस समय उपलब्ध नहीं है।

इस प्रकार वेंकटाचल माहात्म्य संबंधी अनेक गाथाएँ हैं। जो विविध पुराणों में विद्यमान हैं। इस तथ्य के प्रमाण के रूप में साहित्यिक व शिलालेख संबंधी आधार हैं।

❀❀❀

आकाशगंगा के सामने बैठकर माता अंजना द्वारा तपस्या

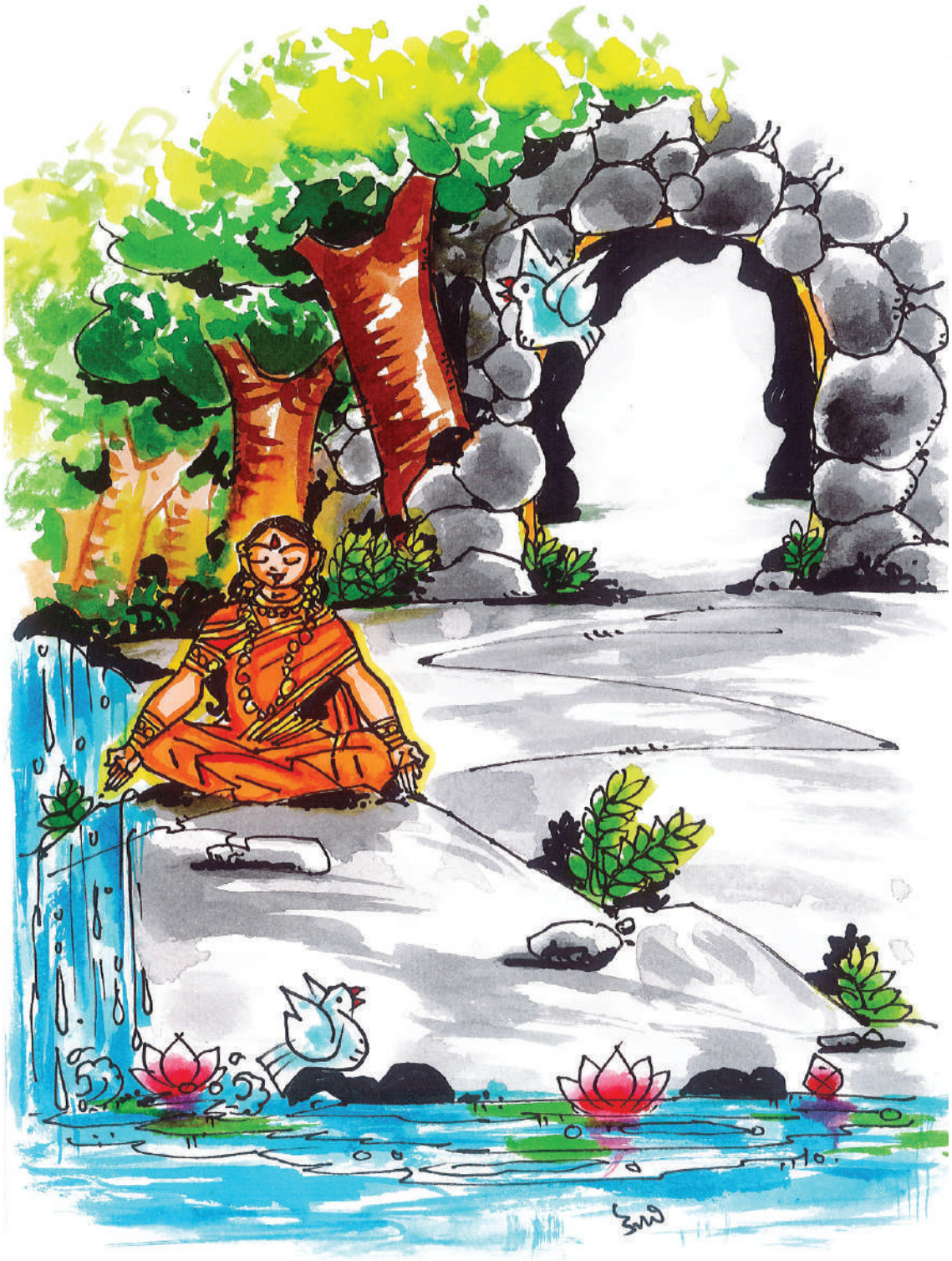

5. श्री वेंकटाचलेतिहासमाला - श्री वेंकटेश्वरतत्व

तेलुगु मूल - श्री ई.ए.सिंगराचार्युलु अनुवाद - श्रीमती आर.वाणीश्री

किसी विषय का प्रामाणिक रूप में निर्धारण करने हेतु तीन प्रकार के आधार होते हैं। वे इस प्रकार हैं - साहित्यिक प्रमाण, ऐतिहासिक अवशेष एवं शिलालेख। तिरुमला में स्थित श्री वेंकटेश्वरतत्व को सिद्ध करने वाले प्रमाणों में से एक है, साहित्यिक प्रमाण ग्रंथ - ''श्री वेंकटाचलेतिहासमाला''। यह ग्रन्थ श्री अनंताचार्य से विरचित है। आप श्री रामानुजाचार्य के प्रमुख शिष्यों में से एक थे। 'श्री वेंकटाचलेतिहासमाला' में उपलब्ध सभी प्रमाण लगभग सन् १०५०-११५० वर्ष की कालावधि के संबंधित हैं। इस काल के दौरान, तिरुमला क्षेत्र के संबंध में अनेक विशेषताओं का बोध, यह ग्रंथ कराता है। 'श्री वेंकटाचलेतिहासमाला' में सात खंड हैं। ये खंड 'स्तबक' कहलाते हैं। श्री अनंताचार्य, श्री रामानुजाचार्य की आज्ञा के अनुसार तिरुमलागिरि पर आकर, वहाँ श्री वेंकटेश्वर स्वामी के लिए पुष्पमालिका समर्पण करके धन्य हुए थे। इस सेवा के लिए उन्होंने तिरुमला में, स्वामी मंदिर की दक्षिण माडावीथि में, नैरूतिकोण में एक उद्यान बनाया और इसके निर्वहण और संरक्षण के लिए एक तालाब को भी खुदवाया था। आज भी हम इस उद्यान को देख सकते हैं।

अब तो हमें श्री वेंकटेश्वरेतिहास माला की रचना करने में सहायक बनी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का भी स्मरण करना चाहिए। जब श्री रामानुज श्रीरंग क्षेत्र को आध्यात्मिक केंद्र के रूप में बनाकर, विशिष्टाद्वैत सिद्धांतों का प्रचार कर रहे थे, तब तिरुमला पर यादव राजा का शासन चल रहा था। उस समय, तिरुमला में स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी के मूर्ति-तत्व के विषय में मतभेद उत्पन्न हुआ। कुछ शैवों ने यादव राजा के पास जाकर यह आरोप करते हुए, न्याय माँगा कि तिरुमला में स्थित प्रतिमा, कुमारस्वामी की अथवा शिवजी की ही होने की संभावना है, वैष्णव उसे विष्णु स्वरूप कहकर प्रचार कर रहे हैं। इस विषय के संबंध में, यादव राजा ने यह मानते हुए श्री रामानुज को तिरुपति आने के लिए आह्वान किया कि शैवों के तर्कों का उचित समाधान देने में समर्थ केवल श्री रामानुज ही है। उस समय, श्री रामानुज और शैवों के बीच घटित वाद-विवाद में श्री रामानुज ने प्रमाण सहित, तर्कयुक्त इसे सिद्ध किया कि तिरुमला में स्थित प्रतिमा-तत्व केवल विष्णु स्वरूप का है, किंतु, कुमारस्वामी का या शिव का नहीं। इस वाद-विवाद की प्रमुख विशेषताओं को श्री अनंताचार्य ने अपनी रचना 'वेंकटाचलेतिहासमाला' में पहले तीन स्तबकों में प्रस्तावित किया है। इन उल्लेखों के आधार पर 'श्री वेंकटाचलेतिहासमाला' के अनुसार, ''वेंकटेश्वरतत्व'' को हम जान सकते हैं। उनमें से कुछ इस निबंध में प्रस्तुत किये गये हैं।

१) शैवों का एक तर्क इस प्रकार है कि तारकासुर-वध से जो दोष हुआ था, उसका निवारण हेतु, कुमारस्वामी ने शिवजी के आज्ञानुसार वेंकटाचल पर आकर, वहाँ स्थित पुष्करिणी के दक्षिण तट पर खडे होकर तपस्या की थी। इसलिए ही तिरुमला में स्थित सरोवर, 'स्वामिपुष्करिणी' नाम से पुकारा जा रहा है। इस तर्क को साबित करने के लिए उन्होंने वामन पुरण से ''**ममापि तपसो योग्यं क्षेत्रं बूहि शुभान्वितम्**[1] **जगाम शिखिना तस्मात् कुमारो**

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वामनपुराण क्षेत्रखंडांतर्गत - २१-२) प्रथम भाग, पृ.-४०८, ति.ति.दे. प्रकाशन

वृषभाचलम्''[1] - जैसे उक्तियों को उद्धृत किया था।[2] जैसे 'भीमसेना' शब्द में 'भीम' - शब्द, 'सत्यभामा' शब्द में 'सत्य' - शब्द का व्यवहार में प्रयोग रहे हैं, ऐसे ही 'कुमारस्वामी' शब्द में से 'स्वामी' - शब्द, सरोवर नाम से जुडे होकर 'स्वामिपुष्करिणी' नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिससे यह तर्क प्रमाण पूर्वक सत्य है कि तिरुमला - क्षेत्र शैव क्षेत्र है, परंतु वैष्णव क्षेत्र कदापि नहीं।[3]

श्री रामानुज ने शैवों के उपर्युक्त तर्क का उत्तर देते हुए, तिरुमला में स्थित सरोवर, 'स्वामिपुष्करिणी' कहलाने का कारण बताते हुए 'वामन पुराण' से कुछ प्रमुख प्रमाणों का उद्धृत किया था - जैसे - **अस्ति वेंकटाचलो नाम प्रथितः पर्वतोत्तमः स्वामिपुष्करिणी नाम सरसी सर्वकामदा, त्रैलोक्यवर्तिनां ब्रहमन् तीर्थानां स्वामिनी हि सा, स्वामिपुष्करिणीत्येतत् नामधेयं च तत् कृतम्।''**[4] - इस पुराण उक्ति का तात्पर्य यह है कि सभी पुष्करिणियों में यह पुष्करिणी ''स्वामिनी'' जैसी है। इसलिए ही इस पुण्य ताल का नाम 'स्वामि-पुष्करिणी' पडा है।[5] इस संदर्भ में श्री रामानुज ने वराह पुराण, स्कन्द पुराण - इत्यादि पुराणों से प्रामाणिक उक्तियों का उल्लिखित करते हुए अपने तर्क को प्रमाणित किया था। इसके अनुसार तिरुमला पर के सरोवर के दक्षिण तट पर स्थित मूर्ति को कुमारस्वामी की मूर्ति कहने का कोई प्रमाण नहीं - इस बात को उन्होंने सिद्ध किया था। तिरुमला क्षेत्र को विष्णु क्षेत्र सिद्ध करने के लिए उन्होंने कई प्रमाणों को वराह, ब्रह्मांड, वामनादि अनेक पुराणों से उल्लिखित किया था, साथ-साथ ऋग्वेद में से **''अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छ सदान्वे। शिरिंबिठस्य सत्वभिस्तेभिष्ट्वा चातयामसि''**[6] **-** ''आरायि काणे'' नाम के एक सूक्त का भी उल्लिखित किया था।

उपर्युक्त ऋग्वेद सूक्ति के अनुसार वेदपुरुष, एक सांसारिक और भौतिक संपत्ति से रहित मानव को देखते हुए उपदेश देते हैं - ''भौतिक-इच्छाओं से पीडित तुम, भगवद् भक्तों के साथ श्रीनिवास निवास स्थान तिरुमला को जाकर, वहाँ स्वयं को भगवदार्पित करके प्रार्थना करो। तुम्हारे अभीष्ट पूरे होते हैं।'' इस सूक्ति में ध्यान देने योग्य पद है - **''शिरिम्बिठस्य''**। यह पद ''श्री पीठस्य'' पद का छांदस (वेद संबंधी पद है।) ''श्रीनिवास का'' - यही, इस पद का अर्थ है। इसके अनुसार भी यह ज्ञात होता है कि वेंकटाचल क्षेत्र विष्णु क्षेत्र ही है, शिव क्षेत्र नहीं - श्री रामानुज ने इस पद का सिद्ध किया था। यह सूक्ति वेंकटाचल क्षेत्र का संबंधित ही है - इस विषय को भविष्योत्तर पुराण का यह श्लोक सिद्ध करता है - **''अरायि काणे विकटे गिरिं गच्छेति तं विदुः, एवं वेदमयः साक्षात् गिरींद्रः पन्नगाचलः''**।[7, 8]

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वामनपुराण क्षेत्रखंडांतर्गत -२१-१०१) प्रथम भाग, पृ.-४१८, ति.ति.दे. प्रकाशन

2) श्री वेंकटाचलेतिहासमाला, पृ.-५.

3) श्री वेंकटाचलेतिहासमाला, पृ.-४,५.

4) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वामनपुराण क्षेत्रखंडांतर्गत-४४-११,१२,१७) प्रथम भाग, पृ.५५६,५५७ ति.ति.दे. प्रकाशन

5) श्रीवेंकटाचलेतिहासमाला, पृ.-२१.

6) ऋग्वेद - १०-१५५-१.

7) श्रीवेंकटाचलमाहात्म्य (भविष्योत्तरपुराण तीर्थखंडांतर्गत-४-२१,२२) द्वितीयभाग, पृ.-२९४, ति.ति.दे. प्रकाशन

8) श्रीवेंकटाचलेतिहासमाला, पृ.-१८.

२) ''तिरुमला में स्थित मूर्ति जटाजूट सहित है। इस प्रकार जटों से रहना - साधक का चिह्न है। इसलिए यह मूर्ति, तपस्या करने की मुद्रा में रहे कुमारस्वामी का रूप है, लेकिन विष्णु रूप नहीं'' - यह शैवों का एक अन्य तर्क है।[1]

इसका समाधान स्वरूप, श्री रामानुजाचार्य ने पांचरात्र में से सात्वतसंहिता, भागवत इत्यादि ग्रन्थों से प्रमाणों का उल्लिखित करते हुए यह सिद्ध किया था कि विष्णुस्वरूप भी जटों सहित रहता है। 'पद्मावती परिणय' गाथा में शिकार करनेवाले श्रीनिवास स्वामी के रूप वर्णन के संदर्भ में निम्न लिखित प्रमाण से श्री रामानुज ने सूचित किया कि स्वामी जटाधर है - ''**सितोष्णीषललाटं च नातिदीर्घजटाधरम्**''।[2,3]

३) ''वेंकटाचल में स्थित मूर्ति में नागाभरण हैं, इसलिए यह विष्णु-स्वरूप नहीं है।'' - यह भी शैवों का एक तर्क है।[4]

इस तर्क का भी तिरस्कार करते हुए श्री रामानुज ने पद्म पुराण, भविष्योत्तर पुराण इत्यादि पुराणों से प्रमाणों को दर्शाते हुए सिद्ध किया कि श्री वेंकटेश्वर के स्वरूप में नागाभरण का होना प्राकृतिक है। पद्मपुराण में पद्मसरोवर के किनारे श्रीनिवास भगवान के आविर्भाव का वर्णन करने के संदर्भ में उल्लेखित यह प्रामाणिक वाक्य - ''**शंखचक्र गदांभोजराजतकरचतुष्टयः, नागै(नवै)रभिनवाकल्पैः तपनीयमयां शुकैः**''[5] तथा भविष्योत्तर में श्रीनिवास-पद्मावती विवाह संदर्भ में आकाशराज श्रीनिवास को नागाभरणों को उपहार स्वरूप देने का प्रमाण इस वचन से मिलता है - ''**नागाभरणयुग्मं च बाहुपूरादिकांस्तथा**।''[6] - इन दोनों प्रमाणों का उल्लेख करते हुए श्री रामानुज ने शैवों के नागाभरण संबंधित तर्क का उचित समाधान दिया।[7]

४) ''तिरुमला में स्थित रूप में शंख-चक्रों का न होना भी यह मूर्ति विष्णुस्वरूप न होने का एक प्रमाण है''- यह भी शैवों का एक अन्य तर्क है।[8]

श्री रामानुज ने ब्रह्माण्ड-पुराण में से तोंडमान चक्रवर्ती के वृत्तांत को उल्लिखित करके शैवों के उपर्युक्त तर्क का साफ-साफ मना किया था। तोंडमान चक्रवर्ती श्री वेंकटेश्वर स्वामी के भक्त थे। एक बार उन्हें अपने शत्रुओं से युद्ध करना पडा। शत्रु बलवान थे, इसलिए उन्हें जीतने केलिए तोंडमान चक्रवर्ति ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी से प्रार्थना करके स्वामी से शंख-चक्रों को वरदान-स्वरूप पाया था। युद्ध में जीतने के उपरांत भी उन्होंने स्वामी से प्रार्थना की

---

1) श्रीवेंकटाचलेतिहासमाला, पृ.-९.

2) श्रीसात्त्वतसंहित - १२-१६१.

3) श्री वेंकटाचलेतिहासमाला, पृ.-५६.

4) श्री वेंकटाचलेतिहासमाला, पृ.-९.

5) श्रीवेंकटाचलमाहात्म्य (पद्मपुराण क्षेत्रखंडांतर्गत-२६-४४,४५) प्रथमय भाग, पृ.-२२३, ति.ति.दे. प्रकाशन

6) श्रीवेंकटाचलमाहात्म्य (भविष्योत्तरपुराण तीर्थखंडांतर्गत-११-३४६) द्वितीय भाग, पृ.-४०४, ति.ति.दे. प्रकाशन

7) श्रीवेंकटाचलेतिहासमाला, पृ.६४, ६५.

8) श्रीवेंकटाचलेतिहासमाला, पृ.-९.

कि स्वामी के संकेत में वे कभी भी शंख-चक्रों को न पहनें। तोंडमान की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए स्वामी ने अपने हाथों में शंख-चक्र-धारण नहीं किया था। इसलिए ही आज तिरुमला के स्वामी के रूप में शंख-चक्र नहीं होते हैं। इस प्रमाण को सूचित करते हुए श्री रामानुज ने निम्नलिखित ब्रह्म पुराण वचनों का उल्लिखित किया था -

''दर्शयन् भक्तवात्सल्यं यो ददौ हस्तगे शुभे।
शंखचक्रे नृपेंद्राय चक्रवर्तीति यं विदुः।
अत एवारिशंखाभ्यां दृश्येते रहितौ करौ।।''[1, 2]

इसके अलावा, श्री रामानुज ने श्री शठकोपसूरि से रचित ''सहस्रगाथा'' में से एक पाशुर को प्रमाण के रूप में उद्धृत करते हुए साबित किया कि तिरुमला में स्थित मूर्ति को सहज-सिद्ध शंख-चक्र हैं। श्री शठकोपसूरि, अपने प्रबंध में [तिरुवायमोलि] तिरुमला के भगवान का रूप वर्णन करते हुए (६-१०-१२) ऐसे संबोधन किया कि - ''**कूराय नीराय निलनाकि कोडु वल्लशुरर कुलमेल्लाम शीरा वेरियुम् तिरुनेमि वलवा**''।[3] [क्रूर-असुर-समूह को खंडन करके, भस्म करनेवाले सुदर्शन चक्र को अपने दाहिने हाथ में धारण करनेवाले स्वामी!] श्री रामानुज ने प्रकट किया कि उपर्युक्त वचन से भी पता चलता है कि तिरुमलास्वामी के सहज रूप शंख-चक्र हैं। इसी संदर्भ में एक अन्य पाशुर में तिरुमलास्वामी के पधारे हुए दृश्य का कीर्तन करते हुए श्री शठकोपसूरि ने एक ध्यान देने योग्य बात बताई कि ''**अडिक्कील अमर्न्दु पुगुन्दु अडियीर वाळ मिन**''[4] [हे भक्तजन! मेरे चरणों में शरणागत होकर पुनीत हो जाइए] श्रीनिवास की अपने हाथ से अपने चरणों को दिखाने की यह भंगिमा और उक्ति जो है - ''मत्पादं शरणं व्रज।'' यह सूचित करता है कि तिरुमलास्वामी का रूप केवल विष्णु रूप ही है।[5]

इस प्रकार सप्तगिरियों पर स्थित देवाधिदेव श्री श्रीनिवास साक्षात् श्री महाविष्णु स्वरूप है - इसे सिद्ध करने के लिए भगवद्रामानुज ने पद्मादि पुराणों से अधिकाधिक प्रमाणों का उल्लिखित किया था। निश्चित पुराणों से श्री रामानुज द्वारा प्रमाण-स्वरूप संग्रहित कतिपय श्लोक और खंड, आजकल के लभ्य पुराण-प्रतियों में उपलब्ध नहीं हैं। आज की उपलब्ध पुराण प्रतियों में यदि निश्चित प्रामाणिक श्लोक तथा खंड न हो, तो भगवद्रामानुज ने उस समय के यादव राजा की सभा में कैसे सिद्ध कर पाया? कारण यह है कि उस समय सभी प्रामाणिक विषय वस्तुएँ उपलब्ध थीं।

यही समुचित तर्क, ब्रह्मांडादि पुराणों में लभ्य आंजनेय स्वामी (हनुमान) के जन्म स्थान के संबंधित प्रमाणों के मामले में भी लागू है।

❀❀❀

1) श्रीवेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मपुराणांतर्गत-७-७,८) द्वितीय भाग, पृ.-२४, ति.ति.दे. प्रकाशन

2) श्री वेंकटाचलेतिहासमाला, पृ.-४९.

3) तिरुवायिमोळि - ६-१०-२.

4) तिरुवायिमोळि - ६-१०-११.

5) श्रीवेंकटाचलेतिहासमाला, पृ.-४७.

विधाता ब्रह्म का अंजनादेवी को दर्शन देना

6. पौराणिक प्रामाण

तेलुगु मूल - आचार्य विरिवेंटि मुरलीधर शर्मा
आचार्य राणीसदाशिवमूर्ति

अनुवाद - श्रीमती आर.वाणीश्री

भारतीय साहित्य में आंजनेय के जन्मस्थल के निर्धारण के लिए उपलब्ध सभी प्रमाणों में से साहित्यिक साक्ष्य सबसे महत्वपूर्ण है। ये कई प्रकार के हैं- जैसे कि इतिहास-पुराण, उत्तरकाल के भक्ति-साहित्य और शिलालेखों में लिखित विषय इत्यादि। इसके दौरान, इतिहास पुराणों में से आंजनेय जन्मस्थल के निर्णय के संबंधित संदर्भों का उल्लेख करते हुए सिद्ध करने का यह एक प्रयास है।

श्री वेंकटेश्वर स्वामी पुराण-पुरुष है, पुराण-प्रिय है और पुराण कीर्तित है। अतएव श्रीनिवास का वर्णन करने के लिए वेद पुराणों से अधिक प्राचीन ग्रंथ कोई नहीं है। इन पुराणों में हनुमान का जन्म और हनुमान की जन्मस्थली तथा वेंकटाद्रि के मध्य रहे संबंध के बारे में अनेक विशेषताएँ लभ्य हैं। इन विशेषताओं को दो प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है- १. कथा की दृष्टि से और २. भौगोलिक दृष्टि से।

'वेंकटाचलमाहात्म्यम' में श्री हनुमान के जन्मवृत्तांत का अत्यधिक वर्णन है। यह ग्रंथ 'वेंकटाचलमाहात्म्यम' विभिन्न पुराणों से श्री वेंकटेश्वर स्वामी के माहात्म्यम का ज्ञात कराने वाले विषयों का संकलन-ग्रंथ है। स्कांद, वराह, ब्रह्मांडादि पुराणों से विभिन्न विषयों के संचित-संकलित यह ग्रंथ, श्री आंजनेयस्वामी के जन्म वृत्तांत का पता कराता है। मतंग महर्षि की आज्ञा के अनुसार, अंजनादेवी का वेंकटाचल पर आना, वहाँ तपस्या करना, आंजनेय को जन्मदेना, तदनुसार इस पहाड का नाम 'अंजनाद्रि' पडना, सूर्यदेव को फल समझकर पकडने के लिए, बालांजनेय स्वामी का वेंकटाद्रि से सूर्यदेव के प्रति जोर लगाकर उडना, श्रीराम के दर्शनानंतर सीतान्वेषण करते-करते उनका पुनः वेंकटगिरि पर आना, वहाँ अंजनादेवी से पुनर्मिलन, वानरों का वैकुंठ गुफा में प्रवेश - इत्यादि अनेक विषय वेंकटाचल-माहात्म्यम-ग्रंथ से ज्ञात होते हैं। इन पुराणों में प्रतिपादित विवरणों की तुलना और जाँच, श्री मद्वाल्मीकि-रामायण में दत्त विवरणों से करके, हम इस तथ्य को जान सकते हैं कि श्री आंजनेय स्वामी की जन्मस्थली क्या हो सकती है। 'पारमार्थिकोपनिषध्भाष्यम्' में उद्धृत 'पद्मपुराण' के अंश भी इस बात की ओर संकेत करते हैं। यदि हम इन सभी पुराण-वर्णित विषयों को एक क्रम में व्यवस्थित करके देखें, तो हमें ठीक-ठाक पता चलता है कि आंजनेय स्वामी का जन्म कहाँ हुआ था।

उपरोक्त सभी १२ पुराणों में श्रीनिवास का निवासस्थान वेंकटाचल का उल्लेख है।

श्री वेंकटाचल के विविध नाम

वेंकटाद्रि को विभिन्न कारणों से अनेक नाम मिले। कल्प-भेदों के कारण से ही ये नाम-भेद हुए हैं। वराहपुराण, विविध कारणों से इस पर्वत को प्राप्त १२ नामों का उल्लेख करता है।

चिंतितस्य च सिद्ध्या तु चिंतामणिमिमं विदुः।
केचिद् ज्ञानप्रदत्वाच्च ज्ञानाद्रिरिति तं विदुः।
सर्वतीर्थमयत्वाच्च तीर्थाद्रिं प्राहुरूत्तमाः।।[1]

चिंता मात्र से फल की सिद्ध होने के कारण इस पर्वत को चिंतामणि कहते हैं। कुछ और लोग इस पर्वत को ज्ञानदायक होने के कारण 'ज्ञानाद्रि' कह रहे हैं। इस पहाड पर सर्वतीर्थों के होने के कारण उत्तमों से 'तीर्थादि' नाम से भी पुकारा जा रहा है।

पुष्कराणां च बाहुळ्यात् गिरावस्मिन् सरस्सु वै
पुष्कराद्रिं प्रशंसंति मुनयस्तत्त्वदर्शिनः[2]

पर्वतीय झीलों में कमल के फूलों की प्रचुरता के कारण, तात्विक और दार्शनिक मुनिपुंगव, इस पर्वत को 'पुष्कराद्रि' कहते हैं।

गिरावस्मिंस्तपस्तेपे धर्मोऽपि स्वाभिवृद्धये।
तस्मादाहुर्वृषाद्रिं तं मुनयो वेदपारगाः।।[3]

वेदों के संपूर्ण-ज्ञाता मुनीश्वर-गण ने एक संदर्भ में, धर्म की इस पर्वत पर तपस्या करने के कारण, इस पर्वत को 'वृषाद्रि' कहा था।

शातकुंभस्वरूपत्वात् कनकाद्रिं च तं विदुः।
द्विजो नारायणः कश्चित्तपः कृत्वा महत्पुरा।।[4]

सोने के समान भासने के कारण इस पर्वत को 'कनकाद्रि' कहा गया है।

ऐच्वदस्य स्वनाम्ना च व्यपदेशं मुरारितः।
तस्मान्नारायणाद्रिं तं विदुरुत्वमपूरूषाः।।[5]

पूर्व में, नारायण नामक एक ब्राह्मण ने घोर तपस्या करके, अपने नाम से इस पर्वत के बुलाये जाने का वरदान माँगा, तो मुरारि ने वाँछित वरदान का प्रदान करके उसे अनुगृहीत किया। अतः, यह पर्वत 'नारायणाद्रि' नाम से पुकारा जाता है।

वैकुंठादागतत्वेन वैकुंठाद्रिरिति स्मृतः।
हिरण्याख्यविनाशाय प्रह्लादानुग्रहाय च।।[6]

वैकुंठ से लाये जाने के कारण 'वैकुंठाद्रि' नाम से पुकारा जाता है। हिरण्यकश्यप का संहार करके भक्त प्रह्लाद को अनुगृहीत करने के लिए और

नारसिंहाकृतिर्जज्ञे यस्मादस्मात्स्वयं हरिः।
सिंहाचल इति प्राहुस्तस्मादेनं मुनीश्वराः।।[7]

1-7) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराहपुराण प्रथम भागांतर्गत ३६-२०-३०) प्रथम भाग, पृ.-१३,१४, ति.ति.दे. प्रकाशन

श्रीमन्नारायण स्वयं ही यहाँ नरसिंह के रूप में व्यक्त होने के कारण इस पर्वत को 'सिंहाचल' नाम से मुनिजन प्रशंसा करते हैं।

अंजना च तपः कृत्वा हनूमंतमजीजनत्
तदा देवास्समागत्य देवसाहाय्यकारकम्।[1]

इस पर्वत पर, अंजनादेवी ने तप करके, हनुमान को जन्म देने के कारण 'अंजनाद्रि' नाम पडा है। वराह स्वामी के क्षेत्र के रूप में पहचाने जाने के कारण 'वराहाद्रि' नाम भी पडा।

यस्मात्पुत्रमसूतासौ जगुस्तस्मादिमं गिरिम,
अंजनाद्रिं वराहाद्रिं वराहक्षेत्रलक्ष्मतः।[2]

वहाँ 'नील' नामक वानरेंद्र के नित्यवास करने के कारण, इस पर्वत को, ऋषि-गण 'नीलाद्रि' नाम से पुकारता है।

नीलस्य वानरेंद्रस्य यस्मान्नित्यमवस्थितिः।
तस्मान्नीलगिरिं नाम्ना वदंत्येनं महर्षयः।।[3]
वेंकाराऽमृतबीजस्तु कटमैश्वर्यमुच्यते।
अमृतैश्वर्यसंघत्वात् वेंकटाद्रिरिति स्मृतः।।[4]

'वें' शब्द का अर्थ अमृत-बीज और 'कट'-शब्द का अर्थ है - 'ऐश्वर्य'। अतएव, इसका नाम 'वेंकटाद्रि' पडा, जिसका अर्थ है- अक्षय-ऐश्वर्य।

यतः कदाचिद्देवानां श्रीनिवास इहाबभौ।
श्रीनिवासगिरिं प्राहुस्तस्मादेनं दिवौकसः।।[5]

श्री श्रीनिवास का यहाँ प्रकट होने के कारण, देव गण इस पर्वत को 'श्रीनिवासगिरि' नाम से बुला रहा है।

आनंदाद्रिमिमं प्राहुः वैकुंठपुरवासिनः।
प्राहुर्भगवतः क्रीडा प्राचुर्यात्तु तथा सुराः।।[6]

यह पर्वत, भगवान की सभी क्रीडाओं का आवास-स्थान होने के कारण, वैकुंठ-वासी इसे 'आनंदाद्रि' नाम से पुकारते हैं।

श्रीप्रदत्वाच्छ्रियो वासात् शब्दशक्त्या च योगतः।
रूढ्या श्रीशैल इत्येवं नाम चास्य गिरेरभूत्।।[7]

ऐश्वर्य दायक होने के कारण, लक्ष्मी का निवास स्थान होने के कारण, शब्द-शक्ति के कारण, अर्थ शक्ति के कारण और रूढ़-शक्ति के कारण इस पर्वत को ''श्रीशैल''- नाम हुआ था।

1-3) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत ३६-२०-३०) प्रथम भाग, पृ.-१३,१४, ति.ति.दे. प्रकाशन

4-7) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत ३६-२०-३०) प्रथम भाग, पृ.-१४,१५, ति.ति.दे. प्रकाशन

बहूनि चान्यनामानि कल्पभेदाद्भवंति हि।
यावदुक्ता भगवतः कल्याणगुणराशयः।।[1]

इस प्रकार कल्प-भेद के कारण इस पर्वत के अनेक नाम पडे हैं। जिस प्रकार, भगवान के कल्याण-गुण अनगिनत होते हैं...

तावन्तोऽस्य गिरेस्संति गुणाः परमपावनाः।
अस्य वेंकटशैलस्य माहात्म्यं यावदस्ति हि।।[2]

उसी प्रकार इस पर्वत के अनेकानेक परम-पवित्र-गुण हैं। यह वेंकटाचल जितना माहात्म्य-संपन्न है.....

तावद्वक्तुं च कात्स्र्येन न समर्थश्चतुर्मुखः।
षण्मुखश्च सहस्रास्यः फणी देवाः परे किमु।।[3]

उस वेंकटाद्रि के माहात्म्य का वर्णन करने में चतुर्मुख ब्रह्मा ही अक्षम रहे, तो षण्मुखों वाले कुमारस्वामी, सहस्रमुखों वाले अनंत और देवगण की अशक्यता के बारे में कहने की क्या जरूरत है?

श्रुत्वा सूतमुखाच्चैवं मुनयो हृष्टमानसाः।
न तृप्तिमाययुस्ते हि भूयश्श्रवणकौतुकात्।।[4]

ऐसा, सूत के कहने पर, प्रसन्न-चित्त हुए मुनि-गण ने और कुछ सुनने की जिज्ञासा और संतुष्टता की प्राप्ति की।

अलंकार मणिहार ग्रंथ में वर्णित २० नाम, इस प्रकार हैं...

श्रीवेंकटगिरिर्नाम क्षेत्रं पुण्यं महीतले।

इत्युपक्रम्य -

अंजनाद्रिर्वृषाद्रिश्च वेदाद्रिर्गरूडाचलः।
तीर्थाद्रिः श्रीनिवासाद्रिश्चिंतामणिगिरिस्तथा।[5]

इसी कारण वेंकटाद्रि को ही अंजनाद्रि, वृषाद्रि, वेदाद्रि, गरुडाचल, तीर्थादि, श्रीनिवासाद्रि, चिंतामणिगिरि आदि नामों से भी जाना जाता है।

वृषभाद्रिर्वराहाद्रिर्ज्ञानाद्रिः कनकाचलः।
आनंदाद्रिश्च नीलाद्रिः क्रीडाद्रिः पुष्कराचलः।।[6]

ऐसे ही, वृषभाद्रि, ज्ञानाद्रि, वराहाद्रि, कनकाचल, आनंदाद्रि, क्रीडाद्रि, पुष्कराचल....

1-4) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराहपुराण प्रथम भागांतर्गत ३६-२०-३०) प्रथम भाग, पृ.-१४,१५, ति.ति.दे. प्रकाशन

5-6) अलंकारमणिहारः, प्रथम भाग, पृ.- २५

सिंहाचलश्च श्रीशैलस्तथा नारायणाचलः।
वैकुंठाद्रिश्शेषशैल इति नामानि विंशतिः।।[1]

सिंहाचल, श्रीशैल, नारायणाचल, वैकुंठाद्रि, शेषशैल इत्यिादि २० (विंशति) नामों से यह पर्वत प्रसिद्ध है।

कृते वृषाद्रिं वक्ष्यंति त्रेतायां अंजनाचलम्।
द्रवापरे शेषशैलेति कलौ श्रीवेंकटाचलम्।। [2]

श्री व्यास भगवान ने कृतयुग में 'वृषाद्रि' के रूप में 'त्रेतायुग' में 'अंजनाचल' के रूप में, द्वापरयुग में 'शेषशैल' के रूप में कलियुग में 'वेंकटाचल' के रूप में इस पर्वत की प्रशंसा की।

अंजना.....

अंजना च तपः कृत्वा हनूमंतमजीजनत्।
तदा देवास्समागत्य देवसाहाय्यकारकम्।
यस्मात् पुत्रमसूताऽसौ जगुः तस्मात् इमं गिरिम् अंजनाद्रिम्।। [3]

उपर्युक्त श्लोक के भाव के अनुसार, इस पहाड पर अंजनी को पुत्र प्राप्त हुआ, इसलिए यह 'अंजनाद्रि' हुआ।

अथ पुत्रार्थमंजनाकृततपः प्रकारः - श्रीसूत उवाच -

अंजनादेवी द्वारा पुत्र-प्राप्ति के लिए की गई तपोरीति का वर्णन इस प्रकार किया गया है। श्री सूतमुनि ने ऐसे कहा....

पुत्रहीनाऽजना पूर्वं दुःखिता तपसि स्थिता।
तां दृष्टवा मुनिशार्दूलो मतंगो विष्णुतत्परः।
अंजनाख्यामुवाचेदमत्युग्रे तपसि स्थिताम्। [4]

पुत्र हीन अंजनादेवी दुःखी होकर तपस्या में डूबी हुई थी। जब वह घोर तपस्या में थी, तब विष्णुभक्त मतंग महर्षि ने उसको देखकर इस प्रकार कहा-

समुत्तिष्ठंजने! देवि किमर्थं तपसि स्थिता।
वद देवि! महाभागे! कार्यं तव वरानने।।[5]

हे अंजनादेवी! उठो! उठ जाओ! बताओ कि कौन-सी अभीष्ट-सिद्धि के लिए तुम इस प्रकार तप कर रही हो? अंजनादेवी ने इस प्रकार कहा...

---

1) अलंकारमणिहारः प्रथमभागः पृ. सं.२५. (अंजनाद्रिर्वृषाद्रिश्च शेषाद्रिर्गरुडाचलः, तीर्थाद्रि, श्रीनिवासाद्रिश्चिन्तामणिगिरिस्तथा.२१
वृषभाद्रिर्वराहाद्रिर्ज्ञानाद्रिः, कनकाचलः, अंजनाद्रिर्वृषाद्रिश्च नीलाद्रिः, सुमेरुशिखराचलः.२२
वैकुंठाद्रिः पष्कराद्रिरिति नामानि विंशतिः) ये श्लोक वेंकटाचलमाहात्म्य चतुर्थ भाग से संगृहीत हैं,
१६ नाम ही उपलब्ध होने के कारण इसे अपपाठ सा समझना है।

2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (भविष्योत्तरपुराणांतर्गत-१-३६,३७) द्वितीय भाग, पृ.-२६३, ति.ति.दे. प्रकाशन

3) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराहपुराण प्रथमभागांतर्गत - ३६-२८,२९) प्रथम भाग, पृ-१४, ति.ति.दे. प्रकाशन

4) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंडं - ३९-१,२,

5) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंड - ३९-३

मतंगा! मुनिशार्दूल! वचयं मे शृणुष्व ह।
पिता मे केसरी नाम राक्षसः शिवतत्परः।।[1]

''हे मुनिश्रेष्ठ! मतंग महर्षि! कृपया मेरी प्रार्थना सुनें। मेरे पिता केसरी नामक राक्षस हैं। वे भगवान शिव के परम भक्त हैं।''

शैवं घोरं तपश्चक्रे पुत्रार्थं तु सुदुष्करम्।
पार्वतीसहितः शंभुर्वृषभोपरि संस्थितः।
प्रादुरासीत्तदा देवो ददौ तस्मै वरं शुभम्।।[2]

उन्होंने पुत्रार्थी हो, भगवान शिव के प्रति घोर तपस्या की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिव भगवान ने पार्वती समेत, वृषभ वाहनारूढ़ होकर उनके सामने प्रकट होकर उन्हें शुभ वरदान का प्रदान किया।

शंभुरुवाच -

शृणु राजन्! प्रवक्ष्यामि विधिना निर्मितं तव।
अस्मिंजन्मन्यपुत्रत्वं तथाऽप्यन्यद्ददामि ते।।[3]

भगवान शिव ने इस प्रकार कहा -

हे राक्षस राजा! विधि के नियमानुसार तुम्हें इस जन्म में पुत्र-प्राप्ति नहीं है। परन्तु, मैं तुम्हे एक अन्य वरदान देता हूँ...

विश्रुता सर्वलोकेषु पुत्री तव भविष्यति।
तस्याः पुत्रो महाबुद्धिस्तव प्रीतिं करिष्यति।।[4]

मैं तुम्हें एक ऐसी पुत्री का आशीर्वाद देता हूँ, जो तीनों लोकों में ख्याति पाएगी। उसका पुत्र बडा बुद्धिमान रहकर तुम्हें प्रसन्न करेगा।

इति तस्मै वरं दत्त्वा तत्रैवांतर्दधे हरः।
मां लब्ध्वा मत्पिता विप्रः कृतकृत्यो बभूव ह।।[5]

इस प्रकार, वरदान को प्रसादित कर परमेश्वर अंतर्धान हो गए। इस प्रकार मुझे पुत्रिका के रूप में पाकर मेरे पिता कृतकृत्य हुए थे।

ततः कालंतरे विप्रः केसर्याख्यो महाकपिः।
ययाचेमां ददस्वेति पितरं मे ततः पिता।।[6]

कुछ समय के बाद, 'केसरी' नामक एक वानर ने मेरे पिता से मेरा विवाह उस से करवाने की विनती की।

1-2) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंडं - ३९-४-६

3-6) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंडं - ३९-७-२३

तस्मै मां दत्तवांश्चैव पारिबर्हं ददौ च सः।
गवां लक्षसहस्राणि गजलक्षं महामनाः।।[1]

विशाल मनस्क मेरे पिता ने मेरा विवाह उस कपिवर से करके, उपहार में करोडों की संख्या में गायें, लाखों की संख्या में हाथी, करोडों की संख्या में घोडे, रथ, अनेक वस्त्र, रत्न, हजारों की संख्या में दास-दासीजन, नृत्य-गीत निपुण-अंतःपुरस्त्रियाँ- इत्यादि दिए थे। इस विषय का विवरण निम्नदत्त दो श्लोकों में है।

वाजिनामर्बुदं चैव रथानामर्बुदं तथा।
वस्त्ररत्नान्यनेकानि दासदासीसहस्रकम्।।[2]
अंतः पुरचरीर्नारीन्नृत्यगीतविशारदाः।
ददौ वासःसहस्रं च मया साकं महामते!।।[3]
पत्या मे रममाणाया भूयान् कालो गतो मुने!।
अपुत्रा दुःखिता विप्र! व्रतानि विविधानि च।।[4]

अपने पति से सुख-जीवन बिताते-बिताते बहुत समय गुजर गया। निस्संतान होने के कारण मैंने महा नगर किष्किंधा में अनेक व्रत किए।

कृतानि च मया तत्र किष्किंधायां महापुरि।
माघे मासि च विप्रेंद्र! वैशाखे कार्तिके तथा।।[5]

हे मुनि! किष्किंधा-पुरी में मैंने माघ-वैशाख-कार्तिक मासों में स्नान-दान-व्रतादि-चातुर्मास व्रत-नमस्कार-प्रदक्षिण-

स्नानदानव्रतादीनि चातुर्मास्यव्रतं तथा।
नमस्कारस्तथा विप्र! प्रदक्षिणमनुत्तमम्।।[6]
शालग्रामान्नदानानि दीपदानं तथैव च।
गोदानं तिलदानं च वस्त्रदानं महामुने ।।[7]

सालग्रामदान-अन्न-गो-तिल-वस्त्रादि-दान, श्रावणादि मासों में महात्माओं से उपदेशित व्रतों को श्रीमन्नारायण को संतुष्ट करने के लिए किया।

भूदानं वारिदानं च दत्त्वा पुष्पादिकं मुने!।
यानि यानि च मुख्यानि वैष्णवानि व्रतानि च।।[8]

भू-जल-पुष्पादि अनेकानेक दानों को मैंने किया था। सत्पुत्रार्थी होकर प्रमुख वैष्णव व्रतों को किया था।

1-8) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंडं - ३९-७-२३

मया कृतानि सर्वाणि सत्पुत्रफलकांक्षया।
श्रवणादिषु यत्प्रोक्तं व्रतं विप्रैर्महात्मभिः।[1]

अनेकानेक, अनगिनत, विभिन्न प्रकारों के व्रतों का अनुष्ठान किया था।

मया कृतं च विप्रेंद्र! तुष्ट्यर्थं मधुविद्विषः।
यानि यानि च मुख्यानि फलानि विविधानि च।।[2]

विभिन्न प्रकारों के अनेकानेक फल दान दिए।

मया दत्तानि सर्वणि सत्पुत्रफलकांक्षया।
मया कृतान्यसंख्यानि व्रतानि विविधानि च।।[3]

अनेकानेक, अनगिनत-विभिन्न व्रतों का अनुष्ठान किया था।

पुत्रं तथाप्यलब्ध्वाहं दुःखिता तपसि स्थिता।
भविष्यति कथं विप्र! पुत्रस्त्रैलोक्यविश्रुतः।।[4]

फिर भी, पुत्र की प्राप्ति न होने के कारण दुःखित होकर तपस्या कर रही हूँ।

याचेऽहं तु मुनिश्रेष्ठ! प्रणता च तवाग्रतः.
वद त्वं मुनिशार्दूल! दीनाऽहं तपसि स्थिता।[5]

हे मुनिवर! मुझे तीन लोकों में ख्याति पानेवाले सत्पुत्र का प्राप्त कैसे हो सकता है? तपस्या कर-करके दीन बनकर आपके सामने सिर झुकाकर प्रार्थना कर रही हूँ, हे पिताश्री बताइए।

श्रीसूत उवाच - (श्री सूत ने ऐसा कहा)

एवं वदंतीं तां प्राह मतंगो मुनिसत्तमः।
शृणु मद्वचनं देवि! पुत्रपौत्रप्रदायकम्।।[6]

इस प्रकार, दीन बनकर प्रार्थना करनेवाली अंजनादेवी से उस मुनिश्रेष्ठ ने ऐसा कहा- ''हे देवी! मैं तुम्हें पुत्र पौत्रों को प्रदान करने वाली अच्छी बात बताता हूँ, सुनो।''

इतो दक्षिणदिग्भागे दशायोजनदूरतः।
घनाचल इति ख्यातो नृसिंहस्य निवासभूः।।[7]

इस पहाड़ की दक्षिण-दिशा में, दस योजनाओं की दूरी पर, (लगभग अस्सी मीलों की दूरी) नरसिंहस्वामी का निवास स्थान 'घनाचल' नामक पर्वत हैं।

तस्योपरी महाभागे ब्रह्मतीर्थं मनोहरम्।
तस्यापि पूर्वदिग्भागे दशयोजनमात्रतः।।[8]

1-5) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंडं - ३९-७-२३

6-8) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंडं - ३९-२४-३५

उस पर्वत पर एक सुंदर ब्रह्मतीर्थ है, उस ब्रह्मतीर्थ की पूरब दिशा में दस योजनाओं की दूरी पर.....

सुवर्णमुखरी नाम नदीनां प्रवरा नदी।
तस्या एवोत्तरे भागे वृषभाचलनामतः।।[1]

नदियों में श्रेष्ठ 'सुवर्णमुखी' नामक एक नदी है। उस नदी की उत्तर दिशा में 'वृषभाद्रि' है।

तस्याग्रे सरसी नाम्ना स्वमिपुष्करिणी शुभा।
गत्वा दृष्टवा शुभं तोयं मनः शुद्धिं गमिष्यसि।।[2]

उस पर्वत पर एक मंगलदायक सरोवर है, जिसका नाम है- 'स्वामि-पुष्करिणी'। वहाँ जाकर उस पुष्करिणी जल को देखने मात्र से तुम्हारे सारे दुःख का नाश हो जाता है और तुम आनंद पाओगी।

तत्र स्नात्वा विधानेन वराहं तं प्रणम्य च।
वेंकटेशं नमस्कृत्य ततो गच्छ वरानने।।[3]

उस पुष्करिणी में स्नान करके, वहाँ स्थित श्री वराहस्वामी को और श्री श्रीनिवास को विधिपूर्वक नमन करके...

उत्तरे स्वामितीर्थस्य सिंहशार्दूलसंयुते।
चूतपुन्नागपनसैर्बकुलामलकः शुभैः।।[4]

चंदनागरुनिंबैश्च तालहिंतालकिंशुकैः।
कपित्थश्वत्यबिल्वैश्च इंगुदैश्च वरानने।।[5]

एतादृशैर्महापुण्यैर्वृक्षैश्च विविधैःशुभैः।
वियद्गंगेति विख्यातं तीर्थमेकं विराजते।।[6]

इस पुष्करिणी की उत्तर दिशा में आम, चंपा, कटहल, नीम जैसे विविध वृक्ष-जातियों से और सिंहादि क्रूर-जानवरों से युक्त 'आकाशगंगा' नामक एक प्रसिद्ध तीर्थ विराजमान है।

तस्मिंस्तीर्णेऽजने देवि! संकल्पविधिपूर्वकम्।
स्नात्वा पीत्वा शुभं तीर्थं तीर्थस्याभिमुखी स्थिता।।[7]

हे अंजनादेवी! उस पुण्यतीर्थ में विधिपूर्वक संकल्प करके, स्नान करके, उस जल का सेवन करके, उसके सम्मुख खडे होकर.....

वायुमुद्दिश्य हे देवि! तपः कुरु वरानने।
देवैश्च राक्षसैर्विप्रैर्मनुजैर्मुनिसत्तमैः।।[8]

वायुदेव के प्रति तप करो। फलस्वरूप, तुम्हें ऐसा पुत्र अवश्य होगा, जो देव-राक्षस-ब्राह्मण-मुनियों के हाथ या.... भौरों जैसे कीटों के हाथ या पक्षियों के हाथ या विविध अस्त्रों के द्वारा अवध्य होगा। मेरी बात पर संदेह करने की जरूरत नहीं है।

1-8) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंडं - ३९-२४-३५

भृंगैः पक्षिभिरस्त्रैश्च शस्त्रैश्च विविधैः शुभैः।
अवध्यो भविता पुत्रस्तपस्यांते न संशयः।।[1]

श्रीसूत उवाच

इति प्रोक्तांऽजना देवी तं प्रणम्य पुनः पुनः।
भर्त्रा सांकं ययावाशु वेंकटाचलसंज्ञकम्।।[2]

श्री सूतमुनि ने इस प्रकार कहा....

इस प्रकार मतंग महर्षि से आदेश पाकर, उन महर्षिपुंगव को पुनः-पुनः प्रणाम करके, अंजनादेवी, अपने पति से वेंकटाद्रि ओर चल पडी।

कापिलं तीर्थमासाद्य स्नात्वा निर्मलमानसा।
वेंकटाद्रिं समारुह्य स्वमिपुष्करिणीं ययौ।[3]

स्नात्वा वराहमानम्य वेंकटेशकृतानतिः।
मतंगस्य ऋषेर्वाक्यं स्मरंती च मुहुर्मुहुः।।[4]

अंजनादेवी परिशुद्धमन से कपिलतीर्थ में स्नान करके, पहले वराहस्वामी को प्रणाम करके, श्री श्रीनिवास का दर्शन करके मतंग महर्षि के वाक्यों का पुनः-पुनः स्मरण करती हुई,

वियद्गंगां ययावाशु चांजना मंजुभाषिणी।
स्नात्वा पीत्वा शुभं तोयं तीरे तस्य तदुन्मुखी।[5]

आकाशगंगा पहुँच गई। आकाशगंगा में स्नान करके, उस जल का सेवन करके, आकाशगंगा के सम्मुख खडे होकर, आरंभ में फल लेती हुई और बाद में केवल जल को आहार के रूप में स्वीकार करती हुई...

प्राणवायुं समुद्दिश्य तपश्चक्रे यतव्रता।
फलाहारा जलाहारा निराहारा ततः परम्।[6]

उसके उपरांत निराहारी होकर वायुदेव के प्रति तप करने लगी।

सहस्राब्दं तपश्चक्रे न्यस्तनासाग्रदृष्टिका।
वयस्या विपुला नाम शुश्रूषामकरोच्छुभा।[7]

अंजनादेवी ने नासाग्रदृष्टि से हजार-वर्ष तक तपस्या की थी। उस समय, 'विपुला' नामक सखी ने अंजनादेवी की सेवा की थी।

---

1) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंडं - ३९-२४-३५

2- 7) ७स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंडं - ३९-३६-५०

वर्षाणां च सहस्रांते वायुर्देवो महामतिः।
प्रादुरासीत्तदा तां वै भाषमाणो महामतिः।।[1]

एक हजार सालों के बाद वायुदेव प्रकट होकर, अंजनादेवी से बोलते हुए...

मेषसंक्रमणं भानौ संप्राप्ते मुनिसत्तमाः।
पूर्णिमाख्ये तिथौ पुण्ये चित्रानक्षत्रसंयुते।।[2]

सूर्य मेष राशि में प्रवेश करने पर चित्रा नक्षत्र युक्त पूर्णिमा के दिन

तवेप्सितमहं दास्ये वरं वरय सुव्रते!
इति तद्वचनं श्रुत्वा ततःप्राहांजना सती।।[3]

''तुम्हारे अभीष्ट को पूरा करूँगा''। इस प्रकार वायुदेव के मुँह से निकले वाक्य को सुनकर अंजनादेवी ने वायुदेव से ऐसा कहा...

पुत्रं देहि महाभाग!वायो! देव! महामते।
तस्यास्तद्वचनं श्रुत्वा मातरिश्वाब्रवीत्ततः।।[4]

''हे वायुदेव! कृपया मुझे एक सुपुत्र का वरदान दें'' - यहीं अंजनादेवी की प्रार्थना थी। उस के अभीष्ट को सुनकर, वायुदेव,

पुत्रस्तेऽहं भविष्यामि ख्यातिं दास्ये शुभानने।
इति तस्यै वरं दत्त्वा तत्रैवास्त महाबलः।।[5]

अंजना! मैं स्वयं तुम्हारे पुत्र के रूप में पैदा होकर, तुम्हें कीर्ति देता हूँ।'' - ऐसे कहकर अंतर्हित हो गाए।

तदा ब्रह्मदयो देवा इंद्राद्या लोकपालकाः।
वशिष्ठाद्या महात्मानः सनकाद्याश्च योगिनः।।[6]

तपोमग्न अंजनादेवी को देखने के लिए, उस समय, ब्रह्मादि देवगण, इंद्रादि लोक-पालक, वशिष्ठादि महात्मा, सनकादि ऋषि-गण इत्यादि अपने-अपने भर्ताओं, भार्याओं, पुत्रों और सेवक सहित अपने-अपने वाहनों पर अधिरोहण करके आए थे।

व्यासादयश्च विप्रेंद्रा लक्ष्मया साकं जगत्पतिः।
मुनिपत्न्यो देवपत्नय ऋषिपत्न्यस्तथैव च।।[7]

व्यासादि मुनिगण, लक्ष्मी समेत श्री महाविष्णु, मुनियों की, देवताओं की, ऋषियों की पत्नियाँ...

स्वं स्वं वाहनमारुह्य दारभृत्यसुतादिभिः।
आगतास्ते महात्मानो द्रष्टुं तां तपसि स्थिताम्।।[8]

और अनेक महात्मा अपने-अपने सती-पुत्रों सहित, वाहनारूढ होकर तप करनेवाली अंजनादेवी को देखने आए।

1-8) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंडं - ३९-३६-५०

आश्चर्यमाश्चर्यमिति ब्रुवाणा ब्रह्मादयो देवगणाश्च सर्वे।
आलोकयंतो दिवि दूरतस्ते स्थितास्तदा ब्रह्ममहेशमुख्याः।।[1]

उस आकाशगंगा के समीप जिस स्थान पर अंजनादेवी घोर तप में मग्न हुई थी, उस स्थान को ब्रह्मादि देव-गण आकर, अंजनादेवी को देखकर ''आश्चर्य, आश्चर्य'' कहते हुए उसे देख रहा था।

ब्रह्मांड पुराण के अनुसार अंजनादेवी ने तिरुमला-गिरि पर सात हजार वर्षों के लिए तप किया था। (पृ.६८ देखे)

तरिगोंडा वेंगमांबा-विरचित श्री वेंकटाचल माहात्म्य के अनुसार अंजनादेवी ने तिरुमला पर बारह वर्ष तपस्या की। (पृ.११७ देखे)*

श्री सूत उवाच -

अंजनाऽपि वरं लब्ध्वा भर्त्रा साकं मुमोद ह।
ब्रह्मादीनागतान् दृष्ट्वा विस्मयाविष्टमानसा।।[2]

इस प्रकार, वायुदेव के वरदान से पुत्र को पाकर दोनों पति-पत्नी, अंजना और उसके पति केसरी बहुत प्रसन्न थे।

पत्या साकं ततः स्वस्था चांजना मंजुभाषिणी।
ब्रह्मादिभिरनुज्ञातो व्यासो वेदविदां वरः।
अंजनां तामुवाचेदं मेघगंभीरया गिरा।।[3]

अंजनादेवी अपनी तपस्या को देखने के लिए वहाँ प्रकट हुए ब्रह्मादि देव-गण को देखकर, आश्चर्य चकित होकर, पुत्र-प्राप्ति होने के संतोष से पुलकित हो गई। उसके बाद, ब्रह्मादि देवताओं से अनुमति लेकर, व्यास महर्षि मेघ-गर्जन जैसे गंभीर-स्वर से अंजनादेवी से एसे बोले-

व्यास उवाच

अंजने! श्रुणु मद्वाक्यं सर्वलोकोपकारकम्।
मतंगस्य ऋषेर्वाक्यं श्रुत्वा निर्मलचेतसा।।
यस्मात्तु वेंकटं गत्वा तपः कृत्वा सुदुष्करम्।
प्रसूयते त्वया पुत्रः शूरस्त्रैलोक्यविक्रमः।।[4]

''इस वेंकटाचल पर आकर तुमने ऐसे अति कष्टसाध्य तप का आचरण किया था, जिसे अतीत में किसी ने नहीं किया था। अतः तप के फलस्वरूप तुम ऐसे एक अति पराक्रमी पुत्र को जन्म दोगी, जो तीनों लोकों में अतुल रहेगा।''

---

1) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंड - ३९-३६-५०

* मंत्रालय श्री राघवेंद्र स्वामी मठ के द्वारा प्रचुरित 'श्रीवेंकटेश माहात्म्यम्'' ग्रंथ में मतंग महर्षि ने अंजनादेवी से कहा -''द्वादशाब्दव्रतं चर''। इस ग्रन्थ के दो व्याख्यान है। उनको अध्ययन करने से यह विषय मालूम पडता है कि - ''अंजनादेवी १२ साल तप कर लिया'' (पृ.७७-८७)

2-3) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंड - ४०-१-३

4) स्कांदपुराण, श्रीवैष्णवखंड - ४०-४, ५

ब्रह्मांड पुराण के तीर्थखंड में देव-गण के अंजनादेवी की स्तुति करने का संदर्भ -

अंजने! त्वं हि शेषाद्रौ तपस्तप्त्वा सुदारुणम्।
पुत्रं सूतवती यस्मात् लोकत्रयहिताय वै।[1]

हे अंजनादेवी! तुमने इस शेषपर्वत पर घोर तप करके पुत्र को प्राप्त किया है। अतएव, तुम्हारी तपस्या, तीनों लोकों की रक्षा करने की महिमा रखती है। अतः

प्रसिद्धिं यातु शैलोयं अंजने! नामतस्तव।
अंजनाचल इत्येव नात्र कार्या विचारणा।।[2]

देव-गण ने उस पर्वत की महानता को बताते हुए अंजना की ऐसी प्रस्तुति की - ''अंजना! तुमने अपनी तपस्या से इस पर्वत की महानता बढा दी। अतः आज से यह पर्वत तुम्हारे नाम से प्रसिद्ध होगा। यह निस्संदेह की बात है।

वेंकटाचल को उपर्युक्त नामों में से 'अंजनाद्रि' का नाम संबंधित कथा, स्कांदपुराण में संक्षिप्त रूप में और ब्रह्मांड पुराण में विस्तार में वर्णित हैं। कथा की दृष्टि से देखें तो, अंजना की तपस्या, आंजनेय(हनुमान) का जन्म, आंजनेय का सूर्यदेव को पकडने के लिए उडना- इत्यादि घटनाएँ इस 'वेंकटाद्रि' पर ही घटित थीं।

ब्रह्मांड पुराण में वर्णित वृत्तांत के कुछ प्रमुख अंश इस प्रकार हैं....

पूर्व, त्रेतायुग में केसरी नामक एक राक्षस था। वह शिवदेव के प्रति तप करके, उनसे अनुगृहीत हुआ। जब केसरी ने शिवदेव से महाबलपराक्रमशाली पुत्र को वरदान के रूप में पूछा, तो उन्होंने उसे एक पुत्रिका होने का वरदान से अनुगृहीत किया। वह वरदान-स्वरूप पुत्रिका ही अंजनादेवी थी। जब वह तरुणी बनी, तो 'केसरी' का ही नामवाले एक वानरवीर ने अंजना के पिता के पास आकर उसकी पुत्रिका से विवाह करवाने की विनती की। महाबलशाली और अपने नाम का ही वीर होने के कारण, संतुष्ट केसरी अपनी सुता का विवाह उस वानरवीर से करवाया।

लंबे समय तक, इस दंपती की कोई संतान नहीं हुई थी। अनेक व्रतों को आचरण करने के बाद, एक बार, अपने घर को आई एक ज्योतिषी से अंजना ने पूछा था कि उसे संतान भाग्य है कि नहीं। तब वह ज्योतिषी यह कह कर चली गई कि

अभीष्टस्तव पुत्रो वै भविष्यति न संशयः।
मा शोकं कुरु कल्याणि! धर्मेण मम ते शपे।।[3]

कल्याणी! जैसे तुम चाहोगी, ऐसा ही तुम्हारा एक पुत्र होगा। शोक मत करो। यह मेरी प्रतिज्ञा है।

श्री वेंकटगिरौ सप्तसाहस्रं वत्सरान्पुनः।
तपः कुरु ततः पुत्रमवाप्स्यसि सुशोभनम्।।[4]

श्री वेंकटगिरि पर सात हजार वर्ष पर्यन्त तप करो। तुम महान् पुत्र को पाओगी।

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांडपुराण तीर्थखंडांतर्गत -५-६४) प्रथमभाग, पृ.-३३३, ति.ति.दे. प्रकाशन
2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांडपुराण तीर्थखंडांतर्गत -५-६५) प्रथमभाग, पृ.-३३३, ति.ति.दे. प्रकाशन
3) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांडपुराण तीर्थखंडांतर्गत -५-१६) प्रथमभाग, पृ.-३२८, ति.ति.दे. प्रकाशन
4) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांडपुराण तीर्थखंडांतर्गत -५-१७) प्रथमभाग, पृ.-३२९, ति.ति.दे. प्रकाशन

इत्युक्त्वा सा निमित्तज्ञा यथा गतमथो ययौ।
अंजना चिंतयंती तद्वाक्यं तस्या मनोहरम्।।[1]

अंजनादेवी ने उस ज्योतिषी की मनोहर-वचन-भरी-भविष्यवाणी का स्मरण करती हुई

प्रचक्रमे तपश्चर्तुं श्रीवेंकटगिरेस्तटे।
आकाशगंगानिकटे सिद्धसंघनिषेविते।।[2]

श्री वेंकटगिरि पर जाकर अंजनादेवी ने आकाशगंगा तीर्थ के समीप, सिद्द पुरुषों से आराधित प्रदेशों में तप करने के लिए उपक्रम किया।

वाय्वाहारान् च वायुं वै समुद्दिश्य सुदारुणम्।
तपश्चचार दान्तेयं प्रीणयन्ती व्रतेरिमम्।।[3]

अंजना ने केवल वायुभक्षण करती हुई वायुदेव के प्रति अति घोर तपस्या की।

वायुदेव उसे अनुगृहीत करके हर दिन उसे एक-एक फल करके देते रहे। एक दिन वायुदेव ने शिवतेजस से भरे फल को अंजनादेवी को दिया था। उस फल को खाकर वह गर्भवती हुई। दैवप्रसाद से गर्भवती बनी अंजनादेवी से अशरीरवाणी ने ऐसा कहा- ''तुम्हें होने वाला पुत्र शिवतेजस-युक्त और लोकोत्तर शक्ति-संपन्न रहेगा। भविष्य में, लोककंटक, लंकाधिपति राक्षसेंद्र रावणासुर के संहार करने के लिए जब, महाविष्णु श्रीरामचंद्र के रूप में अवतरित होते हैं, तब राम-सहायक के रूप में रहकर, तुम्हारा पुत्र यश पायेगा।''

ततो वै दशमे मारि संप्राप्ते नळिनेक्षणा।
असूतपुत्रं बलिनमुदयत्यहिमत्विषि।।[4]

इस प्रकार वायुदेव द्वारा पुत्र संतान का वरदान प्राप्त करने के बाद, अंजनादेवी ने दसवीं महीने में अति बलवान पुत्र को जन्म दिया था।

श्रावणे मासि नक्षत्रे श्रवणे हरिवासरे।
कुंडलोद्भासिगंडान्तमुपवीतिनमुज्वलम्।।[5]
कौपीनोद्भासितं चेव दीप्यमानमिव श्रिया।
बिभ्राणं वानराणां वै रूपमत्यद्भुतं महत्।।
रक्तास्यपुच्छमूलं तु सुवर्णसदृशादयुतिम्।।[6]

1-3) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांडपुराण तीर्थखंडांतर्गत -५-१८-२०) प्रथमभाग, पृ.-३२९, ति.ति.दे. प्रकाशन

4-5) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांडपुराण तीर्थखंडांतर्गत -५-४२-४५) प्रथमभाग, पृ.-३३१, ति.ति.दे. प्रकाशन

6) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांडपुराण तीर्थखंडांतर्गत -५-४२-४५) प्रथमभाग, पृ.-३३१, ति.ति.दे. प्रकाशन

अंजनादेवी ने श्रवणा नक्षत्र युक्त हरिवासर में सूर्योदय के समय महाबलवान् पुत्र को जन्म दिया था। सुंदर दिव्य कुंडलों से, भासमान् गालों से, यज्ञोपवीत को धारण किया हुआ, एक छोटे से कौपीन से प्रकाशित वह शिशु, एक अद्भुत वानर रूप का धारण किया हुआ था। वह बालक लाल चेहरे से और अपनी पूँछ की सिरों में सुनहरी रोशनी से चमक रहा था।

वैशाख मास की बहुल दशमी का दिन, श्री हनुमज्जनन का समय है, इसीलिए तिरुमला में, इस दिन पर हनुमान की पूजा की जाती है। कुछ प्रयोग ग्रन्थकारों का अभिप्राय है कि श्री हनुमज्जननम् वैशाख बहुल दशमी का दिन, पूर्वाभाद्र नक्षत्र में हुआ। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार मूला नक्षत्र में और पांचरात्रागमशास्त्र के अनुसार अनूराधा नक्षत्र में हनुमज्जनन होने का बोध होता है। लेकिन मासादि विषयों की जानकारियों का विवरण नहीं है।[1]

हर साल वैशाख-बहुल-दशमी का दिन, तिरुमला-क्षेत्र में हनुमज्जयंती का उत्सव धूम-धाम से मनाया जा रहा है।[2]

सूर्यदेव को निगलने के लिए आकाश में उडने वाले बाल हनुमान

अतोऽयं जातमात्रोऽपि नितरां तु बुभुक्षितः
उदयाचलसंरूढं ददर्श रविमण्डलम।।
नितांतरक्तवर्णेन फलबुद्धिरभूत्तदा।[3]
फलमित्येव मन्वानो रविं भक्षितुमुद्यतः।
ग्रहीष्यामीति निश्चित्य श्रीवेंकटगिरेस्तटात्।।[4]

जन्म लेते ही भूख को मिटाने के लिए उदयपर्वत पर उगे हुए सूर्यदेव को लाल-फल समझकर, उसे खाने के लिए बाल हनुमान, श्री वेंकटगिरि से

उदतिष्ठन्महावेगादुदयाचलशेखरम्।
ग्रहीतुमुद्यते तस्मिन् बिंबं सूर्यस्य तद्बालात्।[5]

सूर्यदेव को पकडने के लिए उदयगिरि की ओर उड पडे। उस सूर्यबिंब को पकडने के लिए उद्युक्त हो गए।

हाहाकृतमभूत्सर्वं जगत्स्थावरजंगमम्
ततः चतुर्मुखो ब्रह्मा स्वयमागत्य वेगतः।[6]

इस दृश्य को देखकर, निखिल चराचर जीवलोक हाहाकार करने लगा। चतुर्मुख ब्रह्म स्वयं तेजी से आए।

---

1) श्री वेंकटेश्वर वैभवम, पंडित वेदांतं जगन्नाथाचार्युलु पृ.-१९५

2) श्रीनीवासवैभवं - जूलकंटि बालसुब्रह्मण्यं, पृ-२२५

3-4) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांडपुराण तीर्थखंडांतर्गत -५-४५-४९) प्रथम भाग, पृ.-३३१, ति.ति.दे. प्रकाशन

5-6) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांडपुराण तीर्थखंडांतर्गत -५-६४-६७) प्रथम भाग, पृ.-३३३, ति.ति.दे. प्रकाशन

ऐसे सामने उडते हुए आने वाले अंजनासुत को असुर समझकर ब्रह्मा ने उस पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग किया। उस ब्रह्मास्त्र को बालहनुमान ने बाल क्रीडा के रूप में मानते हुए अपनी पूँछ से उसे एक ओर धकेल दिया। उस बालक की प्रतिचेष्टा देखकर देवगण आश्चर्य चकित हो गया। उस अंजनापुत्र को ज्ञात हुआ कि उसने जो देखा, वह फल नहीं है, सूर्यबिंब है। तब वे ब्रह्मास्त्र के प्रभाव से होने वाली पीडा को मेहसूस करके, निरुत्साह से हताश होकर जमीन पर गिर पडे। अंजनादेवी अपने बेटे को ऐसी स्थिति में देखकर दुःखी हुई।

तब ब्रह्माजी ने कहा-

अंजने त्वं हि शेषाद्रौ तपस्तप्तवा सुदारुणम्,
पुत्रं सूतवती यस्माल्लोकत्रयहिताय वै।[1]

''हे अंजना तुमने इस शेषाद्रि पर घोर तपस्या करके, लोक-कल्याण के लिए इस पुत्र को जन्म दिया था।

प्रसिद्धिं यातु शैलोऽयमंजने! नामतस्तव।
अंजनाचल इत्येव नात्र कार्या विचारणा।।[2]

अतः यह वेंकटगिरि या शेषाद्रि, आज से, तुम्हारे नाम पर, 'अंजनाद्रि' नाम से प्रसिद्ध होगा। इस विषय में और सोचने की जरूरत नहीं है।

इति तस्यै वरं दत्वा देवा ब्रह्मपुरोगमाः,
स्वं स्वं स्थानं समुद्दिश्य यथागतमथो ययुः।[3]

ऐसा वरदान को प्रदान कर, ब्रह्मादि देव-गण स्व-स्व लोकों को चला गया।

अंजना पुत्रमादाय श्रीवेंकटगिरेस्तटम्।
पुनरागम्य सामोदमलंचक्रे निजाश्रमम्।।[4]

संतुष्ट होकर अंजनादेवी अपने पुत्र को लेकर खुशी-खुशी वेंकटगिरि पर रहे अपने आश्रम को चली गई।

चतुर्षु मेरुपार्श्वेषु, हेमकूटहिमाह्वये।
नीले श्वेतनगे चैव निषधे गंधमादने।।[5]

ब्रह्मांड पुराण में, 'सुमेरु' को हनुमान के जन्मस्थान के रूप में प्रस्ताव किया गया है। उसी प्रकार, रामायण से ज्ञात होता कि श्रीराम ने उत्सुकता से अगस्त्य महर्षि से हनुमान के जन्मवृत्तांत को जाना।

सूर्यदत्तवरस्सवर्णः सुमेरुर्नाम पर्वतः।
यत्र राज्यं प्रशास्त्यस्य केसरी नाम वै पिता।।[6]

1-4) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मांडपुराण तीर्थखंडांतर्गत - ५-६४-६७) प्रथमभाग, पृ.-३३३, ति.ति.दे. प्रकाशन

5) ब्रह्मांडमहापुराण, मध्यमभाग-७-१९४

6) रामायण, उत्तरकांड - ३५-१९

ब्रह्म पुराण ने इस बात को स्पष्ट किया कि ब्रह्मांड पुराण में और रामायण में प्रतिपादित सुमेरु पर्वत, 'वेंकटाचल' ही है। ''**मेरुपुत्रं महापुण्यं वेकटाचल संज्ञकम्**''[1] - मेरुपर्वत के पुत्र के दो नामधेय है- वेंकट और सुमेरु। सुमेरु पर्वत का जन्म, शेषु के अंश में हुआ था। यह पर्वत, ऋषियों के लिए, देवताओं के लिए और मुक्ति-प्राप्त मुनियों के लिए सुवर्ण वर्ण में दिखाई देता है। इस विषय का उल्लेख ब्रह्मांड पुराणांतर्गत श्री वेंकटाचल माहात्म्यम ग्रंथ में मिलता है। इस तथ्य को भक्त अन्नमाचार्य ने अपने कई कीर्तनों में वर्णन किया है।

वराह पुराण

दशरथ का पुत्रसंतानार्थी बन तिरुमला को आना।

वराह पुराण के अनुसार लंबे समय तक निस्संतान रहे दशरथ महाराज ने वशिष्ठ महामुनि के आदेशानुसार इस 'वेंकटाद्रि' पर आकर, तपस्या की थी।

तस्मिन् काले तु धर्मात्मा! राजा दशरथः प्रभुः।
शशास मेदिनीं कृत्स्नाम्! अयोध्यायां महायशाः।।[2]

इसी काल में धर्मात्मा दशरथ महाराज, अयोध्या को अपनी राजधानी बनाकर पूरी धरती का पालन करते थे।

वर्णश्रमाचारयुताः प्रजा धर्मेण पालयन्।
चिरकालं महीं राजा बुभुजे भूरि विक्रमः।।[3]

वर्णाश्रम विधान का आचरण करते हुए, धर्मबद्ध होकर, अमित पराक्रमी दशरथ महाराज, लंबे समय तक इस भूमि का पालन करते थे।

न चाद्राक्षीत् कुमारस्य शुचिस्मेरमुखांबुजम्।
वशिष्ठमब्रवीद्दुःखात् ब्रह्मर्षिममितौजसम्।।[4]

पुत्र संतान का न होने के कारण दुःखित होकर, दशरथ महाराज ने अत्यंत तेजोमय ब्रह्मर्षी वशिष्ठ से ऐसा पूछा– ''महामुनि!

पुरोहितोऽस्य वंशस्य विशेषेण भवान्मुने!
चिरं लालप्यमानस्य नाऽऽसीद्वंशकरस्सुतः।।[5]

हमारे वंश के लिए आप ही प्रधान पुरोहित हैं। मुझे अभी तक वंशोद्धारक पुत्र नहीं हुआ है।

पापिनो मम तु ब्रह्मन्! मया पापं कृतं बहु।
पापस्य निष्कृतिः कस्मात् कथं पुत्रो भविष्यति।।[6]

''ब्रह्मर्षि! मैं पापात्मा हूँ। मैंने बहुत पाप किए। मेरे पापों का परिहार क्या है? मुझे पुत्र-संतान होने का मार्ग बताइए।

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मपुराणांतर्गत - १-३६) द्वितीय भाग, पृ.-५, ति.ति.दे. प्रकाशन

2-6) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराहपुराण प्रथम भागांतर्गत - ४४-३३-५४) प्रथमभाग, पृ-४८-५०, ति.ति.दे. प्रकाशन

इति प्रोक्तो वशिष्ठस्तु क्षणं ध्यात्वा प्रसन्नधीः।
प्राह चैनं नृपं धीरं वशिष्ठो भगवान् ऋषिः।।[1]

दशरथ से इस प्रकार प्रार्थित वशिष्ठ महर्षि ने निर्मल-चित्त होकर, क्षणकाल के लिए चिंतामग्न रहकर धीर हो दशरथ महाराज से ऐसा बताया।

पुण्यश्लोकस्य भवतः कथं पापं भविष्यति।
तथाऽपि तव राजेंद्र! पुत्रप्राप्तिविरोधकृत्।।[2]

तुम पुण्यात्मा हो, तुम्हे पाप कैसा आता है। हालाँकि, तुम्हारे लिए पुत्र की प्राप्ति न होने का कारण,

दुष्कृतं किंचिदस्तीति ध्यानेन प्रतिभाति मे।
तस्य पापस्य शांत्यर्थं पुत्राणां प्राप्तये तथा।।[3]

तुझसे किया गया एक दुष्कार्य है, मुझे यह विषय अपने ध्यान के द्वारा ज्ञात हुआ। उस पाप-परिहार के लिए पुत्र संतानार्थी होकर

सेव्यः श्रीवेंकटाधीशः क्षीराब्धितनयापतिः।
इत्युक्तः प्राह राजाऽपि ब्रह्मन्! कुत्र श्रियःपतिः?[4]

उसे वेंकटाद्रीश लक्ष्मीपति का दर्शन करके उनकी सेवा करनी है।'' इस कथन के समाधान में दशरथ ने वशिष्ठ से पूछा था कि अब वेंकटाचलाधीश कहाँ स्थित है?

इदानीं वर्तते विष्णुः कथं दृश्यो मया प्रभुः।
इति पृष्टःपुनः प्राह वशिष्ठोऽपि महामुनिः।।[5]

अब क्या महाविष्णु विद्यमान है? मैं उनके दर्शन कैसे कर सकता हूँ'' - दशरथ महाराज के इन प्रश्नों के समाधान स्वरूप महामुनि वशिष्ठ ने इस प्रकार कहा-

श्रुणु राजन्! महाभाग! भगीरथ्याश्च दक्षिणे।
वर्तते वेंकटः शैलो योजनानां शतद्वये।।[6]

''हे महानुभाव राजा! सुनो! गंगानदी की दक्षिण-दिशा में दो सौ योजनाओं की दूरी पर 'वेंकटाचल' नामक एक पर्वत है।''

सुवर्णमुखरीतीरात् उत्तरे क्रोशमात्रके।
अनेक पुण्यतोयैश्च पुण्यैश्चैव व महाह्रदैः।।[7]

''सुवर्णमुखी नदी के तीर की उत्तरदिशा में एक क्रोस की दूरी पर अनेक पुण्यतीर्थों से वह प्रदेश सुसंपन्न है।''

अनेककिन्नरीभिश्च शोभितः पर्वतोत्तमः।
दिव्योऽयं पर्वतेंद्रस्तु न पुनः प्राकृतो गिरिः।।[8]

यह दिव्य वेंकटाचल पर्वतराज, अनेक किन्नरों से शोभित महापर्वत है।

1-8) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत - ४४-३३-५४) प्रथम भाग, पृ.-४८-५०, ति.ति.दे. प्रकाशन

स्वरूपं तस्य शैलस्य न तु जानंति मानुषाः।
नारायणस्य देवस्य वैकुंठपुरवासिनः।।[1]

इस पर्वत का स्वरूप जो है, मानवों को ज्ञात नहीं है। इस पर्वत के स्वरूप के बारे में केवल श्री महाविष्णु को और वैकुंठ-वासियों को ज्ञात है।

सूर्यवैकुंठनाकेभ्यः प्रियोऽयं वेंकटाचलः।
तस्मिन् हि रमते नित्यं श्रीनिवासः श्रिया सह।।[2]

सूर्य, वैकुंठ तथा स्वर्ग लोक वासियों के लिए यह वेंकटाचल बहुत प्रिय है। इस वेंकटाचल पर सदा श्री श्रीनिवास, माता लक्ष्मीदेवी के साथ विचरण करते रहते हैं।

दर्शनार्थं हरेस्तत्र यजंते मुनयोऽमलाः।
योगिनस्त्रिदशाश्चापि तपः कुर्वंति संततम्।।[3]

श्री महाविष्णु के दर्शन के लिए पवित्र मुनि-गण, यहाँ, निरंतर यज्ञ करते रहते हैं। योगि-पुंगव और देवता-गण इस पर्वत पर निरंतर तप करते रहते हैं।

प्रययौ च वशिष्ठेन वेंकटाख्यं गिरिं प्रति।
गंगां गोदावरी रम्यां कृष्णवेणीमनंतरम्।।[4]

दशरथ महाराज, वशिष्ठ-महामुनि के साथ चलते-चलते मार्ग मध्य में गंगा, गोदावरी, कृष्णा नदी....

मलापहारिणीं भद्रां तुंगां पंपां मनोहराम्।
भवनाशीं च संप्राप्य स्नात्वा स्नात्वा महारथः।।[5]

उसके अनंतर पापों को हटानेवाली तुंगभद्रा, मनोहर पंपा-आदि भवनाशिनी पुण्य नदियों के निकट जाकर, उन पुण्य नदियों में स्नान करके..

वेंकटाद्रिं ददर्शाथ तुंगशृंगसमन्वितम्।
उद्यानं नंदनं चैत्र रथं संभूय तिष्ठति।।[6]

दशरथ ने, मेरुपर्वत जैसे उन्नत वेंकटाचल के दर्शन किए।

इत्युत्प्रेक्ष्य मनोहारि वृक्षगुल्मलता युतम्।
युवानं च महामेरुमिव चक्षुष्पदं गिरिम्।।[7]

मनोहर लतागुल्मादियों सहित देखने के लिए महा मेरु जैसे लगनेवाले.....

आरुहय नयनानंदं हृदयाह्लादकारकम्।
निर्झरेषु तटाकेषु सरस्सु सरसीषु च।।[8]

हृदयस्पर्शी, आह्लादकर और नयन मनोहर वेंकटाद्रि का अधिरोहण करके....

1-8) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत - ४४-३३-५४) प्रथम भाग, पृ.-४८-५०, ति.ति.दे. प्रकाशन

नदीषु देवखातेषु तथा पुष्करिणीषु च।
स्नात्वा निर्मलसर्वांगः क्षाळिताघो महाबलः।[1]

वहाँ स्थित देवनदियों में और पुष्करिणियों में स्नान करके महाबली दशरथ ने अपने पापों का परिहार कर पाया।

वेंकटाचल पर श्रीराम का आगमन

वेंकटाद्रेस्तु माहात्म्यं जनकर्णरसायनम्।
श्रुण्वतां नास्ति तृप्तिस्तु मुनीनां नो बुधोत्तम।।[2]
भूयः कथय वृत्तांतं श्रुतं किंचित्त्वया पुरा।।
इत्युक्तः प्राह सूतोऽपि श्रुतं च मुनिपुंगवान्।[3]

मुनि-गण ने सूत महर्षि से बातें करते हुए पूछा था- ''हे सूतमहर्षि! वेंकटाचल माहात्म्य सर्वों को श्रवणानंदकर है। सुनते-सुनते, हमारी संतुष्टता की प्यास अभी बुझी नहीं है। आपने जो पूर्व से ही सुना है, उसे फिर से हमें सुनाइए।''- समाधान स्वरूप, सूत महर्षि अपने पूर्व-श्रुत विषयों का विवरण मुनि-गण को इस प्रकार दे रहे हैं।

श्री सूतः

पुत्रो दशरथस्याऽसीद्रामो राजीवलोचनः।
स सर्वलक्षणोपेतः सर्वशास्त्रविशारदः।।[4]

दशरथ को श्रीराम नामक एक पुत्र है, जो सर्वलक्षणोपेत, सर्वशास्त्र विशारद और राजीवलोचन हैं।

रावणस्य वधार्थाय पुरा सौमित्रिणा सह।
हनूमता वेगवता सुग्रीवेण महात्मना।।[5]

पूर्व, वे श्रीराम, रावण-वध हेतु, लक्ष्मण-हनुम-सुग्रीव सहित

सह सैन्यैर्यदा पंपातीराच्छोभितपादपात्।
निर्जगाम तदा रामः शुभे श्रीवेंकटाचले।।[6]

सेना-सहित, श्रेष्ठ वृक्षों से भासित पंपातीर को पार करते हुए श्री वेंकटाचल पर पहुँचे।

स्वमिपुष्करणीतीर्थे स्नात्वा पशचाद्रणे रिपुम्।
रावणं सगणं हत्वा जयमापेति मे श्रुतम्।।[7]

मैंने सुना कि वहाँ स्थित पुष्करिणी में स्नान करने के बाद ही उन्होंने युद्ध में रावण को उसके बंधुवों सहित संहार किया था।

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत - ४४-३३-५४) प्रथमभाग, पृ.-४८-५० ति.ति.दे. प्रकाशन

2,3) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराहपुराण प्रथम भागांतर्गत - ४१-१,२) प्रथम भाग, पृ.-३३ ति.ति.दे. प्रकाशन

4-7) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराहपुराण प्रथम भागांतर्गत - ४१-३-८) प्रथम भाग, पृ.-३३, ३४ ति.ति.दे. प्रकाशन

तत्सर्वं कथयिष्यामि श्रोतव्यमवधानतः।
ऋश्यमूकाचलात्तस्मात् वानरैर्बहुभिर्वृतः।।[1]

सूत महर्षि, उस वृत्तांत को एकाग्रचित्त होकर सुनने के लिए कहकर, वृत्तांत को इस प्रकार सुनाने लगे।

रावणस्य वधार्थाय कृतोद्योगः सकार्मुकः।
शेषाचलसमीपे तु यदा रामः समागतः।।[2]

उस ऋष्यमूक पर्वत से श्रीराम, अनेक वानरों सहित, रावण-वध के लिए धनुर्बाण को धारण करके इस शेषाचल पर आए थे।

श्रीरामचंद्र से अपने आश्रम को आने के लिए अंजना देवी का प्रार्थना करनी

अंजनादेवी का पुत्रसंतानार्थिनी हो, मतंग महर्षि की आज्ञा के अनुसार, किष्किंधा से वेंकटाद्रि को आकर, वहाँ स्थित आकाशगंगा के अभिमुख होकर तपस्या करना, तत्फल-स्वरूप हनुमान का जन्म होना- इत्यादि विषय-विवरण स्कांद-ब्रह्मांड पुराणों में उल्लिखित हैं। निम्नदत्प्रमाणों से स्पष्ट होता है कि तदनंतर काल में अंजनादेवी वहीं अपने लिए स्थिर-आवास स्थान बनाके रहने लगी।

तदा सत्यंजना देवी वायुसूनोर्महात्मनः।
जननी पुरतो गत्वा रामं रक्तांतलोचनम्।।[3]

पूज्य हनुमान की मातृदेवता, पतिव्रता उस अंजनादेवी ने रक्तांतलोचनी हो, श्रीरामचंद्र को...

नमस्कृत्य महाभागा वचनं चेदमब्रवीत्।
''प्रतीक्षंती महाबाहो! त्वदागमनमद्भुतम्।।[4]

नमन करके ऐसा कहा ''हे पिताश्री! तुम्हारे अद्भुत आगमन के लिए इस पर्वत पर प्रतीक्षा कर रही हूँ।

तिष्ठाम्यस्मिन् गिरौ राम! मुनयोऽपि च कानने।
तपः कुर्वंति सततं त्वदागमनकांक्षया।।[5]

तुम्हारे आगमन की इच्छा में मुनींद्र-गण भी इस अरण्य में निरंतर तप कर रहा है।

तान्त्सर्वान्त्समनुज्ञाप्य गंतुमर्हसि सुव्रत!
इत्युक्तः प्राह रामोऽपि हनूमन्मातरं प्रति।।[6]

''मैं तुझसे यह प्रार्थना कर रही हूँ कि तुम कृपया उन सब के प्रति अपना प्यार दिखाएँ और उसके बाद ही यहाँ से वापस जाना''- इस प्रकार अंजनादेवी ने श्रीराम से प्रार्थना की थी।

1-2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथमभागांतर्गत - ४१-३-८) प्रथम भाग, पृ.-३३, ३४ ति.ति.दे. प्रकाशन

3-6) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथमभागांतर्गत - ४१-९-१२) प्रथमभाग, पृ.- ३४, ति.ति.दे. प्रकाशन

श्रीराम :

'कालात्ययो भवेद्देवि! मयि तत्र समागते।
ममेदानीं वरारोहे! कार्यस्य महती त्वरा।।[1]

अंजनादेवी की प्रार्थना का समाधान देते हुए श्रीरामचंद्र ने कहा- ''माँ अगर मैं इस वक्त वहाँ आता, तो अपने कर्तव्य निभाने में देरी हो जाती है। अपने कर्तव्य को निभाने के लिए मुझे शीघ्र ही जाना है।''

पुनरागमने देवि! तथा भवतु सुंदरि!'।
इत्युक्तं राघवेणे तद्वाक्यं श्रुत्वा महामतिः।।[2]

अपने पुनरागमन के समय मैं अवश्य आऊँगा। तब, महान् पंडित

हनूमान् प्रणतो भूत्वा वाक्यं चेतदुवाच ह।
'स्थातव्यमत्र भवता यत्र कुत्राऽपि सर्वद।।[3]

हनुमान ने श्रीराम की नमन करते हुए इस प्रकार कहाँ- ''रामा! आपको, इस वक्त किसी न किसी जगह विश्राम करना है।''

यस्माच्छ्रांता महासेना वानराणं तरस्विनाम्।
अयं च मार्ग एवाद्रिः सदा पुष्पफलद्रुमः।।[4]

तेजगति से आने के कारण वानरसेना भी थकी हुई है। यह पर्वत उसी रास्ते पर है, जहाँ से हमें अपने गंतव्य पहुँचना है और उस मार्ग हमेशा पुष्प-फलों से भरा हुआ रहता हैं।

बहुप्रस्रवणोपेतो बहुकंदरसानुमान्।
सुस्वादुकंदमूलोऽयं अंजनाख्यो महागिरिः।।[5]

सरोवरों से, अनेक गुफाओं से पहाडियों से और मीठे कंदमूलों से समृद्ध यह पर्वत ही अंजनाद्रि कहलाता है।

मधूनि संति वृक्षेशु बहूनि गिरीकंदरे।
वेत्थ सर्वं महाबाहो! यथेच्छसि तथा कुरू।।[6]

इन पहाडी गुफाओं में रहे वृक्षों पर शहद के छत्ते रहते हैं। यह एक निवास-योग्य प्रान्त है। बाकी सब आप खूब जानते हैं। जैसा आप चाहते है, वैसा ही करें।

इत्युक्तो वायुपुत्त्रण श्रीरामः प्रहसन्नसौ।
जानेऽहमंजनासूनो! तथाऽपि वचनं तव।।[7]

हनुमान के ऐसे कहने पर श्रीराम ने मंदहास करते हुए कहा - मैं जानता हूँ। फिर भी

श्रोतव्यं हि महाबाहो! गच्छाग्रे त्वं हरीश्वर!।
इत्युक्त्वा वाहिनीं तां च कर्षन् पर्वतमाययौ।[8]

1-8) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत - ४१-१३-२०) प्रथम भाग, पृ.-३४, ३५, ति.ति.दे. प्रकाशन

हनुमान! तुम्हारी बातें सुनने योग्य हैं। तुम आगे चलते बनो।'' ऐसे कहकर श्रीराम भी सेना सहित वेंकटाचल पर पधारे।

अंजनाद्रि पर श्रीराम का आगमन

नागकेसारमालूरपुन्नागतरुशोभितम्।
चंपकाशोकवकुळचूतकिंशुकराजितम्।[1]

श्रीराम अपनी सेना सहित चलते हुए बिल्व, नागचंपा, चंपक, मौलसरी, आम इत्यादि वृक्षों से भरे.....

मयूरशारिकालापैः कोकिलानां स्वनैरपि।
शुकमंजुलनादैश्च कपोतस्वनहुंकृतैः।।[2]

मयूर, बिच्छी, कोयल, तोते, कबूतर - आदि पक्षियों से की गई ध्वनियों से प्रतिध्वनित....

शोभितं फलपुष्पैश्च वेङ्कटाख्यं नगोत्तमम्।
निर्लोमा नामतः कश्चिद्विप्रो वेदविदां वरः।।[3]

फल-फुष्पों से शोभित 'वेंकट' नामक उस श्रेष्ठ पर्वत पर आ पधारे। उस श्रेष्ठ पर्वत पर, वेदविदोत्तम 'निर्लोम' नामक एक ब्राह्मणोत्तम....

स्वयंभुवं समुद्दिश्य ब्रहमलोकजिगीषया।
तपश्चकार धर्मात्मा पर्वतोत्तरदेशतः।।[4]

ब्रह्म लोक प्राप्त करने के उद्देश्य से ब्रह्माजी के लिए तप कर रहा था।

आगत्य भगवान् ब्रह्मा तमाह द्रविजसत्तमम्।
''रामं दृष्ट्वा ससौमित्रं ब्रह्मलोकमवाप्स्यसि''

इत्युक्तो ब्रह्मणा पूर्वं दृष्ट्वा रामं परात्परम्।।[5]

संतुष्ठ ब्रह्मा ने प्रकट होकर उस ब्राह्मणोत्तम से इस प्रकार कहा- ''तुम सलक्ष्मण-रामचंद्र के दर्शन करके ब्रह्म लोक प्राप्त कर सकते हो'' अब उस निर्लोम ने वहाँ पधारे रामचंद्र को देखकर

फलमूलाशनैः सम्यक् पूजयित्वा तमब्रवीत्।
''आद्य मे सफलं जन्म त्वन्मुखांभोजदर्शनात्।।[6]

फलों से और कंदमूलों से श्रीराम की अर्चना की और उसने श्रीरामचंद्र से कहा- आप के वदनारविंद-दर्शन से आज मेरा जन्म धन्य हुआ है।

1-6) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत - ४१-२१-३२) प्रथम भाग, पृ.-३५,३६, ति.ति.दे. प्रकाशन

चिरकालार्जितं स्वामिन्! फलितं तप उत्तमम्।
अनुज्ञापय मां राम! ब्रह्मलोकं प्रतीश्वर!''[1]

स्वामी! चिरकाल पर्यन्त तपस्या करके उत्तम फल को आर्जित किया हूँ। राम! ब्रह्मलोक-गमन के लिए मुझे आज्ञा दीजिए।''

इत्युक्तः स तु धर्मात्मा ''तथेवाऽचर भो द्विज!।''
इत्युकत्वा तं तु विप्रेंद्रमारुरोह नगोत्तमम्।।[2]

ब्राह्मणोत्तम निर्लोम के ऐसे कहने पर, धर्मात्मा श्रीराम ने सम्मति और अनुमति दी।

शापमोक्षं च यक्षणां केषांचित् पर्वतोत्तमे।
दत्वा रामोऽजनादेव्या आश्रमं पुण्यवर्धनम।।[3]

उसी पर्वत में वास कर रहे शापग्रस्त यक्षों को शापविमुक्त करके, अंजनादेवी के पुण्यवर्धक आश्रम को ...

आकशगंगानिकटे प्रतिपेदे महामानाः।
तया स पूजितः सम्यक् तस्यै दत्त्वा वरोत्तमम्।।[4]

आकाशगंगा के निकट ही स्थित अंजनादेवी के आश्रम को जाकर, वहाँ अंजनादेवी से की गई पूजाएँ स्वीकार कर, श्रीराम ने उसको वरदान प्रदान किया।

आपृच्छ्य तां महाभागां स्वमिपुष्करिणीं ययौ।
तत्र रामो महातेजाः सौमित्रिर्मारुतात्मजः।।[5]

सुग्रीवश्चांगदश्चैव जांबवान् नील एव च।
चक्रुः स्नानं महातीर्थे सर्वत्र विजयप्रदे।।[6]

अधिक तेजस् से प्रकाशित हो रहे श्रीरामचंद्र, लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, अंगद, जांबवान् और नील इन सभी ने पुष्करिणी तट पर पहुँचकर वहाँ पवित्रस्नान किया था।

वैकुंठ गुफा में प्रवेश हुए वानरों का वृत्तांत -

सूत महर्षी ने वैकुंठ गुफा में प्रवेश हुए वानरों के वृत्तांत को मुनि-गण को इस प्रकार बताया....

श्रीरामचंद्र की वानरसेना मं से गज, गवाक्ष जैसे कुछ वानरवीरों ने कौतूहल से ईशान्य भाग में स्थित वैकुंठ-गुफा में प्रवेश किया था। (यह गुफा आज भी निर्देशित स्थान पर विद्यमान है। चित्र में देखी जा सकती है।)

1- 6) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत - ४१-२१-३२) प्रथम भाग, पृ.-३५, ३६, ति.ति.दे. प्रकाशन

श्री सूत :

स्वामिपुष्करिणी यत्र तत ईशान्यभागतः।
गजो गवाक्षो गवयः शरभो गंधमादनः।।[1]

स्वामि-पुष्करिणी के ईशान्य भाग पर गज-गवाक्ष, गवयु, शरभ, गांधमादन,

मैंदश्च द्विविदश्चैव सुषेणश्च महामतिः।
कांचिद्गुहां तमोरुद्धां प्रविष्टास्तत्र वानराः।।[2]

मैंद, द्विविद, सुषेण इत्यादि वानरों ने घनांधकार से भरी एक गुफा के अंदर प्रवेश किया।

उन्निद्रनेत्राः सवेऽपि सिंहतुल्यपराक्रमाः।
जग्मुस्ते तमसाविष्टां सुदूरं तां गुहां तदा।।[3]

सिंह-सदृश पराक्रमी वानर गण अंधेरी गुफा में बहुत दूर चले गए।

दद्दसेऽत्र महाज्योतिः सूर्यकोटिरिवोदिता।
ज्योतिर्गणानं तटितां मिळितानामिवाबभौ।।[4]

उन्होंने कोटि सूर्यों का उदय होने का समान दिखी अनेक कांति-किरणों की विद्युल्लताओं के प्रकाश से युक्त एक महान ज्योति को देखा था।

तत्र काचित्पुरी रम्या तप्तहाटकनिर्मिता।
कवाटतोरणत्पुरी रम्योद्यानशतैर्युता।।[5]

वहाँ पिघलाए हुए स्वर्ण से निर्मित कवाट-तोरणों भरित व सौ रमणीय उद्यानों से शोभित एक नगर है।

स्फटिकोपलवच्छुद्धजलनद्या समावृता।
रत्नमाणिक्यवैडूर्यमुक्तानिर्मितगोपुरा।।[6]

वह नगर स्फटिक जैसा स्वच्छता-भरा है। इसका गोपुर, रत्नमाणिक्य-वैडूर्य-मोतियों से निर्मित है।

अनेकमंडपैर्युक्ता प्रासादशतसंकुला।
महावीथीशतोपेता रथमातंगसंयुता।
वरनारीगणोपेता सर्वमंगळशोभिता।।[7]

इस पुरी में अनेक मंडप, सैकडों देव-प्रासाद, विशाल वीथियाँ, अनेक रथ, गज-समूह हैं। इस प्रकार की विशेषताओं के साथ-साथ, वानरों ने अनेक स्त्री-पुरुषों से युक्त सुंदरता भरी एक सर्व-विध-मंगल-शोभित पुरी को देखा।

1-7) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत - ४२-१-८) प्रथमभाग, पृ.-३७, ३८, ति.ति.दे. प्रकाशन

शंखचक्रधरास्तत्र सर्वे चेव चतुर्भुजाः।
सशुक्लमाल्यवसनाः सर्वभरणभूषिताः।
दिव्यचंदनलिप्तांगाः परमानंदपूरिताः।।[1]

उस नगर के सभी वासी चार होथों से, शंख-चक्रों को धारण किए, श्वेत वस्त्र पहने, श्वेत मालाओं को धारण किए, समस्त आभरणों से अलंकृत होकर दिख रहे थे। वे चंदन लेपन किए, परमानंद-भरित दिख रहे थे।

तन्मध्ये सुमहद्दिव्यं विमानं सूर्यसन्निभम्।
अत्युन्नतमहामेरुशृंगतुल्यं मनोहरम्।।[2]

इस नगर के मध्य-भाग में सूर्य के समानवाली कांति से, मेरुपर्वत जैसी ऊँचाई से.....

बहुप्रकाशसंपन्नं मणिमंडपसंयुतं।
भेरीमृदंगपणवमर्दलध्वनिशोभितम्।।[3]

बहु प्रकाशित मणि-मंडप से युक्त है और भेरी-मृदंग-प्रणव-मर्दल ध्वनियों से शोभित....

नृत्तवादित्रसंपन्नं किन्नरस्वनसंयुतम्।
ददृशुस्तत्र पुरुषं पूर्णचंद्रनिभाननम्।।[4]

नृत्य-वाद्यों से और किन्नरों से भरे हुए एक सुंदर महादिव्य विमान को वानरों ने देखा था। उस दिव्य विमान में दिखे पूर्णचंद्र के समान वदन से भासित एक महापुरुष के दर्शन किए।

चतुर्बाहुमुदारांगं शंखचक्रधरं परम्।
पीतांबरधरं सौम्यमासीनं कांचनाऽसने।।[5]

वह महापुरुष चार भुजाओं से शंख-चक्रों को लिए, रेश्मी वस्त्रों को पहने, स्वर्णासन पर विराजमान थे।

फणामणिमहाकांतिविराजितकिरीटिनम्।
भोगिभोगे समासीनं सर्वाभरणभूषितम्।।[6]

मणियों के प्रकाश से भासमान होता हुआ वह महापुरुष आदिशेष पर सर्वाभरणविभूषित हो विराजमान था।

आसनोपरि विन्यस्तवामेतरकरांबुजम्।
प्रसार्य दक्षिणं पादमुद्धते वामजानुनि।।[7]

आसन पर बैठे श्री महाविष्णु अपने दाहिने हाथ को फैलए, बाएँ पैर के घुटनों पर रखे दर्शन दे रहे थे।

प्रसार्य वामहस्ताब्जं श्रीभूमिभ्यं निषेवितम्।
सेवितं नीळया देव्या वैजयंत्या विराजितम्।।[8]

1-8) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत - ४२-८-२८) प्रथम भाग, पृ.-३८-४० ति.ति.दे. प्रकाशन

श्रीवत्सकौस्तुभोरस्कं वनमालाविभूषितम्।
कृपारसतरंगौघपूर्णनेत्रांबुजद्वयम्।।[1]

श्री-भू-नीला देवियों के द्वारा संपूजित थे। उस महापुरुष के कंठ में वैजयंतीमाला, वक्षःस्थल सें श्रीवत्सनामक एक तिल और वनमाला शोभित हैं। कृपारसतरंगसमूह नेत्र पद्मों से विराजमान उस महापुरुष को सभी वानरों ने देखा था।

शशिप्रभासमच्छत्रं चामरव्यजने शुभे।
हस्ताभ्यां धारयंतीभिः नारीभिः सेवितं मुदा।।[2]

चंद्र-कांति के समान भासित छत्रों को और विंजामरों को पकडी हुई स्त्रियाँ उस महापुरुष को अतीव संतोष से नमन करती हुई उस महापुरुष की सेवा कर रही थीं।

दृष्ट्वा ते वानराः सर्वे विस्मिताः शुभलोचनाः।
अत्रांतरे महाभागः पूरुषः परमाद्भुतः।।[3]

इस दृश्य को देखकर वानर-गण आश्चर्य चकित हो गया। उस समय, वहाँ के रहे एक परमाद्भुत महापुरुष, जो...

चतुर्भुजो दंडहस्तो दृष्ट्वा त्वरितविक्रमः।
दंडमुद्यम्य तान् सर्वान् भर्त्सयामास वै तदा।।[4]

चतुर्भुजी और, हाथ में दंड लिए खडे। एक पराक्रमी व्यक्ति था, उसने इन वानरों को देखकर, दंड से उन्हे घबराया।

ते सर्वे वानरा भीता निर्जग्मुर्गिरिगह्वरात्।
निर्गत्य सहसा तेभ्यः प्रोचुर्दृष्टं यथातथा।।[5]

सभी वानर-गण ने बाहर आकर वहाँ रहे बाकी वानरों को सारा वृत्तां बताया।

'रावणस्तु महामायी कामरूपी च वंचकः।
अन्यो वा रावणोवाऽथ शोधनीयः प्रयत्नतः।।[6]

इत्युकत्वा वानरास्ते च सर्वे संभूय संभ्रमात्।
यत्र पूर्वं गृहा दृष्टा तत्रागच्छन्वनौकसः।।[7]

बाकी वानरों ने संदेह किया कि संभवतः वह महापुरुष ही रावण है, जो महामायावी, कामरूपी और वंचक है। वह असल में रावण है था कोई और? - इसे जानने के लिए सभी वानर मिलकर गुफा के पास गए।

नापश्यन्नगरीं चिह्नं वा दृष्टपूर्वकम्।
भ्रमात्तमंजसा शेलं विचिन्वंतश्च पर्वतः।।[8]

वहाँ, उन वानरों ने पहले जाकर गुफा के अंदर जो कुछ, देखा था, इस बार, कुछ भी दिखाई नहीं देने के कारण उन्होंने उसे भ्रम समझा।

1-8) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत - ४२-८-२८) प्रथम भाग, पृ.-३८-४० ति.ति.दे. प्रकाशन

'भ्रम' इत्येव निश्चित्य तूष्णीमासन् वनौकसः।
ततः प्रभाते विरते रामो राजीवलोचनः।।[1]

उसे निश्चित रूप में 'भ्रम' निर्धारण करके सभी वानर मौन हो कर वापस लौटे। प्रभात समय में श्रीराम...

लक्ष्मणेन सह भ्रात्रा वानरेंद्रेण धीमता।
सह सैन्यैर्महातेजाः प्रतस्थेऽरिजिगीषया।।[2]

भ्राता लक्ष्मण के साथ, वानर राज सुग्रीव के साथ और सेना को भी साथ लिए रावण से युद्ध करने निकले।

जित्वा च रावणं युद्धे प्राप्य सीतां महाबलः।
अयोध्यां पुनरभ्येत्य भ्रातृभिः सहितोऽनघः।।[3]

तदनंतर, महाबली और पुण्यात्मा श्रीराम, युद्ध में रावणासुर को पराजित करके और सीतादेवी को प्राप्त करके अपने भाइयों से अयोध्या में रह रहे थे।

प्राप राज्यं स्वयं रामः स्वामितीर्थस्य वैभवात्।
इति श्रुतं मया पूर्वमब्रुवं भक्तामहम्।।[4]

सूत महर्षि ने शौनकादि मुनियों से कहा था- ''मैंने आपसे पहले ही मुझसे श्रुत एक बात बताई कि स्वामिपुष्करिणी के माहात्म्य से ही श्रीराम विजय प्राप्त करके अपना राज्य पहुँचे।

वैकुंठ-गुफा-प्रभाव-वर्णनमुनि-गण

मुनय :

वैकुंठाद्रौ गुहा दृष्टा काचिद्भानरसत्तमैः।
इत्युक्तं भवता सूत! वेदवेदांगपारग!
गुहा का? वद नो ब्रह्मन्! श्रोतुं कौतूहलं हि नः।।[5]

शौनकादि मुनियों ने सूत महर्षि से संभाषण करते हुए पूछा था- ''हे वेदवेदांत पारंग, सूत महर्षि! आपने कहा था कि वानरों ने वैकुंटाद्रि की एक गुफा में प्रवेश किया था। वह गुफा क्या है? उसके बारे में विस्तार में हमें ज्ञात कराइए।'' इस प्रश्न का समाधान-स्वरूप सूत महर्षि ने मुनियों को इस प्रकार विवरण दिया।

श्री सूत :

श्रूयतामभिधास्यामि देवमाया मया श्रुता।
वैकुंठाख्या गुहा सा तु दुर्ज्ञेया मुनियोगिभिः।।[6]

मैंने सुना था कि यह देवमाया थी। मुनिगण भी वैकुंठगुफा के बारे में जान नहीं सकते।

1-4) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराहपुराण प्रथम भागांतर्गत - ४२-८-२८) प्रथम भाग, पृ.-३८-४० ति.ति.दे. प्रकाशन

5-6) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराहपुराण प्रथम भागांतर्गत - ४२-२९-३६) प्रथम भाग, पृ.-४० ति.ति.दे. प्रकाशन

दुर्ज्ञेया सा तु देवैश्च मायया परमात्मनः।
लीलया विष्णुना पूर्वं वानराणां प्रकाशिता।।[1]

वह गुफा, जो सर्वों के लिए ज्ञात नहीं हो सकती है(जानने के लिए दुस्साध्य है) इस गुफा को, परमात्मा की माया के कारण और विष्णु-लीला के कारण, पूर्व, वानर-समूह देख सका।

तस्यां गुहायां ये दृष्टाः शंखचक्रधरा अपि।
ते तु मुक्तास्तथा नित्याः परमानंदरूपिणः।।[2]

उस गुफा में दिखे सभी शंख-चक्रधारी अमर हैं और विमुक्त हैं जो परमानन्द के स्वरूपी हैं।

भुंजते ब्राह्ममानंदमाविर्भूतगुणाश्च ते।
संचरन्तः कामरूपा लोकान् भगवता सह।।[3]

वे ब्रह्मानंद का अनुभव करते हुए, कामरूपधारी बनकर भगवान के साथ सर्वदा विविध लोकों में विचरण करते रहते हैं।

आनंदरूपाः कैंकर्यं कुर्वंतो ब्रह्मणो हिते।
वसंति तत्र सततं ब्रह्मणा परमेष्ठिना।।[4]

वे आनंद स्वरूपी हो परमात्मा की निरंतर सेवा करते हुए, ब्रह्मा के निकट रहते हुए उस गुफा में ब्रह्मा के साथ निरंतर वास करते हैं।

यदा यदा कलिः कालो यदा वा जनता गिरौ।
तदा गुहायां तस्यां तु वसिष्यंतीति नः श्रुतम्।।[5]

हमने सुना कि जब कभी कलियुग आता है और जनता अधिक हो जाती है, तो वे उस समय, उस गुफा में वास करते हैं।

एवं प्रभावः शेषाद्रिः वसत्यस्मिन् जगन्मयः।
क्रीडते लीलया युक्तो नित्यैर्मुक्तैश्च सूरिभिः।।[6]

शेषाद्रि का माहात्म्य उतना गरिमापूर्ण है। इस पर्वत पर जगदंतर्यामी परमात्मा, लीला स्वरूपी हो नित्यसूरों से सदा क्रीडित रहता है।

नीलमेघनिभं श्यामं नीलोत्पलविलोचनम्।
नीलाद्रिशिखरस्थं तं भजाम्यत्रैव सुस्थितम्।।
गुहाख्यानंश्रुतं किं वा युष्माभिर्वीतकल्मषैः
शृण्वतामिदमाख्यानं कलिदोषमलापहम्।
धन्यं यशस्यमायुष्यं पुत्रपौत्राभिवर्धनम्।।

1-6) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत - ४२-२९-३६) प्रथमभाग, पृ.-४०, ति.ति.दे. प्रकाशन

इतीरितः शेषगिरेः प्रभावः श्रुतो मया योगिनरेभ्य आदराः।
समस्तजीवात्मसमष्टिरूपिणो हरेः प्रभावोऽपि करींद्रगोप्तुः।।[1]

नीलमेघवर्ण के शरीर व नीलोत्पल के समान काले नेत्रों से शोभित और नीलाद्रि पर निवास करने वाले उस परमात्मा को मैं नमन कर रहा हूँ। हे मुनींद्र-गण! आप सभी पापरहित है और आप सभी ने इस गुफा के बारे में सुना है न। जो इस कलिदोषहारी वृत्तांत को सुनते हैं, वे धन्य हैं। इस वृत्तांत को श्रवण करने से कीर्ति, दीर्घायु वंशाभिवृद्धि-इत्यादि की प्राप्ति होती है। इतने महत्वपूर्ण शेषाद्रि प्रभाव को मैंने भक्ति और श्रद्धा से योगीन्द्रों के द्वारा सुना था। गजेंद्र रक्षक वेंकटाचलपति के प्रभाव को प्रेम से आप को बताया''- इस प्रकार सूतमहर्षि ने शौनकादि मुनियों से कहा था।

तिरुमला श्रीनिवास की सेवाओं के अंतर्गत पठित वेंकटाचलमाहात्म्य के श्लोकों के द्वारा पुराणों में रहे सत्य और सत्व दोनों को हम पहचान सकते हैं।

अगर हम आंजनेय-जन्मस्थान के नाम से घोषित हुए अन्य कुछ क्षेत्रों का परिशीलन करें, तो हमें इस विषय को सिद्ध करने वाले प्रमाण कहीं भी नहीं मिलते हैं।

तिरुमला क्षेत्र, वैष्णव क्षेत्र के रूप में प्रसिद्ध है। सभी पुराणों में श्री वेंकटेश्वर-वैभव कीर्तित है।

पसिंडि वेंकटत्तुरैवर के समकालीन श्री ताल्लपाक अन्नमाचार्युलु (सन् १४०८-१५०३)

प्रविमल द्विपद प्रबंध रूपमुन
नवमुगा रामायणमु, दिव्यभाष
ना वेंकटाद्रि महात्म्यमंतयुनु
गाविंचि, रूचुल शृंगारमंजरियु
शतकमुल् पदिरेंडु सकल भाषलनु
प्रति लेनि नाना प्रबंधमुल् चेसि।[2]

के पोता चिन्नन्ना(चिन तिरुवेंगलनाथ) ने अपने द्विपद काव्य में लिखा था कि अन्नमाचार्युलु ने संस्कृत भाषा में वेंकटाद्रि माहात्म्य को लिखा था। अन्नमाचार्युलु से संचित वेंकटाद्रि माहात्म्य अब उपलब्ध नहीं है। अन्नमाचार्य ने अपने एक कीर्तन में उल्लिखित किया कि भागवत् ब्रह्मांड पुराण, वामनादि पुराणों में वेंकटाद्रि माहात्म्य के संबंधित कथाएँ विद्यमान हैं।

श्री वेंकटेशुडु श्रीपतियु नितडे
पावनपु वैकुंठ पतियुनु नितडे.
भगवतंलो जेप्पे बलरामु तीर्थयात्र
नागमोक्तमैन देव मात डीतडे

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (वराह पुराण प्रथम भागांतर्गत - ४२-३७, ३८) प्रथम भाग, पृ.-४१, ति.ति.दे. प्रकाशन

2) अन्नमाचार्य जीवन चरित, पृ-४९.

बागुगा ब्रहमांडपुराण पद्धति यातडीतडे
योगमै वामनपुराणोक्त दैवमीतडे.
वेलयु सप्तऋषुलु वेदकि प्रदक्षिणमु
ललर जेसिन देवुडातडीतडे
नेलवै कोनेटि पोंत नित्यमु गुमारस्वामि
कलिमि दपमु सेसि कन्न देवुडीतडे.
येक्कुवै ब्रहमादुलद्दुकु नेप्पुडु निंद्रादुलु
तक्कक कोलिचियुन्न तत्वमीतडे
चक्कनारदादुल संकीर्तनकु जोक्कि
निक्किन श्रीवेंकटाद्रि निलयुडु नीतडे।[1]

१७ के शताब्द के श्रेष्ठलूरि वेंकटाचार्य ने अपनी रचना ''श्रीनिवास शेवधि'' काव्य में पुराणों में उल्लिखित श्रीनिवास वैभव का बयान किया।

शेषाचलोरु वैभवम्
प्रकटितालं कृतालं क्रियास्पद वर्णनलनु

वाराह वामन ब्रह्मांड पाद्म
गारूड स्कांद मार्कंडेय मुख्य।
बहुपुराणोक्ति संबंधंबु वलन
गाहनमै पेनुगोन्न कथ चिक्कुदीर्चि।।

श्री श्रेष्ठलूरि वेंकटाचार्य ने व्यक्त किया कि श्रीनिवास की कथा किस प्रकार वेंकटाद्रि माहात्म्य में रंजक बनी, इसी विषय को 'श्रीनिवास शेवधि' में अभिव्यक्त किया गया है।

❀❀❀

1) ताल्लपाकपदसाहित्य, संकलन-१, संकीर्तन- ४२५, १९८०

वायुदेव द्वारा माता अंजना को फल प्रदान किया जाना

7. हनुमान का जन्मस्थल तिरुमला है।

(भौगोलिक प्रमाणों से)

तेलुगु मूल - आचार्य राणीसदाशिवमूर्ति अनुवाद - श्रीमती आर.वाणीश्री

विषय का सारांश

1. हनुमान का जन्मस्थान तिरुमला या अंजनाद्रि है - इस सत्य को सिद्ध करने के अनेकानेक प्रमाण, पौराणिक, भक्ति साहित्य, काव्य, पुरालेख इत्यादि से प्राप्त हैं। इस प्रकार के प्रमाण, हनुमान-जन्म स्थान कहलाने वाले अन्य स्थानों के लिए उपलब्ध नहीं है।
2. संसार की भौगोलिक-व्यवस्था में भारत देश की पूर्वी घाटियाँ हैं - तिरुमलागिरि(पर्वत)।
   पूर्वी घाटों में तिरुमलागिरि-दक्षिण-भाग, मध्यभाग और उत्तरभाग।
3. इस अंजनाद्रि या अंजनगिरि के बारे में 'बृहत्संहिता' में उपलब्ध विशेषताएँ।
4. कथा-दृष्ट्या तथा भौगोलिक विषय-दृष्ट्या पौराणिक-प्रमाणों का बल।
5. आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार भी संसार की भौगोलिक-व्यवस्था में भारतदेश की पूर्वी घाटी है - 'तिरुमलागिरि'।
6. पूर्वी घाटियों की शेषाचल - वेलिकोंडा श्रेणियों में तिरुमलागिरि विद्यमान हैं।
7. पौराणिक भूगोल में रही पूर्वी घाटियाँ।
8. माहेन्द्र गिरि-श्रेणी --> आन्ध्रा में नदियाँ और पर्वत --> उन नदियों में सुवर्णमुखी नदी --> उन पर्वतों में तिरुमलागिरि।
9. आन्ध्रा में कृष्णा, गोदावरी नदियों के बीच में रहे प्रदेश।
10. 'बृहत्संहिता' में कूर्म विभाग।
    इसका पूरा विवरण इस निबंध में देख सकते हैं।

विषय-प्रवेश

सारे भूगोल में हिंदू धर्म का अनुसरण करनेवालों के तथा हिंदू-धर्म प्रेमियों के आराध्य देवता हनुमान हैं। राम के दास के रूप में विनम्रता का शिखर, हनुमान जितना मशहूर है, उतना ही वे महावीर के रूप में, अष्ट सिद्धियों के वशंकर के रूप में और महामहिमान्वित के रूप में भी मशहूर हैं। वे शैशव में ही इतना महाबलशाली थे कि जन्म लेते ही अपनी भूख मिटाने के लिए उगते हुए सूर्य को फल समझकर, उसे निगलने के लिए सूर्यमंडल की ओर तेजी से उडने लगे। ऐसे महा बलवान हनुमान का जन्म भारतदेश में हुआ - इस तथ्य को श्रीमद्रामायण तथा अनेक पुराण निर्धारित कर रहे हैं। लेकिन, इनका जन्म भारतदेश में कहाँ हुआ? -- इस बात पर लोगों के भिन्न-भिन्न विश्वास हैं।

कुछ लोग हनुमान का जन्मस्थान उत्तर भारत कहते हैं, तो कुछ लोग कहते हैं - मध्यप्रदेश। और कुछ लोग कर्नाटक को हनुमान-जन्मस्थान कहते हैं। इन्होंने केवल अपने-अपने विश्वासों के आधार पर इन प्रदेशों को हनुमान - जन्मस्थान के रूप में घोषित करना ही नहीं, बल्कि वहाँ, भक्ति और श्रद्धा से मंदिरों का निर्माण करके, उन प्रदेशों को यात्रास्थलों (पुण्य क्षेत्रों) के रूप में भी बना दिया था।

इतना ही नहीं, उन क्षेत्रों को स्थानीय लोगों के लिए और सुदूर प्रांतों से आनेवाले श्रद्धालुओं के लिए भक्ति केंद्र के रूप में भी विकसित किया। परंतु, ये सब विश्वासों पर आधारित विषय हैं। किंतु, उपर्युक्त विश्वसनीय अंशों से भिन्न होकर, तिरुमला के अंजनाद्रि को हनुमान-जन्मस्थान कहने में पौराणिक, भक्ति साहित्य, काव्य, पुरालेख इत्यादि प्रमाण मौजूद हैं। इतने प्रमाण, अन्य प्रदेशों के विषय में उपलब्ध नहीं हैं। इस लेख में आधुनिक शास्त्रज्ञों के द्वारा मिली जानकारियों के अनुसार तथा पौराणिक और साहित्यिक प्रमाणों के अनुसार, भौगोलिक विशेषताओं सहित तिरुमला में स्थित अंजनाद्रि के अस्तित्व का निर्धारण और वहाँ घटित हनुमान-जन्म का निर्धारण, ब्रह्मांड पुराण तथा स्कंद पुराणों में संदर्भित विवरणों से किया गया है।

कथा एवं भौगोलिक विषय की दृष्टि से पौराणिक प्रमाणों का बल

भारतीय साहित्य में आंजनेय-जन्मस्थल को निर्धारित करने में उपलब्ध सभी प्रकार के प्रमाणों में से प्रमुख हैं- ''साहित्यिक प्रमाण।'' ये अनेक प्रकार के हैं, जैसे इतिहास, पुराण, उत्तरकाल के भक्तिसाहित्य, शिलालेखों में लिखित सामग्री इत्यादि। वर्तमान संदर्भ में इतिहास पुराणों में से आंजनेय-जन्मस्थल निर्णय से संबंधित प्रस्तावनाओं को उल्लिखित करते हुए आंजनेय-जन्मस्थान को सिद्ध करने का एक प्रयास ही है यह निबंध।

आधुनिक शास्त्रज्ञों के अनुसार भारत देश की भौगोलिक व्यवस्था में पूर्वी घाटियों में तिरुमलागिरि - पूर्वी घाटियों में तिरुमला(पर्वत)

भारत द्वीपकल्प की पूर्व दिशा में समुद्र के किनारे पृथक-पृथक-सी दिखनेवाली पर्वत-पंक्तियाँ ही पूर्वी घाटियाँ कहलाती हैं। उत्तरदिशा में ओडीशा से लेकर दक्षिण दिशा के तमिलनाडु तक ये पर्वत-पंक्तियाँ व्याप्त हैं। इस प्रकार ये ओडिशा, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाणा, कर्नाटक, तमिलनाडु इत्यादि राज्यों में फैले हुए हैं। ये पर्वत पंक्तियाँ इस प्रकार विच्छिन्न रहने का प्रधान कारण है - इन घाटियों में से बहनेवाली नदियाँ। गोदावरी, महानदी, कृष्णा, कावेरी आदि नदियाँ इन घाटियों को निरंतर टकराती हुई, घाटियों के भूभाग को निरंतर काटती हुई प्रवाहित होती हैं। इस प्रकार प्रवाहित होती-होती, आखिर में, ये सारी नदियाँ बंगाल की खाडी में मिल जाती है। भूगोल शास्त्रज्ञों का यह अभिप्राय है कि दुनिया के प्रस्तुत मानचित्र में दिखे महाद्वीपों के विभजन के पूर्व ही रोडिनिया महाद्वीप अलग होने के समय में और गोंड्वाना महाद्वीप बनने के समय में, करीब बीस से ५०० लाखों वर्षों के मध्यकाल में, भारतदेश के पश्चिम घाटियों से काफी पहले ही पूर्वी घाटियों का गठन हुआ।

सैकडों लाखों वर्षों के पूर्व से ही खंडित होकर व्याप्त हुई ये पर्वत-पंक्तियाँ, बंगाल-अखाडी की तटवर्ती भूमि के समानांतर में फैली हुई हैं। मोटे तौर पर इन्हें तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं जैसे दक्षिण भाग, मध्यभाग और उत्तर भाग।

दक्षिण भाग

पूर्वी घाटियों के दक्षिण में बिल्कुल अंत में रही पहाडियाँ 'सिरुमलै', 'कारंतमलै' नामों से पुकारी जाती हैं। ये कम ऊँचाई की होने के कारण छोटी-छोटी पहाडियों जैसी दिखती हैं। कावेरीनदी की उत्तर दिशा में रहे उत्तर तमिलनाडु में कोल्लिमलै, पच्चाय मलै षेवराअय् (सर्वारायन), कालरायन्, चित्तेरि, जावादु, पालमलै, मेट्टूरु हिल्स नामों की पहाडियों की पंक्तियाँ हैं। ये भी पूर्वी घाटियों के भाग ही हैं। कर्नाटक राज्य के चामराजनगर जिले के माले महादेश्वर आलय इन्हीं पूर्वी घाटियों में स्थित है। इसी तरह, केरल राज्य के वयनाड जिले की एक अन्य पहाडी-श्रेणी कुरुंबल-कोट पहाडी भी इन पूर्वी घाटियों में ही स्थित है। पूर्वी घाटियाँ, चारनोक्लाइट, ग्रानैट, खोंडलाइट, मेटामार्फिक नीसल, क्वार्ज-कंकड इत्यादि से भरी हुई हैं। पूर्वी घाटियों के निर्माण में थ्रस्ट और स्ट्रैक-स्लिप के दोष हैं। इन पूर्वी घाटियों में चूना पत्थर, बाक्सैट, कच्चा लोटा इत्यादि लभ्य होते हैं।

मध्यभाग

पालार नदी की उत्तर दिशा में और आन्ध्र प्रदेश की पूर्वी घाटियों के मध्य-भाग में करीब उत्तर-दक्षिण दोनों दिशाओं में विस्तारित दो समानांतर श्रेणियाँ हैं। पूर्व दिशा में, कम ऊँचाई की वेलिकोंडा-श्रेणी है। पश्चिम दिशा में, अधिक ऊँचाई वाली पालिकोंडा - लंकमला - नल्लमला - श्रेणियाँ हैं। ये कोरमंडल-तीर के समानांतर में लगभग उत्तर-दक्षिण दिशाओं में, कृष्णा और पेन्ना नदियों के बीच ४३० कि.मी. की लंबाई से विद्यमान हैं। इनकी उत्तर-सीमा पर पल्नाड-बेसिन है, तो दक्षिण में ये तिरुपति-पहाडियों से विलीन होती हैं। अति पुरातन वाली ये पहाडियाँ काल-गति में शीतोष्ण स्थितियों से प्रभावित होकर क्षीण हो गईं। आज, इनकी औसत ऊँचाई ५२० मी. है। भैरवकोंडा के पास १,१०० मी. और गुंड्ल ब्रह्मेश्वर के पास १,०४८ मी. की ऊँचाई होती है।

''**तिरुमलागिरि - पूर्वी घाटियों में शेषाचलम् वेलिकोंडा - श्रेणियों में स्थित है**। पालार नदी, इन श्रेणियों के खंडन करती हुई बहती है। वेलिकोंडा-श्रेणी अंत में नेल्लूरु जिले के उत्तर-प्रांत में तटीय मैदान में आकर उतरती है। कर्नूलु की नल्लमला श्रेणी कृष्णा नदी तक जारी रहती है।''

कोंडपल्लि पहाडियाँ कृष्णा-गोदावरी नदियों के बीच में रहनेवाली कम ऊँचाई वाली पहाडी-श्रेणी है। ये पहाडियाँ आन्ध्रप्रदेश के गुंटूरु, कृष्णा, पश्चिम-गोदावरी जिलों में और तेलांगाना के खम्मं जिले में विद्यमान हैं। पूर्वी घाटियों की इन पहाडियों को कृष्णानदी विभाजित करती हैं। प्रधान पर्वत-श्रेणी नंदिगाम से लेकर विजयवाडा तक विस्तारित हुई है। यही कोंडपल्लि-श्रेणी कहलाती है।

पापिकोंडलु पूर्वी घाटियों में, आंध्रप्रदेश के पूरब गोदावरी और पश्चिम-गोदावरी जिलों में तथा तेलंगाणा के खम्मं जिले में विस्तारित हैं। ये राजमहेंद्रवरम में समाप्त हो जाते हैं।

विशाखपट्टनम् की उत्तर दिशा में व्याप्त पूर्वी घाटियों में खोंडलाइट सूट, क्वार्ट्ज आर्कियन शिलाओं से बने टेक्टोनिक द्वारा मधुरवाडा डोम बना है।

उत्तरभाग

मालिया श्रेणी पूर्वी घाटियों के उत्तरभाग में है। मालिया श्रेणी साधारणतः ९००-१२०० मी. ऊँचाई से रहती है। उनके शिखरों में से थोडे उनसे भी ऊँचे हैं। इन पहाडियों के प्रमुख शिखर पूर्वी घाटियों में उच्चतम शिखर हैं - (अर्मा कोंडा १,६८० मी. गालिकोंडा १,६४३ मी. और सिकरं गुट्ट १,६२० मी.) ओड़िशा राज्य के सब से ऊँचा पर्वत शिखर देवमालि (१,६७२ मी.) पूर्वी घाटियों के दक्षिण-ओडिशा में रहे कोरापुट जिले में है। यह चंद्रगिरि-पोत्तंगि पर्वत-व्यवस्था का एक भाग है। यह प्रान्त पूरे ओडिशा राज्य के विस्तीर्ण में तीन चौथाई भाग है। भौगोलिक रूप में यह भारत - द्वीपकल्प का एक भाग भी है। यह पुरातन गोंड्वाना लांड भूभाग का हिस्सा भी है। ओडिशा की प्रमुख नदियाँ अपनी उपनदियों के साथ बहती हुई गहरी और पतली घाटियाँ बना दीं।

गर्जत श्रेणी वायव्य दिशा में रही पूर्वी घाटियों का विस्तार क्षेत्र है। यह पूरब दिशा में बिल्कुल सीधा हो खडे होकर, पश्चिम दिशा के मयूर्भंज - मल्कानगिरि के बीच में रहे पठार तक आकर, वहाँ धीरे-धीरे उतर जाता है। ओडिशा के ऊँचे प्रांत, 'गर्जत-पहाडियाँ' के नाम से भी पुकारे जाते हैं। इस प्रदेश की औसत ऊँचाई, समुद्र-स्तर से लगभग ९०० मी. होती है। सिमिलपाल मासिफ को पूर्वी घाटियों के ईशान्य-कोण के अंत में विस्तीर्ण-क्षेत्र माना जाता है। दक्षिण भारत देश के पूर्वी तटीय मैदानों में प्रवाहित होनेवाली अनेक लघु और मध्यम नदियों का जन्मस्थान, ये पूर्वीघाटियाँ ही है।

पूर्वी घाटियों के द्वारा प्रवाहित होनेवाली नदियाँ : गोदावरी, कावेरी, कृष्णा, महानदी, तुंगभद्रा आदि नदियों पूर्वी घाटियों से बहती हैं। परंतु, पूर्वी घाटियों में से उत्पन्न नदियाँ हैं - ऋषिकुल्य, वंशधारा, पालार, नागावलि, चंपावती, गोस्तनी, शारदा नदी, तांडव, शबरी, सीलेरु, तम्मिलेरु, गुंड्लकम्मा, पोन्नियार, सुवर्णमुखी, कुंदू, वेल्लार और पेन्ना।

इस प्रकार आधुनिक वैज्ञानिकों के अभिप्राय के अनुसार तिरुमलागिरि उसके समीप प्रवाहित होनेवाली सुवर्णमुखी नदी दोनों पूर्वी घाटियों के मध्य भाग में १३.६७८१८३७ N -- अक्षांशों में और 79.352188 E रेखांशों में विद्यमान हैं।

पुराण - भूगोल में पूर्वी घाटियाँ

अब हम अष्टादश पुराणों में और भूगोल, भुवनकोश अध्यायों में मिला पूर्वी घाटों का वर्तमान नाम, इन पूर्वी घाटियों में रहे प्रान्त, नदियाँ, उन दिनों पुराणों में मिले व्यावहारिक नाम इत्यादि के बारे में जानेंगे।

पुराण-काल से लेकर आज तक भी इन पूर्वी घाटों का प्रसिद्ध नाम 'महेंद्रगिरि' है। इस महेंद्रगिरि का एक भाग ही है, सभी पुराणों में वर्णित तिरुमलागिरि। महेंद्रगिरि में भी आंध्रा के विषय संबंधित भाग में तिरुमलागिरि का प्रस्ताव है।

अतएव यहाँ पुराणों के साथ-साथ 'राजशेखर का काव्य मीमांस', 'कालिदास का रघुवंश' से लेकर 'राजेन्द्र चोलन् का नंडूरु शिलालेख', 'नारदपुराण', 'रामायण', 'महाभारत', 'बृहत्संहिता' - इत्यादि ग्रन्थों से लिए प्रमाणों

सहित **महेन्द्रगिरि --> आंध्रा विषय --> आंध्रा विषय में नदियाँ और पहाडियाँ --> उन नदियों में सुवर्णमुखी नदी --> उन पहाडियों में तिरुमलागिरि --> उनके पौराणिक नाम --> उनमें से 'अंजनाद्रि' - नाम -->** उसके महत्व तक के सभी अंश चर्चित किए गए।

महेंद्रगिरि

भारतवर्ष के सप्तकुलाचलों में यह एक है।

महेंद्रो मलयः सह्यः शुक्तिमान् ऋक्षपर्वतः।
विंध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैःवात्र कुलाचलाः।।[1]

राजशेखर ने अपना ग्रंथ 'काव्य मीमांसा' में महेंद्रगिरि का भौगोलिक स्थान ग्रन्थस्थ करते हुए लिखा कि भारत महाद्वीप के कुमारी द्वीप में (विंध्य पर्वत का दक्षिण दिग्भाग) यह गिरि स्थित है। यहीं सही भौगोलिक-स्थल-निर्णय है।

कुमारी द्वीप

विंध्यश्च पारियात्रश्च शुक्तिमान् ऋक्षपर्वतः,
महैद्रसह्यमलयाः सप्तैते कुलपर्वताः।[2]

राजशेखर ने दक्षिणापथ पर्वत श्रेणियों के बारे में इस प्रकार विवरण दिया,

विंध्यदक्षिणपाद महैंद्रमलयमेकलपालमंजर सह्याश्रीपर्वतादयः पर्वताः।[3]

कालिदास ने अपने 'रघुवंश' के चतुर्थ और षष्ठ सर्गों में महेंद्र पर्वत का इस प्रकार वर्णन किया :

स प्रतापं महेंद्रस्य मूर्ध्नि तीक्ष्णं न्यवेशयत्।
अंकुशं द्विरदस्येव यंता गंभीरवेदिनः।।

प्रतिजग्राहकाळिंगस्तमस्त्रैर्गजसाधनः।
पक्षच्छेदोद्यतं शक्रं शिलावर्षीव पर्वतः।।[4]

गृहीतप्रतिमुक्तस्य स धर्मविजयी नृपः।
श्रियं महेंद्रनाथस्य जहार न तु मेदिनीम्।।[5]

---

1) मार्कंडेयपुराण - ५७-१०.
2) काव्यमीमांस, अध्याय-१७ - पृ.९२
3) काव्यमीमांस, अध्याय-१७ - पृ.९३
4) रघुवंशं - ४-३९,४०
5) रघुवंशं - ४-४३.

असौ महेंद्रादिसमानसारः पतिर्महेंद्रस्य महोदधेश्च।
यस्य क्षरत्सैन्यगजच्छलेन यात्रासु यातीव पुरो महेंद्रः।।[1]

महेंद्र पर्वत कलिंग देश से संबंधित पर्वत है। कलिंग के राजा महेंद्रनाथ कहलाए। भागवत-पुराणों में कहा गया है कि ये पर्वत गंगासागर संगम से लेकर गोदावरी तट तक व्याप्त हुए हैं। बलराम की तीर्थ यात्रा संदर्भ में...

गयां गत्वा पितृनिष्ट्वा गंगासागरसंगमे।
उपस्पृश्य महेंद्रादौ रामं दृष्ट्वाभिवाद्य च।
सप्तगोदावरीं वेणां पंपां भीमरथी ततः।।[2]

वेलनाटि राजेंद्रचोल के 'नंडूर शिलालेख' - में आंध्रा विषय - सीमाओं के प्रस्तावित होने के संदर्भ में यह सूचित किया गया है कि कालहस्तिशिखरी और अलपर्वतों के बीच में स्थित हैं - महेंद्राचल

महेंद्रो मलयस्सह्यो देवतात्मा हिमालयः।
ध्येयो रैवतको विंध्यो गिरिश्चारावळिस्तथा।।

इस प्रकार नारद पुराण में प्रस्तावित सप्तकुल पर्वतों में सहस्र-शिखर-पर्वत श्रेणी, महेंद्रगिरि ही है। वहीं है दक्षिण के रामेश्वर से लेकर उत्तर के कटक तक फैली हुई महेन्द्रगिरि पर्वतश्रेणी है। ये ही आज पूर्वी घाट कहला रही है। ये पर्वत छोटे खंडों, श्रेणियों, उपश्रेणियों, उपोपश्रेणियों सहित दिखते हैं।

इसलिए यह बात ग्राह्य होती है कि महेंद्र पर्वत के नाम से कीर्तित कुल पर्वत - समूह ही आज की पूर्वी घाटियाँ हैं। इन महेंद्र पर्वत श्रेणियों में रहे राज्यों में आन्ध्रदेश का उल्लेख श्रीमद्रामायण, श्रीमन्महाभारत, मार्कंडेय पुराणादि में देखा जाता है।

आन्ध्रा में कृष्णा-गोदावरी के मध्य रहे प्रदेश -

भीष्म, द्रोण, कर्ण इत्यादि पर्वों में वर्णित तथ्य है कि दाक्षिणात्य जनपदवासियों में आन्ध्र, केरल, कोंकण, कर्नाटक, कोसल, कलिंग, कुंतल, विदर्भ देशों ने कौरवपक्ष में और चोल, पांड्य देश के राजाओं ने पांडव-पक्ष में युद्ध किया था।

अथापरे जनपदाः दक्षिणापथवासिनः।
पांड्याश्च केरळाश्चैव चोलाः कुंत्यास्तथैव च।।
शेलूषा मूषिकाश्चैव कुमारा वानवासकाः।
महाराष्ट्रा महिषिकाः कळिंगाश्चैव सर्वशः।।

---

1) रघुवंशं - ६-५४

2) भागवतपुराण - १०-७९-११,१२

अभीराः सह वैशिख्या अधख्या शबराश्चये।
पुलिंदा विंध्यमालेया वैदर्भा दंडकैस्सह।।
पौरिका मौलिकाश्चेव अश्मका भोगवर्धनाः।
नैषिकाः कुंतला आन्ध्रा अद्रिदा वनदारकाः।।[1]

यहाँ, दक्षिणापथ में स्थित जनपदों में पुंड्र, केरल, गोलांगूल, शैलूषि, मूषिक, कुसुम, वानक, महाराष्ट्र, माहिष्म, अभीर, पुलिन्द, विन्ध्य, वैदर्भ, शौरिक, मौलिक, अश्मक, नैशिक, कुंतल आदि के साथ 'आन्ध्र' शब्द का भी प्रयोग हुआ था।

वात्सायन के कामसूत्र ग्रन्थ के व्याख्या - रचयिता जयमंगल ने बताया कि आन्ध्र विषय, कर्नाटक विषय के पूरब में है।

''नर्मदाया दक्षिणापथः, तत्र कर्णाट विषयात् पूर्वेणांध्र विषयः, नर्मदा कर्णाट विषययोर्मध्ये महाराष्ट्र विषयः, कर्णाट विषयाद्दक्षिणेन द्रविड विषयः कोंकण विषयात्, पूर्वेण वनवास विषयः''।[2]

वेलनाटि द्वितीय राजेंद्र चोल के 'नंडूर शासन' में लिखित है कि पूरब के समुंदर, श्रीशैल पर्वत, महेंद्रगिरि, कालहस्ति पहाडियाँ - इन सब के बीच में रहे भूभाग ही आध्र विषय है। यहाँ 'विषय' शब्द का अर्थ है - 'प्रदेश'।

पूर्वांभोनिधि काळहस्ति शिखरी श्रीमन्महेंद्राचल।
श्रीशैलेश्वर वलयीकृतांध्रविषयं श्रीराजराजन्वयः।।[3]

बृहत्संहिता में कूर्म विभाग :

श्री वराह मिहिराचार्य विरचित बृहत्संहिता में समूचे भारतदेश को एक कूर्म (कच्छप) से तुलना करके यह बताया गया कि कछुए की तरह ही भारत में नौ दिशाओं में विविध पर्वत, नगर, कस्बा, शहर सब बसे हैं। उनमें...

मध्यदेश विभाग :- (जब हम इस कथन का ग्रहण करते हैं कि भारतदेश एक कछुए जैसा है, तो उसका ऊँचे मध्यदेश में स्थित गिरि, नगर, जनपद - इत्यादि का उल्लेख परामर्श यहाँ किया गया है।)

भद्रारिमेदमांडव्यसाल्वनीपोज्जिहानसंख्याताः।
मरूवत्सघोषयामुनसारस्वतमत्स्यमाध्यमिकाः।।
माथुरकोपज्योतिषधर्मारण्यानि शूरसेनश्च,
गौरग्रीवोद्देहिकपांडुगुडाश्वत्थपांचालाः।।

---

1) मार्कंडेयपुराण - ५४-४५-४८.

2) कामसूत्रं, वात्स्यायन - २-५-२८,३०,३१ - जयमंगळव्याख्या पृ-२८९,२९०

3) वेलनाटि राजेंद्रचोळ-II के नंडूरु शिलालेख - श्लोक - ६८.

साकेतकंककुरूकालकोटिकुकुराश्च पारियात्रनगः।
औदुंबरकापिष्ठलगजाह्वयाश्चेति मध्यमिदम्।।[1]

पूर्वदेश विभाग : (यहाँ पूर्वी घाटियों के आन्ध्रा प्रान्त के संबंधित प्रदेशों से लेकर ईशान्य भारत तक के प्रदेशों का उल्लेख किया गया है। इस क्रम में सब से पहले आन्ध्र देश के अंजनगिरि, वृषभध्वज, पद्मगिरि, माल्यवद्गिरि इत्यादि का स्मरण किया गया।)

अथ पूर्वस्यामंजनवृषभध्वजपद्ममाल्यवद्गिरयः।
व्याघ्रमुखसुह्यकर्वटचांद्रपुराः शूर्पकर्णाश्च।।
खसमगधशिविरगिरिमिथिलसमतटोड्राश्चवदनदन्तुरकाः।
प्राग्ज्योतिषलौहित्यक्षीरोदसमुद्रपुरूषादाः।।
उदयगिरिभद्रगौडकपौंडोत्कलकाशिमेकलांबष्ठः।
एकपदताम्रलिप्तककोसलका वर्धमानाश्च।।[2]

आग्नेयदिशायां स्थितदेशनामानि - आग्नेय दिशा में स्थित देशों के नाम (ऐसे ही आग्नेय दिशा में किष्किंधा का स्मरण किया गया)।

आग्नेय्यां दिशि कोसलकलिंगवंगोपवंगजठरांगाः।
शौलिकविदर्भवत्साध्रचेदिकाश्चोर्ध्वकंठाश्च।।
वृषनालिकेरचर्मद्वीपा विंध्यंतवासिनस्त्रिपुरी।
श्मश्रुधरहेमकुड्यव्यालग्रीवा महाग्रीवाः।।
किष्किंधकंटकस्थलनिषादराष्ट्राणि पुरिकदाशार्णाः।
सह नग्नपर्णशबरैराश्लेषाद्ये त्रिके देशाः।।[3]

दक्षिणदिशायां स्थितदेशनामानि - दक्षिण दिशा में स्थित देश के नाम दक्षिण-दिशा में लंकापुरी का स्मरण है। इसी दौरान, पूर्व के तटीय प्रान्त-पर्वत-श्रेणी, जो महेंद्रगिरि पर्वत श्रेणी हैं, इस के दक्षिण-भाग की पंक्तियों का भी स्मरण है।

अथ दक्षिणेन लंका कालाजिनसौरिकीर्णतालिकटाः।
गिरिनगरमलयदर्दुरमहेंद्रमालिंद्यभरूकच्छाः।।
कंकटकंकणवनवासिशिबिकफणिकारकोंकणाभीराः।
आकरवेणावर्त्तकदशपुरगोनर्दकेरलकाः।

---

1) बृहत्संहित - १४-२,३,४

2) बृहत्संहित - १४-५,६,७

3) बृहत्संहित - १४-८,९,१०

कर्णाटमहाटविचित्रकूटनासिक्यकोल्लगिरिचोलाः।
कौंजद्वीपजटाधरकावेर्यो रिष्यमूकश्च।
वैदूर्यशंखमुक्ताऽत्रिवारिचरधर्मपट्टनद्वीपाः।
गणराज्यकृष्णवेल्लरपिशिकशूर्पाद्रिकुसुमनगाः।।
तुंबवनकार्मणेयकयाम्योदधितापसाश्रमा ऋषिकाः।
कांचीमरुचीपट्टनचेर्यार्यकसिंहला ऋषभाः।
बलदेवपट्टनं दंडकावनतिम्मिलाशना भद्राः।
कच्छाऽथ कुंजरदरी सताम्रपर्णीति विज्ञेयाः।।[1]

श्री वेंकटाचल माहात्म्यम

तिरुमलागिरि के अनेक नामों में 'अंजनाद्रि' - नाम - ब्रह्मपुराण के उक्त, 'अंजनाद्रि' - नाम होने का कारणः-

आधुनिक काल में तिरुमलागिरि नाम से यश प्राप्त, श्री वेंकटेश्वर दिव्य क्षेत्र, अनेक कारणों से अनेक नामों से बुलाया जा रहा है। अनेक पुराण यह घोषित करते हैं कि वास्तव में, यह पर्वतराज, मेरुपर्वत का पुत्र - सुमेरु-शिखराचल है। ब्रह्म पुराण में श्री वेंकटाचल माहात्म्यम के प्रसंग में, निम्नलिखित इन पंक्तियों के द्वारा यह बताया किया गया है कि जांबूनदनदी (सुवर्णमुखी नदी) के तट पर स्थित इस क्षेत्र के विविध नामों में से, वेंकटपर्वत, नारायण-गिरि, वृषाद्रि, वृषभगिरि, अंजनाद्रि, शेषाद्रि आदि नाम कैसे प्राप्त हुए हैं।

शृणु राजन्! प्रवक्षयामि वेंकटाचलबैभवम्।
तस्याऽगतिं प्रवक्षयामि देवस्यापि महात्मनः।।
मेरोः पुत्रो महाशेलो जांबूनदनदीतटे।
योजनत्रयविस्तीर्णं त्रिंशद्योजनमायतः।।
वेंकटेति कृतं नाम पित्रा तस्य महात्मनः
अमृतस्येंदिरायाश्च यतो विस्तारकारकः।।
जीवानं भारते वर्षे ततोऽयं गुणनामकः।
निर्दोषविष्णोरयनं नारायणमिमं विदुः।।
वृषस्य भरणात्पोषाद्वृषभं चापि तं विदुः।।
प्रसवादंजना देव्याः विदुरंजनसंज्ञकम्,
सशेषागमनश्चापि शेषाद्रिं प्राहुरुत्तमाः।।[2]

---

1) बृहत्संहित - १४-११-१६

2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (ब्रह्मपुराणांतर्गत - १-६-१०) द्वितीय भाग, पृ.२, ति.ति.दे. प्रकाशन

हे राजा! वेंकटाचल माहात्म्यम को सुनाता हूँ। एकाग्रचित्त होकर सुनो। वेंकटाचल का आविर्भाव, वेंकटेश स्वामी का सान्निध्य इत्यादि विषयों का विवरण देता हूँ। सुवर्णमुखी नदी के तट पर तीन योजनों के विस्तीर्ण में, 30 योजनों की लंबाई से स्थित एक पर्वत है। वह मेरुपर्वत का एक भाग है। (पुत्र). पर्वतराज मेरु ने अपने इस पुत्र का नाम 'वेंकट' रखा था। ऐसा लगता है कि भविष्य में इस नाम के सार्थक बनने के महान् उद्देश्य से ही पिताश्री ने अपने पुत्र को यह नाम दिया होगा। 'वेंकट' - शब्द का शब्द-शक्ति से मिलनेवाला अर्थ है - ''इह-पर दोनों को देनेवाला''। इसमें ये अर्थ-सिद्धि भी होती है कि 'वें' - शब्द से अमृत और ''कट'' - शब्द से ऐश्वर्य। यह पर्वत स्वयं में भगवत्-सान्निध्य को परिपूर्णरूप में रखने के कारण, भारतदेश के सभी जनों को यह इह-पर दे रहा है। पितृदेव से दिया गया यह नाम सचमुच सार्थक है। 'वेंकटाद्रि' - नाम जैसे अन्य व्यावहारिक नाम अनेकों इस पर्वत के लिए हैं। यह पर्वत श्रीमन्नारायण का निवास-स्थान होने के कारण **'नारायणाद्रि'** नाम से भी पुकारा जाता है। इस पर्वत का दर्शन करनेवालों के धर्म-चिंतन प्रदान करने के कारण से और यह प्रान्त धर्मनिलय होने के कारण से भी इसके दो और नाम **''वृषाद्रि''** और **''वृषभाद्रि''** पडे थे। **वृष** और **वृषभ** शब्दों के प्रसिद्ध अर्थ हैं - धर्म। **उसी प्रकार, केसरि की पुत्री अंजनादेवी के इस पर्वत पर रामायण वीर श्री आंजनेय को जन्म देने के कारण यह पर्वत 'अंजनाद्रि' कहला रहा है।** यह पर्वत, सहस्रशिर वाले आदिशेष द्वारा लाये जाने के कारण 'शेषाद्रि' नाम से पुकारा जाता है।

अंजनाद्रि संबंधी विविध पुराणों के कथन

तिरुमला गिरियों के अनेक नामों में से 'अंजनाद्रि' नाम प्रथम नाम के रूप में और प्रसिद्ध नाम के रूप में अनेक पुराणों में उल्लिखित होने पर भी पद्मपुराण में दो संदर्भों में उद्धृत किया गया है।

श्री वेंकटाचल का दर्शन करनेवालों में स्मरणीय प्रथम थे - श्री शुक महर्षि। उन्होंने तिरुशुकनूर (आज का तिरुचानूर) की जननी पद्मावती का दर्शन कर, वहाँ से रम्यातिरम्य श्री वेंकटाचल दिव्यक्षेत्र का दर्शन किया था। इस घटना का उल्लेख करने के संदर्भ में इस पर्वत को 'अंजनगिरि', 'अंजनाचल' नामों से प्रस्तावित किया गया था। यह ध्यान देने योग्य बात है। उसी प्रकार 'नारायणाद्रि' के नाम से वर्णन करने के संदर्भ में भी इस पर्वत को 'अंजनगिरि' नाम से पुकारते हुए, इस अंजनगिरि के तट पट रहने वाली स्वामिपुष्करिणी में स्नान करने वालों को मिलने वाले फल के बारे में भी विस्तृत विवरण दिया गया है।

पद्म पुराण में -

तस्य सानुमतःसोऽपि पदानाश्रित्य सत्वरः।
निर्झ रेष्वाप्लवं कुर्वन् विमलो देष्वनन्यधीः।। ...
अतंद्रितोंजनगिरिं प्राप्य विप्रोपवेशनम्,[1]

सुंदर प्राकृतिक सौंदर्य के इस अंजनाद्रि पर पहुँचने के बाद, शुकमुनि ने वहाँ के पवित्र जलों से युक्त सरोवरों में स्नान करके, आलस्य-रहित होकर उन पर्वत-चरणों में विचरण किया था।

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (पद्मपुराण क्षेत्रखंडांतर्गत - २४-३५-३९) प्रथमभाग, पृ.-२०६, ति.ति.दे. प्रकाशन

शुकपुरी से शुकमुनि का शेषशैल आना

तत्र त्रिषवणस्नानं कृत्वा व्यासो रसो मुनिः

...

उषित्वा त्रिदिनं तत्रोपासकः परायणः

द्रष्टुकामोऽखिलाश्चर्यं पुनरप्यंजनाचले।[1]

व्यास-पुत्र, शुकमुनि वहाँ त्रिषवण स्नान करके तीन दिनों तक वहाँ ठहरकर उपासनारत होकर समय बिताता था। उस अंजनाचल के अद्भुत-आश्चर्य देखने को निश्चित रहा।

नारायणाद्रि वर्णन में

प्राचीने तस्य देशस्य स्थितोंऽजनगिरेस्तटे,

तरुणादित्यसंकाशाऽखिलाभीष्टदा।[2]

प्राचीन प्रदेश में स्थित अंजनगिरि-तट पर जो स्वामिपुष्करिणी है, वह उदय होनेवाले सूर्य की किरणों के समान प्रकाशित होती हुई अभीष्ट प्रदायिनी हो रही है।

कुंजेंजनगिरेः स्वामिपुष्करिण्यप्सु यो नरः।

कृताप्लवः सकृत् सत्यं कृतकृत्यो भवेन्नरः।।[3]

उतना महत्वपूर्ण अंजनगिरि में स्थित स्वामिपुष्करिणी में जो स्नान करते हैं, वे अपने-अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं।

स्कंद पुराण में भी यही कथा संक्षिप्त रूप में उल्लिखित है।

इस विपुल - निबंध में विस्तृत रूप में उल्लिखित किए गए अंश इस प्रकार हैः सांसारिक व भौगोलिक विज्ञानानुसार आज के तिरुमलागिरि, पूर्वी- घाटियों के मध्यभाग में विद्यमान हैं। पुराण - इतिहास - शास्त्रों के भौगोलिक उल्लेखों के अनुसार प्राचीन काल से ही लेकर आज तक जो 'महेंद्रगिरि' नाम से जाने जाते हैं, वही नाम पूर्वी घाटियों के लिए दिया गया प्रसिद्ध नाम है। महेंद्र गिरियों के प्रदेशों में आन्ध्र विषय भी एक है, इस आन्ध्र विषय

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (पद्मपुराण क्षेत्रखंडांतर्गत - २७-१३-२८) प्रथमभाग, पृ.-२२८, ति.ति.दे. प्रकाशन

2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (पद्मपुराण क्षेत्रखंडांतर्गत - ३२-७) प्रथमभाग, पृ.-२५७, ति.ति.दे. प्रकाशन

3) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (पद्मपुराण क्षेत्रखंडांतर्गत - ३२-३५) प्रथमभाग, पृ.-२६०, ति.ति.दे. प्रकाशन

का एक भाग ही श्री वेंकटाचल है, इसका प्रसिद्ध नाम 'अंजनगिरि' है। इस संदर्भ में ही ब्रह्मांड पुराण में वर्णित श्री आंजनेय जन्म वृत्तांत को संक्षिप्त रूप में दिया गया है। इसी विषय स्कन्द पुराण में भी वर्णित है - इस बात का सूचनामात्र स्मरण किया गया है। अतएव, इन प्रमाणों के आधार पर हम निश्चित रूप से यह कह सकते हैं कि हनुमान का जन्मस्थान, हर तरह से (निस्संदेह) तिरुमलागिरियों में स्थित 'अंजनगिरि' या 'अंजनाद्रि' है।

❀❀❀

माता अंजना द्वारा बालहनुमान का लालन-पालन

8. तिरुमला पहाड अंजनाद्रि - एक पुरातत्व सर्वेक्षण

तेलुगु मूल - श्री विजय कुमार जादव,
उप निदेशक (सेवा निवृत)
राज्य पुरातत्व और संग्रहालय विभाग

अनुवाद - डॉ.के.महालक्ष्मी भवानी

भूमिका :

तिरुमला पहाड :

कलियुग देवता माने जाने वाले विश्व विख्यात श्री वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर पवित्र तिरुमला पर्वतों पर स्थित हैं। हर दिन भक्तलोगों से यहाँ पूजा-अर्चना की जाती है। ये तिरुमला पहाड शेषाचल, वेंकटाचल, अंजनाचल आदि नामों से कृत, त्रेता, द्वापर, कलियुगों में सप्तगिरि[1] नाम से और प्राचीन वाङ्मय में युग के अनुसार बुलाया जा रहा है। लेकिन सप्तगिरि नाम पाने पर भी ऐसा कोई भौतिक प्रमाण नहीं है कि अवश्य यही वह गिरि है।

भौगोलिक स्वरूप काल निर्णय :

ये पवित्र तिरुमला पर्वत एक अद्‌भुत भौगोलिक स्वरूप[2] जैसे बने हुए हैं। इन्हें भारत भूगर्भ सर्वे शोधकों ने (GSI) पहले १९८० में अन्वेषण करके इनमें दो मुख्य, बहुत विरल होनेवाले भूगर्भ स्वरूपों के रूप में पहचाना है। इनमें...

१. शिलातोरण

२. भूगर्भ वैज्ञानिकों की परिभाषा में यह ''एपार्षियन अन-कन्फेर्मिटी''[3] नाम से बुलाया जाता है।

शिलातोरण :

दुनिया में बहुत ही विरल और सहज सिद्‌ध से बना शिलातोरण देश में यहाँ पर एक ही जगह देख सकते हैं। भू वैज्ञानिकों के अन्वेषणों के अनुसार माना जाता है कि यह शिलातोरण १६० करोडों वर्षों पहले बना है। यह शिलातोरण ८ मीटर लंबाई, ३ मीटर चौडाई से तिरुमला पहाड के पवित्र चक्रतीर्थ के पास स्थित है।

भू-वैज्ञानिकों का अनुमान है कि इस अनंत विश्व में पृथ्वी करीब ४६० हजारों साल पहले बनी थी। यह पृथ्वी विविध दशाओं में, परतों में परिवर्तित होती हुई बनी थी। भू वैज्ञानिकों ने इस भूस्वाभाविक दशाओं को मुख्यतः पाँच दशाओं में विभाजित किया।[4] वे क्रमशः ---

---

1) (i) Tirupati Sri Venkateswara - page 10; (ii) Sri Venkateswara Vaibhavam -page 1.

2) International Journal of Engineering Applied Sciences and Technology, 2020 Vol.4, Issue 11, pages 224-231.

3) "Eparchian Unconformity at Tirumalai - A Study

4) https://www.britannica.com/science/geologic-history-of-Earth

१. **आर्कियन युग -** (पहले चरण की शुरुआत से २५०० मिलियन वर्षों के बीच।)

२. **प्रोटोरोजोइक युग -** (दूसरा चरण २५०० मिलियन सालों से ५७० मिलियन वर्षों के बीच)

३. **पालियोजोइक युग -** (तीसरा चरण ५७० मिलियन सालों से २४५ मिलियन वर्षों के बीच)

४. **मेसोजोइक युग -** (चौथा चरण २४५ मिलियन सालों से ६६ मिलियन वर्षों के बीच)

५. **सेनोजोइक युग -** (पाँचवाँ चरण ६६ मिलियन सालों से ०.०१ मिलियन वर्षों के बीच)

तिरुमला पहाड मुख्यतः प्रीकांब्रियन समय के अवक्षेपण शिलाओं के क्वार्टजैट और इंटरक्लेटेड शेल्स से युक्त रहते हैं। इन्हें कडप्पा सूपर ग्रूप में भाग नगरि क्वार्टजैट जैसा सूचित करते हैं। यह पुराण शिला विरासत की उप समिति, यह आर्कियन शिलाओं पर है। पता चला कि भारत देश के पुरातन पत्थर ४५०० मिलियन सालों के हैं। प्रीकांब्रियन युग में (३.८ बिलियन से ५४० मिलियन साल पहले) सीमाएँ बनी हैं।

भू-वैज्ञानिकों ने बताया कि तिरुमला घाट सडक उनकी परिभाषा में ''एपार्चियन अनकन्फर्मिटी'' के रूप में राष्ट्रीय जियो हेरिटेज स्मारक चिह्न है। यह स्टाट ग्राफिक प्रमुखता के प्रधान विरत है। यह भूमि क्रस्ट के पहाड परतों में ५०० मिलियन वर्षों के अंतर को सूचित करती है।

तिरुपति एपार्चियस प्रतिकूलता :-

- नोटिफैड नेशनल जियो - हेरिटेज मान्युमेंट माने व्यूहात्मक प्रमुखता का प्रधान स्थगन है।
- यह भूमि के भौगोलिक इतिहास में अचानक उल्लेखनीय प्रशांत समय को सूचित करता है।
- भूमि के क्रस्ट में पहाड परतों के निर्माण में तब्दीलियाँ और स्थागन। यह आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले के तिरुपति, तिरुमला घाट मार्ग में सीधा रहे सहज जलाशय, रास्ते की निशानें और घाटियों के पास दिखायी पड़ती हैं।
- भारत देश की घाटी के धरती करीब २,५०० बिलियन वर्ष पुराना है। यह प्राचीन निर्माण है।
- कडप्पा बेसिन करीब १,७०० मिलियन वर्ष पुराना है और नेगरा क्वार्टजैट थोड़ा है।
- छोटी शिलाओं की आयु करीब १,५०० मिलियन वर्ष है। ज़मीन और अवक्षेपण के बीच यह सुदीर्घ अतंर।
- पत्थरों को ''एपार्कियन अनकनफार्मिटी'' कहते हैं।

अंजनाद्रि का निर्णय करने में पुरावस्तु आधारों का परिशीलन :

इतिहासकार को पुरावस्तु शास्त्र एक प्राथमिक मूलाधार है। पुरावस्तु की जड़े प्रत्यक्ष आधार हैं। प्रत्यक्ष निधियाँ हैं। क्योंकि उन्हें मानव नहीं बदल सकते हैं। पुरातत्व जडों की प्रधान संपत्ति भौगोलिक वस्तुएँ हैं।

भौगोलिक अस्तित्व व शिलालेख (ताड के पत्ते, मेटल बिर्च और कागज) स्मारक भवन, मुद्राएँ, साहित्य (इतिहास, पुराण) एवं कलाखंड।

(निर्माण, घर, घटाएँ, मुद्राएँ पत्थर या दीवारों पर लिखे हुए विषय और चित्र लेखन, औजार, गहनें, हड्डियाँ, शेष रही चीजें एवं लोहों के टुकडे।)

शेषाचल पर्वत :

आंध्रप्रदेश राज्य के दक्षिण की ओर पूर्वी घाटी की पर्वत श्रेणियाँ बलुआ पत्थर और चूने का पत्थर से शेल लगे रहते हैं। ये पहाड़ी श्रेणियाँ रेखांश घाटियों से बहुत विच्छेदित होते हैं। वे पश्चिम और वायव्य में रायलसीमा के ऊपरी भाग और ईशान्य में पांड्य घाटी (कुंदेरु नदी से बने हैं) सरहद जैसे हैं। शेषाचल करीब ३,००० मील (८,००० कि.मी.) फैले हुए हैं। उनका साधारण ट्रेंड पूरब-आग्नेय से रहता है। शेषाचल, उत्तर दिशा में स्थित एर्रमल श्रेणी से मिलाकर १,३०० से ४,५०० फुट (४०० से १३७० मीटर) ऊँचे हैं। कम वर्षा के कारण पहाड के कोने बारीक जंगली प्रदेश में ही रहते हैं। पेन्ना नदी की उपनदियाँ इस प्रांत में बह रही हैं।

पुरावस्तु के आधार

कलाखंड, प्राचीन सतही (ऊपर के) आधारों का संग्रह, प्रागैतिहासिक प्रदेशों की पुरावस्तु खुदाइयाँ, प्राचीन निर्माण, मंदिर, अन्य स्मारक चिह्न और निवास स्थान, प्राचीन मिट्टी के गड्ढे तथ्य को साबित करने का कुछ मुख्य आधार है।

आदिकाव्य और महान इतिहास के रूप में प्रसिद्ध रामायण में महान योद्धा और श्रीरामचंद्र के महान भक्त, पुराण पुरुष हनुमान के जन्म स्थल को पहचानना ऐतिहासिक रीति से, पुरावस्तु शास्त्र के अनुसार भी परिशीलन करना यहाँ मुख्य समस्या है।

* साधारणतया किसी प्रामाणिक समाचार और ऐतिहासिक तथ्यों के आविष्करण का पुनर्निर्मित करने में पुरावस्तु के मूलों का पात्र बहुत मुख्य भूमिका निभाता है।

तिरुमला / अंजनाद्रि के आस पास आधुनिक मानव परिणाम :

एक स्थान या व्यक्ति के इतिहास को जानने के लिए सारे साहित्य और पुरावस्तु के प्रमाणों का अनुशीलन करना है।[1] प्राचीन-साहित्य के प्रमाणों के सारे मानव कार्य कलापों के साथ पुरावस्तु की मूल और प्राचीन बातों से जुडी

---

1) (i) Golden Research Thoughts Volume-4, Issue-10 (Pre and Proto Historic Evidence of Human Subsistence in the Talakona Valley)

(ii) Early Hunter, Gatherers adaptations in Tirupati Valley, 5-12 & 112

हुई बातों का निरीक्षण करना है। इतिहासकारों ने तिरुमला पहाड के चरणों के पास और आस पास के प्रांतों में कुछ शोध कार्य किए थें।

प्राचीन शिलायुग के आदिम मानव की निशानें :

पुरातन शिलायुग से तिरुमला और आस पास के स्थानों में मानव का अस्तित्व रहा।

राल्लकाल्वा के (पत्थरों की नहर) पुरातन शिलायुग के प्रमाणों को १९६८ में प्रोफेसर एम.एल.के.मूर्ति ने ब्लैड और ब्यूरिन कारखाने के राल्लकाल्वा प्रवाह के पास पहचाना।

मेसोलिथिक पीरियड रॉक ऑर्ट - रुद्रगल तीर्थ :

तिरुमला पहाड अब भी बहुत घना जंगल और वृक्षसंपत्ति से घिरा हुआ है। गहरी घाटियाँ, ऊँचे पहाड, पवित्र तीर्थ और जल संपत्ति, कई जातियों के जीव और वृक्ष संपदा आदि ने मानव को अवश्य रूप से आकर्षित किया। विशिष्ट भौगोलिक स्वरूप और प्रदेशों के कारण इस प्रांत में समग्र क्रमबद्ध सर्वेक्षण का निर्वहण करना सुलभ नहीं है लेकिन साहसी और पर्वतारोहण करनेवाले स्थानीय युवाबृंदों के कारण इतिहासकारों को कुछ आधार मिले हैं। मगर वे बहुत कम है। उन समूहों ने जंगल में बहुत दूर यात्रा करके थोडा-सा ही अन्वेषण कर पाया। पेट्रोग्लिफ के रूप में रहे इतिहास के पहले रहे रॉक ऑर्ट और पत्थर के पहाडों के नीचे तराशी कुछ जानवरों के चित्रों के पिक्टोग्राफ इस प्रांत में पहले मानव के निवास के अस्तित्व के पहचान को सूचित कर रहे हैं। नक्काशी किया गया साँड और अन्य चिह्न तथा पशु रुद्रकोटितीर्थ के पास, तलकोना पहाड पर पहचाने गए हैं। तलकोना जंगली प्रांत के कुछ पानी के उपलब्धियों के पास पहाडों के ऊपरी भागों पर कुछ आघात पहचाना गया है।

मल्लय्यपल्लि के मेगालिथिक पिल्लर्ड डोल्मेन[1] (बृहत शिला युग के समय के स्मारक चिह्न) :

चंद्रगिरि किले से तीन कि.मी. की दूरी पर एक छोटे ग्रानैट पहाड पर मेगालिथिक स्मारक चिह्न स्तंभों से युक्त डोलेम्न है। यह ४००० बि.सी.ए. के समय का है। भारी कैपस्टोन किसी प्रकार के बैंडिंग एजेंट के बिना ऊपर व्यवस्थित किया गया आठ पहाडी स्तंभों के ऊपर है। इस स्मारक चिह्न के और एक विशेषता क्यापस्टोन के नीचे रहा रॉक ऑर्ट। रॉक ऑर्ट संयुक्त शिलायुग काल से **बृहत शिलायुग के शिलावर्णचित्र** सौ (१००) से भी ज्यादा हैं।

तिरुमला ऐतिहासिक समय की सूचनाएँ - संगं साहित्य सूचना[2]

तमिल साहित्य के अनुसार तिरुमला इतिहास और वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर को एक बार परिशीलन करने से संगं युग के प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में तमिल राज्य के उत्तर में स्थित यह प्रदेश वडवेंगडम है। तमिल संप्रदाय साहित्य, संगं रचनाएँ, तमिल के उत्तर सरहद में स्थित वेंगडम के बारे में कुछ सूचनाएँ हैं। उनके अनुसार यह उत्तर

---

1) Proceedings of the A.P.History Congress, 19th Session (Evidences of Megalithic Art in Chittoor District) page no.22-24

2) The Tirumala Temple-page 202.

तमिलेतर प्रांत है। प्राचीन समय के वेंगडम पहाडों पर स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी के बारे में 'परंबिरानार' नाम से बुलाए जानेवाला प्रसिद्ध सावंत तोल्कप्पियम में प्रस्तावित किया गया है। ''वेंगडम'' नामक शब्द का अर्थ है - अत्यधिक, अविकसित संपत्ति। और एक अर्थ है कि उस जगह का दर्शन करने से मानव के पापों का दहन हो जाता है। कनक्कायनार का बेटा नक्कीरन अहम २७ में उत्तर वेंगडम और पांड्यों के वर्णन में सूचित करता है कि हाथियों की जातियों ने इन वनों का आक्रमण किया है।

तमिलसंघ (३वी सदी) के साहित्य के अनुसार तमिलगम के उत्तर में वेंगडम के पास उनके गिरिजन नेता ''पुल्लि'' के नेतृत्व में मेले, आचार और त्योहारों को मनाने का संप्रदाय है। उस समय में उस प्रदेश को पुलिकुंड्रम नाम से बुलाते थे। चोलों के समय में यह सारा प्रांत चोलमंडल नाम से २४ भागों में विभाजित किया गया है। उनमें से एक ''वेंगड कोट्टम'' नाम से बुलाया गया। बाद के शिलालेखों में तिरुमला नाम से प्रस्तावित किया गया है। तिरुमला पहलेपहल १०१३ के साल के बाद के शासनों में प्रस्तावित किया गया है।

प्रारंभिक ऐतिहासिक सूचना[1] :

''आल्वार पाशुर'' (४ हजार प्रबंध) 'नालायर दिव्यप्रबंध'' (४ हजार प्रबंध) के सार है। दिव्यप्रबंध दक्षिण भारत देश के १२ आल्वारों (वैष्णव संत) के सम्मिलित कृति है (५-८ ए.डी) १२ आल्वारों में दसवें ''नालाइरम् दिव्यप्रबंध ग्रंथ में कुल २०२ पाशुरों(पद्यों) वेंगडम (तिरुवेंगडम) के बारे में गाए थे या प्रस्तावित किए थे। यह वेंगडम के साथ या पूर्व आल्वारों के पद्यों में अक्सर प्रस्तावित किया गया है और यह बहुत ही प्रमुखता प्राप्त पुण्य क्षेत्र के रूप में माना जाता है। मुदल आल्वार ३ ए.डी. - ४ ए.डी. तिरुवेंगडम मंगलाशासनम ८वीं शताब्दी ए.डी. बाद के पल्लवों के समय में विख्यात आल्वारों ने भारत देश के प्रधान वैष्णव पुण्य क्षेत्र १०८ दिव्यदेशों पर असंख्याक पद्यों की रचना की और गाए उन्होंने वेंगडम के पास स्थित भगवान के चित्र रूप संबंधित गीत गाए मगर अलग से मंदिर के बारे में सूचित नहीं किया। हम समझ सकते हैं कि गीतों में बताने की तरह वहाँ एक बहिरंग मंडप और एक छोटा-सा बरामदा था। नम्माल्वार इस तरह कीर्तन किया कि जनन-मरण से युक्त सांसारिक बीमारी की चिकित्सा करने के लिए श्री वेंकटेश्वर स्वामी ही सच्चा औषध है। महान भक्त श्री कुलशेखर आल्वार श्रीनिवास स्वामी से इस तरह प्रार्थना करते है कि उन्हें पवित्र स्वामिपुष्करिणी में मछली, पेड, वेंकटेश्वर के स्वर्ण पहाडों पर निम्न जन्म भी दे तो खुद को धन्य महसूस करेगा। ''एंबेरुमान पोन्मलै मेल एद्देनुम।''

तिरुमला मंदिर का अस्तित्व और उन्नति :

तिरुमला में पहाडी मंदिर का निर्माण कार्यक्रम पल्लवों के समय की आखिरी दशा में शुरू हुआ है और चोल, पांड्य, यादव, विजय नगर राजाओं के समय में और विजय नगर राजाओं के अनंतरकाल में भी जारी रहा। तिरुमला मंदिर १६ एकड के जमीन में २ गोपुर और ३ प्राकार और चार माडावीथियों से, केवल आलय २.५ एकड और पवित्र पुष्करिणी १.५ एकड में है।

---

1) Tirupati Sri Venkateswara, page 113-125.

तिरुमला आलय परिणाम विविध राजवंशों से संबंध विभिन्न शासकों और पोषकों द्वारा पुर्निर्मित है। तिरुमला मंदिर का विवरण यहाँ दिया गया है, यानी २ गोपुर, ३ प्राकार कई मंडप, स्तंभों के मंदिर, कल्याण मंडप, गोल्ल मंडप, १००० स्तंभों के मंडप और विविध निर्माण आदि कलाएँ और अद्‌भुत पुरातन निर्माण उपर्युक्त राजवंशों के समय में ही वृद्धि की गई है।

काल	वृद्धि
संगम्	सिर्फ मूर्ति है - आलय निर्माण पद्धति नहीं हैं।
तोंडमान	तात्कालिक निर्माण
प्राचीन पल्लव	पर्वत से गर्भगृह निर्माण
चोल	मुखमंडप से गर्भगृह निर्माण
पांड्य के सामंत यादव राज	विमान गोपुर, शयन मंटप, रामुलवारि मेड़ा, (चहार दीवारी) (श्रीराम की अहारी) मुक्कोटि प्राकार, विमान प्राकार, संपंगि प्राकार, महा गोपुर, वेंडिवाकिलि (चाँदी का द्वार) गोपुर,
विजय नगर राजा	तिरुमलगिरि मंडप, रंगनायक मंडप, तिरुमलराय मंडप, अद्‌दाल मंडप, विमान प्राकार के चारों ओर कल्याण मंडप, अन्य भीतरी के निर्माण, हजारों स्तंभों का मंडप।

श्री वेंकटाचल माहात्म्यम - वैकुंठ गुफा

वैकुंठ गुफा[1]

श्री वेंकटाचल माहात्म्यम में त्रेतायुग के समय की वैकुंठ गुफा के बारे में वर्णन है। अब यह भौतिक रूप से स्वामिपुष्करिणी के ईशान्य दिशा में दो किलोमीटर की दूरी पर कडली वन के पास है। रावण से युद्ध करने केलिए जाते समय माता अंजना देवी की चाह पर शेषाचल में रुकी वानर सेना ने जंगल में भटकते हुए अचानक इस गुफा में प्रवेश करके विचित्र अनुभवों का सामना किया।

पुरावस्तु के प्रमाण - लिखित और पुरावस्तु : पुरावस्तु के आधार साधारणतया प्राचीन काल के मानव से उपयोगित चीजें होती हैं।

---

1) (i) The Tirumala Temple - page no.190

(ii) Vaikunta Guha vido https://www.youtube.com/watch?v=GU5trlW_BMo&t=661s

हनुमान की विग्रह मूर्ति का प्रस्ताव :

सब से पहले देश में सन् ४-५वीं शताब्दी के रॉक-कट आर्किटेक्चर में, गुप्तों के समय में पहाड पर शिल्प के रूप में हनुमान की आराधना को देख सकते हैं। गुप्तों के समय के बहुत से सम्राट वैष्णव है। इसलिए नरसिंह, विष्णु और रामायण की कथाओं के शिल्पों को उनके निर्माण में हम देख सकते हैं।

हनुमान की पहली मूर्ति आंध्रप्रदेश के गुंटूर जिले के उंडवल्ली की पहाडी गुफाओं में पहचान गया है। कहते हैं कि ये गुफाएँ सन् ७वीं सदी के हैं। ये विष्णु कुंडिन राजाओं के समय की हैं।

तिरुमला में आकाशगंगा, कुमार धारातीर्थ, तुंबुर तीर्थ आदि है।

आकाशगंगा :

विविध पुराणों के अनुसार अंजनादेवी ने तिरुमला के आकाशगंगा के अत्यंत निकट स्थित इस प्रदेश में तप किया था। इसलिए इस तिरुमला पर्वत को ''अंजनाद्रि'' नाम से भी बुलाया जाता है।[1]

तिरुमला श्री वेंकटेश्वर मंदिर की उत्तर दिशा में महावृक्षों से, लतागुल्मों से, विभिन्न सुगंधित फल, वृक्ष समूह से भरे ऊँचे पहाड हैं। इस घने जंगल में, घाटियों में जंगली जानवर पहले स्वेच्छा से विहरण करते थे। उन पहाडों में एक जगह पर समुद्रतल के २,७०० फुट की ऊँचाई में रहा सुरंग मार्ग से नीचे को हमेशा पानी बहता रहता है। वही झरना आकाशगंगा नाम से बुलाया जाता है। यह झरना पहाड के अंदर से बहते हुए पृथ्वी पर उतर रहा है। इसीलिए आकाशगंगा का नाम सार्थक नाम रहा। यह तीर्थ १३° - १४° उत्तर अक्षांशं पर ७९°-२०° पूरब रेखांशं पर है। यह मुक्ति दायी सप्ततीर्थों में एक है। आकाशगंगा परम पवित्र तीर्थ है। आकाशगंगा जल श्री वेंकटेश्वर स्वामी के अभिषेक आदि में उपयोग किया जाता है। यह श्री बालाजी मंदिर के ५-५ कि.मी. दूरी पर है। इस तीर्थ के लिए मेषमास के चित्ता नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा पर्व दिन हैं। अमृतपान करनेवाले सुरों को भी अमृत को भुलानेवाले मधुराति मधुर तीर्थ से 'अमृत' नामक जल नाम को सार्थक करनेवाली शक्ति से यह तीर्थ प्रवाहित हो रहा है।[2]

बेडी आजंनेय (हनुमान) :

हनुमान की यह अद्‌भुत मूर्ति हाथ जोड़े खडी है। इस तरह की विचित्र मूर्ति और कहीं नहीं दिखाई देती है। यह श्री वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर के सामने है। यह सालुव नरसिंहरायलु के समय की है। पुराणों के अनुसार हनुमान बचपन में महर्षियों के द्वारा प्राप्त वर की घमंड से बहुत शरारती काम करता था। स्थानीय ऐतिह्य के अनुसार बालहनुमान के नटखट कामों को काबू में लाने के लिए उसकी माँ अंजना देवी ने उसके हाथों को बाँध कर आदेश दिया कि बिना हिले उसी प्रदेश में रहे। यह विषय भी स्पष्ट करता है कि यह पवित्र प्रदेश ही हनुमान का जन्म स्थान है।

---

1) Sri Venkatachala Mahatyam - page no.198-206

2) श्री वेंकटेश्वरवैभवं, पंडित वेदांत जगन्नाथाचार्युलु, पृ-१३६.

श्री व्यासराय[1] :

विजय नगर के राजा साल्व नरसिंहराय के समय में बारह साल (१४८६-९८) तिरुमला में पालन और पूजा कार्यक्रमों को श्री व्यासरायलु ने ही पर्यवेक्षण किया। श्री व्यास तीर्थ ने १२ सालों तक तिरुमला में रहकर श्री वेंकटेश्वर स्वामी की अर्चना की। वे विजय नगर साम्राज्य के विविध स्थानों में लगभग ७०० से अधिक हनुमान की मूर्तियों को स्थापित करने से प्रसिद्ध हुए।

भारतदेश में हनुमान की मूर्तियों को आसीन, स्तानक, यान भंगिमा - तीन रूपों में देखते हैं। भारत देश में हनुमान की आराधना बहुत प्रसिद्ध हुई है। कई गाँवों में कम से कम एक हनुमान की मूर्ति या पूजा मंदिर का रहना आश्चर्य की बात नहीं है। आज भी हनुमान को संरक्षण देवता मानते हैं।

कई किलों और राज घराने के निर्माणों में हनुमान की मूर्ति गाँव निर्माण की सुरक्षा के लिए प्रवेश द्वार के आगे प्रबंध किया गया है। यह चंद्रगिरि किला, पेनुगोंडा किला और आंध्र प्रदेश के कई अन्य किलों में भी दिखती हैं।

हनुमान की मुद्राएँ[2] (सिक्के) :

प्राचीन समय के राजाओं ने जिन मुद्राओं का (सिक्कों) उपयोग किया था, उनपर उनके इष्ट देव की मूर्तियाँ रहती थीं । विजय नगर काल की प्रारंभिक मुद्राओं पर हनुमान को हम देख सकते हैं। विजय नगर राजाओं के समय के हरिहर-१, बुक्का-१, वेंकट पतिराय-२ आदि से मुद्रित मुद्राओं पर हनुमान का चित्र है। इन मुद्राओं में हनुमान का समुद्र लंघन भंगिमा या राक्षसों को दंडित करने के लिए उठाए हुए हाथ की भंगिमा हमें दिखाई पड़ती है।

शिलालेख[3] :

हनुमान से संबंधित पहला शिलालेख सन् ८वीं शताब्दी में रायलसीमा के कडपा जिले के पुलिवेंदुला मंडल के कासनूर गाँव से प्राप्त हुआ है। आंजनेय मंदिर में यह तराशा गया कि वहाँ भूदान किया गया था।

उप संहार :

तिरुमला पर्वतों के पास स्थित शेषाचल पर्वत श्रेणियों के अंजनाद्रि हनुमान का जन्मस्थल तर्क के लिए कई आधार हैं। अंजनाद्रि / शेषाचलम आज के तीर्थकुंड, पवित्र तीर्थ, झरने, भारी पहाड श्रेणियाँ, गहरी घाटियाँ, घना जंगल, विरल वृक्ष जाल और जंतु समूहों से भरा घना जंगल है।

---

1) History of Tirupati - The Tiruvengadam Temples, Vol.II, page no.458

2) (i) Proceedings of Srikantaya Centenary Seminar Early Vijayanagara Studies in its History and Culture (*Coins of the early period of Vijayanagara empire - A.V.Narasimha Murthy*)

(ii) International Journal of Scientific and Research Publications, Volume-9, Issue4 (Cultural importance of the Vijaya Nagara Coins-Dr.P.Bhaskara Rao) page no.331.

3) Futher Sources of Vijaya Nagara History - Sastri Nilakanta. K.A. and Venkata Ramanayya.N

वेंकटाचल माहात्म्यम में स्पष्ट किया गया कि श्रीराम ने वानर सेना के साथ शेषाचल, वैकुंठ गुफा का संदर्शन किया था। परन्तु इस शेषाचल प्रांत के पुरातन आवासों को हम अलग नहीं कर सकते है। आज की खोज के कार्यों के द्वारा पता चला कि अंजनाद्रि में रहे शेषाचल श्रेणियों के पुरातन शिला फलक और पहाड पर पिक्टो ग्राफ जैसे कुछ आदिवासी प्रांत की पहाडी कलाएँ पूर्व इतिहास के स्वभाव से हैं।

यह साफ कह सकते हैं कि आज यह प्रांत घना रिजर्व वन और रांक्य वृक्ष संपत्ति से लपेटे रहने पर भी, इस जगह में मानव वास करते थे। पुरातत्व नजर से सूक्ष्म स्तर पर क्रम बद्ध अध्ययन करने के लिए और निर्वहण करने के लिए यह उपलब्ध नहीं है। जंगली जानवरों का अस्तित्व और विरल रक्त चंदन पेड, लकडी, तस्करी कार्यकलापों से रक्षा करने के लिए जंगल में कठिन चौकसी व्यवस्थाओं का प्रबंध किया गया है।

शेषाचल पहाड श्रेणी में हनुमान का जन्मस्थल कई पुराणों और वेंकटाचल माहात्म्यम में साबित होने के कारण, इस साहित्य की सूचना को सूक्ष्म स्तर पर अध्ययन करके, अपने लक्ष्य को सिद्ध करने के लिए अत्याधुनिक तकनीकी ज्ञान की सहायता से पुरावस्तु शोधन की सीमा को और भी जारी रखनी है। हनुमान के जन्मस्थान का परिशिलन करने के लिए यहाँ उद्धृत पौराणिक अंशों को प्रामाणीकृत या दर्ज किए गए सबूतों के रूप में ग्रहण कर सकते हैं।

भारतदेश के अन्य प्रांतों में मुख्यतः ५ स्थानों में अन्य लोग हनुमान का जन्म स्थल दिखानेवाले स्थान रामायण से संबंधित स्थानीय विश्वासों पर ही आधारित हैं। वे साहित्यिक रीति से या पुरावस्तु के अनुसार निर्धारित या पंजीकृत प्रमाण नहीं हैं।

हनुमान एक पुराण पुरुष थे। इसलिए शिलालेखों के साथ किसी ऐतिहासिक रिकार्ड में उनका जन्मस्थान सूचित नहीं किया गया। हनुमान का जन्मस्थल 'अंजनाद्रि' यह सारे विश्व से माना गया तथ्य है। उपर्युक्त सारे आधार मुख्यतः पौराणिक, साहित्यिक प्रमाण, अंतिम-मध्ययुग शिलालेखों में तिरुमला पर्वत का अंजनाद्रि नाम स्थिर किया है। हनुमान का जन्म स्थल के लिए हम उन्हें आधार के रूप में ले सकते हैं।

❀❀❀

माता अंजना जब अपने काम में मग्न थी तब बालहनुमान का सूरज को फल मानकर उनकी ओर उड़ना

9. भगवान वेंकटेश्वर भक्ति रचनाओं में अंजनाद्रि

तेलुगु मूल - डॉ. आकेल्ल विभीषण शर्मा अनुवाद - श्रीमती वी.शिरीषा

अनेक भक्त कवियों ने हनुमान की स्तुति की। पद कवियों ने विशेषरूप से क्षेत्रसंकीर्तन किया है। तेलुगु भाषी भक्त कवियों में ताल्लपाक अन्नमय्या और उनके वंशजों ने हनुमान को ''सेवाग्रगण्य'' के रूप में और अंजनाद्रि की भी प्रस्तुति की। जैसे तेलुगु में ताल्लपाक पद साहित्य है, उसी तरह कन्नड में 'हरिदास साहित्य' प्रसिद्ध है। हरिदासों में श्रीपादराय से लेकर आज के भक्त कवियों तक सभी ने हनुमान की प्रशंसा की हैं। उनके लिए ''हनुमस्वामी'' उनके प्राण समान देवता है। माना जाता है कि हरिदासों में श्री पुरंदरदास ने चार लाखों से बढ़कर रचनाएँ उनके भक्ति-कीर्तनों में भी अन्नमय्या के कीर्तनों की तरह क्षेत्र कीर्तनों का अपना विशिष्टस्थान हैं।

कर्नाटकांध्र प्रांतों में 'हनुमंतराय' शब्द बहुत प्रचलित है। अन्नमय्या के भक्ति कीर्तनों में मतंगाद्रि, कलशापुर, मंगांबुधि, विजयनगर के निचला शहर इत्यादि हनुमत् क्षेत्र संकीर्तनों में प्रधान रूप से गोचर होते हैं।

कृते वृषाद्रिं वक्ष्यन्ति त्रेतायामञ्जनाचलम्।
द्वापरे शेषशैलं च कलौ श्रीवेङ्कटाचलम्,[1]

युगों के अनुसार तिरुमला किस प्रकार प्रसिद्ध हो रहा है- यह श्लोक बताता है। ये नाम उन युगों में प्रचलित ऋषि देवताओं के स्तोत्रों में प्रयोग किए गए है। युग भेद बिना सभी युगों में इन नामों से स्तोत्र करना, इस क्षेत्र की विशेषता है। इसका कारण यह है कि इन ऋषि-देवताओं की त्रिकालज्ञता ही है।

अन्नमय्या 'अंजनापुत्र'- शब्द की तुलना ने 'अंजनीतनय' - जैसे संबोधन ज्यादा किया है।

अंजनाचलमु मीदनतडु श्रीवेंकटेशुडंजनीतनयुडा यनिसजुडु...[2]

ऐसे ही अन्नमय्या से हनुमान की माँ अंजनादेवी ही अंजनादेवी - जैसे बताया गया है।

''अंजनीदेवी कोडुकु हनुमंतुडु संजीवनि तेच्चिनाडु सारे हनुमंतुडु'' - (अन्नमय्या कीर्तन)[3]

ऐसे ही अन्नमय्या ने अंजनाद्रि को ज्यादातर 'अंजनगिरि' नाम से संबोधित किया है।

मिसिमिनंजनगिरि मीद वसंतवेलनु वेस कल्पवृक्षमु विरुलिच्चिनट्लु - (अन्नमय्या कीर्तन)[4]

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य (भविष्योत्तरपुराणांतर्गत - १-३६,३७), द्वितीय भाग, पृ.-२६३, ति.ति.दे. प्रकाशन

2) ताल्लपाक पदसाहित्यं - ४ अध्याय, ४४३ संकीर्तन.

3) ताल्लपाक पदसाहित्यं - ४ अध्याय, २७२ संकीर्तन, ४९९ संकीर्तन.

4) ताल्लपाक पदसाहित्यं - १३ अध्याय, १०७ संकीर्तन.

भगवान श्रीनिवास को अंजनगिरिरायुडु, अंजनाद्रीश्वरुडु- ऐसे संबोधनों से अन्नमय्या ने स्तुति की।

''अंजनगिरिरायडु वेंकटपति संजीवनि परुषल कोदुवगनु[1]

ऐसे ही - अलिगि साधिंचदगडंजनाद्रीश्वरुनि कलिकि चूपुलने मदि करगग चेसेदनु''[2] - **अन्नमय्या कीर्तन**

अन्नमय्या के वंश के पदकवि हनुमान के जन्म, बाल्य, विद्याभ्यास आदि का दर्शन करके, कीर्तन करके उन्होंने स्वयं को पुनीत करके हमें भी पुनीत किया हैं।

बाल हनुमंतुनि रूपान्नि जात वर्णुडु (४-८३)
कनक कुंडलालतो कौपीनमुतोड जनिइंचिनाडु (२-२०७)
पुट्टु कौपीनम् महाद्भुत यज्ञोपवीतमु (४-८५)
सिरुल बंगारु कासे चेलरेगिन सिंगारमु (४-४१३) - ऐसे वर्णित किया है।

हनुमान के जीवनसंग्राम का प्रथम शंखाराव है - बाल सूर्य का संदर्शन, एवं उसे फल समझकर खाने का प्रयत्न करना। अन्नमय्याजी ने अपने कीर्तनों में इसका वर्णन किया है।

पुट्टिननाडे भुवनमुलेरगग- पट्टिति सूर्युनि पंडनुचु'' (३-४२२)
अंदुकोने सूर्यफलमनि हनुमंतुडुनु (४-१५५)
कंजाप्तफलहस्त (३-५२२)
वो रविग्रहण (४-३२७)

अन्नमय्या ने हनुमान के विद्याभ्यास के बारे में अनेक बार स्मरण करने का तरीका और कीर्तनों का व्यक्तीकरण है :

चदिवे सूर्युनि वेंट सारे मोगमु द्रिप्पुचु
एदुट सीतनि महिमेमनि चेप्पेमय्या... (४-५०१)

उदयाचलमु मीदि नोक्क जंग चाचुकोनि
उदुटन नवरात्रि नोक्क जंग चाचुकोनि
तुद सूर्यमंडलमु तोड मोमु दिप्पुकोंटा पेदवुलेत्ति चदिवे (४-४८०)

मोगि सूर्युनि चे शास्त्रमुलु चदिविनवाडु (४-५२५)

---

1) ताळ्पाक पदसाहित्यं - १ संपुट, ११९ संकीर्तन.

2) ताळ्पाक पदसाहित्यं - २५ संपुट, १७८ संकीर्तन.

''कौसल्यासुप्रजा रामा'' नामक सुप्रभात स्तोत्र जिस तिरुमल क्षेत्र में ध्वनित होती है वहाँ 'श्रीमद्खिलमहीमंडल-धरणीधरमंडलाखंडलस्य'- नामक गद्य में शेषाचल-गरुडाचल-नारायणाचल-''अंजनाचलादि''.... ऐसे भी हर दिन गूँज उठता है। कन्नड में दासभक्तशिरोमणि पुरंदरदास, श्री पादराय आदि व्यासराय जैसे प्रसिद्ध हैं। उनके कीर्तनों में तिरुमला को ही अंजनाद्रि मानकर कीर्तन करने का संप्रदाय स्पष्ट रूप से दिखायी पडता है।

पुरंदरदास की तिरुमला रचनाओं में से पहली कृति

(जीवन काल-१४८४-१५६५ ए.डी)

पुरंदरदास ने तिरुपति वेंकटरमण एवं, तिरुमला का सुंदर ढंग से कीर्तन करके पुनीत हुए। उन्होंने वहाँ के बालांजनेय का दर्शन किया है। अतएव-

कूसिन कंडीरा, मुख्य प्राणन कंडीरा
बालन कंडीरा, बलवंतन कंडीरा
अंजने उदरदि, जनिसितु कूसु
रामर पादकेरगितु कूसु
सीतगे उंगर कोट्टितु कूसु
लंकापुर वनु सुट्टितु कूसु[1]

ऐसे उन्होंने बालांजनेय को शिशु के रूप में दर्शन करके परवश होकर कीर्तन किया है। उसी तरह उत्तर भारतीय महंतों ने भी दर्शन किया हैं। इसीलिए वे हनुमान-उपासना करते हुए देश की चारों ओर घूमे। इस क्षेत्र में उन्होंने हनुमान का बालस्वरूप व तेज का दर्शन किया है ऐसा निर्धारण किया है कि यही हनुमान का जन्मक्षेत्र है। उन्होने जाबालि तीर्थ में ही अपने जीवन बिताया था।

तिरुपति वेंकटेरमण निनगेतके बारदु करुण
नंबिदे निन्नय चरण परिपालिस बेको करुण

अलगिरिइंदलि बंद स्वामी अंजनगिरियलि निंद
कोललु ध्वनियबलु चंद नम्म कुंडलराय मुकुंद

बेटे याडुत बंद स्वामी बेट्टद मेले निंद
नीटुगार गोविंद अल्लि जेनु सक्करेय तिंद

1) दासकीर्तनलु, श्री पावंजि गुरुराव

मूडल गिरियलि निंद मुद्दु वेंकटपति बलवंत
ईडिल निनगे श्रीकांत ईरेलु लोककनंत

आडिदरे स्थिरवप्प अबद्धगलाडलु ओप्प
बेडिद वरगलिनिप्प नम्म मूडलगिरि तिम्मप्प

अप्पवु अतिरस मेद्द स्वामी असुरर काललि ओद्द
सतिय कूडाडुतलिद्द स्वामी सकल दुर्जनरनु गेद्द

बगे बगे भक्ष्य परमान्न नाना बगेय सकल शाल्यन्न
बगे बगे सोबगु मोहन्न नम्म नगुमुखद सुप्रसन्न

काशी रामेश्वर दिंद अल्लि काणिके बरुवुदु चंद
दासर कूडे गोविंद अल्लि दारि नडेवुदे चंद

एल्ला देवर गण्ड अव चिल्लरे दैवद मिंड
बल्लिदवरिगे उद्दंड शिव बिल्ल मुरिद प्रचंड

कासु तप्पिदरे पट्टि पट्टि कासु बिडदे गंटु कट्टि
दासनेंदरे बिड गट्टि नम्म केसक्कि तिम्मप्पसेट्टि

दासर कंडरे प्राण ता धरेयोलधिक प्रवीण
द्वेषिय गंटल गाण नम्म देवगे नित्य कल्याण

मोस होगुवनल्ला ओंदु कासिगे ओड्डुवकय्य
एसु महिमगारनय्य नम्म वासुदेव तिम्मय्य

चित्तावधान पराकु निन्न चित्तद दया ओंदे साकु
सत्यवाहिनि निन्न वाक्कु नीनु सकल जनरिगे बेकु

अल्लल्लि परिशेय गुंपु मत्तल्लल्लि तोपिन तंपु
अल्लल्लि सोगसिन सोंपु मत्तल्लल्लि परिमलदिंपु

अल्लल्लि जनगल कूट मत्तल्लल्लि ब्राह्मरूऊट
अल्लल्लि पिडिद कोलाट मत्तल्लि उरिगे ओट

पाप विनाशिनि स्नान हरि पादोदकवे पान
कोप तापगल निधान नम्मु पुरंदर विट्ठलन ध्यान

इस तिरुपति वेंकटरमण के कीर्तन में पुरंदरदासजी ने श्री वेंकटेश्वरस्वामी को ''अंजनगिरिनाथ'' के रूप में स्तुति की हैं।

अखिल लोकैकवंद्य हनुमंतुडा सीत-
शिखामणि रामुनिकि चेकोनि तेच्चितिवि

उपर्युक्त कीर्तन में विजयों के साकार-रूप का बयान करते हुए - ''घटन अलमेल्मंगकांतु, श्री वेंकटेशकु, तटुकुन बंटुवै, धरणि निल्वितिनि''- ऐसे स्वामी के सामने खडे हुए हनुमान को अन्नमय्या से परोक्ष रूप से हम बात को कही गयी ग्रहण कर सकते हैं। अन्नमय्या कीर्तन ही काफी है जो हमें बताते हैं कि तिरुमला श्री श्रीनिवास ही अंजनगिरि सार्वभौम है - तिरुमला को अमृतस्वरूप के निजनिवास जैसे बताकर, अन्नमय्या भवरोगवैद्य को इस तरह कीर्तन किया है।

एडयक वोक कांत येक्कुव उंडिनदि
कडलेनि अंजनाद्रि गारुडपुमंदु

ऐसे विश्लेषण किया है। उसी तरह ''अणुरेणु परिपूर्ण मैन रूपमु''- ऐसे वेदांत, योगींद्र, ब्रह्मादि - जो विविध प्रकार से भासित परब्रह्म रूप को दर्शित करते हैं। उसी प्रकार अन्नमय्या ने अभिषेक कीर्तन में - ''भाविंचरे चेलुलार परमात्मुनि-चेवदेरि चिगुरुलो चेगयै युंडेनु'' - (इस संकीर्तन में) - ''अंचल तट्टुपुणुगु अवधरिंचेवेल, यचनंजनाद्रिपै येनुगै उंडेनु'' - ऐसे उद्धृत किया है कि पुनुगु सेवा में काले हाथी की तरह इस अंजनाद्रि पर है। उसी प्रकार ''कट्टेदुर वैकुंठमु काणाचैन कोंड'' - संकीर्तन में ''पूर्वपुटंजनाद्रि ई पोडवाटि कोंड'' कहकर स्तुति करते हैं। इस तरह ताल्लपाक के दासभक्तों ने अपने कीर्तनों में तिरुमला को अंजनाद्रि के रूप में स्तुति करके - पुराणोक्त सत्य जो है, हनुमान जन्मक्षेत्र-तिरुमला, उसे प्रतिपादित करके तर गए हैं। वायोरावेशनाच्चैवं प्राहुरंजन संज्ञकम् वेंकटेश्वर जो मेरुपुत्र है उनमें वायुदेव का शक्ति प्रवेश करने के कारण, 'अंजन' नाम से बुलाया जा रहा है जो वायुदेव का पर्याय है।

श्री प्रसन्न वेंकटदासु (ई.२६८०-२७५७)

सोलहवें शताब्दि में, उत्तर कर्नाटक के बागलकोट निवासी ''श्री प्रसन्न वेंकटदासु'' की जीभ पर श्रीनिवास ने अपने हाथों से ''प्रसन्न वेंकटेश'' नामक बीजाक्षरों को लिखा था। उस भक्तवत्सल श्रीहरि को आरती का कीर्तन करते हुए ''मंगल अंजनगिरि पतिगे मंगलम'' ऐसे सात पहाडों में से अंजनाद्रि का वैभव का वर्णन किया है। केवल इतना ही नहीं बल्कि प्रादेशिक वैभव का भी आविष्कार करते हुए तिरुमला को ''अंजनगिरि'' कहते हुए प्रशंसा करने की बात आचार्य सर्वोत्तमराव ने विश्लेषण किया। (वेंकटेश्वर वैभवम्-पृ-२५१, प्रकाशक ति.ति.दे.-२००७)

मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा (ई.सन् १७३०-१८२७)

श्री वेंकटाचल माहात्म्य के प्रथमाश्वास में वेंकटाद्रि के विविध नामों का वर्णन करते हुए, अंजनाद्रि को बीस नामों से एक तेटगीति (तेलुगु-पद्य का एक छंद) में अभिवर्णन करते हुए मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा ने एक रहस्य के बारे में बताया है कि देवताओं के सहयोग से हनुमान का जन्म हुआ था।

अंजनाद्रि

अंजनादेवि तपमु मुन्नचट जेसि
पोसग हनुमंतुडनु वरपुत्रुगांचे
नपुडु देवतलेल्ल साहाय्यु लगुचु
ना गिरिकि नंजनाद्रिपे रमर निडिरि।[1]

तरिगोंडा वेंगमांबा ने चतुर्थाश्वास में ''अंजनाचल को पुत्रसंतान देनेवाला कल्पवृक्ष'' कहकर प्रशंसा की थी। हमें यह तथ्य, शौनक मुनि और सूत के बीच के संवाद में स्पष्ट होता है।

'मुनिनाथ! वृषभाद्रि यनुदानि कंजना
चलमनु पेरेट्लु गलिगे?' ननिन
ना शतानंदुडिट्लनिये गेसरियनु
वनचरोत्तमु भार्य तनकु सुतुलु
गलुगकुंडग, मतंगऋषीश्वरुनि जेरि
म्रोक्कि इट्लनिये 'नो वरेण्य!
पुत्रहीनुल केंदु बुण्यगतुलु गल्ग
वनु वेदपूरुषुंडंदुवलन
वरकुमारुडु नाकु गावलयु नंदु
केटु तपमु जेतु मी रानतीयु' डनुचु
नंजनादेवि प्रार्थिंचि यडुगगानु
विनि करुण नत डप्पु डा वेलदि कनिये।[2]

वेंगमांबा ने अंजनादेवी की तपस्या का रमणीय वर्णन करके हनुमान जन्म के दृश्य का ऐसा वर्णन किया कि मानो वह आँखों के समक्ष ही हो रहा है।

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य - मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा - १-११५

2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य - मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा - ४-२९

हनुमान का जन्म

दशममासंबु वच्चे नत्तरि धरित्रि
नंजनादेवी गर्भमं दनघुडैन
पुत्रुं डुदइंपगा, जूचि पुष्पवृष्टि
सुरलु गुरिपिंचि संतोषभरितुलैरि।[1]

ऐसे उत्पन्न हनुमान के आकर्षक रूप को वेंगमांबा जी ने अत्यंत सौंदर्य सहित मत्तेभम् में (तेलुगु का एक छंद विशेष) अक्षरबद्ध किया है :

घन वज्रांगमु, दीर्घवालमु, लसत्कांतुल्, बलस्थैर्यमुल्
मुनुलेल्लं गनि 'यांजनेयुडु महामुख्युंडगुन् धात्रिपै'
ननि दीविंचुचु मारुतात्मजुन कं दासक्तितो नंदरुन्
हनुमंतुंडनु नामधेयमिडि रत्याह्लाद मुप्पोंगगन्।।[2]

इस प्रकार त्रेतायुग में अंजनादेवी तपस्या करके पुत्रवती होने के कारण तिरुमला पर्वत ''अंजनाद्रि'' के नाम से प्रसिद्ध हुआ है।

❀❀❀

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य - मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा - ४-३३

2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य - मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा - ४-३४

उगनेवाले सूरज को फल समझकर हनुमान उड रहे हैं
तथा चित्र में वेंकटाद्रि द्रष्टव्य है

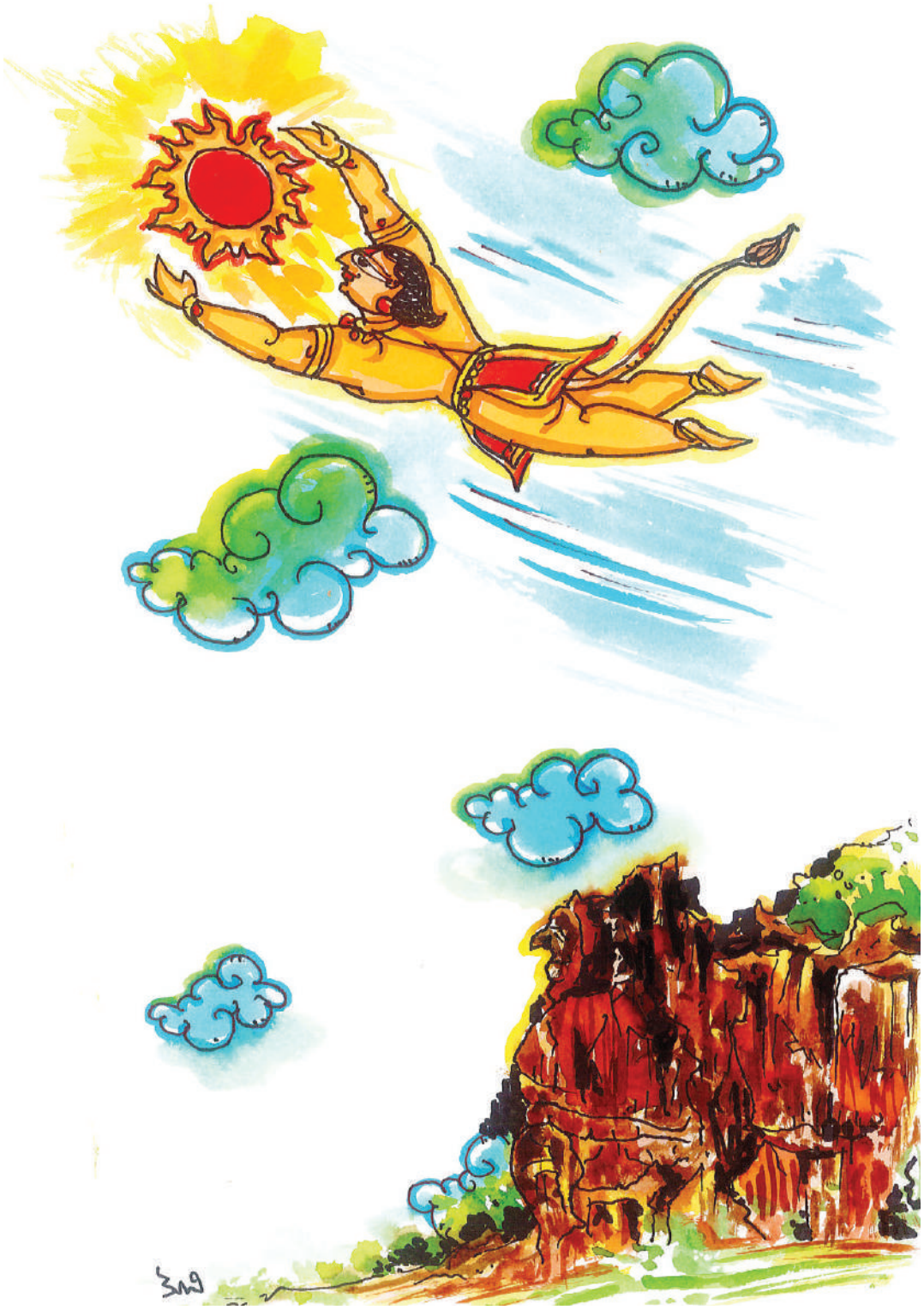

10. वाङ्मय प्रमाण

तेलुगु मूल - आचार्य शंकर नारायणन् अनुवाद - कुमारी जी.शशिकला

किसी भी विषय को भी वाङ्मय प्रमाण के साथ एवं शिलालेखों के प्रमाणों के साथ प्रमाणित करें, तो वह विषय मूल्यवान होगा। ''हनुमान जी का जन्मस्थान अंजनाद्रि'' - ऐसा सभी पुराण एक कंठ से घोषणा रहे हैं। इसलिए ''वेंकटाद्रि ही अंजनाद्रि'' - ऐसा प्रमाणित करने के लिए उचित प्रमाण ग्रंथों से, शिलालेखों से यदि हम दिखा सकेंगे, तो पौराणिक प्रमाणों को ये प्रमाण और अधिक बल दे सकते हैं।

१. वाङ्मय प्रमाण

तमिल में रचित कंबारामायण, वाल्मीकि रामायण का अद्भुत अनुवाद है यह काव्य वराह पुराण के अनुसार सीता की खोज करते हुए वानरों का वेंकटगिरि पर आने का विषय बताता है।

अरुंददिक्कु अरुगु चेन्रु आंडु अलगिनुक्कु अलगु चैदाल,
इरुंदे तिक्कु उणर्न्दिलादार्, एगिनार्, इडयर मादर्
पेरुंददिक्क अरुंदेन् मारुं मरकद पेरुंकुनुऐय्दि
इरुंदु अदिल् तीर्न्द चेन्रार् वेंगडत्तु इरुत्त एल्लै[1]

सुंदरतम सीता देवी के रहने का स्थान मालूम न होने पर वानर पहले अरुंधतिगिरि, वहाँ से मरकतगिरि एवं उसके बाद वेंकटगिरि पहुँचे थे।

उसी तरह वेदांतदेशिक नामक श्रीवैष्णओं द्वारा पूजित आचार्य ने (सामान्य शक १२६८-१३६९) अपने हंसदूत नामक काव्य में ''वेंकटाद्रि ही अंजनाद्रि है'' - ऐसा कहा है।

विष्णोर्वासादवनिवहनाद्धरत्नैः शिरोभिः
शेषस्साक्षादयमिति जनैस्सम्यगुन्नीयमानः,
अभ्रैर्युत्तोऽलघुभिरचिरोन्मुक्तनिर्मोककल्पैः
अग्रे भावी सपदि नयने रंजयन् अंजनाद्रिः।[2]

अपने सिर पर विष्णु के रहने के कारण से और रत्नों का धारण करने के कारण ''यह पहाड आदिशेष (शेषनाग) ही है'' - ऐसा जनता के द्वारा प्रशंसित वही अंजनाद्रि बादलों को ही केंचुली-सा धारण कर नयनाभिराम लगता है।

इसी तरह उनकी रचना दयाशतकम् में ''अंजनाद्रि'' का नाम कई बार उद्धृत किया गया है।

अंजनाद्रीश्वारदयामभिष्टौमि निरंजनाम्[3]

---

1) कंबरामायण किश्किंधा खांड - ४७३२
2) हंसदूतं - १-२१
3) दयाशतकं - १०

अंजनाद्रीश वेंकटेश की स्वच्छ दया की प्रशंसा करता हूँ।

संजीवय तु दये मामंजनगिरिनाथरंजनी भवती[1]

हे अंजनाद्रीश! श्री वेंकटेश्वर की दया! तुम मुझे पुनर्जीवित करो।

अमृतांशमवैमि दिव्यदेहं मृतसंजीवनमंजनाचलेंदोः[2]

अंजनाचल श्री वेंकटेश्वर स्वामी के मृतसंजीवनि समान और चाँद सा भासमान उनके दिव्य देह का दर्शन कर रहा हूँ।

नित्यापूर्वं निधिमिव दये निर्विशंत्यंजनाद्रौ।[3]

हे दया! हमेशा महत्व युक्त निधि जैसे अंजनाद्रि को पुण्यात्मा पहुँच रहे हैं।

अशेषमविशेषतस्त्रिजगदंजनाद्रीशितुः।[4]

हे दया! अंजनाद्रि के नाथ श्री वेंकटेश्वर के पाद पंकज से तुम सदा मुद्रांकित रहती हो। प्रतिवादि भयंकर अण्णंगराचार्य कृत अंजनाद्रि (सामान्य शकं १३६१) काव्य में, वे ''अंजनाद्रिनाथ स्तोत्र'' नाम से ही वेंकटाद्रिनाथ को गाकर परवश हो गये। ताल्लपाक अन्नमाचार्य ने (सामान्य शकं १४०८-१५०३) अपना षण्मुखप्रिय राग के कीर्तन में वेंकटाद्रि को ही अंजनाद्रि कहकर स्तुति की है।

अणुरेणु परिपूर्णमैन रूपमु
अणिमादिसिरि अंजनाद्रिमीदि रूपमु
अंजनाचलमु मीद नतडु श्रीवेंकटेशु
डंजनीतनयुडाय अनिलजुडु[5]

ऐसा 'अंजनाचल' 'अंजनासुत' नामों से कीर्तन करना भी समुचित रूप से प्रमाणित है। और उन्होंने ही

मिसिमि नंजनगिरिमीद वसंतवेळनु
वेस गल्पवृक्षमु विरुलिच्चिनट्लु....[6]

---

1) दयाशतकं - १२
2) दयाशतकं - २२
3) दयाशतकं - ४४
4) दयाशतकं - ८५
5) ताल्लपाक पदसाहित्य - ४, संपुट - ४४३ संकीर्तन
6) ताल्लपाक पदसाहित्य - १३ संपुट - १०७ संकीर्तन

कहते हुए अंजनगिरि का वर्णन किया है। इस तरह कई कीर्तनों में अंजनाद्रि, अंजनगिरि नामों से अन्नमाचार्य ने बालाजी स्वामी को प्रशंसित करते हुए गाया है। सामान्य शकं १४८४-१५६५ के बीच जीवित महानुभाओं में पुरंदरदास श्री वेंकटेश्वरस्वामी को स्तुति करते हुए रचित कीर्तन में

अळागिरियिंदलि बंद स्वामि अंजन गिरियलि निंद
कोळलनूदुव चंद नम्म कुंडलराय मुकुंद

उन्होंने कहा कि उस श्रीनिवास का निवास स्थान अंजनगिरि ही है।

वामनभट्टाचार्य

१५ शताब्द के वेमभूपाल के दरबारी कवि वामनभट्टबाण ने अपनी रचना 'हंससंदेश' में अंजनाद्रि का इस तरह वर्णन किया है.....

शृंगाघाटैः तपनतुरगालीढदूर्वाप्रवालै।
रंहच्छेदी तदनु भवता दृश्यतां अंजनाद्रिः।
हेलालोलं विहरति सदा यत्र पोत्री पुराणो
यद्दंष्ट्राग्रे विह्वलिमकरोत् पुष्पधूलीव भूमिः।[1]

''हे हंस! अपने शिखर पर सूर्य के अश्वों से चर्वित दूर्वा नामक तिनकों से भरा अंजनाद्रि को तुम देख सकते हो। उधर सनातन रूप से प्रकाशित वराहस्वामी रहेंगे। उस वराह मूर्ति के दाँत की नोक पर पुष्परजकण जैसा यह भूमि परिभ्रमण करती रहती है।

श्री वेंकटेश्वरदासरु

सा.कं १६८० में कर्णाटक राज्य में बागल्कोट में जन्में श्री वेंकटेश्वरदासरु ने गाया कि ''मगल अंजनगिरि पतिगे मंगलं''।

श्री रंगरामानुजाचार्य

श्री रंगरामानुजाचार्य १७ शताब्दी में जीवित महात्मा हैं। वह आचार्य अपने कठोपनिषद्भाष्य केलिए मंगल श्लोक में अंजनाद्रिनाथ को प्रणाम करके इस तरह कहते हैं -

अतसीगुच्छसच्छायमंचितोस्थसलं श्रिया।
अंजनाचलशृंगारमंजलिर्मम गाहताम्।[2]

सन के फूल जैसे सुंदर, श्री महालक्ष्मी मुद्रांकित अंजनाद्रि का ही अलंकार बने श्री वेंकटेश्वर मेरी अंजलि को स्वीकृत करें।

---

1) हंससंदेश, वामनभट्टबाणुडु - ३५

2) कठोपनिषत, श्रीरंगरामानुजभाष्यं, ति.ति.दे. प्रकाशन, १९८४

बोड्डुचेर्ल चिन तिम्मय

१६ शताब्द के बोड्डुचेर्ल चिन तिम्मया ने अपने ''प्रसन्नराघवनाट्य प्रबंध'' में तिरुमलेश की तीर्थ यात्रा के संदर्भ में ''अंजनाद्रीशु तीर्थयात्रा'' का प्रयोग किया है।

गुरुविलासनाभीसरोवरभवप्र
भूतभुवनांबुजातुंडुने तनर्चु
नंदनाद्रीशु तीर्थयात्रानुरक्ति
गूडे नी पारिषदुल पेन्गूट मिचट

''व।। इंदु नंदेल तिरुमल धरावरुंडुनु तिरुमल कोंड नेलु जेस काडु बूजिंचु वाडै...[1]

वर्णित किया गया है कि ऐसा ''नंद्याला पर तिरुमला रायलु (तिम्मराज) शासन करते समय अंजनाद्रीशु वेंकटेश्वर का दर्शन करने केलिए तीर्थयात्रानुरक्ति से अंजनाद्रि पारिषद राज्यसभा में इकट्ठे हुए थे। १६ शताब्दी के बोड्डुचेर्ल चिन तिम्मय कृत ''प्रसन्न राघव नाट्य प्रबंध'' में श्रीवेंकटेश्वर को अंजनाद्रीश के रूप में विर्णत किया गया है।

टेकुमल्ल रंगशाइ

१७ शताब्दी के टेकुमल्ल रंगशायी कृत 'वाणीविलासवनमालिका' ग्रंथ में अंजनाद्रि का प्रस्ताव है :-

अंजनाधर गुरुडाहार्य वृषशैल
नारायणाद्रि कनकशिखरूलु,
नीलाद्रि चिंतामणिगिरि वैकुंठाद्रि
वाराह वृषशैल मेरुगिरुलु
सिंहाद्रितीर्थाद्रि शेषाद्रि पुष्करा'
चल वेंकटाद्रुलु नेलमि श्रीनि
वासाद्रि श्रीशैल भासुर संज्ञल
कृतनाममुलु (गल्गु कोट्लकोलदि)

श्री वीरब्रह्मेंद्रस्वामी

१७ शताब्दी के वीरब्रह्मेंद्र स्वामी अपने गोविंद-वाक्यों में अंजनाद्रि के बारे में इस तरह वर्णित कर रहे हैं -

1) प्रसन्नराघवनाट्य प्रबंध - १-५,६

अंगनामणियैन आदिलक्ष्मनि गूडि
आनंदस्वामुलु वच्चेनि मा
अंगजजनकुडु आनंदमुलचेत
अंजनाद्रिकि वच्चि चेरेनुमा।[1]

तरिगोंडा वेंगमांबा

१८ शताब्दी की योगिनी तरिगोंडा वेंगमांबा 'श्री वेंकटाद्रिमाहात्म्य' - ग्रन्थ का तेलुगु में अनुवाद करके तर गई। इस ग्रंथ में भी तिरुमला की अंजनाद्रि में आंजनेय जन्म का वृत्तांत को हम देख सकते हैं।

अंजनादेवि तममु मुंदचट जेसि
पोसँग हनुमंतुँडनु वरपुत्त्रुँगांचे
नपुडु देवतलेल्ल सहायुलगुचु
ना गिरिकि नंजनाद्रि पेरमरनिडिरि।[2]

श्रीरामुडु वेंकटाद्रिकि वच्चुट

अंजनादेवि श्रीवेंकटाद्रिमीद
नुंडि रामुंडु बहुकपितंडमुलनु
गूडि वच्चुट गनि, पैडिकोंड डिग्गि
मोनसि येदुरुगजनि राघवुनकु म्रोक्कि.

घनुंडगु रामुंडु विष्णुं
डनि मनमुन निश्चयिंचि, यतिशयभक्तिन्
विनतुलु सेयुचु, नच्चट
नेन लेनि मुदंबु मीरनिट्लनि पल्केन.

राम! सुकीर्तिकाम! बहुराक्षस यूथ विराम! सद्गुण
स्तोम! दिनेंद्रवंश घनतोयधि सोम! दशास्य भीम!नी
श्री महित प्रभावमुनु शेषुंडु सन्नुति सेयलेडु, ने
नेमि नुतिंप नेर्तु? जगदीश्वर! म्रोक्केद नन्नु गाववे!

---

1) गोविंदवाक्यालु - पृ-३१८.

2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य, तरिगोंड वेंगमांब - १-११५

ई वेंकटाद्रिपै नेनु वर्तिंपुदु
गावुन नायंदु गरूण नुंचि
वेंकटाद्रिकि मीरु विच्चेयुं डन विनि
श्रीरामुंडिट्लने 'वीरकपुल
तोड शीघ्रंबैन दूरप्रयाणंबु
कलिगियुन्नदि, कार्यघटनमैन
वेनुक नीवनिनट्ल वेंकटाद्रिकि वत्तु'
मनँग 'देवर दर्शनार्थ मचट

गाचियुन्नारु मुनिवरुल् गान, वारि
जूड रावले' ननुचु ना चेडे पिलुचु
समयमुन नांजनेयुं डच्चटिकि वच्चि
विनयमुन म्रोक्कि यिट्लनि विन्नविंचे।
'देव! मातल्लि यंजनादेवि मनवि
चेसिनदि मीरु मन्निंचि चित्तगिंप
वलयु, नेलन्नँ गपुलेल्ल नलसिनारु
गनक, श्री वेंकटाद्रिकिं जनुट योप्पु।

श्रीयंजनाश्रम सिद्ध स्थलमुनंदु
फलसुम वृक्षमुल् गलिगियुंडु
गंदमूलादुलु, घन पुण्यतीर्थंबु
लंदुंडु गनुक ने डचट निल्चि
यवलं बोंदगु, नंजनाद्रि दूरमु गादु
मन प्रयाणमुनकु मार्ग मदिये
यटुगान मा तल्लियंदु सत्कृप नुंचि
यटकु रावले निपु' डनंग राम

चंद्रुंडब्जात्पसुतुनि, लक्ष्मणुनि जूचि
मंदहसितुडै 'हनुमंतुंडनुट
विंटिरे' यन्न वारू भूविभुनिंजूचि
देव! श्री वेंकटाद्रिकिं बोववच्चु।'

अनि यिट्लु मनवि चेयंग
विनि रामुंडु सम्मतिंचि, वेडुकगा न
य्यनिलतनूजुनि नेनरुनं
गनुगोनि यिट्लनियन् जाल गौरव मोप्पन्।

'मारुतपुत्र! नी मनवि मा मदि किष्टमे यय्ये, निप्पु डा
सारतरांजनाख्य वरशैल सुमार्गमुनंदे पोद मा
दारिनि वानरावळिकिन् दप्पक चूपु' मटंचुं बल्क, न
व्वीरुंडु सम्मतिंचि कपिवीरुलन् बिल्चि मुदंबु मीरंगन्।

वेंकटाद्रिमार्ग मंकितमुगं जूपि
हरिसमूह विभुनि यनुमतमुन
राम लक्ष्मणुलनु रहिमीऱ भुजमुलं
दुंचिकोनि बलंबु वेंचि नडचे.[1]

तदनंतर रामचंद्र उस पर्वत के उत्तरी भाग में पर्वत का अधिरोहित कर रहे थे, बीच में यक्षों को शाप - मोक्ष देने के बाद, कंदमूल फल से भरे अंजनाश्रम में आकाशगंगा के समीप कपि समूह के साथ राम-लक्ष्मण वहाँ खडे होकर तीर्थ में स्नानादि कृत्य पूरा करके; अंजनादेवी फल-पुष्प समर्पित करके पूजा करने पर, राम-लक्ष्मण ने संतुष्ट होकर अंजना देवी को आदर के साथ विदाई देती हुई कहा कि[2] -

''विभासमान नारायणाद्रि प्रदेश में परमपावन होकर स्वामिपुष्करिणी के उत्तर में योजन मात्र की दूरी पर आकाशगंगा का प्रवाह है। तुम वहाँ जाकर त्रिकाल स्नान करके द्वादशाब्द तप करने पर सुत का उदय होगा''। इस वरदान पर महाप्रसाद कहकर नमन करते हुए उनकी आज्ञाधारिणी होकर नारायणाद्रि पहुँचकर स्वामिपुष्करिणी में स्नान करके तत्तीराश्वत्थ वृक्ष को परिक्रमा करके श्री वराहस्वामी को नमन करके, जाकर आकाशगंगा में रहे मुनियों को नमस्कार करके उनकी आज्ञा लेके, त्रिकाल स्नान करती हुई निराहार होकर पुरा एक वर्ष तप कर रही थी। तब वायुदेव प्रसन्न होकर हर दिन एक-एक मधुर फल देने पर उसका भक्षण करती हुई उस तपस्विनी ने द्वादश वर्ष पूरा तप किया। तब एक दिन पवन एक सद्वीर्य गर्भित फल देने पर उसे भक्षण करने के बाद उस तरुणीमणि ने गर्भ धारण किया।

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य, तरिगोंड वेंगमांबा १-२१३-२२१

2) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य, तरिगोंड वेंगमांबा १-२२७

अंजनादेवि गर्भमं दनिलदेवुं
डोक्कनांडु प्रवेशिंचुचंडिनटुल

संयमींद्रुल कच्चोट स्वप्नमय्ये
नंदुचे वारू निस्संशयात्मुलैरि.

दशाममासंबु वच्चे नत्तरि धरित्रि
नंजनादेवि गर्भमं दनघुंडैन
पुत्रुं डुदयिंपंगान् जूचि पुष्पवृष्टि
सुरलु गुरियिंचि संतोषभरितुलैरि.

घन वज्रांगमु दीर्घवालमु लसत्कंतुल् बलस्थैर्यमुल्
मुनुलेल्लं गनियाँजनेयुंडु महामुख्युंडगुन् धात्रिपै,
ननि दीविंचुचु मारूतात्मजुनकं दासक्तितो नंदरुन्
हनुमंतुडनु नामधेयमिडि रत्याह्लाद मुप्पोंगन्

त्रैतायुगंबुनं दंजनादेवि यिव्विधंबुन दपंबुंजेसि पुत्रवतियैन निमित्तंबुचेत नग्गिरि
यंजनाद्रियन ब्रसिद्धंबय्ये।[1]

विद्वान स्ट्राटन

स्ट्राटन नामक विद्वान सामान्य शकं १८०० में तिरुमला मंदिर के बारे में विषयों का संकलन करके 'सवाल-ए-जवाब' नामक पुस्तक की रचना करते हुए उन्होंने कहा कि उस पुस्तक में ''अंजनाद्रि'' पद का विवरण देते हुए कहा कि अंजनादेवी को यहाँ आंजनेय का जन्म हुआ, इसलिए इसे ''अंजनाद्रि''[2] कहते हैं।

केवल यही नहीं है, '**अंजनाद्रिमाहात्म्य**' नामक अप्रकाशित ग्रंथ एक लंदन के इंडियन आफिस रिकार्ड ग्रंथालय सें सुरक्षित हैं। उस ग्रंथ में भी वेंकटाद्रि में ही आंजनेय का जन्म हुआ है ऐसा न्यू केटलागस केटलोगारं स्पष्ट कर रही है।

इसी तरह १९ शताब्दी से विविध शोध कर्त्ताओं से लिखित कई ऐतिहासिक ग्रंथ श्री वेंकटेश्वर स्वामी के वैभव को बताते हुए तिरुमला के अंजनाद्रि में ही आंजनेय का जन्म हुआ है ऐसा जोर देकर कह रहे हैं।

---

1) श्री वेंकटाचलमाहात्म्य तरिगोंड वेंगमांबा - ४-३१-३५

2) An English translation of Swal-E-Jawab, Page 3, V.R.Srinivasa Rao, The mythic society, Bangalore, 1950.

२. शिलालेख प्रमाण

शिलालेख (शासन) याने आज्ञा, पालन या राजा द्वारा दिए गए दान पर लिखा हुआ कवियों का कानून नामक अर्थ हैं। आक्स्फोर्ड शब्दकोश में इसका अर्थ है words inscribed especially on a monument, coin, stone or in a book etc.,

२.१ वेंकाटचल माहात्म्यम की प्रामाणिकता

वेंकटाचल माहात्म्यम नामक ग्रंथ प्रामाणिक है ऐसा आधारभूत दो शिलालेख तिरुमला आलय में ही हैं। पहला शिलालेख १४९१ जून २७ तारीख का है। यह शिलालेख दूसरे प्राकार में दक्षिण की ओर है। यह शिलालेख तमिल भाषा में है।

''तिरुवेंकटमुडैयान् इंतत् तिरूवोलक्कं कंडरुळकिर् पोतु इवर् विण्णप्पंचेय्त तिरुवेंकट महत्मयत्तिर्कु'' [1]

(श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंडप में श्री वेंकटाचल माहात्म्यम का पारायण करने के लिए दी गयी भूमि का दान।)

यह भाग वेंकटाद्रि माहात्म्यम श्री वेंकटेश्वरस्वामी के मंदिर में पारायण स्थिति को स्पष्ट करता है। दूसरा शिलालेख २७.०६.१५४५ का है जो सदा शिवराय काल का है। यह शिलालेख भी पालकी (डोली) पालकी उत्सव के समय वेंकटाद्रि माहात्म्यम पारायण संबंधित प्रमाण स्पष्ट करता है।

ई. २६ शताब्दी में श्री बालाजी के कई भक्त श्री वेंकटाचल माहात्म्यम का पारायण सेवा के लिए प्रबंध करने जैसा सन् ई. ५-७-१५४५; १७-७-१५४६; ८-६-१५४७ के शिलालेख[2] से मालूम होता है, वेंकटाचल माहात्म्यम पारायण सेवा तिरुमला श्री बालाजी मंदिर में ही नहीं तिरुपति श्री गोविंदराज स्वामी मंदिर में, अच्युत पेरुमाल मंदिर में, तिरुचानूर अलगिय पेरुमाल (श्री सुंदरराज स्वामी) मंदिर में भी होने के लिए प्रबंध होने का विषय १५-७-१५४५ के शिलालेख[3] से मालूम हेता है। तिरुपति में रहने वाला पेनुगोंड शेट्टि का पुत्र कालत्तिशेट्टि ने तिरुमला वेंकटेश्वर मंदिर में तैमासि मासों में नित्योत्सव का प्रबंध किया था। इसके अंतर्गत श्रीनिवासपुराण-पारायण की व्यवस्था का विषय क्री.श ३१-१२-१५४३ शिलालेख[4] से मालूम होता है, इसकी वजह से श्री वेंकटाचलमाहात्म्यम ग्रंथ को तिरुवेंकटमाहात्म्यम, श्रीनिवास पुराण ऐसे नामांतर होने की बात मालूम होती है। तिरुमला श्री बालाजी मंदिर में वेंकटाचलमाहात्म्यम-पारायण की सेवा विजयनगर राज्य के पतन के बाद ई. १६ शताब्दी उत्तर भाग से स्थगित हो

---

1) Tirumala Tirupati Devasthanam Inscriptions, Vol.II. Inscriptions of Saluva Narasimha's time, page 193.

2) ति.ति.देवस्थान शिलालेख - संकलन ५-५१, ५-५३, ५-७१, ५-९२

3) ति.ति.देवस्थान शिलालेख - संकलन ५-५३

4) ति.ति.देवस्थान शिलालेख - संकलन ५-१०, पृ.३०.

गई है। प्रस्तुत भी यह सेवा श्रीबालाजी मंदिर में नित्य नहीं हो रही है, सन् २००२ ई. में हुआ ब्रह्मोत्सओं में वेंकटाचल माहात्म्य सेवा पुनरुद्धरित की गई है। उस समय से यह सेवा श्री बालाजी ब्रह्मोत्सव में हो रही है।

सन् १४९१ ई. पूर्व देवस्थान के शिलालेखों में तिरुवेंकट माहात्म्य का उल्लेख नहीं दिखाई देने पर भी श्री बालाजी सन्निधि में पुराणों का पारायण करने वाले 'पुराणभट्टरु' नामक कर्मचारी रहते थे, इस विषय का शिलालेखाधार हैं। २-१८ (सन् १८-१-१४६४) ५-१०० (सन् १४-११-१५४७) शिलालेख, पुराण भट्टरु (पुराण पाठक) की सेवाओं के बारे में, उनके वेतनों के बारे में बताते हैं। इस पुराण भट्टरु ने कौशिक पुराण, रामायण, भागवत के साथ श्री वेंकटेश्वर की महिमाओं का वर्णन किया और निश्चित पुराणों का पारायण भी किया था ऐसा हम मान सकते हैं।

श्रीनिवासमंगापुरम् के श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामी के मंदिर को पुनर्निर्मित करवाके, ताल्लपाका चिनतिरुमलाचार्य से (अन्नमाचार्य के पौत्र, पेद्द तिरुमलाचार्य का पुत्र लगाए सन् २३-३-१५४० के तेलुगु शिलालेख में 'स्कांद पुराणोक्त श्री वेंकटेश्वर माहात्म्य' का प्रस्ताव है।[1] इस तरह श्री वेंकटेश माहात्म्यम से संबंधित कथाएँ विविध पुराणों में रहने के विषय को साहित्य, शिलालेखाधार सिद्ध करते हैं।

सन् १४९१ ई. से तिरुमला श्री बालाजी मंदिर में पारायण ग्रंथ जैसा गौरवान्वित श्री वेंकटाचल माहात्म्य ग्रंथ तालपत्र ग्रंथ के रूप में सन् १८८४ तक पूरे देश में प्रचार में है। इस संस्कृत ग्रंथ का ई. १६ शताब्द के उत्तरार्ध में तेलुगु अनुवाद निकल पडे है। अनुवादकों में तेनालि रामकृष्ण के दामाद, बहुकाव्यकर्ता लिंगमकुंट रामकवि (ई.१५२०-१५८०) प्रथम है। रामकवि का रचित श्री वेंकटेश्वर माहात्म्यम उपलब्ध नहीं है। विजयनगर राजघराने पूसपाटि कोंडराजु (सन् १७ शताब्दि का पूर्वभाग) की रचानाओं में वेंकटाचल माहात्म्यम दूसरा है। यह भी लभ्य नहीं है, श्री वेंकटाचल माहात्म्यम की रचना में ताल्लपाका अन्नमाचार्य ने जितनी मेहनत की है उतनी तेलुगु में श्रेष्ठलूरि वेंकटाचार्य ने की थी। ये तेनालि रामकृष्ण कवि, सारंग तम्मया को समकालीन है। वेंकटाचार्य तिरुमला वेंकटेश्वर के भक्त है, अतः उस स्वामी ने ही भक्त के स्वप्न में आकर बहु पुराणोक्त संबंध से कठिनतम हुई अपनी कथा में रही गाँठों को खोलकर, रत्न को चमकाने जैसा काव्य की रचना करने को कहा है।[2] श्रेष्ठलूरि वेंकटाचार्य ने (सन् १६ शताब्द) श्रीनिवास की पुराण कथाओं में पाए गए पूर्वोत्तर विरोधी मतों को ठीक करके, समन्वित करके 'श्रीनिवास विलास सेवधि' नामक छः आश्वासों का द्विपद काव्य की रचना की है। वेंकटाचार्य ने वराह, वामन, ब्रह्मांड, पद्म, गरुड, स्कंद, मार्कंडेय पुराणों की कथाओं को शोधित करके, प्रमाणित करके एवं प्रसिद्ध कथा को संकलन करके सभी विषयों के समाधान प्राप्त हो इस केलिए जैसे श्रीनिवास विलास सेवधि की रचना की।[3]

---

1) ति.ति.देवस्थान शिलालेख - संकलन - ४, सं.-१४४

2) श्रीनिवासविलाससेवधि - अ.१-१२१-१३० पंक्ति

3) श्रीनिवासविलाससेवधि - अ.१-१३७-१४४ पंक्ति

२.२ ''तिरुमला ही अंजनाद्रि है।'' ऐसा कहने केलिए शिलालेख के प्रमाण -

श्रीरंगम् में स्थित एक शिलालेख बताता है कि ''श्रीरंगनाथ के मंदिर पर दुराक्रमण हुआ, उस समय श्रीरंगनाथ की उत्सवमूर्ति को मंदिर से बाहर लाया गया और दोबारा गोपणाचार्य नामक विजय नगर के प्रतिनिधि ने इस उत्सव मूर्ति को पुनःप्रतिष्ठित किया है।

अनीया नीलशृंग द्युतिरचित जगद्रंजनादंजनाद्रेः
चेंच्यामाराध्य कंचित्समयमय निहत्योद्धनुष्कान् तुलुष्कान्.
लक्ष्मी क्षाभ्यामुभाभ्यां सह निजनिलयेस्थापयद्रंगनाथं
सम्यग्वर्या सपर्यां कुरूत निजयशोदर्पणे गोपणार्यः।।[1]

यह शिलालेख बंधुप्रिय शकाब्द माने कटपयादि संख्या के प्रकार सन् १३७१ ई. से संबंधित है। इस शिलालेख से ज्ञात होता है कि तिरुमला ही अंजनाद्रि है। इस शिलालेख में रहा श्लोक वेदांत देशिक नामक वैष्णवाचार्य ने लिखा है। इस बात को 'कोयिल वोळुगु' नामक वैष्णव ग्रंथ बताता है।

उसी तरह तिरुमला मंदिर में स्थित और एक शिलालेख श्री वेंकटेश्वर का नाम प्रस्तावित करते हुए कहता है कि **अंजनवेर्पन् नायनार**[2] तमिल भाषा के वेर्पु का अर्थ है 'अद्रि'। **अंजनवेर्पन्** का अर्थ है अंजनाद्रि, अंजनाद्रिनाथ के नाम को तमिल भाषा में अनुवाद करके '**अंजनवेर्पन् नायनार**' कहा गया है। इस प्रमाण से पता, चलता है कि अंजनाद्रि ही तिरुमला और अंजनाद्रिनाथ ही श्री वेंकटेश्वर हैं।

एट्टूर लक्ष्मीकुमार तातार्य

अब एट्टूर लक्ष्मी कुमार तातार्य नामक महात्मा सन् १६ शताब्दि के हैं। उनके द्वारा कृत ''हनुमद्विंशति'' नामक स्तोत्र कांचीपुर में वरदराजस्वामी के मंदिर में भी, इसी तरह तातार्य के द्वारा ही निर्मित आंजनेयस्वामी के मंदिर में भी शिलालेख में तराशा गया है। इस स्तोत्र का एक पद्य है -

''श्रीशैलपूर्णमवतिस्म घटाँबुह्नष्टो
यःपूर्वमंजनगिरौ स पुमानिदानीम्,
स्थित्वा समीरभुवि पाति रमाकुमार'
तातांबुराशिमुदितो जनमैंदिरेयम्...।।''

---

1) Epigrapia Indica, Vol..VI, page 323.

2) Tirumala Tirupati Devasthanam Inscriptions, Vol.I. Early Inscriptions page 205.

हनुमद्विंशतिशासन

उसी तरह तिरुपति में प्राप्त अनेकानेक शिलालेख तिरुपति में रहे श्री आंजनेयस्वामी की विशेष आराधनाओं के बारे में विवरण दे रहे हैं।

इस तरह वाङ्मय -शिलालेख प्रमाण सभी एकमत से व्यक्त करते हैं कि ''अंजनाद्रि ही वेंकटाद्रि है'' और आंजनेय स्वामी का जन्म स्थान तिरुमला ही है। यह बात स्पष्ट रूप से मालूम हो रही है।

❀❀❀

धरती पर से मनुष्य एवं गगन से देवता सूर्य की ओर
उडनेवाले हनुमान को विस्मित होकर देख रहे हैं।

11. श्रीवैष्णव साहित्य में तिरुमला-अंजनाद्रि

तेलुगु मूल - आचार्य चक्रवर्ति रंगनाथन अनुवाद - श्रीमती पी.विद्यालतादेवी

प्रपद्ये तं गिरिं प्रायः श्रीनिवासानुकंपया
इक्षुसारस्रवंत्येव यन्मूर्त्या शर्करायितम्।।

श्रीवैष्णवसाहित्य - १. श्रीवैष्णवसाहित्यारम्भ - आल्वार

श्रियःपति श्रीमन्नारायण ने पृथ्वी के निवासियों का उद्धार करने के लिए अपने परिवार अनंत, गरुड़, विष्वक्सेन और अपने दिव्याभरणों को भूलोक में अवतरित किया। इस तरह अवतरित ये परिजन ही ''आल्वार'' नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। **कलौ खलु भविष्यंति नारायणपरायणाः**[1] आदि भागवत श्लोक इसके प्रामाणिक हैं। आल्वार का अर्थ है गहरे भगवद् भक्ति सागर में डुबकियां लगानेवाले। वे कुल बारह आल्वार हैं। उनका परिचय देने वाला संग्रह श्लोक पराशरभट्टर द्वारा विरचित है।

भूतं सरश्च महदाह्वयभट्टनाथः
श्रीभक्तिसार कुलशेखरयोगिवाहान्,
भक्तांघ्रिरेणु परकार्ल् यतीन्द्रमिश्रान्
श्रीमत् परांकुशमुनिं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।[2]

पूदत्ताल्वार, पोयगई आल्वार, पेयाल्वार, तिरुमोलिशै आल्वार, कुलशेखराल्वार, तिरुप्पाणाल्वार, तोंडरडिप्पोडि आल्वार, तिरुमंगै आल्वार, यतिश्रेष्ठ उडयवर, श्रीराममिश्र को एवं श्री परांकुश नाम के नम्माल्वार का सदा नमन करता हूँ।

इन **बारह(पन्निद्दरु) आल्वारों** ने भगवान के प्रति असीम भक्ति और श्रद्धा से अगस्त्य दत्त सुंदर तमिल भाषा में चार हजार पाशुरों (पद्य) की रचना की जिसमें श्रीमन्नारायण के स्वरूपानुरूप गुण वैभवादि गुणों की प्रशंसा की गई। इस ग्रंथ का नाम ''नालायिर दिव्यप्रबंध'' है। वेद समान इस ग्रंथ नियमित रूप से १०८ दिव्यदेशों से पाठ किया जाता है। १०८ दिव्य तिरुपतियों में स्थित दिव्यरूपगुण संपन्न भगवान अर्चामूर्ति के रूप में विराजमान होकर अपने आश्रितों को आशीर्वाद देना इस में प्रतिपादित है। विष्णुतत्व को प्रधान विषयवस्तु के रूप में लेकर आल्वारों के मुखारविंदों से स्तुति किए गए ये दिव्यप्रबंध ही श्रीवैष्णव साहित्य में आद्य और प्रधान कृतियों के रूप में भासित हैं। अतएव इन बारह आल्वारों को श्रीवैष्णव साहित्य जगत में आद्य और द्वादशसूरियों के रूप में परिगणित किया जा रहा है।

---

1) भागवतम् - ११-५-३९.

२) नालायिर दिव्यप्रबंधम् - तनियन् - ५

श्रीरंगम से परमपद तक विशेष रूप से १०८ दिव्यदेश हैं। इनमें तीन दिव्यदेश हैं - श्रीरंगम, तिरुमला, कांचीपुरम। ऐसा कहा जाता है कि इन तीन दिव्यदेशों की दर्शनसेवा से सभी दिव्यदेशों का दर्शन फल प्राप्त होता है। दिव्यक्षेत्र तिरुमला इन तीन मंदिरों के बीच में विद्यमान होकर मणि-सा भासित है।

आल्वारों की पाशुरों में तिरुमला - आगाध भगवद्भक्ति सिंधु - बारह आल्वारों में, मधुरकवि आल्वार और तोंडारडिप्पोडि आल्वार के सिवाय दस आल्वारों ने तिरुमलाक्षेत्र का वैभव और वेंकटेश्वर की महिमा की अत्यद्भुत स्तुति की। वेद-पुराण-आगमों में वर्णित श्री वेंकटेश्वरवैभवम का वर्णन अत्यंत मनोहर और सुंदर रूप से किया गया है।

तिरुमला पाशुरालु (पद्य) - तिरुमलेश पर तिरुमला क्षेत्र वैभव के प्रस्ताव के रूप में आल्वारों द्वारा प्रस्तुत किये गये पाशुरों का (पद्यों का) विवरण -

आल्वार		लिखित/पाशुरों (गीतों) की संख्या
१. पोयगै आल्वार	-	१०
२. पूदत्ताल्वार	-	११
३. पेयाल्वार	-	१९
४. तिरुमलिशै आल्वार	-	१६
५. नम्माल्वार	-	४८
६. कुलशेखराल्वार	-	११
७. पेरियाल्वार	-	०७
८. गोदादेवी	-	१६
९. तिरुप्पाणाल्वार	-	०२
१०. तिरुमंगै आल्वार	-	६६
कुल	-	२०६

विद्वानों में मत भेद है कि पाशुरों की संख्या २०० है या २०६ है। सभी पाशुरों में शब्दमाधुर्य और गंभीरार्थ है। अनुसंधान (पाठ) करते समय इन पाशुरों की महत्ता अनुभवैकवेद्य है। आल्वार के दिव्यप्रबंधों में श्री वेंकटेश्वर की स्तुति करने वाले पोयगै पाशुरों पर अब हम विचार करेंगे -

१. पोयगै आल्वार - सरोयोगी - दिव्यप्रबंध का नाम - मुदल तिरुवंदादि

आल्वारों ने स्तुति करते हुए यह व्यक्त किया कि मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामभद्र ने भी इस तिरुमला में वास किया था। ऐसा कहा जाता है कि सीता देवी केलिए मायामृग बने मारीच का संहार किया श्रीराम सदा वास करने का पर्वत है। इसलिए महिलाएँ भी इस क्षेत्र को आ सकती हैं और इस मंदिर में शरण ले सकती हैं।

पडैयारुम वाट्कण्णा ..... मान माया एयदान वरै।[1]

इस पाशुरम का अर्थ है - जिन महिलाओं के पास कोई तत्वज्ञान नहीं वे सत्वोत्तरकाल की द्वादशि तिथि के दिन ताजे फूलों की माला बालाजी को समर्पण करने के पश्चात धूपबत्ती जलाने के कारण आकाश में इतः- ततः चमकने वाले तारों का प्रकाश फीका पड जाता है। ऐसा परमभोग्य है यह तिरुमलागिरि। कपटी मारीच को मारने के लिए जिसने बाण छोडा है वह धनुर्धर राम यहाँ नित्य वास करता है और यह पर्वत राम को अत्यंत प्यारा है।

२. पूदत्ताल्वार - भूतयोगी - दिव्यप्रबंध नाम - : इरंडांम तिरुवंदादि।

श्रीवेंकटेश्वर ही पर-व्यूह-विभव-अंतर्यामि-अर्चास्वरूप है।

मनत्तुल्लान - वेंगडत्तान .....मावाय पिलंदमगन्।[2]

इस पाशुर का अर्थ है - मनत्तुल्लान अर्थात् अंतर्यामी का रूप, मा कडलान-व्यूह रूप, निनैप्पेरियनील आरंगत्तुल्लान - अर्चारूप, देवादि देव - पर रूप, मावाय पिलंदमगन - विभवावताररूप।

''तिरुमला में कई वानरों का घूमना'' - यहाँ वानरों की भक्ति सिद्ध होती है।

पोद अरिन्दु वानरंगल ..... पेरायन्दु[3]

इस पाशुर में आल्वार अपने मन को लक्ष्य बनाकर कह रहे हैं -''हे मन! इस तथ्य के प्रति उदासीन मत बनो कि तिरुमला में जानवर (तिर्यक्कु) भी भगवान की पूजा और कैंकर्य करके अपने जन्म को सार्थक बनाते हैं। तुम भी उदास न रहकर भगवान के कैंकर्य के लिए संसिद्ध रहो।''

''हे मन! तिरुमलागिरि पर वानर भी ब्रह्ममुहूर्त को पहचान रहे हैं। वे तुरंत फूलों से शोभित पहाड़ियों पर जाते हैं और वहाँ खिलने वाले फूलों को तोडते हैं और उनसे भगवान की पूजा कर रहे हैं। तुम भी जाकर भगवान की स्तुति करो। बालाजी के नामों की कीर्तन करो नीलमणि समान सुंदररूप श्री वेंकटेश्वर भगवान के फूलों के समान श्री चरणों को पुष्पों से सुसज्जित करो।

३. पेयाल्वार - महदाह्वय - दिव्यप्रबंधम नाम - मून्राम तिरुवंदादि।

तिरुमला में हाथियाँ भी भगवान के कैंकर्य (सेवा) में पुनीत हो रहे हैं। इसके बारे में चमत्कार पूर्वक इस पाशुर में कैंकर्य विधि-विधान का वर्णन कर रहे हैं -

पुगुमदत्ताल वाय ..... वणंगुं कळिरु[4]

हाथियों में मद का होना स्वाभाविक है। यह मदजल सिर और गंडस्थल से मुँह में गिर रहा हैं मानो वे उस पानी से मुँह को शुद्ध कर रहे हैं एवं आचमन भी कर रहे हैं। उसी तरह पहाडियों में झरने के समान बहनेवाले मदजल से

---

1) मुदल् तिरुवंदादि - ५२

2) इरंडां तिरुवंदादि - २८

3) इरंडां तिरुवंदादि - ७२

4) मुन्दां तिरुवंदादि - ७

उनके पैर धोकर, ढेर सारा नशीला शहद भरा फूल अपने सूँड से लाकर महाबलशाली श्री श्रीनिवास को भक्ति पूर्वक समर्पण करके नमन करते हैं।

अर्थात पशु-पक्षी भी भगवान की भक्ति से धन्य हैं और तिरुमला की पवित्रता के कारण भगवान की पूजा करते हैं।

४. तिरुमलिसई आल्वार - भक्तिसार - नानमुगन तिरुवंदादि

श्रीवेंकटाचलम सभी के लिए आश्रय स्थान के रूप में जगमगा रहा है।

नान मणि वण्णनूर ..... वीडुमुडै वेंगडम्।।[1]

वेंकटाचल, इंद्रनील सम भगवान श्रीनिवास का निवास है। जो शरभ मृग, पराक्रमी शेर, स्वर्ण, मणी, मोती, फूले हुए पेड, विभिन्न रत्न, जल की धाराओं से भरे जंगल, वानर और निषादों से भरा है। वह तिरुमलागिरि पर भगवान इंद्रनील सम श्रीनिवास विद्यमान है।

५. नम्माल्वार-परांकुश - ४ प्रबंध - चार वेदों का सार

तिरुवायमोलि नामक ग्रंथ में १. ओलिविल कालम् २. उलगमुंडा पेरुवाया दो दशकपद्य श्री वेंकटेश्वर का वैभव स्पष्ट कर रहे हैं।

उन्हीं में से एक पाशुर वेंकडंगल .... अदुशुमंदार कट्के[2]

इस पाशुर का अर्थ है - बिना किसी रुकावट के भगवान को कैंकर्य सेवा करने की आसान युक्ति है श्रीवेंकटाचल में स्थित श्रीनिवासन को ''नमः'' कहना। यह सबसे आसान मार्ग है। यह हर कोई कर सकता है। यह हमारा स्वभाव भी है। जैसा कि कहा जाता है, ''नमः'' कहने से ही भगवान संतुष्ट होकर हमारे संचित-आगामी-प्रारब्ध कर्मों को मिटादेगा। यह तथ्य है।

अगलगिल्लेन ..... अमरन्दु पुगुन्देने।[3]

यह पाशुर महालक्ष्मी सहित श्रीनिवास के प्रति पूर्ण समर्पण का प्रतीक है। इसी तरह, तिरुवेंगडमहिमा का उल्लेख तिरुरुवित्तम् और पेरियतिरुवंदादि के प्रबंधों में किया गया है।

६. कुलशेखराल्वार-पेरुमाल तिरुमोली - इस प्रबंधग्रंथ में कुल ग्यारह पाशुरों में भगवान की महिमा गायी गयी। आज हम सब भी कुलशेखरपडी तक जो नामी लोगों के लिए हैं वहाँ तक जा कर दर्शन करके आ रहे हैं, वह गर्भालय दहलीज को कुलशेखरपडी का नाम इसी आल्वार की प्रार्थना के कारण ही प्राप्त है। यह किसी भी पुराण में उल्लिखित नहीं है।

शेडियायवल विनैगल ..... पवलवाय काप्बेने।[4]

---

1) नान्मुगन् तिरुवंदादि - ४७
2) तिरुवाय मोळि - ३-३-६
3) तिरुवाय मोळि - ६-१०-१०
4) पेरुमाळ तिरुमोळि - ४-९

अनादि काल से हमारे अर्जित पापों और तत्संबंधित विषयों को नाश करने के लिए भगवान श्रीनिवास तिरुमला में वास करनेवाले स्वामी हैं! आपके भक्त, देवी-देवता, देव कन्याएँ एक साथ घूम सकें, इस तरह तुम्हारी दिव्य सन्निधि में सब के कदमों तले दहलीज बनकर मूँगा के समान परम भोग्य तुम्हारे दिव्य होंठों की सदा सेवा करने का भाग्य होने की आशा रखता हूँ- ऐसा पाशुरार्थ हैं।

७. पेरियाल्वार - श्रीविष्णुचित्त - पेरियाल्वार तिरुमोलि

शेन्नियोंगु.... एन तिरुक्कुरिप्पे।[1]

गगनचुंबी शिखरों जैसे उन्नत शीतल तिरुमला गिरियों में विराजमान भगवान की परिपूर्ण कृपा की अपेक्षा करते हैं।

८. आण्डाल-गोदादेवी-नाच्चियार तिरुमोलि

तैयोरु तिंगलुम - वेंगाडवर्कु एन्नैविदिक्कित्तिये।[2]

हे कामदेव! श्रीवेंकटेश्वरस्वामी की सेवा करने में मेरी सहायता करो।

९. तिरुप्पाणाळवार ने तिरुवेंगडमुडैयान (बालाजी) को दो पाशुरों में कीर्तन किया।

पहले पाशुर में, ''**विरैयार पोलिल वेंगडवन**'', तीसरे पाशुर में **मंदिपाय वडवेंगडमामलै** [3]-

नामक इन तिरुमलागिरियों में वानर हमेशा खेलते हुए अपने जन्म को कृतार्थ कर रहे हैं।

१०. तिरुमंगई आल्वार - परकालः ६ दिव्यप्रबंध

पेशुमिन तिरुनामं..... तिरुवेंगडम अडनेंजमे।[4]

''हे मन! अष्टाक्षरी महामंत्र का अनुसंधान करते हुए, सभी लोकों में तिलक के समान भासित होनेवाले तिरुमला की शरण ले लो'' आल्वारों के दिव्यप्रबंधों में तिरुमलाक्षेत्र वैभव का समग्रवर्णन यहाँ किया गया है।

आचार्यों के प्रबंधों में तिरुमला

तिरुवरंगत्तमुदनार - श्रीरंगामृतकवि - इरामानुशनूत्तंदादी १. निन्रवण कीर्तीयुम् (७६), २. इरुप्पिडं वैगुंन्दम (१०६)

श्रीवेंकटनाथुलु - श्रीवेदांतदेशिकुलु - अधिकारसंग्रहम् कण्णनडियिनै एमक्कु - ४३ पाशुर (पद्य)

---

1) पेरियाल्वार तिरुमोळि - ५-४-१

2) नाळियार तिरुमोळि - १-१

3) अमलनादिपिरान - १,३

4) पेरिय तिरुमोळि - १-८-९

इस प्रकार, आल्वाराचार्यों के दिव्यप्रबंधों में तिरुमलाक्षेत्र की प्रतिष्ठा, तिरुमला क्षेत्र की रमणीयता, तिरुमला पशु-पक्षियों की पसंदीदा स्थल और तिरुमलेश्वर की अपार करुणा आदि विशेष विषय हमें नजर आते हैं। श्री वेंकटेश्वर स्वामी की महिमा इतना महान है कि साक्षात् उनकी आज्ञा से और भगवदंश से अवतरित हुए आल्वारों से रचित दिव्यप्रबंधों में श्रीवेंकटाचलप्राशस्त्य को प्रत्यक्षरूप में आँखों के सामने वर्णित कर रहें है तो ये सारा स्वामी की महिमा ही है न!

आल्वारों के पाशुरों में अंजनीपुत्र

	प्रबंधं नाम	कर्त	पाशुर (पद्य/गीत) की सं.
१.	पेरुमाल तिरुमोळि	कुलशेखराल्वार	तनमरुवु - १०-६
२.	,,	,,	तिल्लैनगर - १०-११
३.	पेरियतिरुमोळि	तिरुमंगै आल्वार	मुन्नोर तूदु - २-२-३
४.	,,	,,	वादमामगन् - ५-८-२
५.	,,	,,	ओदमाक्कदलै - १०-२-६
६.	,,	,,	एम्बिराने - १०-३-२
७.	,,	,,	मात्तमावदि - १०-३-७
८.	तिरुक्कुरम्दांडगम	,,	मुनोपोलावि - १५
९.	पेरियाल्वार तिरुमोळि	पेरियाल्वार	पडंगल - ३-५-७
१०.	,,	,,	तिक्कुनिरै - ३-१०-१०
११.	,,	,,	वारारुम - ३-१०-१०
१२.	,,	,,	वेल्लैविलिशंगु - ४-१-७

सभी १२ पाशुरों में से अंजनीपुत्र को मारुति और हनुमान के नामों से प्रस्तावित किया गया है। आलोचकों के अनुसार सीता देवी से किए वार्तालाप रूपी पाशुर (पद्य) ११ मारुति से संबंधित है, श्रीराम की सन्निधि में लंका में क्या हुआ, इसका विवरण देनेवाले ११ पाशुर भी मारुति के ही है। इस तरह गणना करके ३४ पाशुर मारुति का निर्धारित किया गया है।

आचार्यों के कीर्तनों में - वेंकटाचलम - अंजनाद्रि

भगवद् रामानुजाचार्य - नौ ग्रंथ

श्रीभाष्यम - मंगलाचरण श्लोक

अखिलभुवन जन्मस्थेमभंगादिलीले, विनतविविधभूतव्रातरक्षैकदीक्षे,
श्रुतिशिरसि विदीप्ते, ब्रह्मणि श्रीनिवासे, भवतु मम परस्मिन् शेमुषी भक्तिरूपा।।

१. आर्योक्ति यह है कि तिरुमलाक्षेत्र वैभव में मुख्य योगदानकर्ता श्रीभाष्यकर थे, जिन्होंने तिरुमलाक्षेत्र के बेडि आंजनेयस्वामी की सन्निधि में वेदार्थसंग्रहम् नामक एक ग्रंथ लिखा था।

२. प्रसिद्ध टीकाकार श्रीरंगरामानुजम ने अनेक उपनिषदों की टीकाएँ लिखीं। इसमें, उन्होंने कठोपनिषद पर एक टिप्पणी लिखी और मंगल चरणश्लोक में तिरुमला श्रीनिवास को अंजनाद्रिनाथ के रूप में प्रस्तुति की थी।

अतसीगुच्छसच्छायमंचितोरःस्थलं श्रिया,
अंजनाचलश्रृंगरमंजलिर्मम गाहताम्।[1]

इस श्लोक का अर्थ हैं - ''काले सन फूल जैसी कांति से वक्षःस्थल में विराजमान लक्ष्मी देवी से अंजनाद्रि के अलंकरण के रूप में चमकनेवाले भगवान मेरा प्रणाम स्वीकार करे''।

अखिलांडकोटि ब्रह्माण्डनायक घंटी के अंश के रूप में अवतरित महात्मा श्रीवेदांतदेशिक थे। सन् १२६८-१३६९ के बीच प्रख्यात कवितार्किक सिंह १२० से अधिक ग्रंथ लिखे। उनके खंडकाव्य ''हंस संदेश'' में तिरुमला को अंजनाद्रि के रूप में वर्णित किया गया है।

अग्रे भावी सपदि नयने रंजयन अंजनाद्रिः।[2]

इस पाशुर का अर्थ है - ''हे हंस! विष्णु का निवास स्थान होने से, पृथ्वी को वहन करके रत्नों को धारण करने से इस पर्वत को शेषनाग कहकर भक्तगण संशय करते है क्योंकि इस पर्वत पर मंडराते बादल झडे हुए साँप से छोडी गई केंचुली जैसे प्रतीत होती हैं। ऐसे अंजनाद्रि पर्वत तुम्हारी आँखों को आनंद प्रदान करता है।

अभिनवदेशिक के रूप में प्रसिद्ध श्री उत्तमार वीरराघवाचार्यस्वामी ने इस वाक्य का व्याख्यान इस प्रकार करते हुए कहा है - ''हे हंस! हनुमान की माता अंजनादेवी ने इस पर्वत पर तपस्या की थी, इसलिए इसका नाम अंजनाद्रि पड़ा। हनुमान आपके लिए भाई के समान हैं, उनकी माता अंजना आपकी माता हैं। तो अंजनाद्रि जाना आपके लिए आनन्द की बात है क्यों कि वह तुम्हारी माँ का घर है।

संकल्पसूर्योदयम् - नाटक

श्रीवेदांतदेशिक के नाटक ''संकल्पसूर्योदयम'' में ----

अद्यत्वे हनुमत्समेन गुरुणा प्रख्यापितार्थः पुमान्।[3]

इस प्रकार स्वयं हनुमान को एक महान आचार्य के रूप में हनुमान की प्रशंसा की।

दयाशतक-स्तोत्र

श्रीवेदांतदेशिक के २८ स्तोत्रों में से एक स्तोत्र में कलियुग श्री वेंकटेश्वर की कृपा को एक दया देवी के रूप में प्रमाणित करते हुए १०८ श्लोकों में दस विभिन्न प्रकार के छंदों के साथ एक अद्भुत स्तोत्र है, वही ''दया शतकम्''

---

1) कठोपनिषत - रामानुजभाष्यं - मंगळश्लोकं
2) हंससंदेशम् - २१
3) संकल्पसूर्योदयम् - १-७१

है। दया के बिना, अन्य सभी गुण भगवान को शोभा नहीं देते हैं। दयानाथ होने के कारण प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु श्री वेंकटेश्वर का दर्शन भाग्य प्राप्त कर रहे हैं। इस स्तोत्र में अंजनाद्रि का उल्लेख मुख्यतः प्रपत्ति के सिद्धांत पर किया गया है।

अकिंचन निधिम सूतिम् अपवर्गात्रिवर्गयोः

अंजनाद्रीश्वरदयाम् अभीष्टौमि निरंजनाम।[1]

उपर्युक्त श्लोक का भाव - ''अकारवाच्य सर्वशक्तिमान ईश्वर अंजनाद्रि में विराजमान होकर सभी पर अपनी दया वर्षा बरसा रहे हैं। मैं अंजनापर्वत के देव श्री वेंकटेश्वर की कृपा की प्रशंसा करता हूँ। जो अकिंचनों के लिए निधि का समान है, धर्मार्थ-काम मोक्ष के उत्पत्तिकारक दोषरहित अंजनाद्रि के अधिपति भगवान श्री वेंकटेश्वर दया की स्तुति करता हूँ। ऐसे ही दूसरी जगह में यह स्तुति है -

''अंजनगिरिनाथरंजनी भवति''।[2]

''हे दयादेवी! मैं प्रार्थना करता हूँ कि, जो अंजनापर्वत के अधिपति श्रीनिवास की गुणचेष्टाओं से मन को रंजन करने वाले तुम मुझे पुनर्जीवित करो, क्योंकि मैं कई पापों से बेहोश हो गया हूँ उन्होंने ही

''मृतसंजीवनमंजनाचलेंदोः''[3] कहकर स्तुति की है।

यह एक अद्भुत कल्पना है। ''हे दयादेवी! तिरुमला के अंजनापर्वत पर श्रीश्रीनिवास की दिव्यमंगल मूर्ति को चंद्रमा की तरह चमकते हुए मृतकों को पुनर्जीवित करने वाले भगवान श्रीनिवास के दिव्य मंगल रूप को तुम्हारे अमृतांश के रूप में अवगत कराता हूँ।

''नित्यापूर्वं निधिमिव दये! निर्विशंत्यंजनाद्रौ''[4]

दयाशतक के श्लोक ४४ में उल्लेख है ''माँ दयादेवी! समस्त कालों में विद्यमान अद्भुत, दिव्यात्म स्वरूप उस परमात्मा के दिव्य स्वरूप को तेरी स्वीकृति से इस समस्त प्रकृतिमंडल में भाग्यशाली निधि जैसा शोभित अंजनापर्वत नामक इस तिरुमलागिरि में भक्त आनंद ले रहे हैं।

अशेषसेविशेषतः त्रिजगत् अंजनाद्रीशितुः[5]

त्रिविक्रमावतार में भगवान द्वारा किए गए महोपकार का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा, ''माँ! दयादेवी! तुम ने अंजनाद्रिपर्वत के अधिपति वेंकटेश्वर के पादारविंदों द्वारा चराचररूप के त्रिलोकों को पूरी तरह से निश्शेष और बिना किसी अंतर के तुमने मुद्रांकित कराया था न!

---

1) दयाशतकम् - १०
2) दयाशतकम् - १२
3) दयाशतकम् - २२
4) दयाशतकम् - ४४
5) दयाशतकम् - ८५

मात्सर्य रहित व्यक्ति यह अवगत कर लें कि श्री वेदान्तदेशिकजी के स्तोत्र में पाँच बार अंजनाद्रि का प्रस्ताव स्पष्टतः दृष्टि गत होने से तिरुमला क्षेत्रे ही अंजनाद्रि के रूप में विख्यात हुआ हैं।

विश्वगुणादर्शचम्पू - वेंकटाध्वरि - वेंकटागिरिवर्णन

प्रसिद्ध विद्वान वेंकटाध्वरि ने अपने महाकाव्य 'विश्वगुणादर्शचंपू' में वेंकटगिरिवर्णन नामक एक प्रकरण में लगभग १६ श्लोकों में तिरुमलाक्षेत्र का और क्षेत्राधीश का सुंदर वर्णन किया है। जिसमें -

किमप्युपादाय दिशन्नभीष्टं कृत्स्नं जनेभ्यः पतिरंजनाद्रेः।।[1]

भगवान जो कलियुग प्रत्यदा देव है स्वर्ण-सा चमक रहा है। अंजना पर्वत के प्रभु श्री श्रीनिवास भक्तों से कममात्रों में लेकर उन्हें अधिकाधिक अभिष्ट सिद्धि दे रहा है। जैसा कि भगवान कृष्ण ने सुदामा से थोड़ा ही लेकर उसे करोडपति बनाया था।

उसी तरह प्रतिवादि भयंकर अण्णन स्वामी के अंजनगिरिनाथ स्तोत्र, एडूर लक्ष्मीकुमार तातार्य स्वामी के ''हनुमद्विंशति''आदि स्तोत्रों में अंजनाद्रि साक्षात् पुराण प्रसिद्ध शेष पर्वतों मे विद्यमान है - श्रीवैष्णवसाहित्य में भी आचार्य सार्वभौम ने सुस्पष्ट रूप से और प्रमाण सहित स्पष्ट किया है कि तिरुमलाक्षेत्र ही अंजनाद्रि है।

प्रशमितकलिदोषां प्राज्यभोगानु बंधाम्
समुदितगुणजाताम् सम्यगाचारयुक्ताम्
श्रितजनबहुमान्यां श्रेयसीं वेंकटाद्रौ
श्रियमुपचिनु नित्यम् श्रीनिवास! त्वमेव।

❀❀❀

1) विश्वगुणादर्शचंपू - १९९

श्रीराम के दरबार में महर्षि अगस्त्य

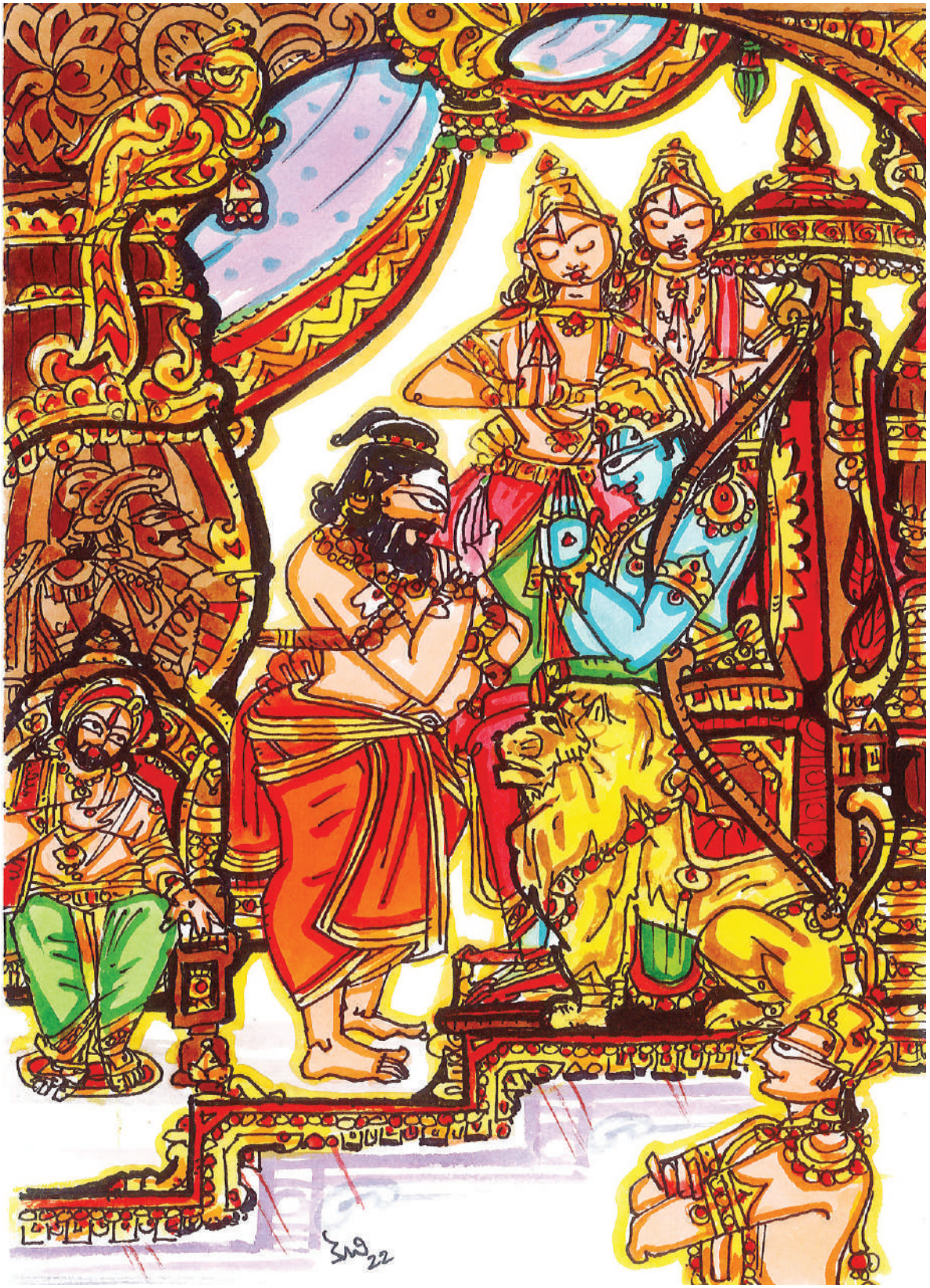

12. सप्तगिरियों में अंजनाद्रि का महत्व

तेलुगु मूल - अर्चकम् रामकृष्णा दीक्षितुलु अनुवाद - डॉ.के.महालक्ष्मी भवानी

श्रीवेंकटाचलाधीशं श्रियाध्यासित वक्षसम।
श्रितचेतनमंदारं श्रीनिवासमहं भजे।।

अखिलांडकोटि ब्रह्मांडनायक, वेदवेद्य, श्री श्रीनिवास भगवान पवित्र पुण्य धाम तिरुमला दिव्यक्षेत्र में स्वयं व्यक्त हो अवतरित हुए। शेष के प्रतीक शेषाचल पर्वत जंगलों के शिरो भाग में, पवित्र तिरुमला पर्वत स्थित हैं। श्री वेंकटेश्वर स्वामी को भक्त गण मनोयोग से बुलाते हैं- **'एडुकोंडलवाडा - वेंकटरमणा! गोविंदा! गोविंदा!'** साधारण लोग ''एडुकोंडल स्वामी (सात पर्वतवाले)'' कहते हुए यशोगान करते हैं, तो पंडित एवं अर्चकगण श्रीनिवास को 'सप्ताद्रीश' कहते रहते हैं। तिरुमला श्रीनिवास को अनादि काल से श्री वैखानस आगम शास्त्र विधि के अनुसार समस्त आराधनाएँ की जा रही हैं। मंदिर में हर दिन होनेवाली विभिन्न सेवाओं के समय में, विशेष संदर्भो में होनेवाले होम क्रतुओं में...

''सप्ताद्रीशाय विद्महे वेंकटेशाय धीमहि।
तन्नः श्रीनिवासः प्रचोदयात्।।''

कहते हुए श्रीनिवास गायत्री मंत्र से आराधना करते हैं। वैसे ही वैखानस आगम के अनुसार हर देवता को चतुर्नामों से पूजते हैं। ऐसे श्रीनिवास के चतुर्नामों के रूप में बताए गए हैं– ''वेंकटेश'', ''भक्तवत्सवल'', ''सप्ताद्रीश'', ''श्रीनिवास''। वेद प्रोक्त आगमों में सप्ताद्रीश स्तुत श्रीनिवास ही भक्त जनों से ''एडुकोंडलवाडु'' नाम से बुलाया जा रहा है। इससे पता चलता है कि प्राचीन काल से भी तिरुमला पर्वत सात पहाडों से युक्त हैं। तो ये सात पहाड क्या हैं? इसका परिशीलन करेंगे।

श्रीशेषशैलगरुडाचल वेंकटाद्रि नारायणाद्रि वृषभाद्रि वृषाद्रि मुख्याम्।
आख्याम् त्वदीय वसतेरनिशं वदंति श्रीवेंकटाचलपते! तव सुप्रभातम्।।[1]

ऐसा हर दिन सुप्रभात सेवा में स्वामी की स्तुति करते हैं। इस श्लोक में श्रीशैलम्, शेषशैलम्, गरुडाद्रि, वेंकटाद्रि, नारायणाद्रि, वृषभाद्रि, वृषाद्रि नामक सात नाम, तिरुमला पहाड़ के संबंधित नाम प्रस्तावित करते हैं। इसमें उदाहरण के लिए कुछ ही नाम बताए गए हैं। और भी कई नाम हैं- ऐसा सुप्रभात की रचना के काल, १४वीं शताब्दी के श्रीमान प्रतिवादी भयंकर अण्णन स्वामी ने बताया। तो सप्तगिरियों में ''अंजनाद्रि'' की विशिष्टता को पहचान कर अण्णन स्वामी ने अंजनाशैल की प्रधानता को घोषित करते हुए प्रत्येक 'अंजनाशैलनाथ स्तोत्र'[2] में श्रीनिवास की स्तुति की। उन्होंने **'वादिभीतिकर्येण रचिता....'** कहते हुए इस स्तोत्र के अंत में अपना नाम बताया।

---

1) श्री वेंकटेशकाव्यकलापः - पृ - ५
2) श्री वेंकटेशकाव्यकलापः - पृ - ४९

तिरुमला के बारे में, श्रीनिवास भगवान के बारे में जानने के लिए हमारे पास रहे मुख्य प्रमाणों याने- १८ पुराणों में से १२ पुराणों से स्वीकृत श्री वेंकटाचल माहात्म्यम मुख्य है। यह एक संकलन ग्रंथ है। मंदिर को शिलालेखों के अनुसार यह सबसे पहले, सामान्य शक १४९१ में श्रीनिवास आलय के वैखानस अर्चक, श्रीमान पसिंडि वेंकटत्तुरैवार जी के द्वारा ताडपत्रों में विरचित होकर, उस समय, हर दिन श्रीनिवास की प्रसन्नता के लिए, श्रीनिवास की कोलुवु-सेवा में पारायण किया जाता था।

श्री वेंकटाचल माहात्म्यम के अनुसार, तिरुमला पहाड करीब २१ नामों से बुलाया जाता था। भविष्योत्तर पुराण में:-

कृते वृषाद्रिं वक्ष्यंति त्रेतायाम् अंजनाचलम्।
द्वापरे शेषशैलेति कलौ श्रीवेंकटाचलम्।। [1]

ऐसा वर्णन करने के कारण स्पष्ट हो रहा है कि ये सात पहाड शेषाद्रि, वेंकटाद्रि, नारायणाद्रि, गरुडाद्रि, वृषाद्रि, वृषभाद्रि, अंजनाद्रि हैं। इनमें अंजनाद्रि, अंजनशैल, अंजनाचल पर्वत के रूप में प्रसिद्ध पर्वत है, जो त्रेतायुग में श्रीराम भक्त हनुमान का जन्मस्थल के रूप में कीर्तित हुआ था। आंजनेय की याद करते ही :

गोष्पदीकृत वाराशिं मशकीकृत राक्षसम्।
रामायणमहामालारत्नम् वंदे अनिलात्मजम्।।

नामक श्लोक की याद आती है। ''महान सागरों को गाय के पदचिह्नों को पार करने जैसा आसानी से लाँघनेवाले मच्छरों को मारने जैसा आसानी से राक्षस योद्धाओं को जीतनेवाले रामायण कथा नामक माला में मणि जैसे प्रकाशित होनेवाले हमुमान को नमस्कार करता हूँ।''

इस श्लोक के अनुसार हनुमान रामायण महामाला के रत्न समान हैं। माला के बीच रत्न प्रकाशित होता रहता है। इसलिए उत्तरकांड को मिलाकर सारे रामायण में सप्त कांड हैं। हनुमान की प्रस्तावना पहले पहल किष्किंधाकांड में दिखता है। किष्किंधा चौथा कांड है। इसके पहले बाल, अयोध्या, अरण्यकांड हैं, बाद में सुंदर, युद्ध, उत्तर कांड हैं। किष्किंधा कांड बीच में रहने के कारण हनुमान रामायण महामाला में रत्न समान है।

यह श्लोक में सुनते ही इससे संबंधित एक अच्छी कहानी की भी याद आती है। एक बार हनुमान अपने रामायण महामालारत्न की उपाधि से उत्तेजित होकर घमंड़ी बनते है। श्रीराम ने तब उसकी परीक्षा लेनी चाही।

''अनेक रामावतारेषु तेषु मुद्रिकाः।
चतुर्मुखप्रार्थनया समर्पिताः।।'' [2]

---

1) श्री वेंकटाचल माहात्म्यम (भविष्योत्तर पुराणांतर्गत - १-३६) द्वितीय भाग, पृ - २६३, ति.ति.दे. प्रकाशन

2) श्रीनिवास भक्त विजयम्, श्री रोंपिचेर्ल पार्थसारथी भट्टाचार्यलु,- ति.ति.दे. १९५७ - १९५८ बुलिटेन, पृ - १२३,

ऐसा, हनुमान के लिए रखी परीक्षा के बारे में यह श्लोक बताता है। १९५० के दशक में, करीब ४० सालों तक ति.ति.देवस्थान में आस्थान पंडित के रूप में सेवाएँ की, श्रीमान रोंपिचर्ला पार्थसारथी भट्टाचार्य जी ने, एक संदर्भ में इस श्लोक के अर्थ का विवरण दिया था :-

एक दिन श्रीरामचंद्र प्रभु, एक सरोवर के तट पर विहरण करते समय, उनकी उंगली से राजमुद्रांकित अंगूठी सरोवर में गिर जाती है। तुरंत वे हनुमान को बुलाकर कहते है कि मेरी अंगूठी सरोवर में गिर गई है ढूँढकर लाना। हनुमान तुरंत उस सरोवर में कूदकर, बहुत गहराई में जाकर राम की अंगूठी को ढूँढना शुरू करते हैं। इस खोज में हनुमान को अनेक वस्तुएँ मिल जाती हैं। जो भी मिली थीं, उन सभी को इकट्ठा करके बाहर लाकर वे किनारे की भूमि पर डाल देते हैं। आश्चर्य की बात है कि उनमें श्रीराम की अंगूठी समान अनेक अंगूठियाँ दिखती हैं। हनुमान भक्ति से श्रीराम को प्रणाम करके पूछते हैं कि स्वामी इनमें से कौन-सी अँगूठी असली अंगूठी है? तब श्रीराम ने कहा- 'हनुमान! मेरा अयोध्या में दशरथ के घर में पैदा होना यही पहली बार नहीं है। कई बार, इस पृथ्वी पर श्रीराम जैसा अवतरित होकर, मैं हर बार अवतार कार्यों को निभाता हूँ। जब भी मैं अवतरित हुआ। तब हर बार तुम्हारे जैसे भक्त सीता की खोज़ में मेरी मदद करते आए हैं। ऐसा हनुमानों की परीक्षा करने के लिए, एक-एक बार, एक एक अंगूठी को इस सरोवर में डालता आया हूँ। जितनी अंगूठियाँ तू लाए थे, उतनी ही नहीं, और भी ज्यादा माने अनगिनत अंगूठियाँ इस सरोवर में हैं। मैं सर्वज्ञ होने के कारण, हर समय के अवतार में जो भी हुआ था, वे सब मुझे याद हैं। ऐसा श्रीराम के कहते ही हनुमान ने अपने अज्ञान को क्षमा करने की प्रार्थना की।

इस प्रकार परमात्मा की अवतार लीलाएँ अनंत हैं। इस कहानी के अनुसार, वेंकटाचल माहात्म्यम में कथित तथ्य के अनुसार, बीते हुए त्रेतायुग में रामावतार के समय तिरुमला के अंजनाद्रि पर हनुमान का अवतरण हुआ।

सप्तगिरियों में अंजनाद्रि, अंजनाचलम् नामक इस पहाड की एक विशेषता है। वेंकटाचल माहात्म्यम ग्रंथ के अनुसार श्रीवैष्णव सांप्रदाय में 'सिरिय तिरुवडि' जैसे बुलाए जानेवाले हनुमान का जन्म इसी पर्वत पर हुआ था। वेंकटाचल माहात्म्यम के भविष्योत्तर, वराह, ब्रह्म, ब्रह्मांड पुराणों में अंजनाद्रि के बारे में विस्तार से बताया गया है। सृष्टि के समस्त प्राणियों को प्राणवायु देनेवाले पवन का, इस अंजनाद्रि से विशेष संबंध है। ब्रह्म पुराण ने 'अंजनाद्रि' शब्द का अर्थ इस तरह बताया :-

वायोरावेशनाश्चेवम् प्राहुरंजनसंज्ञकम्।[1]

मेरुपर्वत के पुत्र वेंकटाद्रि में वायुदेव की शक्ति प्रवेश करने के कारण, वायुदेव का पर्याय वाचक शब्द 'अंजना' नाम से यह पहाड बुलाया जा रहा है। ऐसे ही हनुमान की माता अंजनादेवी, तिरुमला में अंजनाद्रि पर्वत के पास संतान के लिए तप करने के कारण, वायुदेव संतान प्राप्त कराने वाला रुद्र तेजवाला फल देता है। इसलिए इस पहाड को ''अंजनाद्रि'' नामक नाम सार्थक है।

---

1) श्री वेंकटाचल माहात्म्यम (ब्रह्मपुराणांतर्गत - १-५१) द्वितीय भाग,पृ - १३५, ति.ति.दे. प्रकाशन

ब्रह्मांड पुराण ने भगवान की क्रीडाद्रि को अंजनाद्रि नाम आने की रीति के बारे में वर्णन किया।

अंजने! त्वं हि शेषाद्रौ तपस्तप्त्वा सुदारुणम्...।
अंजनाचल इत्येव नात्र कार्या विचारणा।। [1]

अंजना! तुम ने शेषाचल में घोर तप करके तीनों लोकों का हित करने के लिए सुपुत्र को जन्म दिया। इसलिए यह पर्वत तुम्हारे नाम से 'अंजनाचलम्' कहलाता है। तुम्हें, इसके बारे में सोचने की जरूरत नहीं हैं– ऐसा ब्रह्मा ने अंजना देवी को वर दिया था।

'अंजनाचलम्' नामक नाम आने की अद्भुत दिव्य गाथा ब्रह्मांड पुराण में बताई गई है। यह त्रेतायुग के समय की कहानी है।

पुराने जमाने में केसरी नामक वानर राजा, उसकी पत्नी अंजना देवी किष्किंधा नगर में रहते थे। उन्हें बहुत समय तक संतान नहीं हुई। अंजना देवी ने दुःख से मतंग महामुनि से संतान के लिए मंत्रोपदेश करने की प्रार्थना की। मतंग महामुनि ने उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर कहा – ''अंजना! पंपा नदी की पूरब दिशा में, ५०० योजनाओं की दूरी पर नारसिंह क्षेत्र है। उसके दक्षिण की ओर नारयणाद्रि नामक पहाड है। उस पहाड पर स्वामी तीर्थ है। उस तीर्थ के उत्तरी ओर थोडी दूर पर आकाशगंगा नामक तीर्थ है। उस पुण्य तीर्थ में स्नान करके, वायुदेव के बारे में १२ साल तप करो। वायुदेव के वर से, तुम्हें महा गुणशाली सुपुत्र पैदा होगा।'' ऐसा कहकर वायुदेव के ''**मारुतः परमात्मा...**' नामक मंत्र का उपदेश देकर आशीर्वाद दिया।

अंजनादेवी किष्किंधा से निकलकर, वेंकटाचल के नारायण गिरि पहुँचती है। नारायण गिरि के स्वामिपुष्करिणी में नहाकर, वराह, विष्णुदेव का दर्शन करके, आकाशगंगा तीर्थ पहुँचती है। आकाशगंगा तीर्थ में स्नान करके, कठोर दीक्षा से वायुदेव के बारे में तप करने लगती है। एक साल के बाद, वायुदेव उसे हर दिन खाने के लिए एक फल प्रसाद के रूप में देने लगा। ऐसा होते समय, एक दिन वायुदेव ने अंजना को रुद्र तेज से भरा फल दिया। रोज की तरह वह सामान्य फल ही समझकर, भूख से रहने के कारण अंजना ने यथा प्रकार उस फल को स्वीकृत किया। अनंतर अंजनादेवी गर्भवती हुई। दस महीनों के बाद शुभ लग्न में उसने एक सुपुत्र को जनम दिया। अंजना देवी व्रत करके पुत्र को पाने के कारण उस पहाड को अंजनाद्रि नामक प्रसिद्ध नाम प्राप्त हुआ।

यह पुराण वृत्तांत, हमें अंजनगिरि पहाड के प्रभाव या महिमा को बता रहा है। मंत्रोपासन, कार्य सिद्धि के लिए करनेवाली उपासनाएँ, इस अंजनाद्रि पर अवश्य सिद्ध होती हैं। इसी वृत्तांत को, श्रीनिवास की परम भक्तिन तरिगोंडा वेंगमांबा ने अपने 'वेंकटाचल माहात्म्यम' नामक पद्य काव्य में वर्णन किया :

---

1) श्री वेंकटाचल माहात्म्यम (ब्रह्मांडपुराणांतर्गत - ५-६४,६५) प्रथम भाग,पृ - ३३३, ति.ति.दे. प्रकाशन

अंजनादेवि तपमु मुंदचट जेसि...
नागिरिकि नंजनाद्रि पेरमर निडिरि।[1]

सप्तगिरियों में अंजनाद्रि के वैभव तथा विलक्षणता को बताते हुए ब्रह्मांड पुराण ने अंजनादेवी का जन्म वृत्तांत, रुद्रांश संभूत आंजनेय का वृत्तांत हनुमान का सूर्य को देखकर फल समझकर खाने की कोशिश करने का यत्न, ब्रह्मदेव का ब्रह्मास्त्र का प्रयोग, आंजनेय को सारे देव गण वर देना आदि बातों का वर्णन किया।

तिरुमला श्रीनिवास को देखकर कई भक्त तप से, ध्यान से, अपने अमृत तुल्य कीर्तनों के गान से प्रसन्न करके रोमांचित हुए। इनमें वाग्गेयकारों का स्थान प्रमुख है। पदकविता पितामह के रूप में ख्याति प्राप्त श्रीमान ताल्लपाक अन्नमाचार्य जी ने श्रीनिवास स्वामी को ३२ हजार संकीर्तनों से गाकर, स्वामी की दया प्राप्त की। अन्नमाचार्य जी ने सप्तगिरियों में अंजनाद्रि की विशिष्टता के बारे में अपने कीर्तनों में इस तरह प्रस्तावित किया–

''अणुरेणु परिपूर्णमैना रूपमु अणिमादि सिरि अंजनाद्रि मीदि रूपमु''[2]

इस प्रकार सैकडों संकीर्तनों में अन्नमाचार्य जी ने सप्तगिरियों में अंजनाद्रि की विशिष्टता को बहुत ही स्पष्ट रीति से प्रशंशित किया।

कन्नड देश के हरिदास वाङ्मय में कई महानुभाव श्रीनिवास का गुणगान करके धन्य हुए। पुरंदरदास, श्रीपादरायलु, व्यास तीर्थुलु, कनकदास आदि इस संप्रदाय में प्रसिद्ध हुए।

इनमें १६वीं सदी में जन्मे उत्तर कर्नाटक के भागलकोट के प्रांत के श्री प्रसन्न वेंकट दास थे जिसकी जीभ पर साक्षात् श्रीनिवास ने अपने कर कमलों से बीजाक्षर लिखे। प्रसन्न वेंकटेश महान भक्त थे। इन्होंने श्रीनिवास के नीराजन वैभव को गाते हुए सात पर्वतों में अंजनाद्रि वैभव का भी कीर्तन किया था।

'मंगल अंजनगिरि पतिगे मंगलम'[3]

अंजनाद्रि के वैभव एवं विशिष्टता को वेंकटाचल माहात्म्यम में विवरण देने पर भी, श्रीनिवास संतुष्ट नहीं होते हुए, हर दिन तीन बार अंजनाद्रि के वैभव से संबंधित घटनाओं को सुनते रहते है। वह कैसा है? श्रीनिवास के मंदिर में श्री वेंकटेश्वर स्वामी की हर दिन प्रातः-आराधना के अंतर्गत सुप्रभात, तोमाल सेवा, कोलुउ(दरबार) के बाद

---

1) श्री वेंकटाचल माहात्म्यम - मातृश्री तरिगोंड वेंगमांबा, १-११५

2) ताल्लपाक पदसाहित्यम् - संकलन -२-४३२

3) ति.ति.दे. अमृतोत्सव संचिका, २००८- पृ.१२६

ब्रह्मांड पुराणांतर्गत श्रीवेंकटेश सहस्र नामावली[1] के १००० नामों का पाठ करते समय, तुलसीदलों से हर दिन स्वामी के दिव्य श्रीचरणों की सहस्रनामों से अर्चना की जाती है।

इस सहस्र नामावली में आंजनेय – अंजनाचल को कीर्तन करनेवाले आठ नाम हैं–

२४०. ओं हनूमत्परितोषिताय नमः।

हनुमान की सेवाओं से प्रसन्न होकर श्रीराम जैसे अवतरित विष्णु भगवान की अर्चामूर्ति वेंकटेश को प्रणाम।

२४५. ओं कपिसंवृत्ताय नमः।

सुग्रीव, हनुमदादि वानरों से परिवेष्टित रहनेवाले श्रीराम रूपी वेंकटेश को नमस्कार।

२४६. ओं वायुसूनुकृत सेवाय नमः।

वायुपुत्र हनुमान द्वारा भक्ति श्रद्धा से सेवित किए जानेवाले वेंकटेश को नमस्कार।

८३८. ओं तीर्थस्नातृसौख्यप्रदर्शकाय नमः।

वेंकटाद्रि पर स्थित स्वामिपुष्करिणी, आकाशगंगा, पापनाशनम आदि तीर्थों में पवित्र स्नान करके पुनीत होनेवाले भक्तों को, सुख देने वाले वेंकटेश को प्रणाम। – अंजनादेवी ने आकाशगंगा तीर्थ में तप करके पुत्र को प्राप्त किया।

८४५. ओम् कपिस्वामि मनोंतस्थितविग्रहाय नमः।

हनुमान के हृदय में रहे श्रीराम जैसा रूप वाला विष्णु अर्चारूपी वेंकटेश को प्रणाम।

९१५. ओम् अंजनाकृतपूजावते नमः। – अंजना देवी से संपूजित स्वामी को नमस्कार।

९१६. ओम् आंजनेयकरार्चिताय नमः।

श्री आंजनेय से अर्चित किए गए स्वामी को प्रणाम।

९१७. ओम् अंजनाद्रिनिवासाय नमः।

अंजनाद्रि में निवास करनेवाले स्वामी को प्रणाम।

सुबह सहस्रनामार्चना में अंजनाद्रि के वैभव का श्रवण करके श्रीनिवास और भी प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए माध्याह्निक आराधना, रात्रि–आराधना के अंतर्गत होनेवाले श्री वेंकटेश अष्टोत्तर शतनामार्चना[2] में भी अंजनगिरि के वैभव को बतानेवाले नाम सुनते हैं।

---

1) श्री वेंकटाचल माहात्म्यम, ति.ति.दे. २०१४, पृ-५६४-५८३.

2) श्री वेंकटाचल माहात्म्यम (वराहपुराण प्रथम भागांतर्गत - ६१-३६,३७) प्रथम भाग, पृ.-१२५, ति.ति.दे. प्रकाशन

५. ओं सदंजनगिरीशाय श्रीवेंकटेशाय नमः।

उत्तम अंजनाद्रि के अधिपति श्री वेंकटेश को प्रणाम।

८१. ओम् अंजनागोत्रपतये श्रीवेंकटेशाय नमः।

अंजनाचल के अधिपति श्री वेंकटेश को प्रणाम।

८३. ओम् अंजनासुतदात्रे श्रीवेंकटेशाय नमः।

अंजनादेवी को पुत्र को अनुग्रहित किए श्री वेंकटेश को प्रणाम।

केवल इतना ही नहीं, बल्कि हर गुरुवार श्रीनिवास माध्याह्निक आराधना के अंतर्गत तिरुप्पावडा की सेवा होती है। इस सेवा में पठित श्रीनिवास गद्य में भी, अंजनगिरि की स्तुति करते हुए पढ़ते हैं कि– **'अंजनाचलादि शिखरी माला कुलस्या'** ...

आंजनेय के साथ श्रीनिवास के संबंध को केवल पुराण, स्तोत्र, अर्चनाओं में ही नहीं, बल्कि एक तरीके में भी जारी रहना आंजनेय के वैभव को बता रहा है। हर दिन अर्चक आलय में प्रवेश करके, मूलमूर्ति की सेवा करने के बाद स्वामी विश्रांति चामरम से पंखा देते हैं। इसी को मंदिर की भाषा में ''आलवट्ट'' कैंकर्य कहते हैं। विंजामरा(पंखा) से स्वामी की सेवा करने से ठंडी हवा आती है। पवन पुत्र के पिता वायुदेव को विंजामर(पंखे से) में हर दिन आवाहन करते हैं कि... **'चामरव्यजनेषु वायुमावाहयामि'**। केवल इतनी ही नहीं विंजमरों को हिलाते समय हर बार पाठ करनेवाले मंत्र भी, आंजनेय देवता मंत्र ही है। वैखानस आगम के अनुसार – **''मरुतः परमात्मा परम गतिः परम ब्रह्म परम योगम्।''**[1]

इस आलवट्ट कैंकर्य (सेवा) को, तोमालसेवा(तोमालसेवा - भुजाओं से पैरों तक अलंकृत की जानेवाली माला-सेवा) होते समय जीयंगार स्वामी करते हैं। उसी तरह महा रथोत्सव में, स्नपन तिरुमंजन(पवित्र स्नान) के समय में भी श्रीवैष्णव परिचारकों से आलवट्ट(पंखा) कैंकर्य(सेवा) किया जाता है।(पंखा दिया जाता है।)

उपर्युक्त कैंकर्यों(सेवाओं) से हम यह विषय ग्रहण कर सकते हैं कि श्रीवैष्णव संप्रदाय के अनुसार प्राप्त नाम ''सिरिय तिरुवडि'' (छोटा श्रीचरण) को सार्थक बनाते हुए पवन नंदन आंजनेय से श्रीनिवास की प्रीति के लिए जाने वाले कैंकर्यों(सेवाओं) के कारण सप्तगिरियों में अंजनाद्रि का महत्व बड़ा है– इस का निर्धारण स्वयं भगवान श्री श्रीनिवास द्वारा किया गया है।

---

1) श्रीमद्भगवदर्चाप्रकरणम् - श्रीमान् नृसिंहवाजपेयाजि - पृ-१२८.

इस तरह सप्तगिरियों में अंजनाद्रि वैभव एवं महिमा के बारे में जितना भी कहें वह जीव नदियों में जल कलकलरव से बहने की तरह, उमड-उमड कर आता ही रहता है।

''कलौ श्री वेंकटनायकः'' इसे सभी पुराण एकमत होकर उद्घोषित कर रहे हैं। कलियुग में मन से बुलाने पर उत्तर देने वाला महिमावान भगवान श्री वेंकटेश्वर है। अब तक हमने जो भी बातें बताई हैं, वे सब वेदव्यास से लिखित पुराणों के द्वारा ज्ञात हुई हैं। वशिष्ठ और नारद महर्षि के बीच में हुए संवाद के रूप में ब्रह्मांड पुराण से श्री वेंकटेश सहस्र नामावली ग्रहण किया गया है। इसी तरह श्री वेंकटेश्वर अष्टोत्तर शतनामावली को शेष नाग ने कपिल महर्षि को उपदेश किया था। कपिल महर्षि ने सूत को उपदेश किया था। सूत ने शौनकादि मुनियों को उपदेश किया था। भगवान रामानुज ने उस समय में श्री वेंकटाचल माहात्म्यम से प्रमाणों को बताते हुए बालाजी वेंकटेश्वर को विष्णु ही कहकर यह संशय निवारण किया कि श्रीनिवास, शिव है या विष्णु। यहाँ उद्धृत सभी दैवांश संभूत हैं। यहाँ हमसे बताया गया मुख्य विषय ''सप्तगिरियों में अंजनाद्रि वैभव'' उनसे ही ग्रहित है। इसलिए अंजनाद्रि वैभव के बारे में इससे बढ़कर प्रमाण और क्या होता है?

हमने उनके निकट उन्हें अभिलषित 'श्री वेंकटाचल माहात्म्यम' से सप्तगिरियों में अंजनाद्रि की विशिष्टता जान ली है।

श्रीनिवास के दिव्य आशिषों से सारे लोकों की सुरक्षा की प्रार्थना करते हुए...

ओम् नमो वेंकटेशाय।।

❋❋❋

हनुमान का सूर्य को निगलने का प्रयास - दूर राहु एवं उनके निकट ही सुरेश इन्द्र का वज्रायुध से हनुमान को मारना

13. हनुमान के जन्मस्थल के विषय में लोगों के भिन्न-भिन्न श्रुत-विषय(जन वाक्य)

अनुवाद - श्रीमती आर.वाणीश्री

भारत देश में आंजनेय (हनुमान) की उपासना को अधिक महत्व दिया जाता है। इस कथन में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि भारत देश में ऐसे कोई गाँव या कस्बा नहीं हैं, जहाँ हनुमान-मंदिर नहीं हो।

हनुमान के जन्मस्थल के विषय में भारतदेश के भिन्न-भिन्न प्रांतों के जनों के भिन्न-भिन्न कथन (श्रुत विषय), सुनाई दे रहे हैं। उनमें से कुछ प्रमुख विषय निम्न लिखित हैं :-

१. गुजरात के नवसारी जिले में - गुजरात के नवसारी जिले के डांग प्रांत की स्थानीय-प्रजा यहाँ के अंजनी पर्वत, अंजनी कुंड और अंजनी गुफा इन तीनों को हनुमान जन्मस्थल मानती हैं। इस स्थल को अंजनी-गाँव नाम से बुलाना जन-व्यवहार में हैं। इस प्रांत के समीप, शबरी-धाम और पंपा-सरोवर भी है। इस डांग की स्थानीय प्रजा द्वारा इसे 'दंडकारण्य' कहना भी व्यवहार में है। यहाँ परिशीलन करने और ध्यान देने योग्य अनेक विषय है।

(अ). यह स्थान अयोध्या की पश्चिम दिशा में १३२५ कि.मी. या ८२२ मीलों की दूरी पर २०.७६९५° N-७३.१३५० E अक्षांश और रेखांशों के बीच में है। रामायण के अनुसार श्रीराम का मार्ग, अयोध्या की पूरब दिशा में प्रारंभ होकर रामेश्वर तक ज़ारी रहा था। राम मार्ग पूरा ७८°-८४° रेखांशों के बीच और २७°-८° अक्षांशों के बीच में रहा था। इसलिए यह प्रांत (गुजरात के नवसारी जिला।) रामायण के अनुसार प्रामाणिक नहीं है।

(आ). इस गुजरात (पुराणों के प्रभास क्षेत्र के रूप में) प्रांत से शबरी आश्रम, पंपा-सरोवर, अंजनाद्रि इत्यादि के अस्तित्व का प्रस्ताव, पुराणों में या रामायण में कहीं भी नहीं मिलता है। यह केवल ''जन वाक्य'' ही है।

(इ). कर्नाटक में किष्किंधा के समीप पंपा-सरोवर है। यह विषय तो विश्व प्रसिद्ध है। यदि गुजरात की नवसारी के पास भी पंपा-सरोवर हो तो, गुजरात में किष्किंधा का अस्तित्व कहाँ है? नवसारी, पश्चिमी-सागर के पास है। लेकिन, वहाँ से रामेश्वर तक आना हो, तो यह एक बहुत प्रयास भरा कार्य है। अतः इस प्रांत को हनुमज्जन्म भूमि कहने के लिए वाङ्मय प्रमाण कुछ भी नहीं है। यह प्रदेश कर्नाटक के किष्किंधा से ६६६ कि.मी. की दूरी पर है।

२. **दूसरा प्रदेश-गुम्ला -** यह झारखंड से २१ कि.मी. की दूरी पर है। यहाँ अंजना गाँव और अंजना-धाम हैं। यह अयोध्या की दक्षिण-पूर्व दिशा में ६५२ कि.मी. की दूरी पर २३.२४०° N पर स्थित है। गुम्ला से किष्किंधा तक की दूरी १२४० कि.मी. हैं। इस प्रांत में कहीं भी शबरी-निवास या पंपा-सरोवर नहीं हैं और रामायण में या पुराणों में कहीं भी इसका प्रस्ताव नहीं है। अतएव, इसे हनुमज्जन्मस्थल कहना केवल स्थानीयों का अभिप्राय ही है।

३. **तीसरा प्रदेश -** कैथाल यह हरियाणा राज्य में है। अयोध्या से ८५८ कि.मी. उत्तर-वायव्य दिशा में २९,८०१५° N- ७६. ३९९६-८४.३२३०° अक्षांश और रेखांशों के बीच में है। किष्किंधा से १६२६ कि.मी. दूरी पर है। ''कपिस्थल'' - इसका अन्य नाम है। वहाँ के स्थानीयों का अभिप्राय है कि हनुमान 'कपि' होने के कारण 'कपिस्थल' नाम से यह जाना जाता है कि हनुमान का जन्मस्थल यही है। यहाँ के 'अंजनी तिला' नामक प्रदेश में अंजनादेवी का मंदिर भी है। परन्तु यह विषय जन श्रुति(लोगों की जुबानी) से ही निर्धारित है, इस के लिए पुराणेतिहासों से कोई प्रमाण नहीं हैं।

४. **अंजनेरि -** यह नासिक के समीप, महाराष्ट्र में है। यह नासिक से त्रयंबकेश्वर जाने के मार्ग में ७ कि.मी. की दूरी पर है। अयोध्या से १३७९ कि.मी. की दूरी पर पश्चिम - समुद्र तट पर १९.५५° N-७३°.३४° E के बीच में है। यह कर्नाटक में रहे किष्किंधा से ६१६ कि.मी. की दूरी पर है। यहाँ की स्थानीय-प्रजा का विश्वास है कि यह अंजनादेवी का निवास-स्थान और आंजनेय का जन्मस्थान है।

रामायण, पुराणों के प्रमाणों के आधार पर श्रीराम का हनुमान-सुग्रीवादि से परिचय, हनुमज्जन्मस्थल की चर्चा, किष्किंधा की विशेषताएँ, अंजनाद्रि का अस्तित्व - इत्यादि सभी विषय दक्षिण-भारत में ही घटित हैं, लेकिन उत्तर-भारत में नहीं है। अतएव, नवसारी, गुम्ला, कैथाल एवं अंजनेरी को समर्थन नहीं मिलता।

५. **कर्नाटक राज्य के हंपी के पास स्थित किष्किंधा -** यह कर्नाटक में १५.३३४०२२° N - ७६.४६८५३६° E अक्षांश और रेखांशों के बीच में है। सब इस बात पर सहमत होते हैं कि यह किष्किंधा ही वह किष्किंधा है, जो रामायण में निर्दिष्ट है। इस बात को कहनेवाले प्रमाण सहित इसे सिद्ध नहीं कर पा रहे हैं कि किष्किंधा ही हनुमान का जन्मस्थान है। यह अयोध्या से सीधा दक्षिण दिशा से नीचे होते हुए १६९९.४ कि.मी. की दूरी पर है। यह कुछ समय के लिए वालि के अधीन में और कुछ समय के लिए सुग्रीव के अधीन में, पुनः कुछ समय के लिए वालि के अधीन में और आखिर, वालि के वधानंतर सुग्रीव के आधिपत्य में आ गया था। अतः यह निर्द्वंद्व कहा जा सकता है कि हनुमान का सुग्रीव के सचिव के रूप में कार्य करने का कार्य क्षेत्र यही है। रामायणादि ग्रंथ इस विषय का समर्थन दे रहे हैं। परंतु ''जन्मस्थल'' के रूप में घोषणा करने के लिए आवश्यक प्रमाण नहीं है। रामायण के गहन अध्ययन से ज्ञात होता है कि किष्किंधा, ऋष्यमूक अंजनाद्रि तीनों भिन्न–भिन्न हैं। इस के पूर्व के निबंधों में इस बात का विशद–निरूपण है।

६. तिरुमला-अंजनाद्रि - चित्तूर जिले की पहाडियों से विद्यमान प्रमुख सप्तगिरियों का समाहार है तिरुमला। यह १३.६८७° N - ७९.३५०९° E अक्षांश-रेखांशों के बीच, अखिलांडकोटि ब्रह्मांड नायक श्री श्रीनिवास का निवास स्थान कलियुग वैकुंठ के रूप में भासमान है। इस बात पर बल देकर सिद्ध करने के लिए अनेकानेक प्रमाण हैं कि इस तिरुमला में स्थित ''अंजनाद्रि ही आंजनेय का जन्मस्थान है'' :-

अ. आज से हजारों वर्षों के पूर्व श्री आदिशेष का ही अवतार मूर्ति के रूप में कीर्तित श्री रामानुजाचार्य से प्रमाणीकृत विविध–पुराण संकलित–ग्रंथ ''श्री वेंकटाचल माहात्म्यम'' है जो - ब्रह्म, ब्रह्मांड, पद्म, वराह, गरुड, वामन, मार्कंडेय, भविष्योत्तर इत्यादि पुराणों के संकलन में -

आ. स्कंद पुराण में -

इ. अनेक वैखानस–पांचरात्र–आगम–ग्रंथों में उल्लिखित श्री भगवदर्चना क्रम में एवं अष्टोत्तर, सहस्रनामार्चनादि प्रकरणों में।

ई. श्री वेदांतदेशिक और श्री वेंकटाध्वरि(न्) जैसे कविश्रेष्ठों के काव्य-स्तोत्र ग्रंथों में।

उ. विविध शासकों के शासन-काल के संबंधित विविध शिलालेखों में।

ऊ. अन्नमय्या, पुरंदर दास, तरिगोंडा वेंगमांबा जैसे वाग्गेयकारों के भक्ति–संकीर्तनों में।

ऋ. तिरुमला के आस-पास के क्षेत्रों में स्थित मन्दिरों में प्राप्त स्थल पुराणों से।

ए. आल्वार (तमिल भक्ति कवि) दिव्य प्रबंधादि वैष्णव भक्ति साहित्य में।

अनेक अन्य प्रमाणों की सहायता से तिरुमला पर्वतों के अनेक नामों में से एक, है 'अंजनाद्रि' जिसे श्री हनुमज्जन्म स्थान के रूप में सिद्ध किया जाता है। इस प्रयास का ही एक अंश है अंतर्जातीय-अंतर्जाल-संगोष्ठी (इंटर्नेशनल वेबनार)। इसीसे संबंधित लेखों का समाकलित रूप है यह ग्रन्थ। इस की रचना का क्रम इस प्रकार हुआ है।

❀❀❀

इन्द्र द्वारा घायल हुए हनुमानजी को वायुदेव अपने हाथों से उठाकर चलना

14. ''आंजनेय चरित'' के कुछ प्रसिद्ध क्षेत्र

तेलुगु मूल - आचार्य राणीसदाशिवमूर्ति अनुवाद - कुमारी जी.शशिकला

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहम्।
दनुजवनकृशानं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशम्।
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि।।[1]

अतुलनीय शक्तिशाली, स्वर्णिम पहाड़ मेरुपर्वत जैसी छवि वाले राक्षस रूपी वन को जलाने वाली ज्वाला के समान रहनेवाले, ज्ञानियों में अग्रणी, सभी सद्गुणों से पूर्ण वानर श्रेष्ठ, रघुनाथ के श्रेष्ठ दूत पवनसुत श्री आंजनेय को प्रणाम।

श्री आंजनेय स्वामी, श्री महाविष्णु का पूर्णावतार श्रीराम का भक्त शिखामणि है। लोक प्रसिद्ध, अश्वत्थामा, बलि चक्रवर्ति, व्यास महर्षि, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम नामक सात चिरंजीवियों के बीच मणि-सा प्रकाशित, अपार वैभव-प्राभव मूर्ति है, आंजनेय स्वामी। आंजनेयस्वामी का वृत्तांत उनके जन्म से लेकर आजतक पग-पग में चमत्कारों से भरा हुआ एक अमृत कलश है। संकल्प आते ही मनोवेग के साथ किसी लोक में भी क्षण में पहुँचने वाले महिमान्वित मूर्ति श्री हनुमान जी, पूरे भूमंडल में, आकाश में, सभी लोकों में भी निचरित करने पर भी, कुछ अति मुख्य प्रदेशों के साथ उनकी अधिक निकटता है। वे -

अ. जन्म क्षेत्र-सा सुमेरु शिखराचल की शेषाचल श्रेणियों की अंजनाद्रि।

आ. सूर्य गमन मार्ग गगन मुख्यतः विद्याक्षेत्र के रूप मे सुमेरु तट-मंच।

इ. कार्य क्षेत्र के रूप में किष्किंधा।

ई. सेवा क्षेत्र के रूप में अपने प्रभु श्रीरामचंद्र की जन्म भूमि अयोध्या।

उ. श्रीरामावतार के समापन से लेकर आजतक के आंजनेय का नित्य-निवास स्थान गंधमादन पर्वत।

ऊ. अब छठवाँ भौतिक नहीं है। राम भक्तों के समस्त हृदय हनुमान के निवास स्थान ही हैं।

१. हनुमान की जन्मभूमि

हनुमान की जन्मभूमि से संबंधित विषय में, भिन्न-भिन्न प्रांतों के श्रध्दालु भक्त हनुमान के प्रति भक्ति-भाव से, स्थानीय विश्वासों के आधार पर कितना भी जोर देकर अपने प्रांतों को हनुमज्जन्मभूमि के रूप में कहने पर भी महान काव्य रामायण, महाभारत, पुराण इत्यादि प्रशस्त साहित्यों में मिलने वाले सभी प्रमाणों से समर्थन प्राप्त स्थान तिरुमला की ''**अंजनाद्रि**'' ही है।

---

1) सूक्ति सुधाकर, श्रीहनुमत् सूक्ति - ३७

अ) हनुमान जन्म के बारे में श्रीमद्रामायण में उल्लेख -

हनुमान के जन्म के बारे में श्रीमद्रामायण में -''किष्किंधाकांड'' में सागरोल्लंघन के समय में, जांबवंत के वचनों में, सुंदरकांड में हनुमान जी स्वयं सीता माता से कहने के संदर्भ में उसी तरह उत्तरकांड में अगस्त्य ऋषि के वचनों में - इस प्रकार तीन स्थानों में प्रस्तावित किया गया है।

१. किष्किंधाकांड में जांबवंत समुद्र लांघने के लिए हनुमान को प्रेरित करते हुए उनके जन्म वृत्तांत को इस तरह बताते हैं -

हे हनुमान! तुम्हारी माता पुंजिकस्थल नामक एक अप्सरा है। शापवश वह अंजना नाम से वानर नारी रूप पाकर केसरी नामक एक वानर वीर की पत्नी हो गई। उसने एक बार पर्वताग्र 'अचरत पर्वतस्याग्रे प्रावृडंबुदसन्निभे' में संचरित करते हुए वायुदेव की कृपा से -

''वीर्यवान् बुध्दिसम्पन्नस्तव पुत्रो भविष्यति।
महासत्त्वो महातेजा महाबलपराक्रमः।
लंघने प्लवने चैव भविष्यति मया समः।
एवमुक्ता ततस्तुष्टा जननी ते महाकपे!
गुहायां त्वां महाबाहो! प्रजज्ञे प्लवगर्षभ!''[1]

''वीर्यवान, बुद्धिमान, महासत्व संपन्न, बडा तेजस्वी, अति बल पराक्रम से युक्त पुत्र का जन्म होगा'' ऐसा वर प्राप्त करके पर्वत गुफा में तुम्हें जन्म दिया है। लेकिन स्पष्ट रूप से यह प्रस्तावित नहीं हुआ कि किस पर्वत की गुफा में उसने तुम्हें जन्म दिया है।

२. सुंदरकांड में यह बात स्पष्ट है कि अपना जन्म वृत्तांत, हनुमान ने ही स्वयं सीतादेवी को बताया था। शंबसादन नामक राक्षस को मारनेवाला केसरी नामक वानर वीर को उसकी पत्नी अंजना के द्वारा वायुदेव के प्रभाव से हनुमान का जन्म हुआ था।

माल्यवान्नम वैदेहि! गिरीणामुत्तमो गिरिः।
ततो गच्छति गोकर्णं पर्वतं केसरी हरिः।
स च देवर्षिभिर्दिष्टः पिता मम महाकपिः।
तीर्थे नदीपतेः पुण्ये शम्बसादनमुद्धरन्।
यस्याहं हरिणः क्षेत्रे जातो वातेन मैथिली।
हनुमानिति विख्यातो लोके स्वेनैव कर्मणा।[2]

---

1) वाल्मीकिरामायणम्, किष्किंधाकाण्ड - ६६.१९-२०.

2) वाल्मीकिरामायणम्, सुंदरकाण्ड - ३५.८१-८३.

यहाँ भी हनुमान ने केवल यही बताया कि पर्वतों में श्रेष्ठ माल्यवंत नामक पर्वत से केसरी नामक महा कपिवर, जो मेरे पिताजी है, उन्होंने गोकर्ण पर्वत जाकर वहाँ के सागर तीर्थ में देवताओं और ऋषियों के कहने पर शंबसादन नामक राक्षस को मारा था। उस समय केसरी, क्षेत्र जैसे (क्षेत्र माने पत्नी) मेरी माता को मैंने हनुमान के नाम से पैदा हुआ। यहाँ भी उन्होंने 'किस प्रदेश में जन्म लिया है' - इसे नहीं बताया है। यहाँ प्रस्तावित माल्यवंत पर्वत हिमालय के ऊपर पूरब में स्थित मालाकार में रही एक पर्वतश्रेणी है। यह केतुमाला, इलावृत प्रदेशों को अलग करनेवाला सीमा पर्वत है। नील, निषध पर्वतों तक फैला हुआ है। माल्यं - मालाकारता विद्यते अत्र इति माल्यवान् स च केतुमाल् - इलावृतवर्षयोः सीमापर्वतः - भास्कारचार्य सिद्धांत शिरोमणी) - ऐसे मत्स्यपुराण, विष्णु पुराण,महाभारत, भास्कराचार्य सिद्धांत शिरोमणि आदि कह रहे हैं। हमें यह अवगत करना है कि वहाँ से केसरि गोकर्ण आए है। पर माल्यवंत पर्वत आंजनेय का जन्म स्थान कहने केलिए कोई स्पष्ट प्रमाण नहीं है।

३. अब वाल्मीकि रामायण में उत्तरकांड में श्रीरामचंद्र से अगस्त्य महर्षि से हनुमान-वृत्तांत का विवरण देते हुए कहा गया है :

सूर्यदत्तवरस्वर्णः सुमेरुर्नाम पर्वतः
यत्रराज्यं प्रशास्तस्य केसरी नाम वै पिता।
तस्य भार्या बभूवेष्टा अंजनेति परिश्रुता
जनयमास तस्यां वै वायुरात्मजमुत्तमम्।।[1]

सूर्य से वर प्राप्त करनेवाला सुमेरु नामक एक पर्वत है। यह हनुमान के पिता केसरी के विशाल राज्य में सम्मिलित है। इस तरह यह भी उनका राज्य है। उनकी अति प्रीति पात्र पत्नी अंजना नाम से विख्यात है। वायुदेव ने अपने जैसा रहनेवाला एवं उत्तम पुत्र होने का वर अंजना को दिया था। वही है, हनुमान।

यहाँ उत्सुकता जगानेवाला विषय है कि श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में वर्णित सुमेरु पर्वत वेंकटाचल ही है - ऐसा कहने केलिए श्री वेंकटाचल माहात्म्यम के कई पुराण में से भागों में उल्लिखित है।

श्री वेंकटाचल माहात्म्यम के ब्रह्मपुराण के अनुसार, एक बार वायुदेव और आदिशेष के बीच की लडाई के अंतर्गत, मेरु का पुत्र सुमेरु वायुदेव के प्रभाव से सुवर्णमुखी नदी के तट तक आकाश मार्ग से लाखों योजनाओं से ज्यादा ऊपर उड़ाकर लाया गया है। इस सुमेरु का ही ''वेंकटुडु'' नाम है। इसलिए इसे वेंकटाद्रि, वेंकटाचलम नाम से बुलाते हैं। केवल यही नहीं -

अंजनाद्रिर्वृषाद्रिश्च शेषाद्रिर्गरूडाचलः।
तीर्थाद्रिः श्रीनिवासाद्रिश्चिंतामणिगिरिस्तथा।
वृषभाद्रिर्वराहाद्रिर्ज्ञानाद्रिः कनकाचलः
आनंदाद्रिश्च नीलाद्रिः सुमेरुशिखाराचलः।।[2]

---

1) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - ३५.१९-२०.

2) श्री वेंकटाचल माहात्म्य, ब्रह्मपुराण भाग

इत्यादि ब्रह्म पुराण भागों में उल्लिखित नामों से यह स्पष्ट है कि वेंकटाद्रि को सुमेरु शिखराचल नाम भी है।

(आ) महाभारत में

अब महाभारत में परखने से, वनपर्व में हनुमान भीम से वार्तालाप करते समय -

''अहं केसरिणः क्षेत्रे वायुना जगदायुषा
जातः कमलपत्राक्ष हनुमान्नाम वानरः''।।[1]

ऐसा स्वयं हनुमान ने वायुदेव की कृपा से केसरी क्षेत्र में माने केसरी की पत्नी अंजना के द्वारा पुत्र के रूप में अपने जन्म की बात भीम से कही है।

इस तरह श्रीमद्वाल्मीकि रामायण में और व्यास महाभारत में भी हनुमान के जननी-जनक के बारे में वर्णन तथा वायुदेव के बारे में प्रस्ताव स्पष्ट रूप से उल्लिखित है। पर उनके जन्मस्थान के बारे में कहीं पर भी प्रस्तावित नहीं है। सूचनामात्र के रूप में इसे सुमेरु शिखराचल के रूप में बताया गया है। उपर्युक्त ब्रह्मपुराण से उध्दृत खंड में यह उल्लिखित है कि सुमेरु शिखर ही ''**वेंकटाद्रि**'' है और वेंकटाद्रि का एक दूसरा नाम ही ''**अंजनाद्रि**'' है।

(इ) पुराणों में

अनंतर काल के पुराणों की जाँच करने से मालूम होता है कि स्कंद पुराण के वैष्णव खंड में ३९, ४० अध्याय दोनों में अति विस्तृत रूप से हनुमान का जन्मवृत्तांत वर्णित किया गया है। वह स्कंद पुराण के उत्तर भारत और दक्षिण भारत की सभी प्रतियों में भी है। वहाँ उल्लिखित तथ्यानुसार :

हनुमान का जन्म इसी वेंकटाद्रि में ही आकाशगंगा के पास हुआ था। पुराण के अनुसार मतंग महर्षि की सूचना के अनुसार अंजनादेवी इसी जगह पर तप करने के कारण हनुमान यहाँ पैदा हुए। इसलिए ब्रह्म के वर के कारण इस पहाड़ को अंजनाद्रि नाम विख्यात हुआ है।

यहाँ एक बात का अनुशीलन करना है। इस स्कंद पुराण के अनुसार अंजनादेवी के पिता एक दानव थे। वे महाबलशाली और पराक्रमी थे। उसका नाम केसरी था। उसके पति एक वानर वीर थे। उसका नाम भी केसरी था। निम्नलिखित श्लोकों में इस बात को देख सकते हैं।

मतंग! मुनिशार्दूल! वचनं मे श्रुणुष्व ह।
पिता मे केसरी नाम राक्षसः शिवतत्परः।।[2]

(स्कंद पुराण - श्रीवैष्णव खंड ३९-४ से ६ तक) हे मुनि श्रेष्ठ! मतंग महर्षि! मेरे पिता केसरी नामक राक्षस थे। वे महान शिव भक्त थे।

---

1) माहाभारत - वनपर्व - १४७.२७

2) (स्कंद पुराण - श्रीवैष्णव खण्ड - ३९-१०, ११ श्लोक)

ततः कालांतरे विप्रःकेसर्याख्यो महाकपिः
यया चेमां ददस्वेति पितरं मे ततः पिता ।
तस्मै मां दत्तवांश्चैव पारिबर्हं ददौ च सः
गवां लक्षसहस्राणि गजलक्षं महामनाः

(स्कंद पुराण - श्रीवैष्णव खंड ३९-१०,११ श्लोक)

बाद में केसरी नामक एक वानर वीर ने मेरे पिता से मुझे पत्नी के रूप में देने के लिए माँगा। उदारमनस्क पिता जी ने उस कपि वीर के साथ मेरा परिणय करके, उपहार के रूप में करोडों गाय, एक लाख हाथियाँ, अर्बुदा (दस करोड़) घोडे, रथ, कई वस्त्र, रत्न, हजारों दास-दासियाँ, नृत्यगीतों में निपुण अंतःपुर स्त्रियाँ, हजारों वस्त्र दिए। इस कथन के अनुसार यह स्पष्ट होता है कि अंजना देवी के पिता का नाम केसरी था। वह दानव था। उसके पति का नाम भी ''केसरी ही'' था। वह तो कपि वीर था।

यही बात श्री वेंकटाचल माहात्म्यम् के ब्रह्मांड पुराण के इस भाग में भी है।

त्रेतायुगेऽसुरः कश्चित् केसरीत्यैव विश्रुतः।[1]

(ब्रह्मांण्डपुराणे तीर्थखण्डे भृगुनारदसंवादे ५४ श्लोक)

त्रेतायुग में केसरी नामक विख्यात् दानव रहता था।

ततः कपिवरः कश्चित् केसरीति भुवि विश्रुतः।
अभिगम्य ययाचे तां कन्यां यौवनशालिनीम्।।[2]

(ब्रह्मांडपुराणे तीर्थखंड़े भृगुनारदसंवादे ६८ श्लोक)

राक्षस केसरी को शिव के वर से प्राप्त पुत्री अंजना वयस्क होते ही केसरी नामक कपि श्रेष्ठ ने उसकी अंजना से परिणय का प्रस्ताव रखा। उसकी सम्मति से उन दोनों का परिणय हो गया।

इस तरह इन दोनों पुराणों में (स्कांद साक्षात् पुराण ही है) ब्रह्मांड पुराण का भाग श्री वेंकटाचल माहात्म्यम में भी यह वृत्तांत बहुत विस्तार से है। इसी तरह इन दो ग्रंथों में भी बताया गया कि हनुमान की जन्मभूमि अंजनाद्रि तिरुमला पहाड़ पर स्थित वेंकटाद्रि ही है।

अंजने त्वं हि शेषाद्रौ तपस्तत्वा सुदारूणम्।
पुत्रं सूतवती यस्माल्लोकत्रयहिताय वै।

---

1) ब्रह्माण्ड पुराण - तीर्थखण्ड - भृगुनारद संवाद - ५४ श्लोक

2) ब्रह्माण्ड पुराण - तीर्थखण्ड - भृगुनारद संवाद - ६८ श्लोक

प्रसिद्धिं यातु शैलोयमंजने! नामतस्तव।
अंजनाचल इत्येव नात्र कार्य विचारणा।
इति तस्यैवरं दत्वा देवा ब्रह्मपुरोगमाः।
स्वं स्वं स्थानं समुद्दिश्य यथागतमथो ययुः
अंजना पुत्रमादाय श्रीवेंकटगिरेस्तटम्
पुनरागम्य सामोदमलं चक्रे निजाश्रमम्।।[1]

(ब्रह्मांडपुराणे तीर्यखण्डे भृगुनारदसंवादे ५वें अध्याय में ६८ श्लोक।)

''हे अंजना! तुमने इस शेषाद्रि पर महान तप करके लोकहित के लिए इस पुत्र को जन्म दिया है। इसलिए इस वेंकटगिरि या शेषाद्रि आगे से तुम्हारे नाम पर अंजनाद्रि नाम से विख्यात होगा'' - ऐसा कहकर ब्रह्मादि देव अपने-अपने लोक चले गए। बाद में अंजना प्रसन्नता से अपने पुत्र के साथ श्री वेंकटगिरि में स्थित अपना आश्रम पहुँची।

इस तरह स्कंद पुराण में, श्री वेंकटाचल माहात्म्यम नामक ग्रंथ के अंतर्गत रहे ब्रह्मांड पुराण के भाग में उल्लिखित श्री हनुमान का जन्म वृत्तांत के अनुसार तिरुमला की अंजनाद्रि ही हनुमान की जन्म भूमि हैं- इस तथ्य को स्पष्ट करने के संदर्भ-विशेष इसी ग्रंथ के छठवाँ अध्याय के ''**पौराणिक प्रमाण**'' नामक लेख में सविस्तार प्रस्तावित किया गया है।

श्री वेंकटाचल माहात्म्यम के वराह पुराण भाग में (३६ वीं अध्याय के २८, २९ श्लोक) भी बताया गया कि कलियुग का वेंकटाद्रि ही त्रेतायुग का अंजनाद्रि है।

कृते वृषाद्रिं वक्ष्यंति त्रेतायाम् अंजनाचलम्
द्वापरे शेषशैलेति कलौ श्रीवेंकटाचलम्।
अंजना च तपः कृत्वा हनूमंतमजीजनत्
तदा देवास्समागत्य देवसाहाय्यकारकम्
यस्मात् पुत्रमसूताऽसौ जगुःतस्मात् इमं गिरिम् अंजनाद्रिम्।।[2]

अर्थात् अंजना जी यहाँ पुत्र को जन्म देने के कारण यह पहाड़ अंजनाद्रि हुआ था।

इस तरह के उदाहरण विभिन्न प्राचीन इतिहास, पुराण ग्रंथों में कहीं भी किसी और प्रदेश को हनुमान का जन्मस्थल - रूप में समर्थन करने के संदर्भ द्रष्टव्य नहीं है। इसलिए उपर्युक्त प्रमाणों के अनुसार यह निर्धारित कर सकते हैं कि हनुमान का जन्म स्थल वेंकटाद्रि के आकाशगंगा प्रांत के अंजनाद्रि ही है।

---

1) ब्रह्माण्ड पुराण - तीर्थखण्ड - भृगुनारद संवाद, अध्याय-५, श्लोक-६८

2) श्री वेंकटाचल माहात्म्य - वराह पुराण भाग- अध्याय-३६, श्लोक-२८, २९

(ई) हनुमान का बाल्यकाल :

ब्रह्मांड पुराण के अनुसार ब्रह्मादि देव हनुमान को अनेक वर देकर, अंजना से यह कहकर चले गए कि वह यहाँ तप करके हनुमान को जन्म देने के कारण यह वेंकटाद्रि, 'अंजनाद्रि' नाम से भी विख्यात होगा। तत्पश्चात्.....

अंजनापुत्रमादाय श्रीवेंकटगिरेस्तटम्।
पुनरागम्य सामोदमलं चक्रे निजाश्रमम्।।[1]

ऐसा वर्णित है कि - अंजना देवी अपने पुत्र को लेकर खुशी से श्री वेंकटगिरि तट के अपने आश्रम को पहुँचकर सुख से रही।

- इति श्री ब्रह्मांड पुराणे तीर्थखण्डे श्री वेंकटाचल माहात्म्यम अंजनाचलभिधान हेतु कथने ५ अध्याय।

इससे हमें यह पता चलता हैं कि हनुमान का जन्म ही नहीं, बल्कि अपनी माता के साथ वह इस पहाड़ पर कुछ समय रहा।

उ) वेंकटाद्रि के तीर्थों से हनुमान का संबंध :

इसी समय में यानी हनुमान के बचपन में ही, ब्रह्म पुराण में यथा प्रस्तावित तथ्य के अनुसार वहाँ के तीर्थों में से दो तीर्थ हनुमान से संबंधित है।

वायव्यां दिशि तीर्थानि चोत्तरस्यां तथैव च।[2]
ऋषितीर्थं महापुण्यं शतानंदं सुतीक्षणकम्।
वैभाण्डकम् महापुण्यं बिल्वतीर्थमतःपरम्।।[3]
अधस्ताद्विष्णुतीर्थं च पुण्यं मारुतिनिर्मितम्।।[4]

वेंकटाद्रि पर स्थित ६८ तीर्थ भक्ति - वैराग्य-दायक हैं। उपर्युक्त प्रमाण वाक्य के अनुसार वायव्य तथा उत्तर दिशाओं में स्थित ऋषि तीर्थ शतानंद तीर्थ से निर्मित है और सुतीक्षण, वैभांडक, बिल्व तीर्थ, विष्णु तीर्थ इत्यादि के बाद विष्णु तीर्थ को हनुमान ने निर्मित किया।

इति श्री ब्रह्मपुराणे श्रीवेंकटाचलमाहात्म्ये भक्तिवैराग्यप्रदाष्टषष्टितीर्थनाम वैभवकथने ५वें अध्याय में

अस्ति तीर्थ चांजनेयं शुध्दोदकमत : परम्।[5]

---

1) श्री ब्रह्माण्ड पुराण - तीर्थखण्ड - श्री वेंकटाचल माहात्म्य, अंजनाचलाभिधान हेतु कथनम्, अध्याय - ५, श्लोक - ६८.
2) ब्रह्म पुराण - श्री वेंकटाचल माहात्म्य - भक्तिवैराग्य प्रदष्ट षष्टि तीर्थनाम वैभव कथनम् - अध्याय - ५, श्लोक - १६.
3) ब्रह्म पुराण - श्री वेंकटाचल माहात्म्य - भक्तिवैराग्य प्रदष्ट षष्टि तीर्थनाम वैभव कथनम् - अध्याय - ५, श्लोक - १७.
4) ब्रह्म पुराण - श्री वेंकटाचल माहात्म्य - भक्तिवैराग्य प्रदष्ट षष्टि तीर्थनाम वैभव कथनम् - अध्याय - ५, श्लोक - १८.
5) ब्रह्म पुराण - श्री वेंकटाचल माहात्म्य - मन्वद्यष्टोत्तर शततीर्थ नामानुवर्णनम् - अध्याय - ६, श्लोक - ९.

ऐसा उपयुक्त इति ब्रह्म पुराणे श्री वेंकटाचल माहात्म्ये मन्वद्यष्टोत्तरशततीर्थनामानुवर्णने ६वें अध्याय उसी तरह मन्वादि १०८ पुण्य दायक तीर्थों में श्री आंजनेय तीर्थ भी है।

इसके अनुसार पता चलता है कि केवल हनुमान का यहाँ जन्म लेना ही नहीं बल्कि बचपन में यहीं रहकर, यहाँ के गिरि, तीर्थ, वन आदि की पूजा करते हुए, यहाँ भक्ति, ज्ञानप्रद विष्णु तीर्थ नामक तीर्थ को भी स्वयं उन्होंने ही निर्मित किया था।

इसी प्रकार इस अंजनाद्रि में स्थित १०८ पुण्यदायक तीर्थों में श्री आंजनेय तीर्थ नामक तीर्थ भी है। यह ध्यान देने की बात है।

इतने स्पष्टरूप से हनुमान की जन्मभूमि के संबंध में भारत देश के प्रसिद्ध अन्य हनुमत् क्षेत्रों को, हनुमज्जन्मभूमि के रूप में दोनों इतिहास-रामायण, महाभारत या अन्य किसी भी पुराण में प्रस्तावित नहीं किया गया है।

इसलिए ''**तिरुमला अंजनाद्रि**'' को ही हनुमान का जन्मस्थल कहना पुराण आदि साहित्य द्वारा अत्यंत स्पष्ट रूप से साबित किया गया सत्य है।

२. विद्यास्थल

अब जानने की उत्सुकता होगी हनुमान के विद्यास्थल के बारे में। इसका उत्तर हमें श्री वाल्मीकि से रचित रामायण के उत्तरकांड के निम्न लिखित श्लोकों से मालूम होता है। वहाँ के कथन के अनुसार उसके गुरु प्रत्यक्ष नारायण मूर्ति सूर्य भगवान ही है। विद्याक्षेत्र उदयाचल से अस्ताचल तक रहा नभो मार्ग ही है। उसके विद्याध्ययन क्रम भी बहुत कौतूहल और विस्मयकारी है।

श्रीमद्वाल्मीकि रामायण के ३६वीं सर्ग के मुख्यांश यहाँ ध्यान देने लायक है। इंद्र के वज्रायुध से घायल होकर विश्राम लेनेवाले हनुमान को आनंदित करने हेतु ब्रह्म के आदेश पर देवता-गण कई विशिष्ट शक्तियों को हनुमान को प्रदान करने लगे। उनमें से पहले इंद्र, पश्चात् सूर्य द्वारा दिए गए वरदानों को जानना आवश्यक है।

पहले इंद्र अपने वज्रायुध के प्रहार को सहने वाले दृढ हनु (जबड़ा) होने के कारण 'हनुमान' के नाम से प्रसिद्ध होने का और कभी भी वज्रायुध से कुछ हानि न होने का वर दिया था।

मार्तंडस्त्वब्रवीत् तत्र भगवांस्तिमिरापहः।
तेजसोऽस्य मदीयस्य ददामि शतिकां कलाम्।।[1]

तत्पश्चात् अंधेरे को दूर करने वाले मार्तांड (सूर्य) ने अपने तेज के सौवीं भाग को हनुमान को वरदान में दिया।

---

1) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - ३६.१३

यदा च शास्त्राण्यध्येतुं शक्तिरस्य भविष्यति।
तदास्य शास्त्रं दास्यामि येन वाग्मी भविष्यति।
न चास्य भविता कश्चित् सदृशः शास्त्रदर्शने।।[1]

''इस बालक को शास्त्राध्ययन करने के लिए पर्याप्तशक्ति आने के बाद उसे शास्त्रबोध करूँगा। तब उसे वाक्चातुर्य, वरदान के रूप में मिलेगा। शास्त्र ज्ञान में इनके समान कोई नहीं रहेगा'' - इस प्रकार मार्तांड ने बताया था। तत् पश्चात् हनुमान की शरारतों से तंग आए मुनिगण ने शाप दिया था।

ऋषिशापाहृतबलस्तदैव कपिसत्तमः।
सिंहः कुंजर रूध्दो वा आस्थितः सहितो रणे।।[2]

ऋषि शाप के कारण अपने बल को भूलकर कपिवीर आंजनेय हाथी को देखकर निश्चल रहे शेर के समान स्तब्ध रह गया।

पराक्रमोत्साहमतिप्रताप सौशील्यमाधुर्यनयानयैश्च।
गांभीर्यचातुर्यसुवीर्यधैर्यैः हनूमतः कोऽप्याधिकोऽस्ति लोके।।[3]

पराक्रम, उत्साह, प्रताप, सौशील्य, माधुर्य, गांभीर्य, चातुर्य, वीर्य-धैर्य, भला-बुरा जानकर निर्णय करना इत्यादि में हनुमान से बढ़कर इस लोक में कौन है?

असौ पुनर्व्याकरणं ग्रहीष्यन् सूर्योन्मुखः प्रष्टुमनाः कपीन्द्रः।
उद्यद्गिरेरस्तगिरिं जगाम ग्रन्थं महद्धारयनप्रमेयः।।[4]

अतुलनीय बुद्धिमान और शक्तिमान हनुमान ने सूर्य के सामने खडे होकर परिप्रश्न करते हुए उदयगिरि से अस्त तक सूर्य के समान आकाश में यान करते हुए व्याकरण का अध्ययन किया।

ससूत्रवृत्यर्थपदं महार्थ्यदम् ससंग्रहं सिध्यति बै कपीन्द्रः।
नास्त्यस्ति कश्चित् सदृशोस्य शास्त्रे वैशारदे छन्दगतौ तथैव।।[5]

सूत्र, वृत्ति, अर्थ, पद, पंडितार्थ, संग्रहार्थ - इत्यादि के साथ-साथ संपूर्ण अधिकार प्राप्त किए। उस कपींद्र के समान पांडित्य में हो या स्वेच्छगमन में समतुल्य कोई और हैं?

सर्वासु विद्यासु तपोविधाने प्रस्पर्ध्दतेऽयं हि गुरूं सुराणाम्।
सोऽयं नवव्याकरणार्थवता ब्रह्मा भविष्यत्यपि ते प्रसादात्।।[6]

---

1) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - ३६.१४
2) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - ३६.४३
3) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - ३६.४४
4) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - ३६.४५
5) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - ३६.४६
6) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - ३६.४७

सभी विद्याओं में, तपस्याओं में देवगुरु-समान यह नवव्याकरण-वेत्ता हनुमान, भविष्य का ब्रह्म ही है।

प्रवीविविक्षोरिव सागरस्य लोकान् दिधक्षोरिव पावकस्य।
लोकक्षयेष्येव यथान्तकस्य हनूमतः स्थास्यति कः पुरस्तात्।।[1]

हनुमान के सामने खड़े होने का अर्थ है - समुद्र में प्रवेश करना, लोकों को जलाने वाले अग्नि के सामने खड़े होना, लोकों को लय करनेवाले यमराज के सामने खड़े होने के समान है।

उत्तरकंण्ड ६३में सर्ग ४३ से ४८ श्लोक

उदयगिरि से पश्चिम गिरि तक अर्थात् पूर्व घाटियों के रूप में प्रसिद्ध महेंद्रगिरि का भाग ही है - श्री वेंकटाद्रि। इसलिए वेंकटाद्रि से प्रस्थान करके नभ में सूर्य के साथ भूभ्रमण के समान गति में दौड़ते हुए इस महात्मा ने विद्याध्यन किया। कितनी अद्भुत घटना है यह? भूभ्रमण के कारण इस भूमंडल पर पूर्व-पश्चिम पर्वतों के बीच किसी एक जगह पर भी सूर्य स्थिर रूप में नहीं दिखाई देता है। इसलिए भूभ्रमण की तेजगति में आकाश में यान करते हुए सूर्य भगवान से विद्या सीखना लोकोत्तर विषय है। त्रिलोकाग्रगामी सूर्य के द्वारा स्वयं चुने गए शिष्य है आंजनेय।

इस तरह नभोमंडल, हनुमान के विद्या क्षेत्र के रूप में सब केलिए पूजनीय है।

३. कार्य क्षेत्र

हनुमान के कार्य क्षेत्र कहने पर हमें स्पष्टतःस्मरण में आते हैं - किष्किंधा और ऋष्यमूक।

इसका कारण श्रीमद्रामायण में, श्री महाभारत में सौगंधिकापहरण के प्रसंग में भीमांजनेय संवाद में बताया गया था।

रामायण के उत्तरकांड में सूर्य के पास विद्याध्ययन करने के पश्चात सूर्य के आदेशानुसार हनुमान ने अपने बचपन में सूर्यपुत्र सुग्रीव से अग्नि को साक्षी मानकर मैत्री करके उसके मित्र और सचिव होने के बारे में कहा गया था। सुग्रीव से हनुमान की मित्रता में किन्हीं तरह की त्रुटियाँ या अन्य भावनाएँ नहीं हैं। जिस तरह अग्नि के साथ वायु के जुडजाने से प्रकाश दुगना होता है उसी तरह उनकी मित्रता भासित थी।

सुग्रीवेण समं त्वस्य अद्वैधं छिद्रवर्जितम्
आबाल्यं सख्यमभवदनिलस्यागनिना यथा।।[2]

वा.रा.उत्तरकांड ३६ अध्यय ४० श्लोक

उन दोनों के बीच इस तरह की मित्रता करानेवाला भगवान ही था - इस का प्रस्ताव वाल्मीकि रामायण के उत्तरकांड में वाली-सुग्रीव के जन्मवृत्तांत में है।

---

1) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - ३६.४८

2) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - ३६.४०

वाली-सुग्रीव का जन्म वृत्तांत

एक समय, मेरुपर्वत के मध्य शिखर में स्थित ब्रह्म लोक में ब्रह्म की सभा आयोजित की गयी। उस सभा में एक बार जब ब्रह्म योगध्यान में लीन था, उस समय उनकी आँखों में से एक दिव्य बाष्प बिंदु उत्पन्न हुआ ब्रह्म ने उस बिंदु को पकड़कर धरती पर रखा तो उस में से एक महावानर का आविर्भाव हुआ। वह वानर ब्रह्मलोक के उद्यानवनों में बहुत दूर तक विचरण करते हुए फलों को खाते, फूलों के रस को पीते वापस ब्रह्म के पास आता था। उस वानर द्वारा लाए गए दिव्य पुष्पों से ब्रह्म भगवान को पूजता था । ऐसे गुजरते समय, एक दिन ब्रह्मवन में विचरण करने वाले उस वानर श्रेष्ठ को बहुत प्यास लगी थी। अपनी प्यास बुझाने, वह मेरुपर्वत के उत्तर भाग में स्थित एक तालाब में उतरा, तो फिर क्या था। वह एक दिव्य सुंदर वानर स्त्री के रूप में बदल गया।

कामरूपिणी उस दिव्यांगना के तेज से सारी दिशाएँ प्रकाशमान थीं। उस समय ब्रह्म की अर्चना के लिए पधारे इंद्र की दृष्टि उस स्त्री पर पडी। उस सुरराज का तेजस् उस वानर स्त्री की पूँछ (वालम्) पर पडा, तुरंत वहाँ एक महाबलशाली वानर का जन्म हुआ। पूँछ (वालम्) में पडे इंद्र तेजस् से जन्म होने के कारण उसे 'वाली' नाम दिया गया था। उसी समय सूर्य भगवान भी वहाँ पधारा और उस सुंदरी पर रीझ गया। सूर्य का तेजस उस सुंदरी के कंठ (ग्रीव) पर पडा। फलतः वाली के समान रूप और बल-पराक्रमी एक वानर का जन्म हुआ। ग्रीव पर पडे सूर्य तेजस के कारण जन्मपाने वाले उस वानर को 'सुग्रीव' नाम से दिया गया था। अपने पुत्र वाली के रक्षण हेतु दिव्यशक्तिदायी एक कांचनमाला वाली को देकर इंद्र स्वर्ग चल पडे।

सूर्योऽपि स्वसुतस्यैनं निरूप्य पवनात्मजम्
कृत्येषु व्यवसा येषु जगाम सवितांबरम्।।[1]

- वा.रा.उत्तरकांड ३७ अध्याय में (अधिकपाठ सर्ग में ४१ वाँ श्लोक)

वाली को कांचनमाला देनेवाले इंन्द को देखकर सूर्य अपने पुत्र सुग्रीव को सभी कार्यों में सहायक बनकर रहने वाले मित्र के रूप में अपने पास विद्याध्ययन कर चुके पवननंदन हनुमान को उसका मित्र बना दिया और वहाँ से गगन चल पडे। इसलिए हनुमान सूर्यादेश के अनुसार सुग्रीव के दरबार में सचिव बनकर ऋष्यमूक में ही रहगया। तब ब्रह्म ने वहाँ घटित सारे वृत्तांत को जानकर उस स्त्री को पुनः पुरुष वानर के रूप में बदल दिया। वह वानर ही वालि-सुग्रीवों का पिता ऋक्षरजस था। ब्रह्मा के आदेशानुसार ऋक्षरजस अपने दोनों सुत, वालि - सुग्रीवों को साथ लिए किष्किंधा आकर भूमंडल के सभी वानरों का राजा बना। तदनंतर वह, वालि को राजा तथा सुग्रीव को युवराज घोषित करके स्वर्ग सिधारा। उसके बाद भाइयों के मध्य के वैषम्यों के कारण भूमंडल में रहे सभी वानरों में से थोडे वालि के दरबार में और थोडे सुग्रीव के दरबार में पहुँचे। - यही रामायण से उपलब्ध संक्षिप्त विषय है।

इस प्रकार सूर्य की आज्ञा के अनुसार हनुमान सुग्रीव का मित्र व सचिव हुए। यह बात महाभारत में भी उपलब्ध है।

---

1) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - ३७ अधिक पाठ सर्ग ४७

महाभारत में हनुमत - सुग्रीव मैत्री का संदर्भ

इस विषय में महाभारत का संदर्भ और थोडे विस्तार में इस प्रकार है.....

अहं केसरिणः क्षेत्रे वायुना जगदायुषा।
जातः कमलपत्रक्ष हनूमान्नम वानरः।।[1]

मैंने केसरी क्षेत्र में (अर्थात् केसरी की पत्नी अंजना को) वायुदेव की कृपा से जन्म लिया है।

सूर्यपुत्रं च सुग्रीवं शक्रपुत्रं च वालिनम्।
सर्वे वानरराजानस्तथा वानरयूथपाः।।[2]
उपतस्थुर्महावीर्या मम चामित्रकर्षण।[3]

उस समय, त्रेतायुग में समस्त वानर-समूह सूर्यपुत्र सुग्रीव और इंद्र पुत्र वालि के आश्रय में रहे थे।

सुग्रीवेणाभवत् प्रीतिरनिलस्यग्निना यथा।[4]

वायु की मैत्री जैसे अग्नि से हुई है, एसे ही सुग्रीव के प्रति मुझमें प्रीति पैदा हुई है।

निकृतः स ततो भ्रात्रा कस्मिंश्चित् कारणान्तरे।[5]

कुछ कारणवश सुग्रीव अपने भाई वालि से देश से निकाला गया। (भगाया गया)

ऋष्यमूके मया सार्थं सुग्रीवोन्यवसच्चिरम्।[6]

मेरे साथ सुग्रीव ने भी ऋष्यमूक पर्वत पर लंबे समय तक निवास किया था।

(ऋष्यमूक, किष्किन्धा से अधिक दूर पर होने का विषय, रामायण के किष्किंधा काण्ड में श्रीराम तथा सुग्रीवादि ऋष्यमूक से किष्कंधा के प्रति प्रस्थान होने के संदर्भ में वर्णित है)

अथ दाशरथिर्वीरो रामो नाम महाबलः।
विष्णुर्मानुषरूपेण चचार वसुधातलम्।।[7]

स पितुः प्रियमन्विच्छन् सहभार्या सहानुजः।
सधनुर्धन्विनां श्रोष्ठो दण्डकारण्यमाश्रितः।।[8]

---

1) महाभारत वनपर्व - १४७-२८
2) महाभारत वनपर्व - १४७-२९ a
3) महाभारत वनपर्व - १४७-२९ b
4) महाभारत वनपर्व - १४७-३० a
5) महाभारत वनपर्व - १४७-३० b
6) महाभारत वनपर्व - १४७-३१
7) महाभारत वनपर्व - १४७-३२
8) महाभारत वनपर्व - १४८-१

दशरथ नंदन श्रीराम, साक्षात् श्री महाविष्णु ही हैं, जो मानव रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए थे। वे रामचंद्र, अपने पिता की भलाई करने के संकल्प से अपने भाई और पत्नी सहित धनुर्धारी होकर दंडकारण्य में विचरण करने लगे।

हृतदारः सह भ्रात्रा पत्नीं मार्गस्स राघवः।
दृष्टवाशैलशिखरे सुग्रीवं वानरर्षभम्।।[1]

वे अपनी पत्नी के अपहरण के कारण उनको ढूँढते हुए इस पर्वत (ऋष्यमूक) पर वानर श्रेष्ठ सुग्रीव से मिले थे।

तेन तस्याभवत् सख्यं राघवस्य महात्मनः।
स हत्वा वालिनं राज्ये सुग्रीवमभिषिक्तवान्।।[2]

तब राघव की, वहाँ सुग्रीव से मैत्री हुई थी। राम ने वालि का संहार करके सुग्रीव को वानर साम्राज्य के राजा के रूप में अभिषेकित किया था।

सराज्यं प्राप्य सुग्रीवः (१९) सीतायाः(१९) परिमार्गणे।
वानरान् प्रेषयामास शतशोऽथ सहस्रशः।।[3]

राम के कारण सुग्रीव को राज्य प्राप्ति हुई है। इसलिए सुग्रीव ने हजारों संख्या में वानरों को सीता की खोज में सभी दिशाओं को भेजा था।

ततो वानरकोटिभिः सहितोऽहं नरर्षभ।
सीतां मार्गन्महाबाहो प्रयातो दक्षिणां दिशाम्।।[4]

उन्होंने कहा है ''उस वानर समूह के साथ मैं भी सीता की खोज में दक्षिण दिशा की ओर गया।''

किष्किंधा, ऋष्यमूक से अंजना पर्वत अलग है - इस तथ्य पर बल देनेवाले कारण (प्रमाण)

१. श्रीमद्वाल्मीकि विरचित रामायण के उत्तरकाण्ड में वर्णित वालि -सुग्रीव के जन्मवृत्तांत के अनुसार सूर्य के तेजस (तेज) के कारण सुग्रीव का जन्म ब्रह्मलोक के ब्रह्मोद्यान में हुआ, लेकिन किष्किंधा में नहीं।

२. ब्रह्मोद्यान में वालि की रक्षा के लिए इंद्र ने कांचनमाला दी, जबकि सुग्रीव की रक्षा के लिए सूर्य ने पवनसुत हनुमान से सुग्रीव की मैत्री करवायी। तदनंतर ही ऋक्षरजस अपने दोनों पुत्र वालि-सुग्रीव को लेकर किष्किंधा के प्रति प्रस्थान हुआ। इससे पता चलता है कि किष्किंधा जाने के पहले ही हनुमान और सुग्रीव दोनों एक दूसरे से परिचित थे।

---

1) महाभारत वनपर्व - १४८-१
2) महाभारत वनपर्व - १४८-२
3) महाभारत वनपर्व - १४८-३
4) महाभारत वनपर्व - १४७-४

३. वालि-सुग्रीव के बीच वैर-भाव खूब बढने के कारण वालि से सुग्रीव के किष्किंधा से निकाले जाने के बाद ही, सुग्रीव हनुमान के साथ ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँचा था।

४. श्रीमद्रामायण के किष्किंधाकांड के ३७वीं सर्ग के पाँचवें श्लोक से स्पष्ट है कि यह किष्किंधा और ऋष्यमूक अंजनाद्रि से भिन्न है। **'अंजने पर्वते चैव ये वसंति प्लवंगमाः'**[1] - रामायण की इस पंक्ति द्वारा स्पष्ट होता है कि भारतवर्ष के सभी वानरों को इकट्ठा करके सीतान्वेषण करने का आदेश देते हुए विशेष प्रदेशों का प्रस्ताव करते हुए, उन प्रदेशों में वास करने वाले वानरों केलिए भी आमंत्रण भेजने का विषय प्रस्तावित है।

इस रामायण के कथन के अनुसार यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि अंजनगिरि, किष्किंधा और ऋष्यमूकों से भिन्न है और अंजनाद्रि, सुग्रीवादियों के लिए परिचित प्रदेश है। हनुमान की जन्मभूमि और बाल्यकाल का स्थान अंजनाद्रि ही है - यह तो प्रसिद्ध रूप से ज्ञात है। इन कारणों को यदि हम इन सभी विषयों पर विशेष नज़र डालते हुए परिशीलन करें तो यह विषय श्रीमद्वाल्मीकि रामायण से भी सिद्ध होता है कि हनुमान की जन्मभूमि अंजनाद्रि और कार्यक्षेत्र ऋष्यमूक और किष्किंधा हैं।

इस प्रकार अंजनाद्रि में जन्म लेकर उसने बाल्यकाल भी वहीं बिताकर हनुमान ने अपने विद्याभ्यास की पूर्ति होने के बाद किष्किंधा, ऋष्यमूक पर्वतों पर सग्रीव के दरबार को अपना कार्यक्षेत्र बनाया था। उन्होंने यहाँ राम-रावण युद्ध की समाप्ति होने तक सुग्रीव के मंत्री के रूप में अपने कर्तव्य का पालन किया था। अतएव किष्किंधा जो हनुमान का कार्यक्षेत्र है वह भी उनकी जन्मभूमि अंजनाद्रि की तरह ही सभी भक्तों के लिए दर्शनीय और आराध्य भी है।

४. सेवा क्षेत्र

हनुमान ने, श्रीराम को जब से ऋष्यमूक पर्वत पर देखा था, तब से, उनके मन में यह भावना हुई है कि राम उनके स्वामी और वे उनके सेवक। उनके मन में यह भावना आज भी और सदा के लिए सत्य-नित्य होकर भासित है। इसलिए...

देह दृष्ट्या तु दासोहं जीव दृष्ट्या त्वदंशकः।
वस्तुतस्तु त्वमेवाहमिति मे निश्चितामतिः।।[2]

इस कारण ही हनुमान सदा श्रीराम की सेवा करने वाले भक्तशिरोरत्न हैं। अतएव हनुमान ने, रावण वध के बाद श्रीरामचरणकमलयुगाल में आत्मार्पित होते हुए अयोध्या में ही श्रीराम का सेवा-भाग्य को पाया है। वाल्मीकि रामायण के उत्तरकांड के अंत में श्रीरामावतार की समाप्ति के समय में श्रीराम-हनुमान का संभाषण इस प्रकार चला था।

तमेवमुक्त्वा काकुत्स्थो हनूमन्तमथाभाब्रवीत्।[3]

---

1) श्रीमद्वाल्मीकि रामायण किष्किंधाकाण्ड - ३७.५

2) सूक्ति सुधाकर, श्रीहनुमत् सूक्ति - ४०

3) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - १०८.३२

विभीषण को आवश्यक हितभाषण देने के बाद हनुमान से श्रीराम ने इस तरह कहा था।

जीविते कृतबुध्दिस्त्वं मा प्रतिज्ञां वृथा कृथाः।
मत्कथाः प्रचरिष्यन्ति यावल्लोके हरीश्वर।।[1]
तावद् रमस्व सुप्रीतो मद्वाक्यमनुपालयन्।।[2]

हे कपिराज! इस लोक में जब तक राम कथा रहती है तब तक चिरंजीव के रूप में रहने का वादा तुमने किया है। अतः अपनी प्रतिज्ञा का भंग मत होने दो। तब तक मेरी आज्ञा का पालन करते हुए मेरे कीर्तन में आनंद प्राप्त करो।

एवमुक्तस्तु हनुमान् राघवेण महात्मना।।[3]
वाक्यं विज्ञापयामास परं हर्षमवाप च।
यावत् तव कथा लोके विचरिष्यति पावनी।।[4]
तावत् स्थास्यामि मेदिन्यां तवाज्ञामनुपालयम्।।[5]

श्रीराम की बातों का सविनय रूप में उत्तर देते हुए हनुमान ने प्रसन्नता से कहा - ''हे परम पावन मूर्ति, रामचंद्र! इस लोक में आपकी कथा जब तक लोकों में कीर्तित हो, तब तक मैं इस भूमंडल में आपकी आज्ञाकरी होकर रहता हूँ।''

इस तरह रामावतार की समाप्ति होने तक हनुमान अयोध्या में रहने की बात श्रीमद्वाल्मीकि रामायण के उत्तरकांड में बतायी गयी है।

श्रीरामावतार की समाप्ति होते ही हनुमान अयोध्या से गंधमादन गए थे।

५. वास क्षेत्र

उस रामावतारांत त्रेता युग के शेष भाग से आज तक हनुमान का नित्य निवास स्थल गंधमादन ही रहा है। श्रीमद्भागवतादि पुराणों में इस तरह बताया गया है कि गंधमादन पर्वत हिमालय के ऊपरी ओर, पूरब की दिशा में रोमक नगर की उत्तर दिशा में स्थित है। यह भद्राश्व-केतुमाल वर्षों सीमा के पर्वत के रूप में स्थित है। ऐसा जाना जाता है कि यह पर्वत नील-निषध पर्वतों तक व्यापित है। महाभारत के वानप्रस्थ पर्व में इस तरह बताया गया है कि हनुमान जी यहीं पर स्थित है। द्वापरयुग का समय था। पांडवों के वनवास करने का समय है। वे इधर-उधर विचरण करते हुए इस गंधमादन पर्वत के यहाँ आए थे। द्रौपदी ने इस प्रांत के वायुतरंगों के द्वारा अपने निकट पहुँचे सौगंधिका पुष्प सौरभ का आस्वादन किया और भीम से देवतार्चन के लिए उस पुष्प को लाने की विनति की थी।

---

1) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - १०८.३३
2) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - १०८.३४
3) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - १०८.३४
4) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - १०८.३५
5) वाल्मीकिरामायणम्, उत्तरकाण्ड - १०८.३६

अवक्र विक्रम पराक्रमशाली भीमसेन उस पुष्प को ढूँढते हुए यहाँ पहुँचे थे। उस समय में उस प्रांत में एक कदलीवन था। उस वन के रास्ते में एक बूढा बंदर बैठा हुआ था। भीम ने उसे वहाँ से हटाना चाहा। लेकिन वह बूढा बंदर हिला नहीं व डरा भी नहीं। एक कदम भी हिला नहीं। बंदरों की पूँछों को पार करना दोषपूर्वक कार्य है। अतएव भीम ने उसे रास्ते से हटने को कहा था। उस बात से भी वानर सहमत नही था। तब उस बंदर ने कहा कि वह वृध्द है, हो सके तो उसे उठाकर रास्ते से हटाकर वे आगे जा सकते हैं। भीम को ये बातें पसंद नहीं आईं। फिर भी भीम ने वानर को उठाकर हटाने के लिए पूरी शक्ति के साथ प्रयत्न किया था। मगर उनके प्रयत्न सफल नहीं हुए। तब भीम को ज्ञानोदय हुआ। तब उन्होंने कहा कि यहाँ बंदर के रूप में जो हैं वे शिव या यम या देवदेव या हनुमान हो सकता है। इन बातों से हनुमान प्रसन्न हुए। उन्होंने अपने बूढे रूप को छोडकर अपने सहज स्वरूप भीम को दिखाया। हनुमान ने वादा किया कि आगे होने वाले कुरुपांडव युद्ध में वे अर्जुन के ध्वजा पर सजीव चिह्न के रूप में रहेंगे। भीमसेन भी अपने सहोदर के दिव्य रूप को देखकर आनंदमग्न हो गए थे। तब उन दोनों के बीच में हुए संवाद में हनुमान ने स्वयं के आवास स्थान के रूप में गंधमादन पर्वत को चुनने के कारणों को भीमसेन से बताया था।

सीताप्रसादाच्च सदा मामिहस्थमरिन्दम।

उपतिष्ठन्ति मे दिव्य (दिव्याहि) भोगा भीमा यथेप्सिताः।[1]

राम की आज्ञा से और सीता की अनुकंपा से मैं इस गंधमादन पर्वत प्रांत में रहता हूँ। दस हजार साल अयोध्या का पालन करके श्रीरामचंद्र जब वैकुंठ चले गए तब से मैं यहीं पर रह रहा हूँ।

दशवर्षसहस्राणि दशवर्षशतानि च।

राज्यं कारितवान् रामस्ततः स्वभवनं गतः।।[2]

तदिहाप्सरस्तात गन्धर्वाश्च सदानघ।

तस्य वीरस्य चरितं गायंतो रमयन्ति माम्।।[3]

उनकी कृपा से मुझे यहाँ सभी दिव्य भोग मिल रहे हैं। इस गंधमादन में अप्सराएँ, गंधर्व हर दिन उस रामचंद्र के दिव्य वीर चरित का गान करते हुए मुझे आनंदित करते है।

अयं च मार्गो मर्त्यानामगम्यः कुरूनंदन।

ततोऽहं रूद्धवान्मार्गं तवेमं देवसेवितम्।।[4]

---

1) महाभारत वनपर्व - १४८-१८

2) महाभारत वनपर्व - १४८-१९

3) महाभारत वनपर्व - १४८-२०

4) महाभारत वनपर्व - १४८-२१

यह मार्ग मानव के लिए दुर्गम है। अतः तुम्हें उपकार करने के लिए इस देवता-संचार के मार्ग में मैंने तुम्हें रोका था। हनुमान की इन बातों से यह मालूम होता है कि त्रेतायुग के श्रीरामावतार की समाप्ति से लेकर द्वापर-युगांत में कुरुक्षेत्र युद्धारंभ तक हनुमान गंधमादन पर्वत पर ही रहा करते थे। कुरुक्षेत्र युद्ध में अर्जुन के रथ के पताके पर खुद रहकर अपने गर्जनों से पांडवों को विजय प्राप्ति देकर वापस गंधमादन पर्वत पहुँचे थे। इस तरह गंधमादन पर्वत हनुमान का शाश्वत निवास स्थान हुआ है। इसके साथ

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनम्
तत्र तत्र कृतमस्तकांजलिम्
बाष्पवारि परिपूर्णलोचनम्
मारूतिं नमत राक्षसांतकम्।।

नामक प्रसिद्ध मारुति स्तोत्र में ऐसे बताया गया है...

जहाँ भी श्रीरामचंद्र का कीर्तन किया जाता है, वहाँ अपने शिर को झुकाते हुए, आनंद बाष्पों को बरसाते हुए नमन करनेवाले हनुमान के लिए अपना नमन समर्पित कीजिये। उपर्युक्त कथन के प्रकार हनुमान राम-भक्तों के गृहों में नित्य निवासी है।

इस प्रकार हनुमान के जन्म से लेकर आजतक के हनुमान दिव्य चरित में...

- जन्मक्षेत्र तिरुमला का अंजनाद्रि हुआ।
- विद्याक्षेत्र, अंजनाद्रि से पूर्वी घाटियों तक का पूरा नभोमार्ग हुआ।
- कार्यक्षेत्र किष्किंधा रहा।
- अयोध्या में हनुमान ने श्रीरामचंद्र की सेवा की। इसलिए अयोध्या सेवाक्षेत्र हुआ।
- हनुमान के नित्य-निवास क्षेत्र के रूप में गंधमादन पर्वत रहा।

इन पाँचों में से हनुमान की जन्मभूमि-अंजनाद्रि, कार्यक्षेत्र-किष्किंधा, सेवा-क्षेत्र-अयोध्या, ये तीनों दिव्य क्षेत्र आज भी भक्त जनों की मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाले कल्पवृक्ष के समान भासमान हो रहे हैं। सभी इनका दर्शन भी कर रहे हैं। लेकिन हनुमान का विद्याक्षेत्र, जो गगनमंडल है और हनुमन्नित्य निवास क्षेत्र गंधमादन पर्वत दोनों प्रदेशों को पहुँचना मानवमात्र के लिए संभव नहीं है।

अतः हम चाहते है कि तिरुमला का अंजनाद्रि, किष्किंधा तथा अयोध्या के दर्शन कर भक्त-गण धन्य हो जावें।

जय हनुमान्।

❀❀❀

माता अंजना देवी के हाथों में हनुमान - ब्रह्मादि देवतागण वर प्रदान कर रहे हैं

15. संदेह-समाधान

अनुवाद - श्रीमती आर.वाणीश्री

१. प्रश्न - कर्नाटक राज्य में स्थित हंपी क्षेत्र में स्थित पहाड ही 'अंजनाद्रि–नाम से अभिहित किया जाता हैं। वहाँ के स्थानीयों का विश्वास है कि हनुमान का जन्म वहीं पर हुआ था। आप इस तथ्य का खंडन कैसे कर सकते हैं?'

समाधान - (i) वाल्मीकि रामायण के सुंदरकांड में हनुमान सीता माता से अपने बारे में बताते हुए कहते हैं– ''तस्याहं हरिणः क्षेत्रे जातो वातेन मैथिली।'' माल्यवान नामक पर्वत से गोकर्ण प्रस्थान हुए मेरे पिताश्री केसरी ने देवताओं और ऋषियों की विनती के अनुसार उस तीर्थस्थान को नाश करने वाले 'शंबसादन' नामक राक्षस का संहार किया था। उस प्रकार प्रवास में रहे उनके पुत्र के रूप में उनकी पत्नी (क्षेत्रे) अंजना द्वारा मैंने जन्म लिया था। गोविंदराजीय व्याख्या के अनुसार 'क्षेत्रे' शब्द का अर्थ है 'पत्नी'। अमरकोश और मेदिनीकोश भी इसी अर्थ पर बल देते हैं। अमरकोश का वचन है– ''क्षेत्रम् पत्नी शरीरयोः''। मेदिनीकोश भी यही अर्थ बताता है। कुछ लोगों के विश्वास के अनुसार 'क्षेत्र' का अर्थ 'हंपी क्षेत्र' है, लेकिन 'क्षेत्रे' का अर्थ 'हंपी क्षेत्र' नहीं है।

(ii) सीतान्वेषण के समय सुग्रीव ने अपने सचिव हनुमान को आज्ञा दी– ''सभी दिशाओं में से वानर वीरों को आने के लिए बुलाओ। ऐसे ही अंजना पर्वत पर रहनेवाले वानरवीरों को भी आने के लिए कहो।'' यदि किष्किंधा ही अंजना–पर्वत हो, इस प्रकार आज्ञा देने में कोई औचित्य नहीं होता है। अतः किष्किंधा और अंजना पर्वत दोनों भिन्न–भिन्न हैं।

(iii) कर्नाटक राज्य के समीप स्थित पूरा पर्वत–प्रांत, 'किष्किंधा' नाम से प्रसिद्ध है। श्रीमद्वाल्मीकि रामायण के अनुसार हनुमान का राम-लक्ष्मणों से मिलाप यहीं पर हुआ था। हनुमान-जन्मस्थल के रूप में बताए गए सभी प्रदेशों की तुलना में यह हंपी–क्षेत्र 'तिरुमला' के बहुत नजदीक (३६३ कि.मी.) है। अतः, यह कहना उचित और शास्त्रीय होता है कि हनुमान अपने जन्मस्थल अंजनाद्रि से हंपी चले गये।

(iv) कन्नड विश्वविद्यालय में इस विषय पर कुछ शोध–कार्य कर चुके आचार्य वासुदेवाचार्य से हम ने संपर्क किया था। उनका कहना था– ''हंपी क्षेत्र में रहे पहाड ही 'अंजनाद्रि' है– यही है यहाँ की जनवाणी। परन्तु इसे प्रमाणित करने के लिए हमें कोई प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ। उनसे उल्लिखित ग्रंथों में कहीं भी हनुमान के जन्मस्थल का प्रस्ताव नहीं है।

२. प्रश्न - नीचे उल्लिखित प्रदेशों को हनुमज्जन्म स्थानों के रूप में बताए गए हैं न? इनको कैसे ठुकरा सकते हैं?

समाधान - झारखंड राज्य के गुम्ला जिले से २१ कि.मी. की दूरी में रहे 'अंजना'-नामक गाँव में स्थित गुफा के विषय में शोध कार्य करते हुए विद्वानों ने पर्यटन करके यह सिद्ध किया कि यह स्थान हनुमान का जन्म स्थल नहीं है।

उन्होंने, वहाँ के प्रसिद्ध महंत स्वामी गोपाल आनंद बाबा से इस विषय को लिखाकर वहाँ की पत्रिका ''कैवायसंदेश'' (वर्ष १२, अंक ५–६ मई, जून २०११) में मुद्रित किया था कि 'वेंकटाचल का पहाड ही अंजनाद्रि है।'

२. गुजारत के नवसारी प्रांत के डांग प्रदेश 'दंडकारण्य' के रूप में प्रसिद्ध है। यहाँ के अंजना पर्वत की गुफा – अंजनी–गुफा।

३. हरियाणा में आज भी स्थित ''कैथल'' नामक प्रदेश।

४. महाराष्ट्र, नासिक जिलाओं के त्रयंबकेश्वर से ७ कि.मी. की दूरी पर 'अंजनेरी' नामक पर्वत प्रदेश।

उपर्युक्त तीनों प्रदेशों में हनुमज्जन्म होने के विषय में केवल जनों का विश्वास ही कारण रहा, परन्तु इन्हें जन्मस्थलों के रूप में निर्धारित करने के लिए उचित और आवश्यक आधार या प्रमाण नहीं हैं।

(१) गुम्ला–हंपी १२४० कि.मी. (२) डांग–हंपी ६६६ कि.मी. (३) कैथल–हंपी १६२६ कि.मी.

(४) त्रयंबकेश्वर–हंपी ६१६ कि.मी. (५) तिरुमला–हंपी ३६६ कि.मी.

❀❀❀

अंजनानंदन का वाग्गेयकारों द्वारा स्तुति-गान

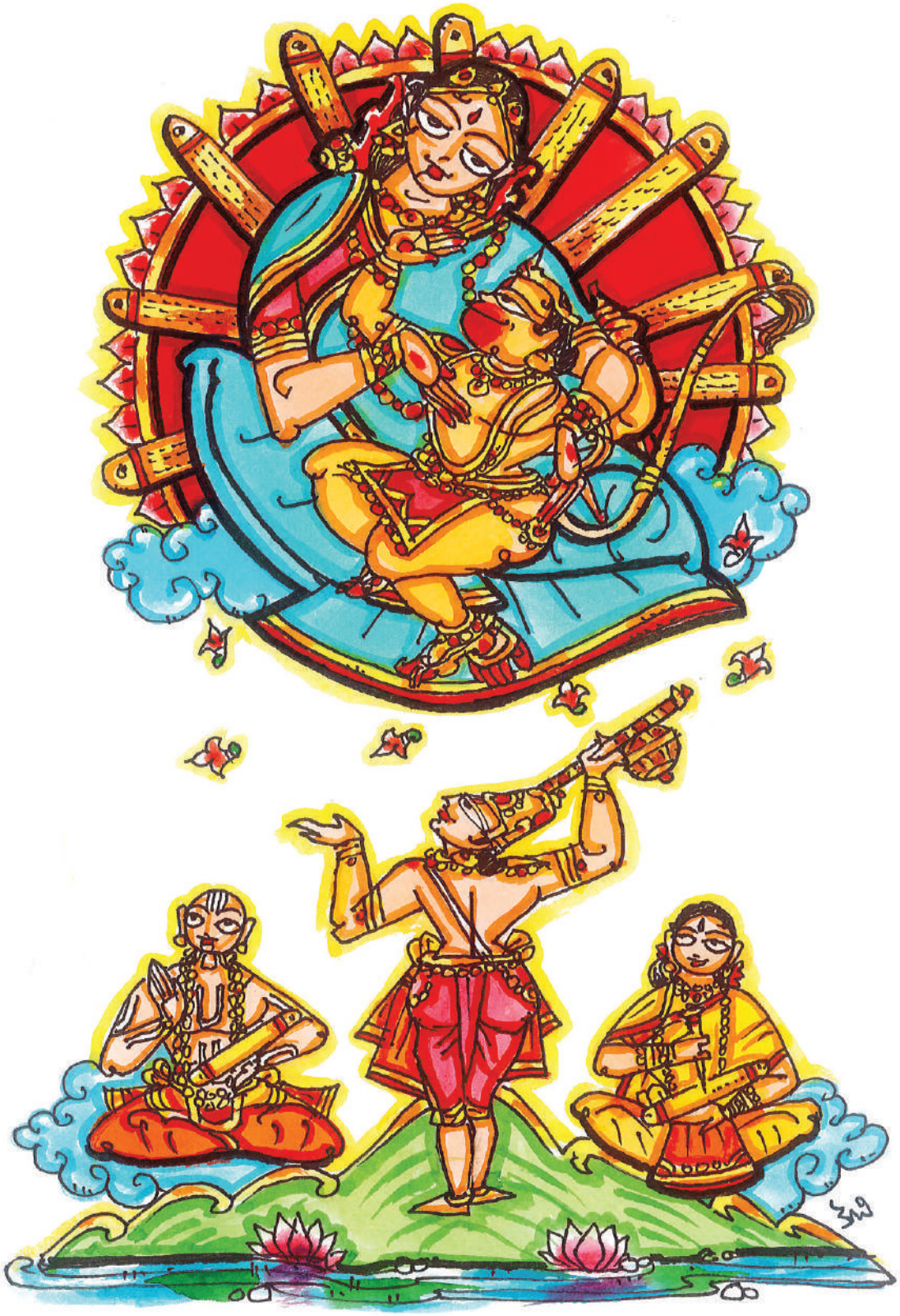

16. सवाल-ए-जवाब
(प्रश्न एवं उत्तर)

अनुबंध - I

अनुवाद - श्रीमती आर.बी.वाणीश्री

उत्तर आर्काट का प्रथम जिलाधीश मिस्टर स्ट्रैटन था जिसे उस समय वेस्ट्रन पोलियाम्स का कलेक्टर बनाया गया था। उन्होंने न केवल उन्हें सौंपे गये क्षेत्र के बारे में बल्कि मंदिर के इतिहास, परंपराओं और संसाधनों के बारे में भी सावधानपूर्वक और विस्तृत पूछताछ की। उन्होंने इस मंदिर के प्रशासन के सभी पहलुओं पर कई सवाल पूछे और जवाब मंदिर के मामलों के वास्तविक प्रबंधन के द्वारा दिए गए थे। इन सवाल और जवाबों से बटोरी गयी सूचना को स्थानीय रूप से सवाल-ए-जवाब खाते के रूप में जाना जाता है। उन्होंने मंदिर के प्रबंधन केलिए जो व्यवस्था की थी वह इन्ही रिपोर्ताज पर आधारित थी। इन्होंने तिरुपति के चारों ओर जो गाँव है सब को एक (तालूका) में बदल दिया, तिरुपति के तहशीलदार को मंदिर के प्रबंधन में रखा गया। जो 'अमनी' शब्द से व्यक्त किया जाता था और वह हर वर्ष किरायेदार पैसे देकर खेती करने की पिछली प्रथा के विरोध में था। मंदिर के स्थलपुराण से संबंधित निम्न उल्लिखित है प्रश्न और उत्तर...

अनुवाद के तहत पाँडुलिपि उन्नीसवीं शताब्दी प्रशासन शैली की है जो निस्संदेह वास्तविक है। इसका आंतरिक साक्ष्यों से पता चलता है यह फाल्सी १२१३ में अर्थात् १८०१ - २A.D. में तैयार की गयी थी।

प्र ३. तिरुमला - तिरुपति और शेषाचलम के नाम से जाना जाने वाला पर्वत कौन-सा है?

उत्तर - पृथ्वी के बीच में, जो पंच शत कोटि (पाँच सौ करोड) मील की सीमा में हैं, महामेरु नामक एक महा पर्वत है जो सुनहरे रंग का है। इस प्रकार के पहाड़ों की चोटियों को 'शेषाचलम' नाम से जाना जाता है, जो मेरु के पुत्र के रूप में भी जाना जाता है। (वामन पुराण का अध्याय - २६)

प्र ४. शेषाचलम को महामेरु से कब और किसके द्वारा यहाँ लाया गया था?

उत्तर - कई वर्ष पहले श्री वैकुंठ में भगवान की उपस्थिति में वायु और सहस्र शीर्ष वाले आदिशेष के बीच विवाद हुआ था कि कौन अधिक शक्तिशाली है। प्रतियोगिता में शेषनाग ने अपने हजार सिरों को खोला और मेरुपर्वत की चोटियों में से एक को कसकर पकड़ा। शेषनाग को चोटी के साथ उड़ाने के प्रयास में वायु ने एक भयानक तूफान मचा दिया जिसने आकाश को हिलाया। इंद्र और देवों ने शेषनाग से प्रार्थना की जो की वे सत्वगुण के अवतार है। तब उन्होंने मेरु शिखर का अपनी पकड से छुटकारा देकर अशिष्ट वायु को जीत दिलाई। उनके ऐसा करने पर पर्वत की चोटी का एक हिस्सा उड़कर गिर पड़ा और वही शेषाचलम हुआ।

प्र ५. उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक उसकी सीमा कितनी है?

उत्तर - ब्रह्मांडपुराण के अनुसार यह श्रेणी उत्तर दक्षिण में पाँच हजार मील और पूर्व से पश्चिम तक पाँच सौ मील तक फैली हुई है।

प्र ६. इस पर्वत श्रृंखला को शेषाचलम क्यों कहा जाता है?

उत्तर - भगवान ने यहाँ निवास करने के उद्देश्य से आदिशेष (नाग) को पहले ही भेजदिया था और यह यहाँ एक पर्वत श्रृंखला के रूप में रहने के लिए था। जैसा कि आदि शेष स्वयं यहाँ एक पर्वत के रूप में है। इसलिए इसे ''शेषाचलम्'' कहा जाता है।

प्र ७. इसको वेंकटाचलम का नाम कैसे प्राप्त हुआ?

उत्तर - एक ब्राह्मण ने एक चंडाल महिला के साथ अनाचार करने के पाप से मुक्त होने के लिए ऋषि वशिष्ठ से परामर्श किया। उनकी सलाह पर वे यहाँ तीर्थ यात्रा पर आए। जैसे ही वे पहाड़ की चोटी पर पहुँचे, उसका शरीर पटाखों की तरह आग की ज्वालाओं में भस्म हो गया। वह पूर्व रूप की तुलना में एक उज्वल और अधिक सुंदर रूप के साथ बिना किसी चोट के पाया गया। केवल उसके पाप आग में भस्म हो गए थे। देवगण और ऋषिगण, जिन्होंने इस चमत्कार को देखा, वे इस पर्वत को वेंकटाद्रि नाम दिया अर्थात् ''पापों से प्रायश्चित्त करनेवाला''। यह वराह पुराण के प्रथम अध्याय में उल्लेखित हैं।

प्र ८. इस श्रेणी के लिए कौन से विभिन्न नाम लागू होते हैं और किन परिस्थितियों में प्रत्येक नाम प्राप्त किया गया?

उत्तर - ब्रह्मपुराण और ब्रह्मांडपुराण के अध्याय ४ और ५ में इस श्रेणी को अनेक नाम दिये गए हैं। उनमें से कुछ हैं (१) शेषाचलम (२) वृषाद्रि (३) वृषभाद्रि (४) वेंकटाचलम (५) नारायणाद्रि (६) गरुडाद्रि (७) अंजनाद्रि और स्वर्णाद्रि।

वृषाद्रि - इस श्रेणी में अनेक पवित्र तीर्थ है, इसलिए इसे वृषाद्रि कहा जाता है।

गरुडाद्रि - गरुड़, इस पहाड को श्री वैकुंठ से भगवान की क्रीडा के लिए लाये थे, इसलिए, इसे गरुडाद्रि नाम दिया गया।

अंजनाद्रि - जैसा कि अंजना देवी ने यहाँ तपस्या करके श्रीराम के महासेनापति हनुमान को जन्म दिया, इसलिए इसे अंजनाद्रि कहा जाता है।

नोट - स्वर्णाद्रि के लिए स्पष्टीकरण प्रस्तुत नही किया गया। यह शिखर स्वर्ण पर्वत का एक भाग है। (मेरु पर्वत)

प्र २२. इस भगवान के विभिन्न पवित्र नाम क्या हैं? किन-किन लोगों ने भगवान की आराधना की? उनको क्या-क्या वस्तुएँ प्राप्त हुई?

उत्तर - इस क्षेत्र के भगवान का वर्तमान नाम श्री वेंकटेश्वर अथवा श्रीनिवास हैं। लेकिन उनके अनेक नाम हैं। ब्रह्मा जैसे देवताओं ने और अगस्त्य जैसे ऋषियों ने उनके लिए बडी तपस्या की और अपनी मनोकामनाएँ प्राप्त की। राजा दशरथ ने लगभग दस हजार वर्षों तक तपस्या करके चार पुत्रों को प्राप्त किये। अंजनादेवी ने बालाजी की पूजा की और आंजनेय को जन्म दिया। कई ब्राह्मण और राजाओं ने भी उनकी पूजा की और अपनी मनोकामनाएँ प्राप्त की थीं।

प्र २६. क्या श्रीराम ने कभी इस मंदिर का दर्शन किया था?

उत्तर - त्रेतायुग में श्रीराम ने रावण राज्य पर चढ़ाई करते समय अपनी वानर सेना के साथ इस पहाड़ पर एक रात ठहरे। फिर हनुमान और अन्य वानर आसपास के क्षेत्रों में घूमते हुए वैकुंठ गुफा में घुस गए। श्रीनिवास की एक झलक प्राप्त कर असीमित आनंद और आश्चर्य से वे बाहर आए और जो की श्रीराम को मालूम है कि यह उसकी माया ही है लेकिन श्रीराम यह बात नही स्वीकार करते हुए वानरों को समझाया कि इस अद्भुत चमत्कार का कारण पर्वत ही है।

रावण वध करने के बाद, सीता और लक्ष्मण के साथ लौटते समय, राम कुछ समय के लिए तिरुपति में रहे। तिरुपति में कोदंडरामस्वामी मंदिर इस यात्रा की याद दिलाता है। इस मंदिर में श्रीराम, सीता और लक्ष्मण मूर्तियों के रूप में रहते हैं और अपने भक्तों को उनकी मनोकामनाएँ पूरी करके आशीर्वाद देते है। यह विवरण कई पुराणों में और वराहपुराण में भी मिलता है।

प्र ३६. वेंकटाचल माहात्म्यम का मूल स्त्रोत क्या है?

उत्तर - उपनिषदों में कहा गया कि यहाँ के भगवान विष्णु, पृथ्वी, वैकुंठ एवं सर्वव्यापी हैं। तैत्तिरीयोपनिषद के 'नारायणम' नामक पाँचवे पर्व में यह कहा गया है कि भगवान इस धरती के बीच एवं जल के आगे के छोर पर चमकते हैं और अन्य इस प्रकार तत्वों को अपने प्रकाश से समुज्वलित करते हैं। यह उक्त उपनिषद में विद्यारण्य के भाष्य से लिया गया है। महाभारत समेत, अठारह पुराणों में इस तीर्थ की पवित्रता उल्लिखित है। ऐसा कहा जाता है कि मंदिर की दीवारों पर शिलालेख भी इसी प्रकार के विवरण देते हैं।

❀❀❀

माता अंजना की गोद में बालहनुमान - वेंकटाद्रि पर आकाशगंगा के निकट गुफा में आशिष देते हुए भगवान बालाजी एवं प्रणाम करते हुए गरुड द्रष्टव्य हैं

अनुबंध - II शिलालेख

INSCRIPTIONS OF SALUVA NARASIMHA'S TIME

உ ல அடைக்காயமுது ரா இலையமுது உஎ திருக்கொடித்திருநாள்
இரண்டு[க்கு] ஏழாந் திருநாளில் அமுதுசெய்தருளும் அப்பப்படி
உ க்கு அமுதுபடி

10 ச ௳ நெய்யமுது ச வ சக்கரையமுது உஎ ல மிளகமுது ௲ திரு-
வோலக்கத்தில் ப்ரஸாதிக்கச் சந்தனம் க ல அடைக்காயமுது உஎ
இலையமுது சஎ ஆக இந்த [1]வகைப்படியள் ஸ்ரீபண்டாரத்திலே விட்டு
அமுதுசெய்தருளக்கடவாராகவும் அமுதுசெய்தருளின ப்ரஸாதத்தில்
திருப்பாவாடை ப்ரஸாதம் உள்ளதும் திருவோலக்க[ம்*] மூன்றிலும்
விட்டவன் விழுக்காடு ப்ரஸாதம் அக்காளிப்ரஸாதம் உள்ளது ஸ்ரீ-
பண்டாரத்திலே சமைகூலி இட்டு எடுப்பித்து கறிகாய் தயிர் [2]இவை-
யளும் பாக்கு ௲ வெற்றிலை உ௲ (ச்)சந்தனம் உ௰ [3]ல-

11 மும் ஆகாசகங்கையிலே கொண்டு பொய் ஸ்தானத்தார் முதலான எல்-
லாரும் பிரஸாதிப்படக்கடவதாகவும் நிக்கி நின்ற அப்பப்படி எட்டி-
லும் கோவிந்தராஜர் அமுதுசெய்தருளின திருவோலக்கத்திலும்
ஏழாந் திருநாளில் அப்பப்படி இரண்டிலும் விட்டவர் விழுக்காடு
ப்ரஸாதம் அப்பப்ரஸாதம் உள்ளது தாமே பெறக்கடவராகவும்
நிக்கி நின்ற ப்ரஸாதம் அப்பப்ரஸாதம் உள்ளது பூவசத்தில்
அடைப்பிலே பெறக்கடவோம் ஆகவும் திருவேங்கடமுடையான் இந்த
திருவோலக்கம் கண்டருளுகிறபொது இ-

12 வர் விண்ணப்பஞ் செய்த திருவேங்கட[4]மஹாதத்துக்கு அருளப்பாடு
இட்டு கேட்டருளக்கடவராகவும் இப்படிக்கு [5]தம்மிட ஸந்தான-
பரம்பரை ஆசந்த்ராதித்தவரை நடக்கக்கடவதாகவும் இப்படிக்கு ஸ்ரீ-
வைஷ்ணவர்கள் பணியால் கோயிற்கணக்கு திருநின்றவூருடையான்
எழுத்து இவை ஸ்ரீவைஷ்ணவரக்ஷை உ

Translation

1. May there be prosperity! On the day[6] of Uttiraṭṭādi (Uttarābhādra) combined with Monday, being the 7th lunar day of the dark fortnight of the Mithuna month in the year Virōdhikṛit, corresponding with the Śaka year 1413, the *Sthānattār* of Tirumala registered the following stone record in favour of Paśiṇḍi Vēṅkaṭatturaivār alias Jīyar Rāmānujayyan, viz.,

1–3. *narpaṇam* 2000 is (the capital) which you paid this day into the *Śrī-Bhaṇḍāram*, with the stipulation of propitiating, in your name, as your *ubhaiyam* (service), from the interest thereon,

Tiruvēṅkaṭamuḍaiyān with 1 *tiruppāvāḍai*, 2 *tiruvōlakkam* and 1 *tirukkaṇāmaḍai-tiruvōlakkam* on the day of repairing the path-way to the sacred water-fall (Ākāśagaṅgā), being the next day after the *Tiruvadhyayanam* of

1. Read} வகைப்படிகள்.
2. Read இவைகளும்.
3. Read இருபது பலமும்.
4. Read—ஸநாதத்துக்கு.
5. Read தம்முடைய.

NOTE 6:—It corresponds to 27th June 1491 A.C.

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.II - 95, Inscriptions of Saluva Narasimha's Time (From 1445A.D. to 1504 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 195 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

200 *palam* of jaggery and
1 *uḻakku* of pepper;
for distribution during the *tiruvōlakkam*
1 *palam* of sandal-paste,
200 areca-nuts and
400 betel-leaves.

In this manner shall the articles be supplied from the *Śrī-Bhaṇḍāram* and the offerings made.

10–11. The *prasādam*, *akkāḷi-prasādam*, etc., forming the share of the donor, out of the offered *prasādam* including the *tiruppāvāḍai-prasādam*, etc., and the three *tiruvōlakkam*, shall be carried to the Ākāśagaṅgā, the charges for such conveyance being paid from the *Śrī-Bhaṇḍāram*, together with vegetables and curds and 1000 areca-nuts, 2000 betel-leaves and 20 *palam* of *chandanam*, and shall be partaken of by the *Sthānattār* and all others (present there).

The *prasādam*, *appa-prasādam*, etc., belonging to the donor, out of the remaining 8 *appa-paḍi*, out of the 1 *tiruvōlakkam* offered to Gōvindarājan and out of the 2 *appa-paḍi* offered (to the latter deity) on the seventh festival days, you (the donor) will yourself be entitled to receive.

The remaining *prasādam*, *appa-prasādam*, etc., we (the *Sthānattār*) shall receive (for distribution) during the forenoon *aḍaippu*.

11–12. God Tiruvēṅkaṭamuḍaiyān will, while presiding at the said *tiruvōlakkam*, be graciously pleased to hear, after an honourable announcement made therefor, the TIRUVĒṄKAṬA-MĀHĀTMYAM[1] compiled and humbly presented by him (the donor).

In this manner shall (this arrangement) continue to be in force throughout the succession of your descendants till the lasting of the moon and the sun.

12. Thus is (this record) composed by the temple-accountant *Tiruninṟa-ūr-uḍaiyān*, under the orders of the Śrīvaishṇavas.

May these the Śrīvaishṇavas protect!

---

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.II - Inscriptions of Saluva Narasimha's Time (From 1445A.D. to

INSCRIPTIONS OF SADASIVARAYA'S TIME

9 ......திருக்கைவழக்கத்துக்கு [பணம் ௬]...சங்கிறமத்துநாள் திருமஞ்ச-
னத்துக்கு......நெய் ௰ சந்தனம் பலம் ௧ ஆ செய்யும் திருமஞ்சன-
படி திருப்பொனகம் ௧ ப்ரஸாதிக்க அடைக்காய் ௱ இலை ௨௱
சந்தனம் ௵ [௨] களபத்துக்கு சந்தனம் பலம் [௬] மெதித்த
[சாத்துப்படி பலம் ௬]......

10 திருப்பொககம் ௫ க்கு பருப்புஅமுது......அப்பபடி ௨......வடைப்படி ௨
[அவல்ஆ ௬ மாக்கால்] பொரி ௬ மாக்கால் தெங்காய் ௱......

11 சக்கரைஅமுது விசை [௬] ப்ரஸாதிக்க சந்தனம் பலம் ௧ அடைக்காய்-
அமுது ௱ இலைஅமுது ௨௱ க்கும் பணம் ௨ திருமுன்காணிக்கை
பணம் ௧ சபையார் பணம் ௨ கைக்கொளர் பணம் ௧......மண்டபம்
விதானிக்க கைக்கொளர் [பணம் ௨]......

12 ஞானுறுக்கும்......௨௰௫ ௧ ம்......அலகு கூடை ௫௰ க்கு பணம் [௧]
திருவெங்கடமுடையான் கொவிந்தராசன் சன்னதியில் திருமஞ்சன-
காலவெளை கட்டளையில் சதாசிவராயமஹாராயற்கும் சிரங்கராஜ-
வுக்கும்

13 புணதிமாக பொட்டிலபாடித் திம்மராஜா கட்டளையிட்ட பணம் ௫௰......
அருளப்பாடு இட்டு திருவெங்கடமுடையான் ஸந்நிதியில் ஸேவிக்கும்
வடமாமலையன் குமாரர் வெ[ங்கடத்துறைவார்]-

14 க்கு மாதம் ௧ க்கு சிவிதம் பணம் ௬ [ஆக வருஷ ௧ க்கு ரெகைபொன்
௭ பணம் ௨]......திருப்பதியில் கொவிந்தப்பெருமாள் சன்னதியில்
செவிக்கும்.........திருவெங்கட[யன்] குமாரன் அநன்தய்யங்கார்க்கு
[மாதம் ௧ க்கு சிவிதம் பணம் ௪]......இதுவும் திருப்பதியில் தின-
வழி திருமஞ்சனம்......

15 வரக்கடவாாகவும்......[ஆ செய்தருளின ப்ரஸாதத்தில்]......திருவெங்கட-
மஹாத்மம் செவிக்கும் [வெங்கடத்துறைவார்] பெறக்கடவாாகவும்......

16 தாகவும் அமுதுசெய்தருளின ப்ரஸாதத்திலும்........பண்ணியாரத்திலும்
விட்டவன் விழுக்காடு முதலான......திருநந்தவனத்திலெ......திரு-
வெங்கட[முடையான்]......

17 பாதியும் நிற்வாகத்திலெ பாதியும் பெறக்கடவொமாகவும் தினவழி திரு-
மஞ்சனகாலவெளையில் அமுதுசெய்தருளும்......[கணக்கில்] விட்டவன்
ஸலிஸொன்றும் திருவெங்கடமகாத்மம் செவிக்கும் அநந்தய்யன்
பெறக்கடவாகவும்......நின்றது பூற்வத்திில் சந்திஅடைப்பிலெ பெறக்-
கடவொம்ஆகவும் [இப்படிக்கு]

18 [தம்பிட சந்தானபரம்பரை சந்த்ராதித்தவரை நடக்கக்கடவதாகவும்] இப்-
படிக்கு ஸ்ரீவைஷ்ணவர்கள் பணியால் கொயில்கணக்கு திருநின்ற-
வூருடையான் எழுத்து இவை ஸ்ரீவைஷ்ணவ[ரக்ஷை ௨]

77

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 29 - Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 77 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

INSCRIPTIONS OF SADASIVARAYA'S TIME

1 paṇam for dāsanambimār (Śāttāda Śrīvaishṇavas),

6 paṇam for flowers for the decoration of the mantapam,

1 paṇam for Śippiyar (artisan).....

6 paṇam for tirukkai-vaḷakkam..... ;

1 uḷakku of gingelly oil and 1 palam of chandanam for tirumañjanam to be conducted for Śrī Gōvindarājan on the day of Makara-Saṅkramam, 1 tiruppōnakam to be offered as tirumañjana-paḍi; 100 areca-nuts, 200 betels and 1 palam of chandanam, 6 palam of chandanam for kaḷabham decoration, 6 palam of chandanam.....1or 5 tiruppōnakam.....2 appa-paḍi .....2 vaḍai-paḍi, 6 marakkāl of flattened rice, 6 marakkāl of parched rice, 100 cocoanuts.....and 6 vīśai of sugar ; 2 paṇam for 100 areca-nuts, 200 betels and 1 palam of chandanam for distribution during Āsthānam (Darbar); 1 paṇam for tirumunkāṇikkai, 2 paṇam for Sabhaiyār (temple-councillors), 1 paṇam for kaikkōḷar, 2 paṇam for kaikkōḷar for decorating the maṇṭapam,.....and 1 panam for 50 baskets; 50 paṇam is the capital for conducting the daily tirumañjanam (holy bath), instituted by Poṭlapāḍi Timmarāja, for the merit of Sadāśivarāya Mahārāyar and Śrīraṅgarāja for Tiruvēṅkaṭamuḍaiyān at Tirumalai and Śrī Gōvindarājan in Tirupati ;

6 paṇam to be paid every month to Vēṅkaṭattuṟaivār, son of Vaḍamāmalai Ayyan for the recital of Tiruvēṅkaṭa-Māhātmyam in the divine presence of Śrī Vēṅkaṭēśa ; at this rate 7 rēkhaipon and 2 paṇam to be paid yearly as his jīvitam (salary) from the temple-treasury ;

4 paṇam to be paid every month to Anantayyaṅgār, son of Tiruvēṅkaṭayyan.....for the recital of Tiruvēṅkaṭa-Māhātmyam in the divine presence of Śrī Gōvindarājan in Tirupati ;... ..

15-18. Out of the preparations offered.....shall be delivered to Vēṅkaṭattuṟaivār who is engaged in reading the Tiruvēṅkaṭa-Māhātmyam..... the donor's quarter share of the prasādam and paṇyāram shall receive..... in flower garden.....Tiruvēṅkaṭamuḍaiyān.....the first half of the prasādam shall be delivered to the 12 nirvāham of the Sthānattār and.....the quarter share of the prasādam offered during tirumañjanam daily shall be delivered to Anantayyan who reads the above-said Māhātmyam.....the balance of the prasādam shall be reserved for distribution during early aḍaippu.

In this manner this arrangement shall continue to be in force throughout the succession of your descendants till the lasting of the moon and the sun.

This record of charity is composed by the temple-accountant, Tiruniṅṟa-ūr-uḍaiyān under the orders of the Śrīvaishṇavas. May this the Śrīvaishṇavas protect !

---

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 29 - Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 79 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

திருவீதி எழுந்தருள கொடி குடை பந்தம் காளவிளக்கு பிடிக்கிற கூலி ரெகைபொன் க எண்ணெய்மிடா ங. க்கு ரெகைபொன் கூ ஆக ஞள் ய க்கு ரெகைபொன் எ ஆக ஞள் ௫ க்கு ரெகைபொன் கூயரு சாத்திஅருள பன்னீர்செம்பு ௫ க்கு ரெகைபொன் [௫] தண்ணீரமுது மெதித்த கஸ்தூரி தூக்கம் க திருமுகமண்டலத்துக்கு கற்பூரம் தூ[1] செஷாதி-

9 வ௵திமைக்கு[2] தெக்ஷிணக்கு[3] விபரம் அனுகிரம்[4] பணம் உ அங்குரா[ற்பண]த்-துக்கு செ[ஷ]வ௵திமைக்கு பணம் ச [5]புணதீரகதெக்ஷிணை பணம் உ புல்லுசமுதை பணம் ச [மயிலிறகு] பணம் ச மெத்தைக்கு பணம் ச சற்வகெந்தம்[6] பணம் க வெண்பட்டு பச்சைவடம் க க்கு ரெகைபொன் உ பணம் உ ஆசாரியஅலங்காரத்துக்கு பஞ்சாங்க-பூஷணத்துக்கு ரெகைபொன் உ பணம் உ [7]ரித்துக்கள் பெர் அ க்கு அலங்காரத்துக்கு ரெகைபொன் எ பணம் ௫ திருக்காப்புனுணுக்கு ரெகைபொன் உ பணம் உ [8]எயாதிவ௵திமை அ க்கு ரெகைபொன் உ பணம் ச [9]வ௵ஷமவ௵திமை க க்கு பணம் அ கெருடவ௵திமை க க்கு பணம் அ......

10 அரிதவ௵திமை[10] க க்கு பணம் அ வருணவ௵திமை அ க்கு ரெகைபொன் க பணம் அ நவகிறகவ௵திமை கூ ம் நக்ஷத்ரவ௵திமை க ஆக வ௵திமை ம க்கு ரெகைபொன் க பணம் [அ] ஆசாரியர் தெக்ஷிணை ரெகைபொன் கூ ரித்துக்கள்[11] பெர் அ க்கு தெக்ஷிணை ரெகைபொன் எ பணம் எ? [12]திற்வதெரிசநத்துக்கு [13]மொபிஷேகத்துக்கு ரெகை-பொன் உ கும்பஜபத்துக்கு பெர் ச க்கு ரெகைபொன் க பணம் உ நெல்லு [ச வட்டிக்கு] ரெகைபொன் க பணம் உ? அமுதுபடி [14]௫ பு க ௳ ௫ ரெகைபொன் உ பணம் அ எள்ளு உ மாக்கா-லுக்கு ரெகைபொன் க பணம் ௫......க க்கு பணம் ௫ செலவு கூயக க்கு ரெகைபொன் ௫ பணம் ச பாகை......அடைக்காய்அமுது சுா க்கு பணம் உ இலையமுது

11 துஉா க்கு பணம் உ ஆக நம்பிமார் பெறும் வகை ரெகைபொன் கூயக வெதபுராணத்துக்கு ரெகைபொன் க பணம் ௫ திருவாய்மொழிக்கு

1. Read தூக்கம்= Paṇa-weight.
2. Read சேஷாதிவ௵திமைக்கு.
3. Read தக்ஷிணைக்கு.
4. Read அநுக்ரஹம்.
5. Read புண்யாஹதக்ஷிணை.
6. Read ஸர்வஜமயம்.
7. Read ருத்விக்குகள்.
8. Read ஜயாதிவ௵திமை.
9. Read வ௵ஷவ௵திமை.
10. Read ஹரிதவ௵திமை.
11. Read ருத்விக்குகள்.
12. Read யூஜவதமஸ்நத்துக்கும்.
13. Read மோக்ஷநாதத்துக்கும்.
14. Read ஐந்துவட்டி-ஒரு-மாக்காலுக்கு.

122

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 51 - Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 122 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

INSCRIPTIONS OF SADASIVARAYA'S TIME

பணம் ௨ திருவெங்கடமஹத்மம்[1] படிக்கிற அநந்தயக் வெங்கடத்-
துறைவார் பணம் ௪ முகுற்தம்[2] இடுகிற யியூணி[3] அப்பனுக்கு பணம்
௧ ஆக பல்லவொற்சவதிருநாள் ௧ க்கு நாள் ௫ க்கு செலவு
ரெகைபொன் [௪௱௯௰௨] ஆக நிற்றைப்படிக்கு[4] நாள் ௩௱௯௰௫ க்கு
ரெகைபொன் ௫௱௮ ஆக செலவு ரெகைபொன் ௲ இந்தப் பொந்
ஆயிரத்துக்கும் விட்ட நின்றைநாட்டில் சிர்மையில் பாலமங்கலம்
கிறுமம் ௧ க்கு ரெகைபொன் ௫௱ பரணூர் கிறுமம் ௧ க்கு ரெகை
பொன் ௨௱௫௰

12 பாளையச்சிர்மையில் வெணகத்தூர் கிறுமம் ௧ க்கு ரெகை ௨௱௫௰ ஆக
கிறுமம் ௩ க்கு ரெகைபொன் ௲ இந்த கிறுமம் ௩ க்கு ரெகை
பொன் ௲ இது விளைந்த முதல் கொண்டு இந்த வகை எல்லாம்
ஸ்ரீபண்டாரத்திலெ விட்டுப்பொதக்கடவதாகவும் அமுதுசெய்தருளின
ப்ரஸாதம் பண்ணியாரம் விட்டவந் விழுக்காடு ஒன்றில் தம்-
பிட ஆசாரியர் கந்தாடை ராமாநுஜாசாரியர் குமாரர் சிரங்காசாரியரெ
பெறக்கடவராகவும் நின்றது பூற்வத்தில் அடைப்பிலெ பெறக்-
கடவொ-

13 மாகவும் இப்படிக்கு தம்பிட சந்தாநபரம்பரை சந்திறாதித்தவரை நடக்கக்-
கடவதாகவும் இப்படிக்கு ஸ்ரீவைஷ்ணவர்கள் பணியால் கொயில்கணக்கு
திருநின்றவூருடையான் எழுத்து இவெ ஸ்ரீவைஷ்ணவரக்ஷை
ஹ ஸ்ரீ

Translation

1–2. May it be prosperous, Hail! This is the śilāśāsanam issued by the Sthānattār (trustees) of Tirumalai temple in favour of Śrīman Mahāmaṇḍalēśvara Viṭṭhalēśvara Mahārāja, son of Āravīṭi Bukkarāja Rāmarāja Timmarājayyan of Ātrēya-gōtra and Āpastamba-sūtra, on Sunday,[5] combined with the star Rōhiṇi, being the 12th solar day of the dark fortnight of the Karkaṭaka (Āḍi) month in the year Visvāvasu, current with the Śālivāhana Śaka year 1467 while Śrīman Mahārājādhirāja Rājaparamēśvara Śrī Vīrapratāpa Śrī Vīra Sadāśivarāya Mahārāyar was ruling the kingdom, to wit,

2–12. since you have granted three villages, viz.,

(1) Pālamaṅgalam situated in Ninṟai-nāḍu-śīrmai yielding an annual income of 500 rēkhai-pon (gold-coins),

(2) Paraṇūr yielding an annual income of 250 rēkhai-pon and

(3) Vēṇakattūr situated in Pāḷaiyam-śīrmai, yielding an annual income of 250 rēkhai-pon,

---

1. Read திருவேங்கடமாஹாத்ம்யம்.
2. Read முஹூர்த்தம்.
3. Read ஸயுண்ணி.
4. Read நித்யபடிக்கு.

Note 5 :—5th July 1545 A.D. is the equivalent English date.

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 51 - Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 123 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

(artisan), 1 paṇam for fibre, 1 paṇam for the Sabhaiyār (temple-councillors) as tirumun-kāṇikkai (cash-offering), 2 paṇam for Vaishṇavakāri, 1 paṇam for tirumaḍivaḷam, 1 paṇam for Anusandhānam, 1 paṇam for the Kaṅgāṇippān (supervisor), 6 rākhai-pon for the 12 nirvāham of the Sthānattār, 2 rākhai-pon and 2 paṇam for the 4½ vagai (officials), 3 paṇam for the tiruppaṇippiḷḷai (temple-repairers), 1 paṇam for Viṇṇappam-śeyvār, 7 paṇam for the Tāvaiyāḷ (temple-cooks), 7 paṇam for the Śiṅgamuṟai (fuel suppliers), 3 paṇam for potters, 1 rākhai-pon for the bearers of flags, umbrellas and torches during the procession through the streets, 6 rākhai-pon for 3 jars of oil for torches; at this rate 7 rākhai-pon per day; altogether 35 rākhai-pon for these 5 days; 5 rākhai-pon for 5 rose-water vessels, 1 paṇa-weight of pure musk and 1 paṇa-weight of refined camphor;

the following is a list of dakshiṇā (presents) for Śēsha and other images :—

2 paṇam for blessings, 4 paṇam for Śēsha images to be worshipped on the day of aṅkurārpaṇam, 2 paṇam for puṇyāha-vāchaṇam, 4 paṇam for sacred grass and fuel, 4 paṇam for pecock feathers 4 paṇam for cushion, 1 paṇam for sarvagandham, 2 rākhai-pon and 2 paṇam for silks and garlands, 2 rākhai-pon and 2 paṇam for the paṅchāṅga-bhūshaṇam, (ornaments) for the temple-priests, 7 rākhai-pon and 5 paṇam as presents for 8 persons engaged as priests, 2 rākhai-pon and 2 paṇam for tirukkāppu-nāṇ (thread for wrist), 2 rākhai-pon and 4 paṇam for 8 images of Jayāti, 8 paṇam for 1 image of Brahmā, 8 paṇam for 1 image of Garuḍa,.....8 paṇam for 1 image of Harita, 1 rākhai-pon and 8 paṇam for 8 images of Varuṇa, 1 rākhai-pon and 8 paṇam for 9 images of planates and 1 image of Star, 6 rākhai-pon for priests as dakshiṇā, 7 rākhai-pon and 7½ paṇam as presents for 8 Ṛitvik (high priests), 2 rākhai-pon for dhruva-darśanam and gōpīnadam, 1 rākhai-pon and 2 paṇam for 4 persons for the recitation of Kumbha-japam, 1 rākhai-pon and 2½ paṇam for 4 vaṭṭi of paddy, 2 rākhai-pon and 8 paṇam for 5 vaṭṭi and 1 marakkāl of rice, 1 rākhai-pon and 5 paṇam for 2 marakkāl of sesame, 5 paṇam for 1.....5 rākhai-pon and 4 paṇam for 36 clothes,.....for ball of thread, 2 paṇam for 600 areca-nuts and 2 paṇam for 1200 betels; altogether 61 rākhai-pon shall be paid to the Nambimār (Archakas or temple-priests), 1 rākhai-pon and 5 paṇam for the recitation of the Vēdas, 2 paṇam for the recitation of Tiruvāymoḷi, 4 paṇam for Anantayyan Vēṅkaṭattuṟaivār for reading the Tiruvēṅkaṭa-Māhātmyam and 1 paṇam for Yiyuṇṇi Appan for fixing the muhūrtam; thus in total 492 rākhai-pon for the several items of expenditure (as detailed-above) for conducting the Palla-vōtsavam festival as your ubhaiyam; altogether 1000 rākhai-

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 51, Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 126 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

No. 53.

(No. 360—G. T.)

[On the west wall of the second prākāra of Śrī Gōvindarājasvāmi Temple in Tirupati.]

Text

1 உ ஶுபமஸ்து ஸ்வஸ்தி ஸ்ரீமந்மஹாராஜாதிராஜ ராஜபரமேஸ்வர ஸ்ரீ-
வீரப்ரதாப ஸ்ரீவீர ஸதாசிவதேவமஹாராயர் ப்ருதுவிராஜ்யம்
பண்ணிஅருளாநின்ற ஸகாப்தம் ௲௪௱௬௰௭ மேல் செல்லாநின்ற
விஸ்வாவஸு ஸம்வத்ஸரத்து கற்கடகநாயற்று பூர்வபக்ஷத்து சத்த-
மியும் புதவாரமும் பெற்ற சித்திரைநக்ஷத்ரத்துநாள் திருமலையில்
ஸ்தானத்தாரோம் சதாசிவதேவமஹாராயற்கும் ராமராஜய்யனுக்கும்
புண்ணியமாக ஸ்ரீபண்டா..........ராஜயன் புத்ரர் திம்மராஜய்யனுக்கு
சிலாஸாஸநம் பண்ணிக்குடுத்தபடி தம்மிட உபயமாக.....திருவேங்-
கடமுடையான் ளுள்வழி அமுதுசெய்தருளும் திருப்பொனகம் ௧
[கொடைதிருநாள் ௨௰ ல்] அமுதுசெய்தருளும் திருப்பொனகம் [௨௰]
......அதிரசப்படி க......அமுதுசெய்தருளும்...... அழகப்பிரானார் திரு-
மஞ்சனகாலத்துக்கு திம்மராஜா

2 கட்டளையிட்ட திருவேங்கடமஹாத்ம்யம் கெட்டருளிப்பொலெ இனவழி
அமுதுசெய்தருளும் பிளவு ௫௰ இலைஆ ா சந்தணம் பலம் ௧
விளைகற்பூரம் பணவிடை ௨ ராத்ரி அழ[க*]ப்பிரானார் திருப்ப[ள்*]ளி-
அறையிற் திருமஞ்சனத்துச் சுருளுக்கு பிளவு ௫௰ இலைஆ ா சந்த-
ணம் பலம் ௧ விளைய்கற்பூரம் புவி[1] ௨ ...த்திரதாஅவசரம் அமுது-

1. Read பணவிடை = paṇa-weight.

128

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 53, Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 128 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

produce raised thereby, the following supply of articles shall be made from the temple-store as detailed below :—

4 tiruppõnakam to be offered to Śrī Vẽṅkaṭēśa daily in your name,

20 tiruppõnakam to be presented on the 20 days of Summer festival,.....

1 atirasa-paḍi to be presented.. .....50 areca-nuts, 100 betels, 1 palam of chandanam and 2½ paṇa-weight of refined-camphor to Śrī Vẽṅkaṭēśa after hearing the recital of Vẽṅkaṭāchala-Māhātmyam—a function instituted by Timmarāja—during Aḻagappirānār-tirumañjanam in Tirumalai temple every day in the morning ; and 50 areca-nuts, 100 betels, 1 palam of chandanam and 2½ paṇa-weight of refined camphor to be presented at night while in bed-chamber,

1 tiruppõnakam, 50 areca-nuts, 100 betels and 2½ paṇa-weight of refined camphor to be offered to Periya-Perumāḷ (Śrī Vẽṅkaṭēśa) after dadhyõdana-avasaram,

.....to be presented to Achyuta-Perumāḷ enshrined in Tirupati,

.....for areca-nuts and betels.....

1 dadhyõdanam in the name of.....5 tiruppõnakam in the name of Sabhaiyār (temple-councillors),.....thus in total 1,460 daily tiruvõlakka-tiruppõnakam, 365 atirasa-paḍi, 365 palam of chandanam, 91,250 areca-nuts 1,82,500 betels, and 912½ units of refined camphor ;

20 paruppuviyal (modern vaḍai-paruppu), 20 palam of chandanam, 1000 areca-nuts and 2000 betels to be offered to Tirukkoḍi-Āḻvān (Flag Garuḍa) while mounting to the top of the flag-staff during 10 Brahmõtsavam, celebrated at Tirumalai and

20 paruppuviyal, 20 palam of chandanam, 1000 areca-nuts and 200 betels to be presented to Flag-Garuḍa while descending the flag-staff, during the same Brahmõtsavam at Tirumalai ;

.....to be offered to Malaikuniyaninṟa-Perumāḷ and Nāchchimār ..... thus in total 18,250 areca-nuts, 36,500 betels, 912½ paṇa-weight of refined camphor ;

30 nāyaka taḻigai to be offered to Śrī Vẽṅkaṭēśa on the 30 days of Mārgaḻi month as Dhanurmāsa-pūjā,

4 dadhyõdana-taḻigai to be offered to Śrī Gõvindarājan daily,

1 atirasa-paḍi to be presented to Śrī Gõvindarājan during Ardha-jāmam worship,

1 iḍḍali-paḍi, 1 mõrkūn (pot of butter-milk) and 1 pañchāmṛita vaṭṭil in the name of Kṛishṇarāya Mahārāya during tiru-mañjanam,

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 53, Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 134 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

உ ரு ௭ திருநாள் திருமஞ்சநம் [1]நெ ஞ ஸ சந்தனம் பலம் உ
களபம் பலம் ரு கஸ்தூரி தூக்கம் வ கற்பூரம் தூக்கம் வ பன்னிர்-
செம்பு க [2]ஓமத்துக்கு நெயி ௨ பாயசச்சரு க அமுதுசெய்தருளும்
திருமஞ்சநப்படி திருப்பொனகம் ச
10 தளிகை திருப்பொனகம் உம் சிவிகைப்படி திருப்பொனகம் ம் திருக்-
கணுமடை க அப்பபடி க சந்தனம் பலம் ரு அடைக்காயமுது
உாரும் இலையமுது ருா மலைகுனியநின்றபெருமாள் ஆனைநம்பிரானிலும்
ஞச்சிமார் திருப்பல்லக்கிலும் திருவிதி எழுந்தருளி மீண்டு அமுது-
செய்தருளும் பட்டணம் தொசை பருப்புவியல் உ ளுள் ரு க்கு
திருக்கைவழக்கம் தானத்தார் நிற்வாகம் மஉ க்கு ௵ ச பணம்
அ ௭ வகை ச ? க்கு ௵ க பணம் ௬ ? திருப்பதியார் திருமடி-
வளம் பணம் உ வைஷ்ணவகாரி பணம் உ சபையார் [3]மெனுயம் பணம்
க ௭ திருமுக்காணிக்கை ௵ க பணம் ரு ஆக ௵ அ பணம் க ?
நம்பிமார் திருப்பரிவட்டம் சாத்த பணம் உ அநுசந்தானம் பணம்
உ கங்காணிப்பான் பணம் உ தெவையாள் பணம் க.....
11 ...[விண்ண]ப்பஞ்செய்வாந் பணம் க [4][சகஸ்ர]னமத்துக்கு [5]நிவஊகம்
[மஉ க்கு] பணம் கூ [6]திருவெங்கடமாஹாற்மம் படிக்கிற அனந்த-
[அ*]ய்யங்கார் வெங்கடத்துறைவார் பணம் க திருக்கல்லியாணத்துக்கு
திருமாமணிமண்டபம் விதானிக்கவும் கைக்கொளர் பணம் ௩ சிப்பியர்
பணம் க ? ஞர்னூல் பணம் க ஞலு விதியிலும் ஞலு டமக்கம்
கொடி பிடிக்க திருப்பணிப்பிள்ளைக்கு ௵ க பணம் உ கைக்கொளர்
பணம் உ சிப்பியர் பணம் க ஞர்னூல் பணம் ? ளுள் ரு க்கு
மண்டபத்துக்கு திருப்பளித்தாமத்துக்கு ரொகைப்பொன் க திருக்-
கல்லியாணம் [பொரிக்கு] பணம் ரு உஞ்சல் மண்டபத்தடி திரு-
மெழுகு சாத்தவும் [7]முக்கிடவும் பணம் க ஞச்சியார்திருமொழி
பணம் க சிங்கமுறை பணம் உ குசவற்கு பணம் க [8]மெகறைசுரு-
பம் பணம் க திருமங்கலியத்துக்கு [பெருமாளும்]ஞச்சிமாரும் உஞ்சலில்
[எழுந்தருளும்பொது]
12 தெகஷிணை[9] [ரொகைப்பொன் உ]......ஸ்ரீபண்டா[ரத்துக்கு] வருமலை......
பணம் க [10]முகுற்தம் இடுகிற [11]யியுணி அப்பயனுக்கு பணம் க ளுள்
ரு க்கு பந்தம் பிடிக்கிற கூலி ரொகைப்பொன் ரு ளுள் ரு க்கு திரு-
விதிபந்தத்துக்கு [12]நெனை ரு [13]பு மரு ¼ க்கு [ரொகைப்பொன் கூ]

1. Read நெல்லெண்ணை-உழக்கு-ஆழாக்கு.
2. Read ஹோமத்துக்கு.
3. Read மெனுயம்=மேல்நாயகம்.
4. Read ஸஹஸ்ரநாமத்துக்கு.
5. Read நிவஊஹம்.
6. Read திருவேங்கட-மாஹாத்மியம்.
7. Read முக்கிடவும்=கோலமிடவும்.
8. Read மேகரஸ்வரூபம்.
9. Read தக்ஷிணை.
10. Read முஹூர்த்தம்.
11. Read யியுணி=ஈயுண்ணி.
12. Read நெல்லெண்ணை.
13. Read ஐந்து-வட்டி-பதினைந்து மரக்-காலுக்கு.

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 53, Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 182 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

rose-water vessel; 1 nāḷi of ghee and 1 pot of pāyasa-charu-prasādam for hōmam;

4 tirumañjana-paḍi tiruppōnakam, 20 taḷigai tiruppōnakam, 10 tiruchchivikai-paḍi tiruppōnakam, 1 tirukkaṇāmaḍai, and 1 appa-paḍi to be offered along with 5 palam of chandanam, 250 areca-nuts, and 500 betels for distribution; 2 palam of chandanam, 100 areca-nuts, and 200 betels to be distributed among the Sumaṅgalis (married women);

2 paṭṭaṇam-dōśai paruppuviyal-paḍi to be offered after the night-procession while Śrī Malaikuniyaninṟa-Perumāḷ on Hamsa-vāhanam and His two consorts in palanquin seated on the 4th day of the Marriage festival;

[E. List of articles for the fifth day of Marriage festival]:—

1 uḷakku and 1 āḷākku of oil and 2 palam of chandanam for tirumañjanam to be conducted on the 5th day of the festival, 5 palam of chandanam for kaḷabham decoration, ¼ paṇa-weight of musk, ¼ paṇa-weight of refined camphor and ½ rose-water vessel; 1 nāḷi of ghee and 1 pot of pāyasa-charu for hōmam;

4 tirumañjana-paḍi tiruppōnakam, 20 taḷigai-tiruppōnakam, 10 palanquin-paḍi-tiruppōnakam, 1 tirukkaṇāmaḍai, and 1 appa-paḍi to be offered along with 5 palam of chandanam, 250 areca-nuts and 500 betels;

2 paṭṭaṇam-dōśai paruppuviyal-paḍi to be offered after the night-procession while Śrī Malaikuniyaninṟa-Perumāḷ on Ānai-nambirān (elephant vehicle) and His two consorts in palan-quin seated on the 5th day of Marriage festival;

[F. List of Sundry expenses for the Marriage festival]:—

4 rākhai-pon and 8 paṇam to be paid to the 12 nirvāham (management) of the Sthānattār (temple trustees) and 1 rākhai-pon and 3½ paṇam to the 4½ vagai (officials of the trustees) during these 5 days of Marriage festival, 2 paṇam for tirumaḍi-vaḷam services rendered by the residents of Tirupati, 2 paṇam for Vaishṇavakāri, 1 paṇam for Mālnāyakam (superintendent of the Sthānattār) and 1 rākhai-pon and 5 paṇam for tirumun-kāṇikkai (cash-offering); altogether 8 rākhai-pon and 1½ paṇam; 2 paṇam to Nambimār (Archakas or temple priests) for Pari-vaṭṭa-samarpaṇai, 2 paṇam for Anusandhānam, 2 paṇam for Kaṅgāṇippān, 1 paṇam for Tēvaiyāḷ (temple cooks),.....1 paṇam for Viṇṇappam-śeyvār, 6 paṇam to the 12 nirvāham of the Sthānattār for conducted Sahasra-nāmārchanā (worship with 1000 appellations of God), 1 paṇam to Vēṅkaṭattuṟaivār, son of Anantayyaṅgār, engaged in reading Tiruvēṅkata-Māhātmyam, 3 paṇam for the kaikōḷar (temple servants) for the decoration of Tirumāmaṇi-maṇṭapam (where the Marriage festival takes place) 1½ paṇam for Śippiyar (artisan), 1 paṇam for fibre, 1 rākhai-

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 71, Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 188 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

அறைக்கு சந்தனம் பலம் கூ அடைக்காய்அமுது கூா இலைஅமுது கா திருநந்தாவிளக்கு [1]ரெ௩ மூன்னுழிக்கு பணம் ஆறெமுக்கால் சாத்துமுறை[கள்] பெரியபெருமாள் அமுதுசெய்தருளும் திருப்பாவாடை க க்கு திருப்பொனகம் உா க்கு ரெகைபொன் ௰௧ பெரியவுயகதளிகை க க்கு ராசானத்திருப்பொனகம் உ௰ச க்கு ரெகைபொன் [உ பணம் ச] வகைப்படி அப்பபடி க அதிரசப்படி க வடைபடி க தொதிபடி க இட்டலி க சுகியன்படி க ஆகப்படி கூ க்கு ரெகைபொன் ச அவல்அமுது ௰ மாக்காலுக்கு ரெகைபொன் க பொரிஅமுது பத்து மாக்காலுக்கு பணம் எ ? பயறு க மாக்காலுக்கு பணம் க கடலை க மாக்காலுக்கு பணம் க எள்பருப்பு க மாக்காலுக்கு பணம் க மணிப்பருப்பு க மாக்காலுக்கு பணம் க மெல்படைக்க பஞ்சதாரை விசை க க்கு பணம் உ தயிர் சட்டி ௩ க்கு பணம் ௩ வெண்ணை க மாக்காலுக்கு பணம் ச பால்குழம்பு க மாக்காலுக்கு பணம் ச மொர்கூ௩ ௩ க்கு பணம் ௩ கறிஅமுது மெல்வெச்சம் ரெகைபொன் க பணம் ரு பாகுசெர்க்க வெல்லம் விசை ௩ க்கு பணம் [௩] பானககூ௩ ௩ க்கு பணம் [ச ?] கரும்பு ரு௰ க்கு பணம் க வாழைப்பழம் ரு௰ க்கு பணம் க தெங்காயி உ௰ க்கு பணம் க பிறலா்திக்க சஙகம் பலம் உ௰ க்கு பணம் ச ஆடஆட உா ம் பிளவு ா க்கும் பணம் க இலைஆட கூா க்கு பணம் க விளைக்கற்பூரம் ௩ா ? க்கு பணம் க உலகமுண்டான் திருனந்தவகவாசலில் அமுதுசெய்தருளும்

5 வடைப்படி ௩ க்கு ரெகைபொன் உ பணம் க குமாரதாத்தய்யங்கார் மண்டபத்தில் அதிரஸப்படி ௩ க்கு ரெகைபொன் உ பணம் ச உடையவர் சன்னதியில் இட்டலிப்படி ௩ க்கு ரெகைபொன் க பணம் அ பந்தத்துக்கு [1]கெல்லெண்ணை ௰டா ச க்கு ரெகைபொன் உ பணம் அ தாகத்தார் [2]திற்வாகம் ௰உ க்கு [ரெகைபொன் உ பணம் ச] [3]ஸ்ரீவயிஷ்ணவகாரி பணம் உ [4]மெஞயம் பணம் உ நம்பிமார் பணம் உ அநுசந்தானம் பணம் உ கங்காணிப்பான் பணம் [உ] திண்ணைப்பஞ்செய்வார் பணம் க சபையார் திருச்சைக்கும் சாத்துமுறைஞள் வைகுண்டவிமானத்துக்கும் ரெகைபொன் க பச்சடிக்காறன் பணம் க [5]ஸகஸ்ரநாமாற்ச்சனை பணம் ௩ தெவை பணம் அ சிங்கமுறை பணம் [க] பணிமுறை பணம் க மெகறைசுருபம்[6] ரெகைபொன் க கும்மாசுருபம் பணம் சு மண்டபகொத்தர் பணம் க [7]திருவெங்கடமஹாதீமகன்தய[ன்*] வெங்கடத்துறைவார் பணம் உ

1. Read நெல்லெண்ணை.
2. Read திவசாஹம்.
3. Read ஸ்ரீவைஷ்ணவகாரி.
4. Read மெஞயம் = மேல்நாயகம்.
5. Read ஸஹஸ்ரநாமாற்சனை.
6. Read மேகறைஸ்ருபம்.
7. Read திருவேங்கடராஹாதீம்—அநந்தய்யன்.

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 92, Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 252 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

(நாளது) ¹கொவுந்தராசர் பிறகெ ஸ்ரீபாஷதிக்காறரை இரண்டு பொழுதும் எழுந்தருளப்பண்ண ஞள் ௰உ க்கு ரெகைபொன் க பணம் அ திறத்தவாரிக்கு எழுந்தருளப்பண்ண பணம் உ ஆக கைக்கொளர் பெறும் ரெகைபொன் ௰க பணம் ௩ சிப்பியர் பலமண்டபத்துக்கும் விதானிக்க பணம் ரு திருத்தெர் ௩ க்கு ரெகைபொன் க பணம் ரு ஆக ரெகைபொன் உ தாலநம்பிமார் தெர் ௩ க்கு ²முகூடு· பந்தல் பூங்கொவில் வைகுண்டவிமானம் லக்ஷுமிதெவி மண்டபம் திறத்தவாரி விடாயாற்றி தூக்கனுக்கும் வாசல் சுத்தவாளுக்கும் ரெகைபொன் உ பணம் ச ம் திருப்பளித்தாமத்துக்கு தெர் ௩ க்கும் முத்தும்பந்தல் பூங்கொவில்

13 வைகுண்டவிமானம் திறத்தவாரி விடாயாற்றிமண்டபங்களு(க்)க்கும் பூவு-க்கு ரெகைபொன் ரு வெடுபரி தலையாரி பணம் க வாஹனங்கள் சொப்பன்இட ³வன்றதளவாடத்துக்கும் ரெகைபொன் க பணம் ரு பெட்டிலு ஸாணம் ரெகைபொன் க பணம் உ கொள்குழி கெல்ல-வும் சாந்து இடவும் துறக்கவும் பணம் அ தண்ணிர் வாற்க...... அகமுந்தெ......க்கு பணம் உ ஆக ரெகைபொன் உ ஞள் ௰உ க்கு உடையவர்க்கு திருப்பரிவட்டம் சாத்தவும் சிங்காசனத்தில் எறிஅருள-பண்ணவும் ஸ்ரீவைஷ்ணவர்களுக்கு [பணம்] உ திறதவாரிக்கு நம்மாழ்-வார் கொயில் சொப்பன் இட பணம் உ கொலண்டை ஸந்திக்-கொம்பு பணம் ரு தெர் ௩ க்கு ⁴அட்டுலெவெறும் வன்றதளவாடத்-துறும் ரெகைபொன் ருய திருஞள் கணக்கு விண்ணப்பம் ⁵செயிகிற கங்காணிப்பானுக்கு பச்சைவடத்துக்கு ரெகைபொன் க பந்தம் கொடி குடை காளவிளக்கு கூலிக்கு ரெகைபொன் எய ? ⁶திரு-வெங்கடமஹாத்தி[ம்*] அனந்தய்யங் திருவெங்கடத்துறைவங் பணம் ௪ திருக்கல்லியாணத்துக்கு கொவிந்தராசன் நச்சிமார் ⁷செந்திரிக்கவி பச்சைவடம் க ம் செலை உ. க்கும் ரெகைபொன் ரு ஆக மாசி· திருக்கொடி ⁸திருஞள்றிக்கு ரெகைபொன் சாறுய வைகாசி ஆனி திருஞள் உ க்கு திருக்கொடிஆழ்வான் எறிஅருளும்பொது பருப்பு-வியல் ச ம் இறங்கும்பொது பருப்புவியல் ச ஆக அ க்கு ரெகை-பொன் க பணம் கூ திருமாளிகைவாசலில் ரு ம் திருஞள் உ க்கு ⁹கிஷ்ண் இட்டளிப்படி உ க்கு ரெகைபொன் க பணம் உ கூ ம் திருஞள் அதிரஸப்படி உ ஆக திருஞள் உ க்கு திருத்தெர் அதி-ரஸப்படி உ ம் கூ ம் திருஞள் உ க்கு திருவகன்தல் அதிரஸப்படி

1. Read கோவிந்தராஜன்.
2. Read முத்துபந்தல்.
3. Read வணாதளவாடத்துக்கும்.
4. Read அட்டுவைக்கும்.
5. Read செய்கிற.
6. Read திருவேங்கடமாஹாத்மியம்.
7. Read அம்ஜிகைகாவி—
8. Read திருஞளுக்கு.
9. Read கிருஷ்ணன்.

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 92, Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 259 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

6 palam of chandanam, 300 areca-nuts and 600 betels to be presented while seated in bed-chamber; 3 nāḻi of oil for lights to be maintained in bed-chamber; thus in all 6¾ paṇam is the cost for this function;

11 rākhai for 1 tiruppāvāḍai-taḻigai comprising 200 tiruppōnakam taḻigai to be presented to Periya-Perumāḷ (Śrī Vēṅkaṭēśa) on the day of Śāttumuṟai of the said Pallavōtsavam; 2 rākhai and 4 paṇam for 1 periya-nāyaka-taḻigai comprising 24 rājāna-tiruppōnaka-taḻigai, 4 rākhai for 6 vagai-paḍi, viz., 1 appa paḍi, 1 atirasa-paḍi, 1 vaḍai-paḍi, 1 gōdhi paḍi, 1 iḍḍali-paḍi and 1 sukhiyan-paḍi; 1 rākhai for 10 marakkāl of aval, 7½ paṇam for 10 marakkāl of pori, 1 paṇam for 1 marakkāl of green gram, 1 paṇam for 1 marakkāl of bengal gram, 1 paṇam for 1 marakkāl of sesame, 1 paṇam for 1 marakkāl of select dal, 2 paṇam for 1 vīśai of refined sugar for sprinkling, 3 paṇam for 3 pots of curds, 4 paṇam for 1 marakkāl of butter, 4 paṇam for 1 marakkāl of milk, 3 paṇam for 3 pots of butter-milk, 1 rākhai and 5 paṇam for sundry expenses for vegetables; 3 paṇam for 3 vīśai of jaggery, 4½ paṇam for 3 pots of pānakam, 1 paṇam for 50 sugar-canes, 1 paṇam for 50 plantains, 1 paṇam for 20 cocoanuts, 4 paṇam for 20 palam of chandanam for distribution, 1 paṇam for 200 areca-nuts and 100 piḻavu (uncut-areca-nuts), 1 paṇam for 600 betels and 1 paṇam for ½ paṇa-weight of camphor;

2 rākhai and 1 paṇam for 3 vaḍai-paḍi to be offered in front of the Ulagamuṇḍān flower-garden at Tirumalai, 2 rākhai and 4 paṇam for 3 atirasa-paḍi while seated in the maṇṭapam of Kumāra-Tāttayyaṅgār, 1 rākhai and 8 paṇam for 3 iḍḍali-paḍi to be offered while seated in front portion of the shrine of Śrī Rāmānujan at Tirumalai; 2 rākhai and 8 paṇam for 4 jars of oil for torches, 2 rākhai and 4 paṇam for 12 nirvāham of Sthānattār, 2 paṇam for Vaishṇavakāri, 2 paṇam for Mālnāyakam, 2 paṇam for Nambimār, 2 paṇam for Anusandhānam, 2 paṇam for Kaṅgāṇippān, 1 paṇam for Viṇṇappam-officer, 1 rākhai for Sabhaiyār for carrying the Tiruchchi-vehicle and Vaikuṇṭha-vimānam on the day of Śāttumuṟai, 1 paṇam for distributors, 3 paṇam for Sahasra-nāmārchanā, 8 paṇam for Tēvai, 6 paṇam for Siṅgamuṟai, 1 paṇam for paṇi-muṟai, 1 rākhai for māgarai-svarūpam, 6 paṇam for kummara-svarūpam, 1 paṇam for maṇṭapakkottār, 2 paṇam for Vēṅkaṭattuṟaivār, son of Anantayyan for the recital of Tiruvēṅkaṭa-Māhātmyam, 2 paṇam for Iyuṇṇi Appayyan for fixing the muhūrtam, 8 paṇam for tiruppaṇippiḻḻai for cleaning the path-way and for the erection of pandal in front of the maṇṭapam, 4 paṇam for Kaikkōḷar for the decoration of the maṇṭapam, 2 paṇam for Śippiyar (artisan), 1 paṇam for fibre, 1 rākhai and

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 92, Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 264 ; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

Tīrtham on the day of Tīrthavāri festival, 5 paṇam for the servants engaged in rendering the easy running of the car, 50 rākhai for colours and other painting materials for the 3 temple cars, 1 rākhai for garlands to be honoured the Kaṅgāṇi officer engaged in counting the accounts during Brahmōtsavam, 70½ rākhai for the bearers of torches, flags and umbrellas, 4 paṇam to be paid to Anantayyan Vēṅkaṭattuṟaivān, reciting the Vēṅkaṭāchala-Māhātmyam during the said Brahmōtsavam and 5 rākhai for silks and garlands intended for Śrī Gōvindarājan and His consorts ; altogether 6:0 rākhai-pon is the estimated sum for Māśi-Brahmōtsavam ;

1 rākhai and 6 paṇam for 8 paruppviyal-paḍi, viz., 4 paruppuviyal-paḍi to be offered to Tirukkoḍi-Āḻvān (Flag-Garuḍa or Garuḍāḻvān) while ascending the Flag-staff during Vaikāśi and Āni Brahmōtsavam and 4 paruppuviyal-paḍi to be presented to the same Garuḍāḻvān while decending from the Flag-staff during the said Vaikāśi and Āni-Brahmōtsavam in Tirupati ;

1 rākhai and 2 paṇam for 2 iḍḍali-paḍi to be presented to Śrī Kṛishṇan in front of your house in Tirupati on the 5th festival days of Vaikāśi and Āni-Brahmōtsavam ;

16 rākhai for 20 atirasa-paḍi, viz., 2 atirsa-paḍi on the 2 days of 6th festival during Vaikāśi and Āni Brahmōtsavam, 2 atirasa-paḍi on the 2 days of car festival during Vaikāśi and Āni-Brahmōtsavam, 2 atirasa-paḍi on the 2 days of Śēshavāhanam festival during the said 2 Brahmōtsavam, 1 atirasa paḍi to be presented to Śrī Āṇḍāḷ (Śrī Gōdādēvī), enshrined in Tirupati temple on the day of car festival during Mārgaḻi Utsavam celebrated for Her, 12 atirasa-paḍi to be offered to Śrī Rāmānuja in front of your house on the 12 days of Adhyayanōtsavam, celebrated for Him and 1 atirasa-paḍi to be presented to Śrī Periya-Raghunādhan in front of the Gōpuram of the shrine of Śrī Tirumalai-Nambi while returning to His temple after the car-procession during Paṅguni Brahmōtsavam ; and

2 paṇam for 1 paruppuviyal-paḍi to be presented to Śrī Kṛishṇan while seated in the shrine of Hanūmān in the temple of Śrī Gōvindarājan on the same day of car-festival, celebrated for Āṇḍāḷ (Śrī Gōdādēvī).

14-16. Śrīnivāsayyaṅgār (the donor of this record) is hereby authorised to distribute the following offered prasādam and paṇyāram among the devotees and temple officials freely, thus :—

13 paruppuviyal-prasādam offered to Śrī Vēṅkaṭēśa and Śrī Rāmānuja in Tirumalai temple on the 13 day of the star Svāti, occuring in every year, being the monthly birth-star of Śrī Tirumalai-Nambi,

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 92, Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 271; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

3 [திருவெங்]கடமுடையானுக்கு தம்முடைய உபையமாக தையமாவாசை
பாட்டியம்னாள் முதல் மாசிஅமாவாசை வரைக்கு மாசம் ஒன்றுக்கு
னாள் ௩௰ க்கு திருமஞ்சனகாலவெள்ளையில் பெரியபெருமாள் அமுது-
செய்தருளும் இட்டலிப்படி க ஆக னாள் ௩௰ க்கு இட்டலிபடி ௩௰
[இந்த இட்டலி]-
4 [ப்படி] ௩௰ க்கு பணம் ௱௫௰ னாள் க க்கு அடஅட[1] ௱ இலஅட[2] உ௱
னாள் ௩௰ க்கு நாள் க க்கு சந்தனம் பலம் உ ஆக னாள் ௩௰
க்கு சந்தனம் பலம் ௬௰ [க்கும்] ரொகை [உ] ஞானப்பிரான் அமுது-
செய்தருளும் னாள் ௩௰ க்கு பருப்புவியல் ௩௰ க்கு பணம் [௰ரு]
ஸ்ரீநிவாசபுராணம்
5 படிக்கிற ப்ராம்மணனுக்கு[3] மாதம் க க்கு [ரொகை க] திருத்வாதெசி
னாள் தாவத்திலே மலைகுனியநின்றபெருமாளும் நாச்சிமாரும் திருவீதி
எழுந்தருளி ஞானப்பிரான் சந்நிதி முன்மண்டபத்தில் எறியருளி திரு-
மஞ்சனங் கொ-
6 ண்டருள திருமஞ்சனத்துக்கு நெணை[4] ஙூ சந்தனம் பலம் [௩] பால்
உரி தேன் உரி தயிர் உரி சந்தனம் பலம் [௰] கஸ்தூரிக்காப்பு கற்-
பூரக்காப்பு நீராட [வஸ்திரம்] ரொகை உ திருமஞ்சனப்படிக்கு தத்தி-
யோதனம் [தளிகை] ௰உ திருவொலக்கம் ௩ [வகைபடியும்]
7 [அடைக்காயமுது ௱ இலையமுது உ௱] சந்தனம் பலம் ச க்கு [பணம் உ]
......தட்டு ௱ [க்கு பணம் உ] [கெல்லை ௱ க்கு] பணம் உ அவல்
உ ௳ க்கு பணம் க பொரி உ ௳ க்கு பணம் உ தெங்காய் ௫௰
க்கு பணம் ௩ [கரும்பு] ௫௰ க்கு பணம் [க?] வாழைப்பழம் ௱
க்கு பணம் [க?]......தொட்டப்பாய் க) அலருகூடை
8 ஆக இவ்வகைக்கு திருத்திற[5] கூலிக்கு [பணம் உ] தாநத்தார் [நிர்வாகம்
௰உ க்கு பணம் க] வகை ச? க்கு பணம் ச? திருமுன்காணிக்கை
பணம் க தெலையாள் பணம் உ வைஷ்ணவ[கா]ரி பணம் க அனுசந்-
தானம் பணம் க
9 கங்காணிப்பான் பணம் க விண்ணப்பஞ்செய்வான் பணம் க பூவுக்கு
பணம் உ [திருப்பணிப்பிள்ளை] பணம் க சிப்பியர் பணம் க [நூர்]
னூல் [முங்கல் பணம் ?] ஆக பணம் ௫௱......கொடி குடை பிடிக்க
கூலிக்கு ரொகை க......ஆக [இந்த வகையெல்லாம்]
10 [தம்பிட]பொலியூட்டாக நடப்பித்து ஸ்ரீபண்டாரத்துக்கு ஒடுக்கிந ௩ற்
பணம் ௲அ௰ இப்பணம் ஆயிரத்து எண்பத்தஞ்சும் திருவிடை-
யாட்ட க்ராமங்களில் எரிகால்வாயளில் இட்டு இதில் விளைந்த முதல்
கொண்டு திருவெங்கடமுடையா-

1. Read அடைக்காயமுது.
2. Read இலையமுது.
3. Read ப்ராஹ்மணனுக்கு.
4. Read நெல்லெண்ணை இருநாழி.
5. Read திருத்துகிற.

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 10, Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 28; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

11 னும் ஞானப்பிரானும் [அமுதுசெய்ய] ஆக இந்த வகை எல்லாம் ஸ்ரீ-பண்டாரத்திலெ விட்டுப்பொதக்கடவதாகவும் அமுதுசெய்தருளின ஆலாதத்தில் இட்டலிப்படி ௱௫௰ பருப்புவியல் ௰௫ அடைக்காயமுது [௱] இலை ௨௱ [௨] சந்தனம் பலம் [௩௰] புராணம் கெட்கிறவற்கு சிற்வ-

12 ருக்கும் தொன்மையாக ஆலாதிக்க[க்கடவதாகவும்] விட்டுப்பொதக்கடவ-தாகவும் விட்டவன் [நிக்கி நின்ற] பருப்புவியல் பன்னிரண்டு நிற்-வாகத்திலும் பெறக்கடவொமாகவும் நின்றது பூற்வத்திலெ பெறக்-கடவொமாகவும்

13 [திருத்துவாதெசி படியில் விட்டவன்]......திருப்பண்ணியாரம்......பெறக்-கடவொமாகவும் இப்படிக்கு தம்முடைய சந்தானபாம்பரை சந்திரா-தித்தவரை நடக்கக்கடவதாகவும் இப்படிக்கு ஸ்ரீவைஷ்ணவர்கள் பணியால் கொயில்கணக்கு திருநின்றவூருடையான் எழுத்து இவை ஸ்ரீவை-

14 ஷ்ணவரக்ஷை உ

Translation

1-2. Hail, Prosperity! This is the *śilāśāsanam* issued by the Sthānattār (trustees) of Tirumalai temple in favour of Kāṭatti-Śeṭṭi, son of Peṅgāṇḍai Śeṭṭi alias Tiruvēṅkaṭamuḍaiyān of Peṇṇakka-gōtram, one of the merchants residing in Tirupati, on Monday,[1] combined with the star Uttiraṭṭāḍi, being the 5th solar day of the bright fortnight of the Makara (Tai) month in the year Śōbhakṛit, current with the Śālivāhana Śaka year 1465 while Śrīman Mahārājadhirāja Rājaparamēśvara Śrī Vīrapratāpa Śrī Vīra Sadāśivarāya Mahārāyar was ruling the kingdom, to wit,

3-10. the money paid by you into the Śrī-Bhaṇḍāram (temple-treasury) for the following offerings to be made on the stipulated days as your ubhaiyam, is 1085 naṟ-paṇam:—

150 paṇam is the sum required for the 30 iḍḍali-paḍi to be offered to Tiruvēṅkaṭamuḍaiyān (Śrī Vēṅkaṭēśa) during tirumañjanam (holy both) on 30 days commencing from the first lunar day of the bright fortnight in the month of Tai and ending with the new-moon day, occurring in the month of Māśi, at the rate of 1 iḍḍali-pali per day; along with this, 100 areca-nuts, 200 betels and 2 palam of chandanam to be presented for distribution during these 30 days, for which 2 rēkhai-pon is the estimated sum;

15 paṇam for 30 paruppuviyal to be offered to Gnānappirān (Śrī Varāhasvāmi) on these 30 days,

1 rēkhai-pon for a Brāhmaṇan engaged in reading the Śrīnivāsa-purāṇam,

2 nāḻi of oil, 3 palam of chandanam, 1 uri of milk, 1 uri of honey and 1 uri of curds for tirumañjanam; 10 palam of

NOTE 1:—31st December 1543 A.D. is the equivalent date of Christian era.

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 10, Inscriptions of Sadasivarahya's Time (From 1541 A.D. to 1574 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 29; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

No. 144.

(No. 429—G. T.)

[On the right door-jamb wall of the entrance of Śrī Kalyāṇa Vēṅkaṭēśasvāmi Temple at Maṅgāpuram village (Near Chandragiri).]

Text

1 స్వస్తిశ్రీ జయాభ్యుదయ శాలివాహన శకవర్షంబులు ౧౪౬౩ అగునేటి
శార్వరి చైత్ర శుద్ధ

2 ౧౫లు చిత్తానక్షత్రమందు శ్రీమద్వేదమార్గప్రతిష్ఠాచార్య శ్రీరామానుజ
సి(ం)ద్ధాంత[స్థా]పనాచార్య

3 వేదాంతాచార్య కవితార్కిక కేసరి శరణాగతవజ్రపంజరులైన శ్రీతాళ్లపాక
పెదతిరుమలయ్యంగారి

4 కొమారుండు శ్రీచిన్నతిరుమలయ్యంగారు స్కందపురాణోక్తమైన
శ్రీవేంకటేశమాహాత్మ్య[ము]-

5 లో విశల్యనదీతీరమందు శ్రీరంగమాహాత్మ్యంలోను దశాధ్యాయంలోను
దేవళతీర్థతీరమందు

6 తమ [కైం]కర్యంగాను]సర్వమాన్య అగ్రహారమైన అలమేలుమంగపురమందు
జీర్ణోద్ధారణంగాను

7 శ్రీవేంకటేశ్వరులాను నాచ్చియారును అనంతగరుడవిష్వక్సేనాదు
లాను............పెరు-

8 మాళ్లను ఆళ్వారులాను వుడైయవరును పూర్వాచార్యులాను అన్నమా
చార్యులైన తమ ఆచార్య

265

---

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 4, Inscriptions of Achyutaraya's Time (From 1530 A.D. to 1542 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 266; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

9 లాను తిరుప్రతిమ చేశి అయాళ్వారుల సన్నిధిని ప్రొద్దుగ్రుంకి అప్పుడు
నిత్యానుసంధానాలు

10 మొదలైనది అనుసంధించి ఆచార్యపురుషులు జీయ్యరు.....శ్రీవైష్ణవుల
.....ప్రొ-

11 ద్దుగ్రుంక్కిన అప్పుడు ఆరగింపు.....ఫలం చందనకాపు సమ-

12 ర్పించి ఇది తను పుత్రపౌత్రపరంపర ఆచంద్రార్కంగాను శ్రీ.....
శ్రీయతిరాజియ్య-

13 ంగారి చాతను వ్రాయించిన శిలాశాసనం [॥ *]

Translation

1–3. Hail! Prosperity! Śrī Chinna Tirumalaiyangāru, son of Tāḷḷapāka Śrī Peda Tirumalaiyaṅgāru, entitled Śrīmad-Vēdamārga pratishṭhāchārya Śrī Rāmānuja siddhānta-sthāpanāchārya Śrī Vēdāntāchārya Kavitārkikakēsari and Śaraṇāgata-vajra-pañjara, made the following charity to be conducted as long as the moon and the sun shine, throughout the succession of his sons and grandsons, on the day of the star Chittā,[1] being the 15th lunar day of the bright fortnight in the month of Chaitram in the year Śārvari corresponding with the Śālivāhana Śaka year 1463:—

4–8. the donor reconstructed the ruined temple and reinstalled old images of Śrī Kalyāṇa Vēṅkaṭēśvarasvāmi, Nāchchiyār (Divine consort) Ananta, Garuḍa, Vishvaksēna.....Perumāḷ, Āḻvārs, Uḍaiyavar (Śrī Rāmānuja), Pūrvāchāryas (Kūrattāḻvān, Śrī Vēdāntadēśika and others) Annamāchārya (his own grandfather and preceptor) at Alamēlumaṅgāpuram,—situated (in Chandragiri) on the bank of the river Vikalyā and near Devaḷatīrtam, a holy tank the sanctity of which mentioned in 'Vēṅkaṭāchala-māhātmyam' and 'Daśādhyāya' a part of Śrī Raṅgamāhātmyam,—which was granted to the Tāḷḷapakam family by the emperors of Vijayanagara as sarvamānya-agrahāra (tax free land).

9–13. With the income derived from this village Alamēlumaṅgāpuram, daily offerings in every evening in the shrine of the 12 Aḻvārs and Āchāryas, shall be made after the recital of the Āḻvār's prabandham and prasādam, nuts and chandanam shall be distributed among the Jīyars, Āchāryapurushas, Śrīvaishṇava devotees and pilgrims as his ubhaiyam.

In this manner this deed of charity is engraved by Śrī Yatirājayyaṅgār.

NOTE 1:—22nd March 1540 A.D. is the English equivalent date.

1. Tirumala Tirupati Devasthanams, Inscriptions Vol.V - 4, Inscriptions of Achyutaraya's Time (From 1530 A.D. to 1542 A.D.) Edited by V. Vijayaraghavacharya, page no. 266; T.T.D. Publications, year 1998 Reprint.

श्रीसीताराम का हनुमान को दर्शन

17. सहायक ग्रंथ सूची

I पुराणों की प्राचीनता और प्रामाणिकता - आचार्य विरिवेंटि मुरलीधर शर्मा

1. अग्निपुराण - चौखांबा संस्कृत प्रतिष्ठा - दिल्ली - २०१४
2. कलियुगराज वृत्तांतमु - श्री कोटा वेंकटाचलम् - विजयवाडा - १९५०
3. गरुडपुराण - नाग पब्लिशर्स - दिल्ली - १९८४
4. नारदपुराण - राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नाग पब्लिशर्स - दिल्ली - २००२
5. न्याय दर्शन, वात्स्यान भाष्यम् - न्यायाचार्य श्री पद्मप्रसाद शास्त्री, न्यायाचार्य श्री हरिराम शुक्ला, श्री नारायण मिश्र, चौखांबा पब्लिकेशन्स - दिल्ली - २००७
6. पद्मपुराण - राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नाग पब्लिशर्स - दिल्ली - १९८४
7. पुराण विमर्श - आचार्य बलदेव उपाध्याय, चौखांबा विद्याभवन - वाराणसी - २००२
8. बृहदारण्यकोपनिषद् - अनुवाद शंकर भाष्यं समेत - गीताप्रेस - गोरखपुर
9. भविष्यपुराण - चौखांबा संस्थान प्रतिष्ठान - दिल्ली - २०१७
10. ब्रह्मपुराण - चौखांबा संस्कृत संस्थान - दिल्ली - १९९७
11. मत्स्यपुराण - ईस्टर्न बुक लिंकर्स (अंग्रेजी अनुवाद) - दिल्ली - २००९
12. महाभारत - तिरुमला तिरुपति देवस्थान - तिरुपति - २०१८
13. मार्कण्डेयपुराण एक सांस्कृतिक अध्ययन, वासुदेव शरण अग्रवाल, हिन्दुस्तानी अकादमी इलहाबाद - १९६१
14. मार्कण्डेयपुराण - नाग पब्लिशर्स - दिल्ली - २००२
15. वराहपुराण - श्री हृषीकेश शास्त्री, चौखांबा अमर भारती प्रकाशन - वाराणसी - १९८२
16. वायुपुराण - शिवजित सिंह (व्याख्य) - चौखांबा विद्याभवन - वाराणसी - २०१३
17. विष्णुपुराण - नाग पब्लिशर्स - दिल्ली
18. विष्णुधर्मोत्तरपुराण - नाग पब्लिशर्स - दिल्ली - १९८५
19. शारीरिक भाष्य - चौखांबा कृष्णदास अकादमी - वाराणसि - २०१३
20. शिवपुराण - नाग पब्लिशर्स - दिल्ली - १९८६
21. श्रीमद्भागवत् - चौखांबा संस्कृत प्रतिष्ठान - दिल्ली - २०१३
22. श्रीमद्वाल्मीकि रामायण - ति.ति.दे - तिरुपति - २०१०
23. स्कंद महापुराण - नाग पब्लिशर्स - दिल्ली - Vol.2-1986, Vol.4-1987, Vol.5-1986, Vol.7-1987.

24. History of classical literature, डॉ.यम.कृष्णमाचार्य

II श्री शांकरभाष्य के पुराण एवं इतिहास के वचन - आचार्य जानमद्दि रामकृष्णा

1. अमरकोश, अमरसिंह - चौखांबा संस्कृत प्रतिष्ठान-दिल्ली - १९८५
2. ईशानादि नौ उपनिषद् (शांकरभाष्य समेत) (ईशावास्य-केन-कठ-प्रश्न-मुण्डक माण्डूक्य-ऐतरेय-तैत्तिरीय-श्वेताश्वेतरोपनिषतों सहित) गीताप्रेस - गोरखपुर
3. कालिदास ग्रंथावली (मालविकाग्निमित्रम) कालिदास, काशी हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी - १९७६
4. छांदोग्योपनिषत् (शांकरभाष्य समेत), गीताप्रेस, गोरखपुर - १९९५
5. बृहदारण्यकोपनिषत् - (शांकरभाष्य समेत), गीताप्रेस, गोरखपुर - १९९५
6. भविष्यपुराण, व्यासमहर्षि, श्री वेंकटेश्वर स्ट्रीम प्रेस, मुंबाई - २०१५
7. वायुपुराण - व्यासमहर्षि - नाग पब्लिशर्स - दिल्ली
8. विष्णुधर्मपुराण - व्यासमहर्षि, महर्षि यूनिवर्सिटी - ऑफ मेनेजमेंट, वेदिक लिटरेचर कलक्शन (http://vedicreserve.miu.edu/upapurana/vishnudharma_purana)
9. श्री गरुडमहापुराण - व्यासमहर्षि - चौखांबा संस्कृत संस्थान - वाराणसी - १९९८
10. श्री ब्रह्माण्डपुराण - व्यासमहर्षि - मोतीलाल बनारसीदास - दिल्ली - १९७३
11. श्रीमद्भागवत महापुराण - व्यासमहर्षि - गीताप्रेस - गोरखपुर
12. श्री लिंगमहापुराण - व्यासमहर्षि - नाग पब्लिकेशन्स - दिल्ली
13. श्री विष्णुमहापुराण - व्यासमहर्षि - नाग पब्लिकेशनस - दिल्ली
14. सुभाषितत्रिशति - भर्तृहरि - निर्णयसागर प्रेस - मुंबाई - १९५७
15. हरिवंश - व्यासमहर्षि - गीताप्रेस - गोरखपुर
16. The Mahabharata (Critically Edited) - Vishnu S.Suktankar & S.K. Balvalkar-Bhandarkar Oriental Resarch Institute - poona - 1961.

III श्री वेंकटाचल माहात्म्य- प्रामाणिकता - समुद्राला रंगरामानुजाचार्य

1. श्रीमद्भागवत महापुराण - व्यासमहर्षि - चौखांबा संस्कृत प्रतिष्ठान - दिल्ली - २०१३
2. श्री वेंकटाचल माहात्म्य (प्रथमभाग) - ति.ति.दे. तिरुपति - १९५९
3. श्री वेंकटाचल माहात्म्य (द्वितीयभाग) - ति.ति.दे. तिरुपति - १९६१

4. श्री वेंकटाचल माहात्म्य (चारभाग) - विद्वान ते.कं. गोपालाचार्य स्वामी - (शोध) टी.वी.चूडामणी (तेलुगु अनुवाद) जीयर एड्युकेशनल ट्रस्ट - सीतानगरम - २००७
5. श्री वेंकटाचलेतिहासमाला - अनंताचार्य - एन.सी.वी.नरसिंहाचार्य (तेलुगु अनुवाद) ति.ति.दे-तिरुपति- २०१२
6. श्री वेंकटाचलेतिहासमाला - अनंताचार्य - एन.सी.वी.नरसिंहाचार्य (तेलुगु अनुवाद) श्री वेंकटेश्वर वेदविश्वविद्यालय, तिरुपति - २००९
7. सात्त्वत संहिता - ब्रजवल्लभ द्विवेदी, संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय - वाराणसी - १९८२

IV श्री वेंकटाचल माहात्म्यम - कुछ और विशेषताएँ - आचार्य विरिवेंटि मुरलीधरशर्मा

1. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (प्रथमभाग) - ति.ति.दे तिरुपति - १९५९
2. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (द्वितीयभाग) - ति.ति.दे तिरुपति - १९६१
3. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (चारभाग) - विद्वान ते.कं- गोपालाचार्य स्वामी जी (शोध) टी.वी.चूडामणी (तेलुगु अनुवाद) जीयर एजुकेशनल ट्रस्ट - सीतानगरम - २००७
4. श्री वेंकटेश्वर वैभव - राष्ट्रीय संगोष्ठी - (शोधपत्र संकलन) बी.एस.रेड्डी (संपा-) ति.ति.दे. प्रचुरण- २००७
5. प्राचीनांध्रसाहित्य में श्री वेंकटेश्वर, डॉ.के.वी.राघवाचार्य ति.ति.दे.प्रकाशन - २०१९
6. Tirumala Tirupati Devasthanams inscriptions (volumes 2,4,5), Vijayaraghavacharya (Ed) Tirumala Tirupati Devasthanams, Tirupati, 1998.

V. श्री वेंकटाचलेतिहासमाला - श्री वेंकटेश्वरतत्व - ई.ए.सिंगराचार्युलु

1. ऋग्वेद (दशममंडल, उत्तरार्ध्द) लोकभारती - इलहाबाद - २०१७
2. तिरुवायमोळि, नम्माल्वार, श्री शिंगम सेट्टि - यतींद्रुलुचेट्टि चारिटीस-मिन्ट स्ट्रीट, चेन्नै - २०११
3. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (प्रथमभाग) - ति.ति.दे. तिरुपति - १९५९
4. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (द्वितीयभाग) - ति.ति.दे. तिरुपति - १९६१
5. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (चारभाग) - विद्वान ते.कं- गोपालाचार्य स्वामी जी (शोध) टी.वी.चूडामणी (तेलुगु अनुवाद) जीयर एजुकेशनल ट्रस्ट - सीतानगरम - २००७
6. श्री वेंकटाचलेतिहासमाला - अनंताचार्य - एन.सी.वी.नरसिंहाचार्य (अनुवाद) ति.ति.दे-तिरुपति - २०१२
7. श्री वेंकटाचलेतिहासमाला - अनंताचार्य - श्री वेंकटेश्वरवेदविश्वविद्यालय, तिरुपति - २००९

8. सात्त्वतसंहिता - ब्रजवल्लभ द्विवेदी, संपूर्णानंद संस्कृतविश्वविद्यालय - वाराणसी - १९८२

VI. पौराणिक प्रामाण - आचार्य विरिवेंटि मुरलीधर शर्मा - आचार्य राणिसदाशिवमूर्ति

1. अलंकारमणिहारः, श्रीकृष्णब्रह्मतन्त्र परकाल संयमीन्द्र, एल.श्रीनिवासाचार्य (संपा-) सरकारी प्राच्य ग्रंथालय, मैसूर - १९१७
2. ब्रह्माण्ड महा पुराण (पूर्वार्ध), चौखांबा संस्कृत सिरीस - वाराणसी - २०१६
3. श्रीमद्रामायण (उत्तरकांड) - वाल्मीकि महर्षि - समुद्राला लक्ष्मणय्या (अनुशीलनकर्ता) ति.ति.दे-तिरुपति-२०१६
4. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (प्रथमभाग) - ति.ति.दे. तिरुपति - १९५९
5. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (द्वितीयभाग) - ति.ति.दे. तिरुपति - १९६१
6. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (चारभाग) - विद्वान ते.कं - गोपालाचार्य स्वामी (शोध) टी.वी.चूडामणी (तेलुगु अनुवाद) जीयर एजुयुकेशनल ट्रस्ट - सीतानगरम - २००७
7. श्री वेंकटेश्वर वैभव - पंडित वेदांतं जगन्नाथाचार्य - ति.ति.दे. तिरुपति - १९९९
8. श्रीनिवासवैभव - जूलकंटि बालसुब्रह्मण्यम् - ति.ति.दे. तिरुपति - २००५
9. स्कंद पुराण - द्वितीयभाग (वैष्णव खंड) - व्यास महर्षि - चौखांबा संस्कृत सिरीस - वाराणसी
11. स्कंद पुराण - द्वितीयभाग (वैष्णव खंड) - व्यास महर्षि - नाग पब्लिशर्स - दिल्ली - १९८६

VII. हनुमान का जन्मस्थल तिरुमला है - (भौगोलिक प्रमाणों से) - आचार्य राणीसदाशिवमूर्ति

1. कामसूत्रं - वात्स्यानुडु - जयमंगलव्याख्या - चौखंभा संस्कृत भवन - वाराणसी - २००३
2. काव्यमीमांसा, राजशेखरुडु - सी.डी.दलाल - पंडिट आर.ए.शास्त्री (संपा-) ओरियन्टल इन्सिटट्यूट - बरोडू - १९३४
3. बृहत्संहिता, वराहमिहिरुडु - आचार्य रामकृष्णा भट (संपा-) मोतिलाल बनारसीदास - दिल्ली - १९९१
4. मार्कण्डेय पुराण - व्यासमहर्षि - जोशी - के.एल.शास्त्री (संपा-) परिमल पब्लिकेशन्स - दिल्ली - २००९
5. रघुवंश, कालिदास, नारायण राम आचार्य (संपा-) निर्णयसागर मुद्रणालय, बाम्बे - १९४८
6. श्रीमद्भागवतमहापुराण, व्यासमहर्षि - चौखंबा संस्कृत प्रतिष्ठान - दिल्ली - २०१३
7. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (दो भाग) श्री वेंकटेश्वर प्राच्य परिशोधन संस्था - श्री वेंकटेश्वरविश्वविद्यालय, तिरुपति - २००६
8. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - आकुल मन्नाडु पंडित आर.पार्थसारथी भट्टाचार्य (तेलुगु अनुवाद) तिरुमला तिरुपति देवस्थान, तिरुपति - २००८

9. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - हिन्दी अनुवाद (दो भाग) श्री अनंतकृष्णश्री शास्त्री, केसरी कांत जी शर्मा, पंडित श्री लक्ष्मीधर जी पाठक (संपा-) श्री स्वामी महंत प्रयाग दास जी - १९२९

VIII. तिरुमला पहाड अंजनाद्रि - एक पुरातत्व सर्वेक्षण - श्री विजयकुमार यादव

1. Ananda Guruge: The Society of the Ramayana, Abhinav Publications, New Delhi, 1991.

2. Chatterji, Suniti Kumar, The Ramayana, Its character, Genesis, History, Expansion and Exodus; A Resume, Prajna, Calcutta, 1978.

3. Subasri, R. (Chennai) The Art of Administration as depicted in Valmiki Ramayana, Proceedings of the 20th International Conference on Ramayana, 22nd - 24th August, 2004, Tirupati.

4. “Srimad Valmiki Ramayana” A critical edition with the commentary of Sri Govindaraja edited by T.R. Krishnamacharya of Kumbakonam.

5. “Srimad Valmiki Ramayana” by Maharshi Valmiki, Gita press, Gorakhpur - Elight Edition 2012.

6. The Tirumala Temple by N. Ramesan, TirumalaTirupati Devasthanams, 1981. Retrieved 20th September 2009.

7. Sadhu Subrahmanya Sastry, Tirupati Sri Venkateswara, TTD Religious Publication Series no.107. 2014

8. Proceedings of Sri Venkateswara Vaibhavam - Jatiya Sadassu parisodana patra sankalanam,Tirumala Tirupati Devastanams; 2007

9. International Journal of Engineering Applied Sciences and Technology, 2020 Vol.4, Issue 11, ISSN No. 2455-2143.

10. Golden Research Thoughts ISSN 2231-5063 Volume-4, Issue-10, April-2015.

11. Proceedings of the A.P. History Congress, 19th Session, Anantapur.

12. Sri Venkatachala Mahatyam, R. Partha Saradhi Bhattacharya, TTD., Tirupati, 2012

13. History of Tirupati - The Tiruvengadam Temples (Vol.3), T.K. T.Viraraghava Acharya, T.T.D., Tirupati, 2014

14. Proceedings of Srikantaya Centenary Seminar Early Vijayanagara Studies in its History and culture published by BM Sri Smaraka Pratistana.

15. International Journal of Scientific and Research Publications, Volume 9, Issue 4, April 2019; ISSN 2250-3153.

IX. भगवान वेंकटेश्वर भक्ति रचनाओं में अंजनाद्रि - डॉ.आकेल्ल विभीषण शर्मा

1. ताल्लपाका पदसाहित्य - ति.ति.दे प्रकाशन - १९९८
2. दास कीर्तन, श्री पावंजि गुरुराव - मध्वसिद्धांत ग्रंथालय - उडिपि
3. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - श्री ते.कं. गोपालाचार्य स्वामी, त्रिदंडि श्रीमन्नारायण स्वामी न्यास - प्रकाशन - १९७२
4. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (प्रथमभाग) - ति.ति.दे. तिरुपति - १९५९
5. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - (द्वितीयभाग) - ति.ति.दे. तिरुपति - १९६१
6. श्री वेंकटाचल माहात्म्य - मातृश्री तरिगोण्डा वेंगमांबा - ति.ति.दे. प्रकाशन - २००४

X. वाङ्मय प्रमाण - आचार्य शंकर नारायणन्

1. कंबरामायणमु, वाई.मु. गोपालकृष्णमाचार्य - उमा पब्लिकेशन्स - १९५२
2. दया शतक - वेदांतदेशिक, ति.ति.दे. - २०१६
3. प्राचीनांध्रसाहित्य में श्री वेंकटेश्वर - डॉ.के.वी.राघवाचार्य - ति.ति.दे. तिरुपति - २०१९
4. वाणीविलास वनमालिका - टेकुमल्ला रंगाशायि सरकारी प्राच्य लिखित ग्रंथालय - मद्रास - १९५३
5. वेंकटाद्रि (तिरुमला) क्षेत्र वैभव - डॉ.के.वी.राघवाचार्य - श्री वेंकटेश्वर वेदविश्वविद्यालय - तिरुपति २००८
6. श्री वेंकटाचल माहात्म्य, तरिगोंडा वेंगमांबा - ति.ति.दे. - २००४
7. श्री वेंकटेश्वर वैभव - राष्ट्रीय संगोष्ठी - बी.एस.रेड्डी (संपा-) ति.ति.दे. - तिरुपति - २००७
8. हंसदूत - वामन भट्ट बाण - जितेन्द्र बिमाल चौधरी - १९४१
9. हंससंदेशः - वेदांत देशिकः, चौखांबा कृष्णदास अकादमी - वाराणसी - २००४
10. Epigraphia Indica, Vol VI, Archeological Survery of India, 1901.
11. Tirumala Tirupati Devasthanams Inscriptions, Vol II, Inscription of Saluva Narasimha's time, V. Vijayaraghavacharya, (Ed.), Tirumala Tirupati Devasthanams, Tirupati, 1998.
12. Tirumala Tirupati Devasthanams Inscriptions, Vol I, Early Inscriptions V. Vijayaraghavacharya, Tirumala Tirupati Devasthanams, Tirupati, 1998.

XI. श्रीवैष्णव साहित्य में तिरुमला-अंजनाद्रि - आचार्य चक्रवर्ती रंगनाथन

1. आल्वारों के मंगलाशासन पाशुर, श्रीमान टी.के.वी.एन. सुदर्शनाचार्य स्वामी - ति.ति.दे. प्रकाशन - १९५६
2. श्री वेंकटेश दिव्य साहिती - डॉ.सिंगराचार्य - ति.ति.दे. तिरुपति - २००८
3. श्रीमद्भागवत, गीताप्रेस, गोरखपुर - २००६

4. नालायिर दिव्यप्रबंध - गिरिट्रेडर्स - चेन्नै - २०१७
5. श्रीभाष्यम् - श्री उ.वे - उत्तमूर वीरराघवाचार्य स्वामी, सेंचुरी ट्रस्ट, चेन्नै - २००२
6. हंस संदेश, श्री उ.वे - उत्तमूर वीरराघवाचार्य स्वामी, सेंचुरी ट्रस्ट, चेन्नै - २००२
7. विश्वगुणादर्शचम्पू - वेंकटाद्रि चौखंबा सुरभारती प्रकाशन - नई दिल्ली - १९९२
8. दयाशतक - कोलियालं शठगोपाचार्य स्वामी - ति.ति.दे. - तिरुपति - २०१६
9. कठोपनिषत् - श्री उ.वे उत्तमूर वीरराघवाचार्य स्वामी सेंचुरी ट्रस्ट - चेन्नै - २००२

XII. सप्तगिरियों में अंजनाद्रि का महत्व - अर्चकम् रामकृष्णा दीक्षितुलु

1. अमृतोत्सव परिशिष्ट - ति.ति.दे. तिरुपति - २००८
2. श्री वेंकटेशकाव्यकलापः देशिक तिरुमलै तातार्य - ति.ति.दे., तिरुपति - १९४३
3. श्रीनिवासभक्त विजयमु - रोंपिचर्ल पार्थसारथी भट्टाचार्य, ति.ति.दे., तिरुपति - १९५७-१९५८बुलिटेन
4. श्री वेंकटाचल माहात्म्यम - मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा - ति.ति.दे., तिरुपति - २००४
5. ताल्लपाका पदसाहित्य (द्वितीय संस्करण) - ति.ति.दे., तिरुपति - १९९८
6. श्री वेंकटाचल माहात्म्यम - ति.ति.दे., तिरुपति - २००६
7. श्रीमद्भगवदर्चाप्रकरणम् - श्रीमान् नृसिंह वाजपेययाजी, द्वारकातिरुमला देवस्थान का प्रकाशन

XIV. ''आंजनेय चरित'' के कुछ प्रसिद्ध क्षेत्र - आचार्य राणीसदाशिवमूर्ति

1. श्रीमन्महर्षि वेदव्यास प्रणीत महाभारतम् - लेखक-महर्षि वेदव्यास, प्रकाशक - गीता प्रेस, गोरखपूर - १९७८
2. श्रीमन्महर्षि वाल्मीकि प्रणीत श्रीमद्वाल्मीकीय रामायणम् - लेखक-महर्षि वाल्मीकि, प्रकाशक - गीता प्रेस, गोरखपूर - १९७८
3. श्रीहनुमत् सूक्ति - लेखक-सूक्ति सुधाकर, प्रकाशक - गीता प्रेस, गोरखपूर - १९७८
4. सिद्धान्त शिरोमणी - लेखक-भास्कराचार्य, नोट्स सहित सम्पादित - पण्डित मुरलीधर झा, प्रकाशक - ई.जे.लाजरस & कं।। मेडीकल हाल प्रेस, बनारस कैंट - १९१७
5. श्री वेंकटाचल माहात्म्यम - प्रकाशक - ति.ति.दे. प्रकाशन, तिरुपति
6. संक्षिप्त स्कन्द पुराण - लेखक-महर्षि वेदव्यास, प्रकाशक - गीता प्रेस, गोरखपूर - १९७२
7. ब्रह्माण्ड पुराण - लेखक-महर्षि वेदव्यास, प्रकाशक - गीता प्रेस, गोरखपूर - १९७८

श्रीराम-सुग्रीव का स्नेह

कार्यक्रम संबंधी चित्रमाला

आकाशगंगा के निकट मंदिर में माता अंजनादेवी एवं बालहनुमान का दुग्धाभिषेक

मंदिर में अभिषेक (पवित्रस्नान) किये जानेवाले बालहनुमान की स्तुति करते हुए पुजारी-पंडित।

परमपूज्य पुष्पगिरि पीठाधीश जो आकाशगंगा के निकट स्थित जननी अंजनादेवी सहित बालहनुमान मंदिर पधारे हैं।

श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, अपर कार्यकारी अधिकारी ति.ति.दे. तथा अन्य सदस्य जो श्री आंजनेय (हनुमान) जन्मभूमि - तिरुमला के राष्ट्रीय-व्हेबनार में मुख्य अतिथि के रूप में समापन समारोह में उपस्थित थे।

श्री के.एस.जवाहर रेड्डी कार्यकारी अधिकारी ति.ति.दे. जिन्होंने श्री हनुमान जन्मभूमि-तिरुमला राष्ट्रीय व्हेबनार के प्रारंभ के समय पूजा में भाग लिया है।

स्व. आचार्य श्री वी.मुरलीधर शर्मा, उपकुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति एवं अन्य पंडित परिषद सदस्य जो राष्ट्रीय व्हेबनार प्रारंभकर रहे हैं।

श्रीरामनवमी (२१-४-२०२१) के पुनीत उपलक्ष्य में नादनीराजनम् मंच, तिरुमला में श्री भँवरलाल पुरोहित जी, राज्यपाल तमिलनाडु की उपस्थिति में आयोजित पत्रकार बैठक - मंच पर अधिकारी व पंडित द्रष्टव्य हैं।

श्रीरामनवमी (२१-४-२०२१) के पुनीत उपलक्ष्य में नादनीराजनम् मंच पर प्राथमिक प्रतिवेदन (रिपोर्ट) ''श्री आंजनेय(हनुमान) स्वामी जन्मभूमि-तिरुमला'' का लोकार्पण करते हुए सम्माननीय सदस्य गण।

श्रीरामनवमी (२१-४-२०२१) के दिन ''अंजनाद्रि'' को हनुमान जन्मभूमि के रूप में प्रमाणों समेत घोषित करते हुए मान्यश्री डॉ.के.एस.जवाहर रेड्डी जी, कार्यकारी अधिकारी, ति.ति.दे.

दो दिवसीय राष्ट्रीय व्हेबनार के पश्चात् राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, तिरुपति में आयोजित पत्रकारों की बैठक की अध्यक्षता करते हुए संबोधितकर रहे हैं उपकुलपति आचार्य श्री स्व. वी.मुरलीधर शर्मा जी।